कालके पंख

[ऐतिहासिक कहानियाँ]

आनन्दप्रकाश जैन

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए०

प्रकाशक
अयोध्याप्रसाद गोयलीय
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

●

प्रथम संस्करण
१९५७ ई०

मूल्य तीन रुपये

●

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

ये नई ऐतिहासिक कहानियाँ

मेरी ऐतिहासिक कहानियोंका यह तीसरा सग्रह पाठकोंके हाथोमें जा रहा है। मेरे न चाहते हुए भी लोग-बाग ऐतिहासिक कथा-लेखकके रूपमें ही मेरा नाम विशेष रूपसे लेते हैं। न चाहनेका कारण यह है कि एक विशेष धाराके साथ आपका नाम जबरदस्ती जोड दिया जाये, तो इसका मतलब यह होगा कि आपकी शेष धाराओंकी ओर ध्यान दिया जाना बन्द कर दिया जायेगा। यह घाटेका सौदा है।

लेकिन इन ऐतिहासिक कथा-संग्रहोका लेखक होनेके नाते तो मुझे कुछ बाते साफ करनी ही पडेंगी। विशेषरूपसे जो ग़लतफहमियाँ ऐतिहासिक कहानीकी रूप-रेखाके बारेमें सामान्य पाठकके मस्तिष्कमें है, वे जरूर साफ होनी चाहिए।

यह तो प्रकट ही है कि कथा-शैलीकी वर्त्तमान रूप-रेखा हमे पश्चिमके अनुकरणसे मिली है। पश्चिमकी सामाजिक कहानियोंका आभ्यन्तर हमारी सामाजिक कहानियोंके आभ्यन्तरसे भिन्न होता है क्योंकि वहाँका सामाजिक विकास, रीति-रिवाज और सस्कृति यहाँसे भिन्न है। किन्तु ऐतिहासिक कहानियोंकी कथा-शैलीके बारेमें बिलकुल यही बात नहीं कही जा सकती। जब हम इतिहासकी सामान्य गतिविधिकी खोज करते है, तो हमें पता लगता है कि भिन्न-भिन्न देशोंमें तत्कालीन सामाजिक संस्कृति भिन्न-भिन्न होते हुए भी सामाजिक विकास लगभग एक-से सिद्धान्तोंपर आश्रित रहा है। कही कोई सिद्धान्त जल्दी अमलमें आ गया है कहीं देरमें। किसी-किसी देशने विकासकी कोई मञ्जिल लॉघ भी ली है—यह एक अलग बात है, अलग विषय है। लेकिन किसी देशका ऐतिहासिक विकास निरखने-परखनेमें हमे आमतौरसे उन नियमों और सिद्धान्तोका ध्यान भी रखना

ही पड़ता है, जिनका सम्बन्ध सारे विश्वके ऐतिहासिक विकाससे है। इसके सिवा कोई चारा भी नहीं है क्योंकि बहुत अधिक विवरणमें जानेका सुभीता तो हमारे पास, वर्त्तमानकी तरह, होता ही नहीं। तब पश्चिमी ऐतिहासिक कहानीकी शैली और तत्सम्बन्धी भारतीय शैलीमें हमें यदि वह समानता अधिक मिले, तो आश्चर्य नहीं। वह समानता निम्नलिखित रूपोंमे मिलती है :

पश्चिमने ऐतिहासिक कहानी और उपन्यासमें रोमास और रोमाटिसिज़्मको प्रायः ही प्राथमिकता दी है। फलतः भारतमें भी ऐतिहासिक कथा-लेखकोंने इन्हीं दो चीजोंका विशेप रूपसे ध्यान रखा है। सामन्तकालीन वीरगाथाओंसे प्रभावित होकर भारतके अनेक कथा-लेखकोंने ऐतिहासिक कहानीकी रचना की है। स्वयं मैंने भी कुछ ऐसी ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं। कुछ लेखकोंने स्वामि-भक्ति जैसे विपयको लेकर भी कथा-रचना की है। उचित-अनुचित रोमांस तो ऐतिहासिक कथाओंमें बहुत प्रचलित रहा है। इस प्रकारकी कहानियोंमें यों ऊपरसे देखनेमें कोई दोष कथावस्तुकी दृष्टिसे दिखाई नहीं देता—पर हमारी वर्त्तमान समाज-रचनाके विकासको जिन वास्तविक और यथार्थ दिशासंकेतोंकी आवश्यकता है उन्हें न केवल ये कहानियाँ पकड नहीं पातीं, बल्कि उनकी उपेक्षा करके प्राचीन जर्जर रीति-नीतिके पोषणका दोष भी इनपर आता है। भावी राज्य और समाजकी जो रूपरेखा अब धीरे-धीरे नवभारतकी जनताके मस्तिष्कमें उभर रही है उसकी ओर इंगित करने अथवा उसके अनगिनत सामाजिक आधारतत्त्वोंमें से किसीको उभारनेका दायित्व ऐतिहासिक कथाके ऊपर इसलिए आता है कि वह ऐतिहासिक कथा है। अब तक तो चाहे जो कुछ रहा हो, पर अब नई ऐतिहासिक कथाकी यही विशेषता होनी चाहिए। उदाहरणके लिए हमने एक भारत देश कहलानेके लिए जिस प्रकार प्राचीन राज्योंकी सीमाओंको तोड़ा, उसी प्रकार नई समाजवादी रचनाके लिए और परमाणु युद्धके भयंकर परिणामोंसे बचनेके लिए हमें मानवीय

सम्बन्धोंके बीचसे देश और राष्ट्रकी सीमाको भी हटानेका प्रयत्न करना चाहिए। तभी शान्तिके साथ हम नई समाजवादी रचनाकी ओर प्रगति कर सकेंगे। किन्तु ऐसा करते हुए जहाँ हम विदेशियोंके प्रति अपने हृदय खोलेंगे, वहाँ अपने राष्ट्रकी स्वतन्त्र इकाईको भी नहीं भूल सकेंगे और मातृभूमिकी स्वतन्त्रतापर प्राण-विसर्जन करनेकी आवश्यकता पड़े, तो करना ही होगा। इन दोनों तथ्योंको प्रतीक रूपमें मैंने इस संग्रहमें संग्रहीत कहानी "कौवेका घोंसला" में देनेका नन्हा-मोटा प्रयत्न किया है। इन तथ्योंके आपसमें टकरानेसे जो संघर्ष और विडम्बनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं उनका एक आभास इस कथाके रोमांसमें मिल सकेगा।

इसी प्रकार मेरी एक प्रारम्भिक रचना 'गिरजेका कंगूरा' है। उस समय ऐतिहासिक कहानीकी धारा मेरे नामके साथ जुड़ी नहीं थी। अपने परिवारकी एक दन्तकथाके आधारपर मैंने यह कहानी लिखी थी। अपने धर्मके प्रति अत्यधिक कट्टर होना हमारी नई समाज-रचनाकी कल्पनाके अनुकूल नहीं है। किन्तु हमारी प्रताड़ित भावनाएँ, जो नितान्त व्यक्तिगत होती हैं, किस प्रकार दूसरेके धर्मके ऊपर उबल पड़ती हैं, किस प्रकार उसकी धर्मध्वजा उखाड़कर अपने गिरजेका कंगूरा ऊँचा करनेको प्रेरित करती हैं, इसका छोटा-सा चित्रण इस कहानीमें करनेका प्रयत्न किया गया था।

इसी प्रकार 'सैल्यूकसकी बेटी' पवित्र वैवाहिक सम्बन्धको राजनीतिक कूटनीतिसे अलग करती है। यही नहीं, विदेशियोंके स्वभाव, रीतिनीति और संस्कृतिके प्रति जो घोर घृणा हम जत्र-तत्र प्रदर्शित करते हैं और अपनी ही संस्कृति, सभ्यता और रिवाजोंको श्रेष्ठ माननेका जो हीनमन्यता-मूलक आग्रह हमारे भीतर है उसे 'सैल्यूकसकी बेटी' थोड़ी-सी राहत देती है।

सभी कहानियोंका तत्त्व-विवेचन करना यहाँ अभीष्ट नहीं है। मेरी सभी ऐतिहासिक कहानियाँ आधुनिक कथा-रचनाकी इस आवश्यकताकी

कसौटीपर खरी उतरती है यह भी कहनेका दंभ मेरे भीतर नहीं है। किन्तु ऐतिहासिक कथाकी रूप-रेखाके बनाते समय यदि इन मूलभूत तथ्योको नजरअन्दाज किया जाये, तो इस युगका प्रतिनिधित्व करनेवाली ऐतिहासिक कहानी वह नहीं कहलायेगी !

ऐतिहासिक कहानीके क्या क्या दायित्व है इस विषयमे अभी भारतीय कथा-लेखकोंमेंसे अधिकतर कुछ निश्चित नही कर पाये। यही कारण है कि ऐतिहासिक कथा-रचनाका क्षेत्र यहाँ अभी बहुत सीमित है...पर इसकी माँग बहुत अधिक है। सामान्य पाठक ऐतिहासिक कहानी चावसे पढ़ता है और सम्पादक लोग भी चावसे छापते है। अतः इस ओर नये प्रयत्न किये जानेकी बडी आवश्यकता है। तभी ऐतिहासिक कहानीकी रूपरेखा और उपादेयता विकसित हो सकती है। अतः सामान्य रूपसे ऐतिहासिक कहानीके क्या क्या मूल गुण होने चाहिए इसकी एक झलक अपने अनु-भवसे यहाँ दे देना भी कुछ असगत न होगा :

ऐतिहासिक कहानीका काम केवल ऐतिहासिक तथ्योका निवेदन करना नहीं है, न लखनऊके भाँडोकी तरह जर्कबर्क कपड़े पहनकर सम्पूर्ण नवीनताका मखौल उसे उडाना है, न ही इतिहासकी पृष्ठभूमिके अनगिनत छलछिद्रोंको मूँदना है। ऐतिहासिक क्रीडास्थलीके खिलाडियोंमेंसे किसीके प्रति अनुचित सहानुभूति उत्पन्न करना या किसीके प्रति घोर घृणा उत्पन्न करना भी ऐतिहासिक कहानीका काम नहीं है। रस-भंग करके इतिहास पढाना उसका कर्त्तव्य नहीं है। ऐतिहासिक कहानी आखिर तो बेचारी कहानी ही है। उससे अनुपयुक्त आशाएँ नही करनी चाहिए।

और यदि हम नारीको कहानीका प्रतीक मानकर चलें, तो एक सीधी सादी देहातिनके कपड़े पहने भी हम नारीको देखते है। शहरकी छैल-छबीली और कटरोकी नीलपरी भी नारी है। पूर्णतः पाश्चात्य वेशभूषाके रगमें रँगी, भारतके वातावरणसे ऊबी हुई, ऊपरसे मस्त, भीतरसे त्रस्त, फैशनकी पुतली भी नारी है। कहानी इस रंगारंग नारीका ही शब्द-प्रति-

रूप है। नारीकी समस्त विशेषताओका समावेश उसमे मिलता है। कहानी एक ऐसी पहेली है, जो मनुष्य-समाजकी समस्याओको अपनी विशिष्ट नारीसुलभ प्रवृत्तियोंसे सुलझाती है। ऐतिहासिक कहानी विश्वके ऐतिहासिक विकासकी नारी है। नारीको छूना तो वर्जित नहीं है—पर ग़लत पुरजेपर हाथ न पड जाये यही अपेक्षित है। वह प्रेमिका और पत्नी बनकर आपको रोमासके झूलेमे झुलाती है, माँ बनकर आपको सही दिशा-सकेत देती है, बहन बनकर आपको हँसाती-रुलाती है, वेश्या बनकर कभी-कभी आपकी सेक्समूलक प्रवृत्तियोको अनावश्यक रूपसे उभारती है और आपका मनोरजन करती है, किन्तु अपने समयका तर्कसंगत प्रतिनिधित्व यदि ऐतिहासिक विकासकी यह नारी नहीं करती, तो उसमें बनावटका दोष आ जायेगा और आश्चर्यकी बात तो यह है कि ऐतिहासिक तथ्यो, वातावरण, रीति-रिवाजों, तौर-तरीकोंको जैसे-के-तैसे दिखानेकी अत्यधिक सतर्कता भी बनावट पैदा कर देती है। अतः ऐतिहासिक कहानीको पढ़ने या रचने दोनोमे ही प्राचीन समाजका यथारूप चित्रण खोजना एक बहुत बडी ग़लती है। 'ऐसा ही हुआ होगा' यह समझमे आ जाये ऐसा चित्रण तो हो सकता है। किन्तु जैसा हुआ होगा वैसा ही चित्रण करना किसीके लिए भी असभव है।

ऐतिहासिक कहानीके विषयमे यही थोडा-सा निवेदन मुझे करना था। इस संग्रहकी कुछ कहानियाँ 'सरिता' से ली गई हैं। उसके सचालकोंके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

८५ भाटवाडा, मेरठ
२७ मई १९५७ ई०

विषय-क्रम

सैल्यूकसकी बेटी

सन् ३०६ ई० पू० के लगभग सिकन्दरके दुर्दान्त सेनापति सैल्यूकसने फिर एक बार सिकन्दरके अपूर्ण स्वप्नको चरितार्थ करनेकी चेष्टा की। किन्तु भारत-सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्यके धनुर्धरोंने उसे सिन्धुसे आगे बढ़नेका अवसर नहीं दिया। इसके बाद भारतीय सेनाओंने यूनानी सेनापतिका पीछा करना आरम्भ किया और पूर्वी ईरान तक पहुँच कर फिर एक बार शक्ति-सतुलनके लिए तत्पर हो गईं।

सैल्यूकसने सन्धिका प्रस्ताव रखा। भारतवर्ष और अफगानिस्तानपर चन्द्रगुप्त मौर्यका एकच्छत्र राज्याधिकार मान लिया गया। मित्रता स्थापित हो गई और इसके चिह्नस्वरूप चन्द्रगुप्तने यूनानियोंको वह भेंट दी, जो उनके लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी। भारतका हाथी यूनानियोंके लिए सदासे आश्चर्यकी चीज थी। चन्द्रगुप्तने पाच सौ हाथी सैल्यूकसको भेंट दिये और सैल्यूकसने इस मित्रताके सम्बन्धको चिरस्थायी रखनेके लिए अपनी बेटी हेलेनका विवाह चन्द्रगुप्तके साथ कर दिया।

पाटलिपुत्रके जनोंने अपने विजयी सम्राट् और उसकी नवीन रानीका अभिनन्दन करनेके लिए नगरके तोरणद्वारोंको सजाया, सडकोंपर गंगाजल छिडका, और चन्द्रगुप्तके पुनरागमनको रातको दीपावली मनाई। पाटलि-पुत्रके मुख्य द्वारमें प्रवेश करते ही सुन्दरी हेलेनका स्वागत लाखों परवानोंने किया।

आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य प्रदर्शनकी वस्तु बनना पसन्द नहीं करते थे। अत. मुख्य द्वारपर आते ही उन्होंने सुविज्ञ मन्त्री राक्षसका हाथ थामा और एक शीघ्रगामी अश्वरथमें खडे होकर वह जनताका तुमुल अभिनन्दन स्वीकार करते हुए तेजीके साथ विस्तीर्ण राजपथके बीचसे

निकल गये। पीछे जोर जोरसे हर्षध्वनि करते हुए ढोल और नगाड़े आये। उनके पीछे एक विशाल हाथीपर स्वयं चन्द्रगुप्त था, जो लोगोंकी प्रसन्नता, रव और उछलकूदकी ओर ध्यान दिये बिना उसी प्रकार धीर-गम्भीर, राजप्रासादकी ओर बढ़ रहा था, जिस प्रकार भारतके एक एक भागको अधीन करके वह अनेक बार लौटा था। उसकी मुद्रासे लगता था कि वह विजेता है, विजय प्राप्त करना उसके लिए दैनिक कार्य है, और उसके लिए इतना शोर मचाना व्यर्थ है।

उसके पीछे भालेबन्द भारतीय सैनिकोंकी अष्टदली पंक्ति थी। फिर ऊँटोंका लम्बा काफिला था। फिर यूनानी अगरक्षकोंका एक सुदृढ दस्ता था, जिसके बीचमें घिरा हुआ यूनानी सुन्दरी हेलेनका हाथी अपनी विशिष्ट चालसे हेलेनको रिझाता हुआ खरामा-खरामा बढ रहा था। हाथीपर पीछे उसकी अभिन्न सखी गैलेशिया उसके ऊपर लगे छत्रका स्वर्णदण्ड पकडे खडी थी। हाथीके पीछे यूनानी अगरक्षिकाएं कसे हुए सैनिक वस्त्रोंमें सुसज्जित बराबर-बराबर चार पंक्तियोंमें आ रही थीं।

हेलेनकी अवस्था विचित्र थी। गभीरता उसको छू भी नहीं गई थी। केलेके सुकोमल गोभकी भाँति उसकी बाँह बार-बार किसी उछलते हुए भारतीयकी ओर उठकर उसके अभिनन्दनको हर्षातिरेकसे स्वीकार करती थी। थोडी-थोडी देरमें वह गैलेशियाकी ओर अपनी सुराहीदार गरदन मोड़कर मोती चमका देती थी। चपल चञ्चलाकी भाँति वीथिकाओंसे झाँकती हुई कुलललनाओंके बिखरते हुए हास्यमें वह अपना हास्य मिला देती थी। उसकी आँखें पाटलिपुत्रकी उस अपूर्व दीपमालिकासे प्रभासित होकर दो अल्हड ज्योतियोंकी भाँति नाच रही थीं। उसके आसनके चारों ओरकी हौदी गृहलक्ष्मियोंके द्वारा फेंके हुए पुष्पोंसे भर गई थी। अधिक उत्साही दर्शकोंको हाथीके निकट आते देखकर वह उन पुष्पोंकी मुट्ठियाँ भर-भरकर उनपर उछाल देती थी।

हेलेन भीतरसे जो कुछ थी वही बाहरसे दिखाई पड रही थी। अठारह

वर्षकी एक अधीर, अगम्भीर, चंचल बालिका जिसने जन्मसे ही भारतकी चर्चा सुनी थी, और आज उसके दर्शन किये थे।

पाटलिपुत्रके काष्ठप्रासादमें भी हेलेनका स्वागत कम उत्साहके साथ नहीं हुआ। हेलेन जब नीचे उतरी, तो पट्टरानीने उसे हाथोंहाथ लिया। हेलेनने ग्रीक भाषामें कुछ कहा, जिसे सिवा उसकी अभिन्न सहेलीके और किसीने न समझा। इसपर हेलेन बेचैनी और चपलतासे इधर-उधर देखने लगी। यूनानी अंगरक्षिकाओंमेंसे एक आगे निकलकर आगे आई और हेलेनने फिर अपने शब्द दोहराये। अंगरक्षिकाने मागधीमें अनुवाद करके हेलेनका मन्तव्य पट्टरानीको समझाया :

"यूनानकी कली कहती है कि क्या आप उसकी सहेली बनेंगी?"

पट्टरानी गम्भीर और शिष्ट थी। उसने शालीनतासे उत्तर दिया, "क्यों नहीं? यहाँ हम सब बहनें हैं।"

"यूनानकी कली कहती है कि आप तैरना तो जानती हैं न?"

पट्टरानीके पीछे खड़ी अनेक रानियोंने मुँहमें पल्ले देकर हास्यको बिखरनेसे रोका। पट्टरानीका मुँह लज्जासे लाल हो गया। उन्होंने इस प्रकारके प्रश्नकी प्रत्याशा न की थी। मगधकी राजरानीका तैरनेसे क्या वास्ता? यह चुहल तो छोटी-छोटी लड़कियोंको शोभा देती है। उन्होंने शिष्टताके साथ कहा, "राजभवनके भीतर ताल है। वह कमलोंसे ढँका है। छोटी बहन चाहेंगी, तो कमलोंको हटाकर उसमें स्वच्छ जल भरवा दिया जायगा। परंतु अभी तो राजमहलमें चलकर उसे यात्राकी थकान उतारनी है और फिर कई दिन तो उत्सव, गान और मंगल-समारोह चलेंगे।"

राजभवनकी चारों ओर फैले हुए उद्यानकी सुगन्धित वायुको जी भर-कर सूँघते हुए हेलेनने प्रसन्नतासे कहा, "डीडो, मेरी इन सब बहनोंसे कहो कि मुझे मित्र बनाना बहुत पसन्द है। मित्र तीनकी संख्यामें अच्छे होते हैं। इनमेंसे जो सबसे पहले मेरे कानमें कहेंगी कि वे मेरा मित्र होंगी

उनमेंसे प्रथम तीनको मैं एक मीठी, मदभरी यूनानी कहानी सुनाऊँगी—जिसे सुनकर वे खानापीना तक भूल जायेंगी।" और यह कहकर वह खिलखिलाकर पट्टरानीके माथेको चूमती हुई आगे बढ गई।

कुछ विस्मित-सी, हेलेनके द्वारा कहे हुए वचनोंका उल्था सुनती हुई पट्टरानी पीछे रह गई। अनेक रानियाँ उस स्वच्छन्द वनकी चिड़ियाके साथ-साथ लग गईं और अपलक नेत्रोंसे उसके उस द्विगुणित सौंदर्यको निहारने लगीं, जो उसके हाससे और भी अधिक तीव्र और चञ्चलतासे और भी अधिक मुखर हो रहा था। उनमें जो छोटी आयुकी थीं उन्हें लगा मानो राजमहलके रीति-रिवाजके बोझसे दबे उनके अंतरसे ही कोई अँगड़ाई लेकर उठा है और हेलेनके रूपमें प्रकट हुआ है। जो बड़ी आयुकी थीं, वे उसके प्रत्येक हावभावको उत्सुकता, आश्चर्य और उद्वेगके साथ निरख रही थीं। राजमहलके मुखद्वार पर जब अनेक रानियोंने दासियोंके हाथोंसे आरतीके थाल लेकर हेलेनकी आरती उतारनी आरम्भ की, तो वह आश्चर्य और बच्चों-जैसी सरलताके साथ होठोंको गोल किये, नेत्रोंको विस्फारित किये उन्हें देखती रही। उसने गैलेशियासे पूछा: "क्या है यह?"

गैलेशियाने डीडोकी ओर देखा। उसने आगे बढकर बताया: "ये रानियाँ इन दीपोंसे आपके भविष्यका पथ उज्ज्वल कर रही हैं, रानी हेलेन।"

"ओह!" हेलेनने असीम आश्चर्यका भाव प्रकट करते हुए हास्यपूर्ण स्वरमें कहा, "मैं समझी थी कि ये सब मिलकर मुझे डरा रही हैं!"

डीडोसे पट्टरानीने हेलेनकी बात सुनी और उन्हें पहली बार हेलेनकी बात बुरी लगी। हास्यकी भी एक सीमा होती है। नई आई विवाहिताको तो थोड़ी-बहुत लज्जा चाहिए, और यदि विदेशी रमणियोंमें यह न भी होती हो, तो पवित्र प्रथाओंका सम्मान तो करना ही चाहिए। मगर हेलेन अब तक दूसरे काममें उलझ चुकी थी।

द्वारके भीतर जानेके स्थान पर हेलेन द्वारसे कुछ दूरीपर खड़े काठके एक सफेद हाथीके पास फुदककर पहुँची। परिचारिकाओंने तुरन्त प्रकाश वहाँ तक पहुँचाया, जब कि रानियाँ सबकी सब द्वारपर खड़ी इस विचित्र उच्छृंखल नवेलीको निरखती रह गईं।

हाथीपर चारों ओरसे हाथ फेरकर हेलेनने गैलेशियासे कहा, "यह तो काठका मालूम होता है।"

"शायद," गैलेशियाने कहा।

फिर रानियोंने देखा कि हेलेनके संकेतपर गैलेशिया हाथीके नीचेको होकर दूसरी ओर निकल गई, और फिर उसी मार्गसे वापस आई। उसने हेलेनसे कहा, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।"

दोनों उछलती हुई फिर वापस रानियोंके बीचमें आईं। हेलेनने डीडोने कुछ कहा। डीडोने पट्टरानीसे विनम्र शब्दोंमें निवेदन किया, "क्षमा कीजिये, रानीजी, रानी हेलेन कहती है कि वह बहुत अधिक उत्सुक हो गई थी। अब आप उन्हें जहाँ चाहें ले जा सकती हैं।"

रानी हेलेनकी चर्चाको लेकर शीघ्र ही सारा राजप्रासाद हँसीके गोल-गप्पोंसे महकने लगा। हेलेनकी ओरसे प्रति पल एक नीतिविरुद्ध हलचल की आशंका रहती थी। उसका प्रत्येक पग अनिश्चित था। स्नानके समय उसने भारतीय परिचारिकाओंसे कुछ देर बड़े शौकसे उबटन मलवाना आरम्भ किया। किन्तु जब वे उसके चेहरे पर भी उसे मलने लगीं, तो वह घबराकर खड़ी हो गई। बहुत समझाने पर भी वह स्नान-प्रसाधनकी शेष क्रियाओंका प्रयोग अपने शरीर पर करानेके लिए तैयार नहीं हुई। इसके साथ ही उसने वस्त्र लेकर तुरन्त सारा उबटन बदनसे पोंछनेकी चेष्टा की। बच्चों की तरह चिल्लाकर उसने भारतीय परिचारिकाओंको कक्षसे बाहर निकाल दिया और बड़ी रानीसे कहा कि वह तालपर नहायेगी। ताल रात्रिमें ही तैयार नहीं हो सकता था। फलत: पानीकी हौदीको उसने स्वच्छ

जलसे भरवाया और चार घडी तक उसके भीतर लेटी रही। तब तक गैलेशिया यूनानी मसालो और ब्रशसे उसके बदनको रगडती रही।

सैल्यूकस-विजयकी राजनीतिक सम्भावनाओंपर विचार करनेके लिए बहुत रात तक मौर्यकुलश्रेष्ठ राक्षस और चाणक्यसे विचार-विमर्श करते रहे और अन्तमे शेष बाते कलपर उठा रखनेके लिए छोड़कर उठ गये। चलते समय चाणक्यने राक्षसको बाहर निकल जानेका अवसर देते हुए चन्द्रगुप्तसे कहा, "वत्स, यूनानी सुन्दरीका विवाह मैंने तुम्हारे साथ हो जाने दिया है। किन्तु ध्यान रखना, वह शत्रुकी पुत्री है। वह बहुत वाचाल और उच्छृंखल प्रतीत होती है और उच्छृंखल व्यक्तिके द्वारा होनेवाले कर्मका कोई अनुमान नही होता। विश्वास और असावधानी किसी नरेशका सिर काटनेके लिए दैवी दुधारा होता है।"

चन्द्रगुप्तने कौटिल्यको प्रणाम करते हुए कहा, "आप निश्चिन्त रहिए, आचार्य। चन्द्रगुप्त आपका शिष्य है, किसी दूसरे का नही।"

बाहर निकलने पर राक्षस प्रतीक्षा करता दिखाई पडा। चन्द्रगुप्तके साथ-साथ चलता हुआ वह बोला, "राजन्, यूनानका पुष्प सभवतः बहुत चंचल होता है। हवाके तनिकसे झोकेसे ही वह गुदगुदीका अनुभव करता है।"

"जी हाँ," चन्द्रगुप्तने कहा, "परन्तु अपनी नजरको रोकिये। यह नजर, जो पत्थरको भी फोड देती है, बेचारे यूनानी फूलको बहुत महँगी पड़ सकती है।"

"हरे, हरे!" राक्षसने कहा, "तनिक मेरे बुढापेका ध्यान करो, राजन्! हाँ, आचार्यको यह बात कहते, तो उचित हो सकता था। वह बुढापेमें भी सजीव है।"

चद्रगुप्त राक्षसके साथ की हुई हँसीसे प्रसन्न होता हुआ पट्टरानीके महलमे पहुँचा, तो उसने देखा कि उनका मुँह फूला हुआ था।

"कहो, रानी," चन्द्रगुप्तने चादर उतारकर परिचारिकाके हाथमें देते हुए कहा, "यूनानी पुष्प कैसा लगा ?"

"ऐसा कि उसके आनेसे यहाँकी सारी वाटिकाके फूल खिलखिला कर हँस रहे है", रानीने श्लेषमे कहा ।

"खिलखिला कर हँस रहे है ! अर्थात् यूनानी पुष्प सभीको बहुत अधिक भाया है ?"

"इतना अधिक कि हँसते हँसते सभी पुष्पोंकी पखडिया झडी जा रही हैं।"

"ओह ! पखडिया झडी जा रही है ! परन्तु यह श्लेष हम नहीं समझे । तुम कोई गभीर बात कहना चाहती हो, रानी ?"

"गभीर तो अब कुछ भी नहीं रहा । ऐसा लगता है कि या तो वह मूर्ख है और सारा रनिवास उसके साथ मूर्ख बन गया है । या फिर वह बुद्धिमती है और हम सब जन्मजात जड हैं !"

"अर्थात् ?" चन्द्रगुप्तने आश्चर्यसे पूछा ।

"अर्थात् यह कि राजमहलकी प्रत्येक मर्यादा भग हो रही है । किसीको सभ्यता, शालीनता, नीति-नियमका ध्यान नहीं । रानियाँ और दासियाँ एक ही पक्तिमे खडी होकर हास्यालाप कर रही है और वह यूनानी छोकरी समझती है कि वह सैल्यूकस सेनापतिकी बेटी नहीं है, ससारके विधाता की बेटी है !"

"ओह ! मालूम होता है मामला अनुमानसे भी अधिक गभीर है," चन्द्रगुप्तने कहा । फिर उसने हेलेनकी सभी हरकतोका पूरा चिट्ठा सुना । सुनकर हँसते हुए कहा, "सुनो, रानी, तुम सभवतः नही जानती कि हमने यह राजनीतिक विवाह किया है । शत्रुने हमसे मैत्री स्थापित करनेके लिए हमारे रक्तसे अपने रक्तका सबध जोडना चाहा और राजनीतिक दृष्टिसे हम इनकार नही कर सके । अन्यथा उस यूनानी राजकन्यासे हमे कोई मोह नही था । तुम जानती हो तुम हमें सबसे प्रिय हो । उसके साथ हमारा

केवल वासनाका संबध रह सकता है, मोह अथवा प्रेमका नहीं। फिर वह तो पराजित शत्रुकी कन्या है। तुमसे अथवा अन्य रानियोसे उसके ऊँचे उठनेका तो कोई प्रश्न ही नही उठता। कुछ ही दिनोमे वह समझ जायेगी कि अन्य रानियाँ उसके कार्यकलापोसे मुदित नहीं हो रही है, बल्कि स्वय उसीके ऊपर हँस रही हैं। तब वह गभीर हो जायेगी।"

पट्टरानीके मिजाज कुछ नरम हुए। उसने उतरते हुए कहा, "कह रही थी कि 'मुझे मित्र बनाने बहुत पसद हैं और मै तीन रानियोको अपना मित्र बनाऊँगी क्योंकि तीन मित्र अच्छे होते हैं!' एक नई-नवेली रानी और इतने अशिष्ट विचार प्रकट करे। तीन मित्रोमे क्या तर्क है? कही ऐसा न हो कि आपका यह राजनीतिक विवाह"

"हम उसके लिए अलग एक छोटा-सा प्रासाद बनवा देगे और उससे कोई विशेष संपर्क नहीं रखेगे," चन्द्रगुप्तने पट्टरानीको आश्वासन दिया। "अब बताओ हम उसे कहाँ पा सकते है? हम स्वय भी देखना चाहते है कि उसका व्यवहार कहाँ तक सहनीय है।"

पट्टरानीने बताया कि वह नाट्यशालामे है, जहाँ उसके लिए स्वागत-समारोहका आयोजन था। अन्तःपुरकी इस नाट्यशालामे केवल रानियाँ और दासी-अभिनेत्रियाँ ही भाग लेती थीं। अपने धीर-गंभीर, शूरवीर पतिको मार्ग दिखाती हुई स्वय पट्टरानी उन्हे नाट्यशाला तक लिवा ले चलीं। वह चन्द्रगुप्तको दिखाना चाहती थीं कि किस प्रकार वह नई-नवेली उछल-कूदकर और अशिष्टतासे तालियाँ बजाकर नृत्यागनाओका नृत्य देख रही होगी।

मगर पट्टरानी उतनी आशा नहीं कर सकती थी, जितनीके साज-सामान वहाँ उपस्थित थे। नाट्यशालामे रग दूसरा ही था। वास्तवमे नृत्यागनाएँ और अभिनेत्रियोंके वेश धारण किये हुए अनेक दासियाँ मचसे नीचे, दोनो ओर पक्तिबद्ध खडी थी। रानियाँ अपने आसनोपर चित्रलिखित-सी बैठी थीं—और मच पर?

नचकी एक ओर खड़ी गेलेशिया संगीतकी एक मधुर तालमें तालियाँ बजा रही थी और हेलेन सचमुच चपलाकी भाँति, अपने तीव्रगामी यूनानी नृत्यमें, कभी यहाँ कभी वहाँ कौंध रही थी। संगीतका एक समा बँधा हुआ था और अनेक रानियोंके सिर धुनके साथ-साथ हिल रहे थे। यूनानी अंगरक्षिकाओंमेंसे दो ने साज सँभाल रखे थे।

पट्टरानी कुछ कह रही थी। किन्तु चन्द्रगुप्त कुछ पलके लिए यूनानी संगीतकी नवीन मधुरतामें खो गया। फिर सहसा ही सजग होकर उसने कहा, "रानी, हम कल इसके लिए हेलेनकी तर्जना करेंगे।"

अगले दिन संध्यातक हेलेनके इस मौजी स्वभावकी चर्चा सारे पाटलिपुत्रमें फैल गई। समाचार यहाँतक उड़ा कि उसने सारे रनिवासको पागल बना रखा है और दो-चारको छोड़कर सारी रानियाँ उसके चक्करमें पड़ गई हैं। विशेष रूपसे छोटी आयुकी रानियाँ तो हेलेनको घेरे रहती हैं।

रातके समय चन्द्रगुप्तने जल्दी ही कौटिल्यसे विदा ली। हेलेनको पतिकी प्रतीक्षा करनेके लिए कहा गया था। उसे भारतीय साड़ी पहनाई गई थी, जो उसने बड़े चावसे पहनी थी। गेलेशिया और डीडो नवीन यूनानी वस्त्रोंसे सज्जित उसके साथ छायाकी तरह लगी थीं। चन्द्रगुप्त की एक अल्पवयस्क रानी अभी भी उसके साथ थी और वह उसे 'ट्रोजनकी लड़ाई' की कहानी सुना रही थी। तभी प्रतिहारीने उद्घोष किया।

'मौर्यकुलश्रेष्ठ, राजराजेश्वर चक्रवर्त्ती परम भट्टारक महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य पधार रहे हैं

भारतीय रानीने कहा, "शेष फिर सुनूँगी। बहुत मनोरंजक कथा है। अब मैं जाती हूँ, बहन।

"बहन नहीं, मित्र", हेलेनने मुसकराकर कहा।

"हो मित्र," कहकर रानी तत्क्षणमें द्वारके बाहर हो गई जहाँ

द्वारमे प्रवेश करते हुए चन्द्रगुप्तने उसको उँगलीसे रुकनेका संकेत करते हुए कहा, "रानी, तुम यहाँ क्या कर रही थी ?"

"मैं, महाराज ? मै रानी हेलेनसे एक यूनानी कथा सुन रही थी," रानीने उत्तर दिया।

"हूँ ।" चन्द्रगुप्तने उसे तीव्र दृष्टिसे देखा। किन्तु वह नीची गरदन किये खडी रही। अन्तमे चन्द्रगुप्तने कहा, "अच्छा, जाओ।"

वह कमानसे छुटे तीरकी तरह लोप हो गई।

अब चन्द्रगुप्तने सामने जो दृष्टि की, तो भारतीय वेश-भूषामें हेलेन खड़ी दिखाई दी। दृष्टि अपनी ओर होते देखकर हेलेन बड़े जोरसे खिल-खिलाकर हँस पडी। उसने कहा : "मालूम होता है आज क्रोधमे हो!"

चन्द्रगुप्तने मौन रहकर हेलेनको दो क्षण तीव्र दृष्टिसे देखा।

मगर हेलेनको इस दृष्टिकी चिन्ता नही थी। वह बोली, "चन्द्रगुप्त, यह बडी अच्छी बात है कि तुम यूनानी जानते हो। नही तो हम तुम कुछ भी बात न कर पाते, और डीडो हमारी सारी योजनाएँ जान लेती।"

गैलेशिया होठोको दबाकर हँसी। डीडो चुपचाप कक्षसे निकल गई।

हेलेनने गैलेशियाको बनावटी स्वरमे डाँटा, "हँस मत, गैलेशिया। चन्द्रगुप्त क्रोधमे है। सारी योजना रखी रह जायेगी। वह घोडा निकाल-कर ला।"

गैलेशिया फुरतीसे एक बडी-सी पिटारीके पास गई और उसका ढक्कन उठाकर उसने उसमेसे कुत्तेके आकारका एक घोड़ा निकाला। घोडा लकडीका बना हुआ था और एक तख्तेपर खडा था, जिसमे चार पहिये लगे थे। वह यूनानी कारीगरीका एक सुन्दर नमूना था। हेलेनने प्रसन्न होकर घोडेको एक बडी चौकीपर खडा किया। फिर वह उसके ऊपर हाथ फेरती हुई मग्न स्वरमे बोली, "यह स्पार्टनोका घोडा है। हमे इतना बडा घोडा चाहिए, जो मचपर आ सके। इसका नाटक देखकर सब चकित रह जाएँगे। जब इसके पेटके नीचेका ढक्कन खोलकर रस्सियोंके सहारे

सैनिक नीचे उतरेंगे और सोये हुए ट्रॉयनगरका विध्वंस करना आरम्भ करेंगे, तो सारी रानियाँ हैरतसे दाँतो तले उँगली दबा लेंगी। 'हेलेन'को ढूँढनेके लिए स्पार्टन सैनिक मचको रौंद डालेंगे। तुमने यूनानी पढते समय वह कहानी पढ़ी है, चन्द्रगुप्त ..'ट्रोजन-युद्ध' की कहानी. ? अरे, तुम तो बोलते ही नही !" और हेलेनने घूमकर चन्द्रगुप्तकी ओर देखा। वह चिल्ला उठी, "चन्द्रगुप्त !"

चन्द्रगुप्त क्रुद्ध दृष्टिसे उसकी ओर देख रहा था। उसकी ठोडी नीची हो गई थी और ऊँची उठी हुई पुतलियोंके चारों ओर लाल डोरे खिंच आये थे। गभीर स्वरमें वह यूनानीमे बोला, "सैल्यूकसकी बेटी..."

हेलेनने उसे सुधारा, "नही, सैल्यूकस नाईकेटरकी बेटी..."

चन्द्रगुप्तने इसकी परवा नहीं की। उसका प्रौढ़ मुख अभी भी क्रोधसे तप्त था। वह बोला, "तुमने पाटलिपुत्रके राजभवनमें आकर एक उत्पात खडा कर दिया है। हमे लगता है कि हमने तुम्हारा हाथ थामकर एक बडी भूल की है। यह ठीक है कि तुम्हें भारतीय राजमहलोकी मानमर्यादाका पता नहीं और तुम यूनानके उन्मुक्त वातावरणमें पली हो। लेकिन अगर तुम्हें यहाँ रहना है, तो तुम्हें यहाँकी मर्यादामे बँधना होगा. "

"यह क्या कह रहे हो, चन्द्रगुप्त !" आश्चर्यसे हेलेनने कहा, "यहाँ कोई उत्पात खडा हो गया है ? हा हा हा हा ! यह एक ही रही ! क्या उत्पात है वह, सुनाओ तो ?"

"हम भारतके राजराजेश्वर है...हमने अराकोशिया, गडोशिया, एरियाना जीता है और सैल्यूकस नाईकेटरने तुम्हारी शादी हमारे साथ इसलिए की है कि हमारे राजनीतिक सम्बन्ध अच्छे बने रहे। हम यह स्वीकार करते हैं कि तुम सुन्दर और वाचाल हो। मगर तुम हमारा नाम लेकर हमें इस तरह पुकार रही हो, जैसे हम तुम्हारे क्रीत दास हो !"

हेलेन बडे जोरसे हँस पडी। गैलेशियाको लक्ष्य करके वह बोली : "सुनो, गैलेशिया, भारत-सम्राट् चन्द्रगुप्तको अपने नामसे इतनी चिढ है कि

उसका सबोधन भी उसे पसद नही। सुनो, चन्द्रगुप्तका और मेरा विवाह राजनीतिक विवाह मात्र है। और सुनो गैलेशिया, मेरा पति मेरे सम्मुख अपनी जीतका अभिमान लेकर आया है! वाह, वाह! यह तो बडी बढिया पौराणिक कथा बनती जा रही है।' फिर उसने चन्द्रगुप्तकी ओर बच्चोकी तरह झाँक कर पूछा, "तो मुझे अपने प्रिय पतिको क्या कहकर पुकारना चाहिए, चन्द्रगुप्त?"

चन्द्रगुप्त झल्ला गया। वह बोला, "हमारी बात छोडो। तुमने हमारी अन्य रानियोको बहन न बनाकर मित्र बनानेकी बात कही, और वह भी कुल तीनकी सख्यामे। यह हमारी रानियोका अपमान है।"

"बहुत अच्छे!" हेलेन तालियाँ पीटकर बोली, "तुम्हारी रानियाँ तो तुमसे भी ज्यादा गम्भीर मालूम होती है। उनके साथ विनोद करनेसे उनका अपमान होता है! ओह! यह बात तो मेरे सम्मानित पिताने मुझे बताई थी कि भारतीय रमणियोको शिष्ट विनोद पसद नही। मगर मै भूल गई गैलेशिया, यह तीन मित्र बनानेकी बात किसने की थी?"

गैलेशियाने अपना निचला होठ फिर एक बार दबाकर कहा, "नाईकेटर एलेग्जेडरने, प्रिय हेलेन।"

"देखा तुमने?" हेलेनने चन्द्रगुप्तसे कहा। फिर वह अपनी स्वाभाविक मुद्रासे हँसी। "तुम इतना भी नही समझ सकते, चन्द्रगुप्त, कि महान् वचन महान् विजेताओके मुखसे ही निकलते है! महान् सिकन्दरने ही यह कहा था कि अपरिचित स्थान पर मित्र बनाने चाहिए, यह सबसे पहला काम होना चाहिए, और वे सख्यामे तीनसे अधिक नही होने चाहिए। अब तुम जानना चाहोगे कि क्यो तीन और कैसे तीन—है न?"

हेलेनके उन्मुक्त हास्यके सम्मुख चन्द्रगुप्त क्रोधकी सीमाको पार करनेमें अपनेको असमर्थ पा रहा था। वह झुँझलाया हुआ निश्चल खडा रहा और हेलेनकी वचनावलीको आगे सुननेके लिए उसने धैर्य बटोरा।

"तो सुनो", हेलेनने कहा, "तीन इसलिए कि यदि एक विमुख हो

जाये, तो शेष दो अपनी सम्मिलित शक्तिसे मित्र बनाने वालेको रक्षा कर सकें, तीनसे अधिक हो जाने पर दलबन्दी खडी हो जाती है। और ये तीन मित्र होने चाहिये : एक साहसी, एक विद्वान्, और एक बुद्धिमान् मगर अब तुम पूछोगे कि विद्वान् और बुद्धिमान्में क्या अन्तर है। इसके लिए तुम्हें उस्ताद अरस्तूका शिष्य बनना चाहिए था, जो सत्यके टुकडे करके ही उसे परखनेमें विश्वास रखते हैं।"

चन्द्रगुप्तका रोष अब अदण्डित अपराधीके बराबर अपराध पर आग्रह किये जानेसे समतल हो गया था। वह बोला, "और आरती हो जानेके बाद महलके भीतर प्रवेश न करके, उस सफेद हाथीपर हाथ फेरनेमें भी अवश्य ही महान् सिकन्दरका कोई दर्शन होगा!'

"हा हा हा हा!" यह बात सुनकर हेलेन चहचहाती हुई बोली, "गलेशिया, चन्द्रगुप्तको बताओ कि हमने वह विशाल हाथी क्यों देखा था—मालूम होता है मेरे पतिकी उत्सुकताकी मात्रा भी मुझसे कम नहीं है।"

"प्रिय हेलेन, गलेशियाने निःसकोच भावसे कहा, "यह हाथी तो हम इसलिए देखने गये थे कि ट्रॉयकी हेलेनको जिस प्रकार फिरसे प्राप्त करनेके लिए स्पार्टनोंने लकडीका खोखला घोडा बनवाया था और उसमें अपने वीर छिपाकर रख छोडे थे—जिससे ट्रॉयवाले उस घोडेको अपने किलेमें ले गये और रातके समय उन वीरोंने निकलकर अपनी सेनाओंके लिए ट्रॉयके किलेका मुख्यद्वार खोल दिया तथा ट्रॉयका फला-फूला नगर एक ही रातमें श्मशान बन गया—उसी तरह कहीं सम्राट् चन्द्रगुप्तने भी तो उस हाथीका निर्माण नहीं कराया था।'

'हा हा हा हा!' हेलेनने ठहाका लगाया, "तुमने देखा प्रिय चन्द्रगुप्त, यह शुद्ध और सात्त्विक उत्सुकताका काम था।'

'हूँ!" चन्द्रगुप्तने कहा, "मगर तुम बहुत हँसती हो!"

"इसलिए कि यूनानी हँसना जानते हैं मेरे चन्द्रगुप्त! तुम लोग

हँसीसे डरते हो, आश्चर्य ! उस्ताद अरस्तू कहते है कि यह जिन्दगी स्वयं एक बहुत बडा मजाक है, और जो इसमें हँसनेसे घबराता है उसपर भाग्य एक दिन बुरी तरह हँसता है।"

तीव्र स्वरमे चन्द्रगुप्त बोला, "हेलेन, तनिक अक्लसे काम लो। तुम्हे एक रानीकी तरह व्यवहार करना चाहिए...।"

"मै इस बात पर विचार करूँगी कि रानीकी तरह व्यवहार करनेके लिए कितना हँसना और कितना रोना चाहिए। पर चन्द्रगुप्त, मेरा अत्यन्त विनम्र और गम्भीर निवेदन है कि कृपा करके एक पतिकी तरह व्यवहार करो। तुम सम्राट् हो दूसरोंके लिए, मेरे लिए केवल पति हो, जिसके साथ मुझे जीवन भर हँसना-खेलना है। तुमने मेरे आदरणीय पिता सैल्यूकस नाईकेटरको पराजित किया है, सैल्यूकसकी बेटीको नहीं। जाओ पहले अपने उस्तादसे पूछो कि हेलेनके जीवनका हास्य बन्द करनेके लिए चन्द्रगुप्तको क्या करना चाहिए।"

"हेलेन !" चन्द्रगुप्त चिल्लाया।

"चन्द्रगुप्त," हेलेनने पहली बार गम्भीर और नपे-तुले शब्दोंमे कहा, "मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि पतिके रूपमें मुझे एक शासकके दर्शन होंगे। हेलेन वापस यूनान जायेगी।"

"हेलेन !" चन्द्रगुप्त जोरसे चिल्लाया।

हेलेनने अपने स्वरकी सीमातक तीव्र होकर कहा, "नहीं, नहीं, हेलेन इस दम घुटनेवाले वातावरणमें नहीं रहेगी। यहाँ केवल रानियाँ ही रानियाँ है, नारियाँ नहीं हैं। तुमने आज मुझे रुलाया है, चन्द्रगुप्त। तुम सैल्यूकस नाईकेटरकी बेटीको जीवन भर रुलानेके लिए लाये हो। किन्तु यूनानकी बेटी इतनी जल्दी हार नहीं मानेगी। गैलेशिया, गैलेशिया, मेरी अगरक्षिकाओंको बुलाओ। वापस यूनान जानेकी तैयारी करो. ।"

और वह खिलखिलाती हुई धूप सहसा ही अवसादकी सन्ध्यामे परिवर्त्तित हो गई। हेलेन फूट-फूटकर रोती हुई गैलेशियासे चिपक गई। गैलेशियाने

उसकी पीठपर हाथ फेरते हुए हिंसक शेरनीकी भाँति चन्द्रगुप्तको देखा। उसकी आँखोंमें तिरस्कार था।

अपमान और अप्रत्याशित काण्डसे हतबुद्धि, भारत सम्राट्, शूरवीर चन्द्रगुप्त मौर्य पलभरके लिए किंकर्त्तव्यविमूढ हो गया। फिर पैर पटकता हुआ वह बाहर निकल गया।

उसी रात्रिको जब चन्द्रगुप्तके पास समाचार पहुँचा कि यूनानी अगरक्षिकाएँ बहुत अधिक व्यस्त हैं और लम्बी यात्राकी तैयारियाँ कर रही हैं, उसने तुरन्त कौटिल्यके शयन-कुटीरके सामने पहुँचकर द्वार खट-खटाये। थोडी देरमें द्वार खुल गये।

"क्या है, वत्स?" कौटिल्यने मौर्यकुलपतिसे पूछा।

"आचार्य, मुझे आज फिर आपकी सम्मतिकी आवश्यकता है" और उसने एक ही साँसमें सारी कथा आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्यको सुना दी।

सब कुछ सुनकर विचारशील नेत्र ऊपर उठाते हुए चाणक्यने कहा, "चन्द्रगुप्त, जो बातें तुमने बताई हैं वे यदि अक्षरशः सत्य हैं, तो यह उद्दण्ड नारी सम्राटके घरमें रहनेके योग्य नहीं है। उसका परित्याग करना चाहिए। किन्तु ठहरो, इससे घरकी बात बाहर फूटेगी। यूनानी राजदूत मेगस्थनीजको पता चलनेसे पहले एक बार राक्षसकी सहमति ले लेना आवश्यक है।"

दोनों गुरु-शिष्य उसी समय राक्षसके भवनकी ओर चले। मार्गमें चलते हुए जब आचार्यके मस्तिष्कमें ठढी हवा पहुँची, तो उन्होंने कहा, "वत्स, जल्दी निर्णय करना उचित नहीं। कूटनीतिसे काम लेना पडेगा।"

"परन्तु, आचार्य, यूनानी अगरक्षिकाएँ और हेलेनके निजी सैनिक यात्राकी तैयारी तेजीके साथ कर रहे हैं..!"

वाटिकाको लाँघकर राक्षसके द्वारपर पहुँचना था। परन्तु उन्होंने आश्चर्यके साथ देखा कि राक्षस अखण्ड विचारमुद्रामें वाटिकाकी रविशों-

पर इधर-से-उधर चक्कर काट रहा है। जब चाणक्यने उसके कन्धेपर हाथ रखा, तो वह चौंक पड़ा।

चाणक्यने कहा, "लगता है इस गहन रात्रिमें गहरा विचार चल रहा है।"

राक्षसने सम्राट्को देखकर हाथ जोड़े और प्रणाम किया। फिर बोला, "विचार तो रात्रिमें ही सुगमतासे हो सकता है, आचार्य। मैं यूनानी दर्शनके बारेमें सोच रहा था, मुख्यत. इस बातपर कि सत्यके टुकड़े करके किस प्रकार उसकी परख की जा सकती है। हम भारतीय आंशिक सत्यसे किसी वस्तुमें सत्यकी स्थापना नहीं करते। परन्तु यूनानी दार्शनिक अरस्तू करता है। कैसे करता है मैं इसका कुछ अतापता पा रहा हूँ।"

"तो फिर लीजिए, समस्या उपस्थित है। उस अतेपतेका प्रयोग इसपर कीजिए—" और चाणक्यने थोड़े और नपे-तुले शब्दोंमें राक्षसके सम्मुख नवीन समस्या रख दी। राक्षस सब कुछ चुपचाप सुनता रहा। फिर वह बोला ·

"आर्यश्रेष्ठ, आप एक मनुष्य हैं—यह पूर्ण सत्य है ?"

"इस प्रश्नका उत्तर देनेकी आवश्यकता नहीं", चाणक्यने हँस कर कहा।

"किन्तु सम्राट्का मनुष्यत्व जब उनके अन्य गुणोंके सम्मुख रखते हैं, तो ममुष्यत्वका गुण पूर्ण सत्य न रहकर एक बड़े सत्यका अंश बन जाता है। सम्राट् 'असाधारण मनुष्य' हैं।"

चाणक्यने राक्षसको गहरी नजरसे देखा। फिर उन्होंने कहा, "मन्त्रीप्रवर, आपकी बात समझमें आनेवाली है।"

"इस असाधारण मनुष्यने सैल्यूकस नाईकेटरको जीता है इससे यह बड़ा सत्य एक और बड़े सत्यमें विलीन हो जाता है।"

"हूँ," चन्द्रगुप्तने हुंकारा भरा।

"और आर्यश्रेष्ठने कुमारी हेलेनका पाणिग्रहण किया, इससे सम्राट्ने

बेबीलोनिया, यूनान और भारतको एक सूत्रमे बॉध लिया, यह बात सम्राट्के व्यक्तित्वको एक अन्य पूर्ण सत्यकी ओर ले गई . ।"

"ये तो सब स्थापित सत्य हैं, मत्रीप्रवर", चाणक्यने कहा ।

"अवश्य, यह एक सत्य नहीं, अनेक सत्य हैं—अथवा किसी पूर्ण सत्य के अनेक अंश हैं । किन्तु ये अश न केवल अपनेमे पूर्ण ही हैं, बल्कि स्वय अलग-अलग अनेक अशोसे निर्मित है । आर्यश्रेष्ठ सम्राट् हैं, विजेता हैं, पति हैं, मनुष्य हैं, प्रौढ मनुष्य हैं, स्वदेशाभिमानी है, और आर्य हैं । ये कुछ पूर्ण सत्य हैं, जो मिलकर एक बडे पूर्ण सत्यका निर्माण करते हैं—कहिए सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्यके अस्तित्वका ।"

"यहॉ तक तो मत्रीप्रवर राक्षसकी बातसे सन्तुष्ट हुआ जा सकता है", चाणक्यने चन्द्रगुप्तकी ओर देखकर कहा, जिसके उत्तरमे सम्राट्ने 'हूँ' की ।

"तब, आचार्य", राक्षसने कहा, "प्रत्येक कठिनाई विरोधाभाससे उत्पन्न होती है । विरोधाभास सत्यके अशोमे विपर्ययत्वसे उत्पन्न होता है । विपर्ययत्व तब उत्पन्न होता है, जब सत्यके किसी अशको पूर्ण सत्य नही माना जाता. "

"अर्थात् ?" चाणक्यने पूछा ।

"अर्थात् सम्राट् एक पति हैं इसे आप और स्वय आर्यश्रेष्ठ पूर्ण सत्य नही मानते, जिसके स्वय अनेक अश हैं । इन्हें केवल अन्य सत्योके आश्रित मानते है । आश्रित वे है, किन्तु पूर्णतः नहीं ।"

"और यदि आर्यश्रेष्ठ पति है इसे पूर्ण सत्य माने, तो ?" चाणक्यने प्रश्न किया ।

"तो फिर आइये, इसके भी खड करें । सम्राट्के पतित्वके अनेक अश उनकी अनेक रानियॉ हैं, जो कुछ अशोमे पृथक् अस्तित्व रखती है, और कुछ अशोमें एकाकार है । पृथक् अस्तित्वमे आयु, स्वभाव, विचार, इच्छाएँ, आकाक्षाएँ आदि है, जिन्हें सम्राट् अपने बृहद् अस्तित्वके कारण अलग-अलग स्वीकार नही करते । सम्राट्को उस बडे अस्तित्वका त्याग करके समयपर

केवल पति-रूप धारण करना पड़ेगा, और प्रत्येक पृथक् अस्तित्वको आत्मसात् करनेके लिए भिन्न-भिन्न पति-रूप धारण करना पड़ेगा, नहीं करेंगे, तो विपर्ययत्व खडा होगा, विरोधाभास उपजेगा, कठिनाई उत्पन्न होगी और वह संघर्षका रूप धारण कर लेगी।"

"शायद हम समझ रहे हैं—तब हेलेनके बारेमें आप क्या कहते है, मंत्रीप्रवर?"

"कही मेरी नजर न लग जाये?" राक्षस मुसकराया।

"ओह! आप भी, मंत्रीप्रवर, बस एक ही हैं?" सम्राट्ने कहा।

"आपका यूनानी पुष्प अपना सर्वथा पृथक् अस्तित्व रखता है और यह एक पूर्ण सत्य है", राक्षसने गम्भीर होकर कहा। "शेष रनिवासकी मान-मर्यादा और आपके प्रौढ व्यक्तित्वके साथ उसका एकीकरण उसी दशामे सम्भव हो सकता है, जब आप इस स्थितिको पूर्ण सत्यके रूपमें स्वीकार कर लें। स्वीकारोक्ति मन, वचन और कर्म तीनोंसे होनी चाहिए। इन तीनों साधनोंमेसे आपने अभी पहला साधन ही नही अपनाया है।"

"पहला साधन क्या होगा?" चाणक्यने रस लेते हुए पूछा।

"मनसे आप एक अठारह वर्षकी चपल, उच्छृङ्खल, सरल, स्वदेशके अभिमानसे भरी यूनानी बालिकाको एक बीस-पच्चीस वर्षके चुस्त, चालाक, सरल और स्वस्थ भोले नवयुवकके रूपमें ग्रहण करें, और उसके सम्मुख आकर भूल जायें कि आप असाधारण मनुष्य हैं, विजेता हैं, सम्राट् है, भारतीय हैं, और प्रौढ है। स्वर्णकी सही परख करनेके लिए कसौटीको किसी-न-किसी अशमें उसीका रूप धारण करना पडता है।"

"तो मैं उसके साथ बच्चोंकी तरह खेलूँ?" सम्राट्ने आश्चर्यसे राक्षसका मुँह देखते हुए पूछा।

"एक अल्पायु, चपल और सरल यूनानी बालिकासे विवाह करके वह खेल आपने प्रारम्भ कर दिया है, आर्यश्रेष्ठ! मेरा निवेदन केवल इतना है कि उस खेलको खिलाडीकी तरह खेलिए।"

"चलिये", चाणक्यने चन्द्रगुप्तसे कहा। "धन्यवाद, मंत्रीप्रवर!"

"आपको भी धन्यवाद, आचार्य", राक्षसने कहा। "यूनानी दर्शनका एक प्रयोग पूरा हो गया है और आपने शेष रात्रि मुझे चैनसे सोनेका अवसर दिया है।"

मार्गमें चाणक्यने कहा, "चन्द्रगुप्त, जिन कलाविदोंने यह काष्ठ-प्रासाद बनाया है, उनको इसी समय बुलाना होगा। तब तक आप हेलेनकी सखीको सूचित कराइये कि सार्थ परसों यूनानके लिए प्रस्थान करेगा।"

और जब हेलेनके पास यह समाचार पहुँचा, तो वह असाधारण रूपसे गम्भीर हो गई। परित्यक्ताके मनकी कड़वाहट उसके हृदयमें भर गई।

उस रात्रिके समाप्त होने तक राजभवनके मुखद्वारके सामने काष्ठ-कारोंके औजारोंकी-ध्वनि होती रही।

हेलेनका अगला दिन बहुत तापपूर्ण रहा। उसने यूनानी अङ्ग-रक्षिकाओंको विभिन्न आज्ञाएँ दीं, जिनका अर्थ था कि केवल वही सामान लिया जाय, जो यात्रामें आवश्यक हो। यूनानी सैनिकोंको अगले दिन सुबह तक तैयार होनेके लिए कहलवाया गया। सारे दिन वह यूनानी पुराणोंकी कथाएँ पढ़ती रही। उनमें सभी तरहकी कथाएँ थीं—पति-मिलनकी भी, पति-विछोहकी भी, पत्नीघात और पतिघातकी भी। उसकी समझमें कुछ नहीं आया। सन्ध्या तक उसकी हँसी, उसकी सरलता, उसकी सौम्यता उसके मुखपरसे तिरोहित हो गई।

रात आ गई और उसका दूसरा प्रहर बीतनेको हुआ। हेलेनकी आँखोंमें नींद नहीं थी। उसके पिता सैल्यूकस नाईकेटर क्या कहेंगे। यूनान क्या कहेगा। यूनानियोंके बारेमें भारतीय क्या सोचेंगे। क्या वह सचमुच आवश्यकतासे अधिक उच्छृङ्खल है?

तभी गैलेशिया बाहरसे दौड़ी दौड़ी आई, "हेलेन, प्रिय हेलेन, हमारा विचार गलत निकला..."

"कौन-सा विचार,? क्या गलत निकला ?" हेलेनने पूछा।

"हाथी वाला," गैलेशियाने जल्दीसे कहा, "उठो तो सही।" गैलेशिया और हेलेन एक सन्देशवाहिका यूनानी अङ्गरक्षिकाके साथ भागी-भागी, ऑगन-पर-ऑगन पार करती हुई महलके दूसरे भागके मुखद्वारके सामने खड़े उसी हाथीके पास आई, जिसे देखकर महलमे प्रवेश करते समय हेलेन आवश्यकतासे अधिक उत्सुक हो गई थी।

"यही न ?" गैलेशियाने अङ्गरक्षिकासे पूछा।

"हॉ", उत्तर मिला।

गैलेशियाने कान हाथीके पेटसे लगा दिया। फिर हेलेनको सङ्केत किया। हेलेनकी उत्सुकता फिर जाग्रत हो गई। हाथीके भीतरसे खट् खट्की हल्की-सी ध्वनि आ रही थी।

हेलेन अलग हटकर हाथीके पेटको ध्यानसे देखने लगी। उसी समय उसके पेटका नीचेवाला भाग हिला और एक चौकोर टुकडा उसमेंसे अलग होकर लकडीके कब्जो पर झूल गया। हाथीके पेटसे एक जजीर बाहर निकली। आतङ्क, उत्सुकता तथा उद्वेगके साथ तीनो यूनानी रमणियोंने देखा कि उसके भीतरसे एक आदमी जजीरपर झूलता हुआ नीचे उतर आया। नीचे आकर वह तेजीसे हेलेनकी ओर दौडा और उसे अपनी बाहुओमे उठाकर एक ओरको भाग खडा हुआ।

यूनानी अङ्गरक्षिकाने चिल्लानेके लिए मुँह खोला, तो गैलेशियाने हथेलीसे उसका मुँह दबा दिया। फिर फुसफुसा कर बोली: "पागल, जानती नही, वह स्वय सम्राट् चन्द्रगुप्त है!"

अङ्गरक्षिकाका मुँह फटाका फटा रह गया।

सुबहको हँसते-मुसकराते हुए हेलेन अपने कक्षसे बाहर निकली और गैलेशियाको बुलाकर उसने कहा, "अब मै वापस यूनान नही जाऊँगी। तैयारियॉ भङ्ग कर दी जाये।"

"क्यों ?" गैलेशियाने मुँहमें रूमाल दबाते हुए पूछा।

"क्योंकि सम्राट् गुरु कौटिल्यसे तुम्हारा विवाह करना चाहते हैं," हेलेनने मुसकराते हुए कहा।

गैलेशियाके मुखकी हँसी लोप हो गई। "नहीं, नहीं।" चिल्लाती हुई वह वापस दौड़ी चली गई और हेलेन अपने स्वभावके अनुसार खिलखिला-कर हँसती हुई अपने कक्षकी ओर लौट पड़ी।

सैल्यूकसकी बेटीके पृथक् अस्तित्वने सम्राट् चन्द्रगुप्तके मन-महल में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था।

• देश-द्रोही

सन् ६०४ ई० के दिन थे। बगालका तत्कालीन शासक शशाङ्क युद्धमें जितना कुशल था, उतना ही अधिक नीतिनिपुण भी था। येन-केन-प्रकारेण विरोधीको मात देना उसकी प्रथम नीति थी। इस समय थानेश्वरके राज्यपर उसकी गिद्ध-दृष्टि थी। इस दृष्टिमे प्रकाश भरनेके लिए एक दिन एक विचित्र व्यक्तिने उसकी राजसभामे प्रवेश किया।

सभामे उस दिन हास्य-विनोदका रंग जमा हुआ था। शशाङ्क स्वयं इस हास्य-विनोदमे योग दे रहा था। वह बहुत प्रसन्न था। उस दिन उसने मदिराका सेवन नित्य-नियमका उल्लङ्घन करके किया था। चर्चा चल रही थी थानेश्वरके राजा राज्यवर्द्धनकी बहन राज्यश्रीको लेकर। अपने पिताकी अचानक मृत्यु हो जानेपर राज्यवर्द्धन कुछ ही दिन हुए राजगद्दीपर बैठा था।

एक मुँहलगा सभासद कह रहा था, "अन्नदाता, सुना है कि थानेश्वर की देवी रोज पतिसे बगालके फलोंकी माँग करती है। इस रोज-रोजके उलाहनेसे बचनेके लिए बेचारे मौखरिनरेशने महलोमे जाना भी छोड़ दिया है।"

शशाङ्कके मुँहपर मुसकान आई और चली गई। "अरे, क्या तुम लोगोंमेसे कोई ऐसा नही, जो देवीके पास समाचार भिजवा सके कि बगालमे वाटिकाओंकी कमी नही है?"

एक अन्य राजपुरुषने कहा, "लेकिन, महाराज, यहाँकी वाटिकाएँ तो उठकर कन्नौज नही जा सकती। वहाँसे देवी स्वय आये, तो चाहे बगालके फल खाये, चाहे यहाँकी वाटिकाओमे..."

"स्वयं ही रहने लगे.. हा...हा .हा !" शशाङ्कने मनके भीतर छिपी वासनाको प्रकट करते हुए एक भारी ठहाका लगाया।

उसी समय द्वारपालने सूचना दी : "महाराज, एक उद्दंड विद्यार्थी आपके चरण स्पर्श करना चाहता है। उद्देश्य नही बताता। हटानेसे हटता नही है।"

शशाङ्क एकदम गम्भीर हो गया। "तो किसीके पुण्यका भागी बननेमे तू क्यो रोडा अटकाता है, रे ? आने दे।"

सभाने देखा कि एक उन्नत ललाटवाले युवकने भीतर प्रवेश किया। उसके पैरोमे एक स्वच्छ धोती थी। शरीरपर एक चादर इस प्रकार लिपटी हुई थी कि उसका दायॉ हाथ उससे पूराका पूरा ढॅक गया था। सीधे-सीधे आकर वह ठीक शशाङ्कके सामने रुका और अपना बायॉ हाथ ऊपर उठाकर उसने कहा, "राजन्, कल्याण हो।"

शशाङ्कने पूछा, "तुम कौन हो ? क्या चाहते हो ?"

"मैं तक्षशिलाका स्नातक कीर्त्तिसेन हूॅ। बगालकी राजसेवाका अवसर चाहता हूॅ। महाराजके उपसेनापतिका पद चाहता हूॅ।"

सभामे उपस्थित सारे राजपुरुष दॉतोंमें उॅगली देने लगे। कोई छोटा-मोटा पद नहीं, सीधे उपसेनापतिका पद ! जिस सभासद्ने राज्यश्रीके प्रसङ्गसे शशाङ्कका मनोरञ्जन किया था वही बोला, "क्या तक्षशिलासे कोई गधा स्नातक बनकर नहीं निकलता ? हमारी सेनामें उपसेनापतियोंकी नहीं, कुछ गर्दभोंकी आवश्यकता है, जो कन्नौज तक फलोंकी वाटिकाओंको ले जा सकें।"

देखते-देखते विद्यार्थीके मुॅहपर रक्तकी लाली उभर आई। राजा शशाङ्क हॅस पडा। उसने सभासद्की ओर उॅगली उठाकर कहा, "पीताम्बर, तक्षशिलाके स्नातकके प्रति यह व्यवहार भद्रोचित नहीं है।"

लेकिन विद्यार्थीका क्रोध सीमा पार कर चुका था। उसने स्पष्ट और तीखी वाणीमे कहा, "नही, तक्षशिलाके महान् विश्वविद्यालयसे गधे

स्नातक बनकर तो नहीं निकल पाते, लेकिन कुछ पीताम्बर गधे रस्सा तुडा-कर कभी-कभी निकल भागते हैं। पकड पानेपर ऐसे गधोकी मरम्मत वहाँ अच्छी तरह हो जाती है।"

पीताम्बर विचलित होकर इस तरह खडा हो गया, जैसे बँधे हुए बाँसका बन्धन खुल जानेपर वह उछलकर खडा होता है। उसकी तलवार बाहर खिंच गई। उसने चिल्लाकर कहा, "महाराज शशाङ्ककी सौगन्ध, जिस व्यक्तिकी मरम्मत यहाँ पर होगी, उसके माथेपर गर्दभराजकी मोहर दागी जायेगी। सावधान, पीताम्बरने हर युद्धमें गिनकर नौ महारथियोका संहार किया है।"

और वह उत्तेजित अवस्थामे आगे बढा। निरीह विद्यार्थीने एक राजसभामे इस विचित्र प्रकारकी उद्दण्डताको निरखकर महाराज शशाङ्ककी ओर देखा। शशाङ्क हँस पडा। अपनी कमरसे खड्ग निकालकर उसने युवक विद्यार्थीकी ओर फेक दिया। "सँभालो!" उसने नशीले स्वरमे कहा, "योद्धाओके साथ बाते करनेमें जीभको ही सबसे अधिक बसमे करना पडता है।"

युवकने ऊपर आते हुए खड्गको सँभालनेकी चेष्टा की, किन्तु तब तक शत्रु सिरपर आ पहुँचा। युवकने विचित्र फुरतीके साथ झुककर शशाङ्कके आते हुए खड्गको अपने दाये कन्धेसे टकराकर भूमिपर गिर जाने दिया और जब तक यह कार्य सम्पन्न हुआ, तब तक पीताम्बरकी कमरसे बँधी हुई कटार निकालकर उसका बायाँ हाथ उसके खड्गके वारको रोक चुका था। खड्गकी धार कटारके फल और कब्जेके जोडपर जाकर झनझना उठी। इतनी लबी तलवारका सन्तुलित वार इतनी छोटी कटारपर रोक लेनेके लिए जिस शक्तिकी आवश्यकता है, उसका यह प्रत्यक्ष प्रदर्शन देखकर शशाङ्क सहित उसके समस्त सभासद् चोक उठे।

इसके बाद कटार और खड्गका यह अद्भुत युद्ध आरम्भ हुआ। एक

तरफ तौल-तौलकर सधे हुए हाथ खड्गका वार कर रहे थे, तो दूसरी ओर साक्षात् चपल विद्युत् उन्हे बचा रही थी। प्रदर्शन बेजोड था। किन्तु दर्शनीय था। आक्रमणका खड्ग सॅभल-सॅभलकर गिर रहा था, लेकिन कटारके कलेवरके अतिरिक्त वह तक्षशिलाके विद्यार्थीके शरीरको नहीं छू सका।

निकट ही था शशाङ्क कि इस असमान युद्धको बन्द करनेकी आज्ञा देता कि विद्यार्थी देखने योग्य चपलताके साथ हवामे उछला। तीन काम एक साथ हुए : युवकके शरीरके भारी धक्केसे नया वार करनेकी मुद्रामे शशाङ्कका वीर योद्धा पीठके बल भूमिपर गिरा, उसके गिरते ही विद्यार्थी उसकी छातीपर सवार हो गया और उसने अपनी कटार हवामे उठाई। नीचे पडा योद्धा सहसा घिघिया उठा—"नहीं, नहीं!" आज हास्य-विनोदके दिन यमलोक सिधारनेका उसका इरादा नहीं था।

शशाङ्कने सिंहासनसे उठते हुए कहा, "युवक, हम वीरोचित पुरस्कारसे तुम्हें लाद देंगे। इस कायरको छोड दो।"

किन्तु युवकने यह सब कुछ नहीं सुना। पराजित नराधमके प्राण उसके बसमे थे। उसकी कटार उसकी ऑखोके आगेसे गुजरती हुई नीचे उतरी, वाक्पटु योद्धाके माथेतक उतरी, कुछ देर वहाँ ठहरी रही और सभाने देखा कि अधोगत व्यक्तिके हाथसे आतङ्कके कारण छुटी हुई खड्गको विजेता पैरोंसे ठोकर मारकर, बिना अपने राजसी आखेटके प्राण लिये ही, उसकी छातीपर से उठ खडा हुआ।

उसके उठते ही ऑखे फाडे विजित योद्धा उठा। सहसा ही सब लोगोंकी नजरे उसके माथेपर जा टिकीं। वहाँ कटारकी नोकसे खूब गहरा गुदा हुआ था यह शब्द : "गर्दभराज!"

सहसा चीख मारकर पीताम्बरने अपना माथा ढक लिया।

युवक अपने दॉत चिकल रहा था। उसकी कटारकी नोक खूनसे तर थी। उसके गालोंकी अस्पष्ट हड्डियॉ रह-रहकर स्पष्ट हो जाती थीं। उसने

भूमिपर माथा पकड़े हुए व्यक्तिको तिरस्कारकी भावनासे देखते हुए कहा, "हमारे विश्वविद्यालयमें रस्सा तुडाकर भागे हुए गधोकी इस तरह मरम्मत होती है।"

लेकिन सभा विस्मयविमुग्ध थी। शशाङ्ककी नजरें युवकके शरीरपर ही थी। वह अपने सिंहासनसे नीचे उतर आया। अपना दायाँ हाथ आगे बढाकर उसने कहा, "हाथ आगे बढाओ। जिस प्रचण्ड योद्धाके बायें हाथमे इतना बल है, हम देखना चाहते है उसके दाये हाथमे एक राजासे हाथ मिलाने योग्य उष्णता है या नही।"

लेकिन युवक चुप खडा रहा। केवल उसका दाँत चिकलना बन्द हो गया था और वह निर्निमेष दृष्टिसे बंगालके शासकको देख रहा था।

शशाङ्क एक पग और आगे बढा। "तुम्हारे सोच-विचारका समय जाता रहा। समृद्धियोंका कोश तुम्हारे लिए अब खुला पडा है।" और यह कहकर उसने युवकके निस्पन्द दायें हाथको हाथ बढाकर पकडना चाहा। किन्तु सहसा ही वह चौक उठा। उसने झपटकर युवककी उस चादरको, जिसकी गाँठ पीठके पीछे कसकर बँधी हुई थी, झटकेके साथ उसके दाये हाथके कन्धेसे उघाड दी। फिर सारी राजसभाने सहसा कलेजा थामकर देखा : युवकका दायाँ हाथ कुहनीके ऊपरसे कटा हुआ था, और कटे हुए स्थानपर अभीतक एक खूनसे तर पट्टी बँधी हुई थी। युवकके पास वास्तवमे दायाँ हाथ था ही नही।

शशाङ्कका सारा नशा हिरन हो गया। वह मुग्ध नेत्रोंसे उस कटे हुए हाथको निहारता हुआ डगमगाते क़दमोंसे पीछे हटा। एक साथ उसके मस्तिष्कमे अनेक प्रश्न चौधिया गये। यही नहीं, सारे राजपुरुषोंके दिमागोमे वे चक्कर काट रहे थे। यह अपूर्व योद्धा वास्तवमें कौन है? कहाँसे आया है? क्यो आया है? यदि कहीं इसके दोनो हाथ होते तो ।

शशाङ्क अपने सिंहासनपर पहुँच चुका था। कुछ सुस्थिर होकर उसने पूछा, "तुम कौन हो?"

"तक्षशिलाका एक स्नातक। मेरा नाम कीर्त्ति है.. कीर्त्तिसेन।"

"यह हाथ कैसे और कहाँ कटा?"

"महाराज राज्यवर्द्धनके दण्डालयमें उन्हींकी आज्ञासे", युवकने उत्तर दिया, "राजद्रोहके अपराधमें।"

"क्या अपराध किया?"

"अपराध किया नहीं था, उसका आरोप किया गया था। उस आरोपके अनुसार मैंने महाराज प्रभाकरवर्द्धनकी हत्यामें हत्यारेकी सहायता की थी। मैं ही उस समय महाराजके कक्षमें था, उन्हें विष दिया गया था। सीधी हत्याका अपराध मुझपर सिद्ध नहीं हो सका, इसलिए सन्देह मात्रमें राज्यवर्धनने मेरा हाथ कटवा दिया।"

"केवल हाथ ही कटवाकर छोड़ दिया!" शशाङ्कने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "मारा नहीं?"

"हमने तक्षशिलामें एक साथ शिक्षा प्राप्त की थी," युवकने उत्तर दिया। "मेरा बड़ा भाई जयकीर्त्ति राज्यवर्द्धनका उपसेनापति है। केवल सन्देहमात्रपर राज्यवर्द्धन मुझे जानसे नहीं मार सका।"

"हूँ!" शशाङ्क कुछ देर तक विचारमुद्रामें तल्लीन रहा। इसके बाद सहसा उसने अपना मुँह ऊपर उठाकर घोषणा की: "हम युवक कीर्तिसेनको अपना उपसेनापति घोषित करते हैं। युवक बंगालके द्वारा दिये हुए इस सम्मानकी रक्षा करे।"

युवकने अपना शीश फिर एकबार झुकाया और गर्वसे सारी सभाको निरखता हुआ वह वापस राजद्वारकी ओर लौट गया।

उसके जानेके बाद भी बहुत देर तक राजसभामें सन्नाटा छाया रहा। फिर आपसमें कानाफूसी आरम्भ हुई। पराजित पीताम्बरको सब लोग भूल

ही गये थे, जो मस्तिष्ककी पीडाके कारण राजसभाके बीचमे ही पसर गया था। कुछ ही समयमे सारी राजसभा चेतन हो गई।

शशाङ्कने आज्ञा दी, "इस युवकको हमारे भेंट-कक्षमें लाया जाय।"

राजसभा विसर्जित कर दी गई और शशाङ्क अपने महलोंमें लौट गया। जब वह अपने भेंट-कक्षमे पहुँचा, तो वही युवक, कीर्त्तिसेन, उसी प्रकार चादरको लपेटे, कक्षके एक कोनेमें एक ऊँचे आसनका सहारा लिये खड़ा था। शशाङ्कने उसे देखते ही एक विमोहित व्यक्तिकी भाँति खिलकर कहा, "सुन्दर, अति सुन्दर! तुमने एक ही बारके कौशल-प्रदर्शनसे वङ्गभूमिका मन जीत लिया है।"

"वङ्गाधीश्वर", युवकने सीधे होकर उत्तर दिया, "आपकी इन प्रशसात्मक उक्तियोंके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। किन्तु कृपा करके मुझे अपनी स्थितिसे ऊँचा उठानेकी चेष्टा न कीजिये।"

"तुम योद्धा ही नहीं, महान् विभूति भी हो!" शशाङ्कने और भी प्रसन्न होकर कहा, "युवक, यह निश्चय है कि तुम एक दिन थानेश्वरकी विजय करोगे। पृथ्वी तुम्हारे पदतलके प्रहारसे काँप उठेगी।"

"नहीं, वङ्गपति, खेद है कि मेरा यह स्वप्न नही है। मैंने तक्षशिलाके महान् विश्वविद्यालयमें दसियों वर्ष तक राजनीतिका अध्ययन किया है। मुझे ज्ञात है कि थानेश्वरकी विजय मेरी हाथकी रेखाओंमें नही है। इसके अतिरिक्त, थानेश्वर मेरी जन्मभूमि है। मैं मातृद्रोही नहीं हूँ।"

शशाङ्क जैसे आकाशसे गिर पडा। एक ओर युवककी वीरता उसके हृदयमे घर कर चुकी थी। उसके माध्यमसे वह थानेश्वरको अपने चरणोंमें लोटता हुआ देख रहा था। दूसरी ओर, युवकने एक ही वाक्यसे उसके स्वप्नोंको चूर कर दिया था। वह बोला, "आश्चर्य है, फिर भी तुमने हमारे उपसेनापतिका पद माँगनेकी स्पर्द्धा की!"

युवक एक उदासीन हँसी हँसा। "मैंने ठीक किया है, वङ्गपति।"

उसके नेत्रोकी ज्योति वातायनके पार फैलती हुई सूर्यकी ज्योति पर जा टिकी। "मैने आपके उपसेनापतिका पद इसलिए ग्रहण किया है कि मेरे और आपके राजनीतिक स्वार्थ एक अशमे मिलते है। थानेश्वरके मार्गमे कन्नौज पडता है। कन्नौज विजय करके अपनी प्रेयसी राज्यश्रीको गृहवर्मनके परिणय-पाशसे मुक्त करना आपकी चिर अभिलाषा है। अदूरदर्शी राज्य-वर्द्धनको अपने हाथसे मारकर प्रतिशोधकी आग बुझाना मेरी अभिलाषा है। ये दोनो अभिलाषाएँ तभी पूर्ण हो सकती है, जब वङ्गभूमिके उप-सेनापति पदपर कीर्त्तिसेन हो। राजनीतिके कठोर धरातलपर मैं और आप दोनो अपने-अपने लक्ष्योंको स्पष्ट देखकर मैदानमे चलें, तो भविष्यमे एक-दूसरेकी ओरसे भ्रम उत्पन्न होनेका स्थान नही रहेगा।"

शशाङ्क इस विचित्र युवककी राजनीतिको शान्त चित्तसे पी रहा था। जब उसने गृहवर्मनकी चर्चा की थी, तो उसके दाँत भिंच गये थे। जब राज्यश्रीका प्रसङ्ग आया था, तो उसके मुँह पर प्रलोभनकी छाया स्पष्ट दिखाई देती थी। इसके विपरीत, उसे दिखाई दिया कि उसका सामना जिस युवकसे हुआ है वह प्रतिशोधके अतिरिक्त समस्त मानवी प्रलोभनोंसे मुक्त है। ठीक भी है, जिस आततायीने एक सन्देह मात्रपर उसके जीवनकी सर्वप्रिय वस्तु, उसके दायें हाथसे उसे वञ्चित कर दिया था, उसके सिरको भूमिपर लोटा हुआ देखनेकी अभिलाषा उचित और स्वाभाविक थी। शशाङ्कने शङ्कित मनसे कहा, "युवक, लगता है कि तुम इस तथ्यकी ओरसे चेतन हो कि तुम एक देशद्रोही हो! ऐसी दशामें हमारे सम्मिलित स्वार्थकी पूर्तिमे क्या कोई बाधा आनेकी सम्भावना नहीं है?"

"नही," कीर्त्तिसेनने दृढताके साथ कहा। जहाँ तक इन स्वार्थोंकी सीमा निश्चित है, वहाँ तक कीर्तिसेनका यह बचा-खुचा बायाँ हाथ और सैन्य-सञ्चालनका समस्त चातुर्य वङ्गपतिके साथ रहेगा। मै महान् गुरु-कुलका स्नातक हूँ, असत्यका सम्भाषण पाप समझता हूँ। मैं देशद्रोही हूँ या नही यह बात अभी विवादास्पद है।"

शशाङ्क एक क्षण तक मौन खडा रहा। फिर उसने कहा, "अच्छी बात है। हमे अपने उपसेनापतिकी ये शर्तें स्वीकार हैं।"

युवक हँसा, "तब मेरी राजनीतिकी पहली किस्त लीजिए। इस कामके लिए आपको मालवा नरेश देवगुप्तसे सन्धि करनी पड़ेगी।"

"यह तो असम्भव है!" शशाङ्कने चौंककर कहा। "वङ्ग और मालवाका सात पीढ़ीसे विरोध है। हम मालवा जीतना चाहते हैं और देवगुप्त बंगालके स्वप्न सजोये हुए है। यह सन्धि तो हो ही नहीं सकती।"

"नही, बगपति," युवकने उत्तरमे कहा। "राजनीतिक लक्ष्य पूर्ण करनेके लिए सम्पूर्ण लक्ष्य लेकर आगे नही बढा जाता। उसे अश-अंश करके पूरा किया जाता है। मालव-नरेशको बङ्गभूमि हथियानेके लिए कन्नौज पहले लेना पड़ेगा क्योंकि मार्गमे कन्नौज पहले पडता है। वह इसके लिए तुरन्त तैयार हो जायेगा। वह राज्यश्रीको आपके हाथो सौपनेके लिए तैयार हो जायेगा क्योंकि उसे स्त्री नहीं चाहिए, भूमि चाहिए, बगालको जीतनेके लिए आधार चाहिए, जहाँ खडा होकर वह तीर फेक सके।"

शशाङ्कका चेहरा इन कटूक्तियोको सुनकर उतर गया। "युवक," उसने कहा, "तुम हमारी भर्त्सना कर रहे हो। हम राज्यश्रीको रानीके रूपमे ग्रहण करना चाहते हैं, एक मामूली कृषककी स्त्रीके रूपमे नहीं। हम उसके लिए बंगालको मालवा-नरेशके हवाले नहीं कर सकते।"

युवक इस बार ठहा मारकर हँसा, "महाराज शशाङ्क, आप सचमुच बहुत भोले हैं। क्या आप इतना भी नहीं जानते कि कन्नौजका सारा राज्य राज्यश्रीके रूप और गुणके सामने शीश झुकाता है? मौखरी प्रजा उसपर जान निछावर करती है। मालव-नरेशको इस सन्धिके फलस्वरूप भूमि मिलेगी और आपको उस भूमिपर रहने वालोंके हृदय मिलेंगे। समय आने पर राज्यश्रीका एक इङ्गित मौखरी राज्यके एक-एक तीरको मालव-

नरेशके हृदयपर केन्द्रिय कर देगा। भूमिका प्यासा नरेश स्वयं आन्तरिक क्रान्तिसे मारा जायगा।"

"ओह!" शशाङ्ककी भौह आश्चर्यसे ऊँची हो गई। उसने दौडकर युवकके कन्धे झिंझोड डाले। "तुम्हारी राजनीतिक सूझ-बूझ अपूर्व है..। तुम्हारे साथ मैत्री स्थापित करनेमे हमे गर्व है।"

युवकने अपने बाये हाथसे उसके दोनों हाथोंको एक-एक करके कधो परसे हटा दिया, उसने कहा, "राजन्, ध्यान रखिए, राजाओंको उस समय तक प्रेम नही करना चाहिए, जब तक उसमे राजनीतिक स्वार्थ न हो।"

शशाङ्कके पास कोई उत्तर नहीं था।

उसी दिन मालव-नरेशके पास सन्धिपत्र भेजा गया। उसका एक-एक शब्द बगालके नवीन उपसेनापतिके मुँहसे निकला था। आशाके अनुकूल प्रतिक्रिया हुई और मालव-नरेश फैलाये हुए जालमें भूखे पत्नीकी तरह आ फँसा। साथ ही उसने उसे क्रियात्मक रूप दिया। राज्यवर्द्धनका ध्यान उत्तरके हूणोंकी ओर केन्द्रित पाकर उसने अपनी विशाल सेनाओंको मौखरी राज्यकी ओर बढा दिया। इधरसे एक हाथका सेनापति बगालकी थोडी-सी चुनी हुई सेनाओंको लेकर कन्नौजकी ओर बढा। यही नही, उसके पीछे शशाङ्क शेष बडे भागका नेतृत्व अपने हाथमे लेकर, योजनाके अनुसार, अपने उपसेनापतिके पदचिह्नो पर चल पडा।

कन्नौज सहसा ही दो चक्कीके बीचमें पिस गया। जिस समय मालव-नरेश कन्नौजपति ग्रहवर्मनका सिर काटकर, उसके रुधिरसे लाल खड्ग लिये, किलेके अतर्पटसे बाहर निकला, युवक जीतमें अपना भाग बँटानेके लिए उपस्थित था। मालव-नरेश क्षुद्रबुद्धि शशाङ्कके प्रतिनिधिको देखकर हँसा। उसने कहा, "जाओ, कन्नौजके राजमहलमे वह 'स्त्री' तुम लोगोंकी प्रतीक्षा कर रही है।"

युवकने भी हँस कर उत्तर दिया, "बधाई है, राजन्, आपने बगालका पहला द्वार जीत लिया है।" और इससे पहले कि मालव-नरेश स्वय

वङ्गसेनापतिके मुँहसे ये शब्द सुनकर उनका अर्थ लगा पाये, कीर्त्तिसेन आगे बढ़ गया। पीछे मालव-नरेश सोचता ही रह गया : "ये लोग अपनी स्थितिकी ओरसे चेतन हैं।"

जिस समय युवक कीर्त्तिसेन कन्नौजकी रानीके कक्षमे पहुँचा, उसके मुखपर लालिमा ऑखमिचौनीका खेल खेल रही थी। एक दिन पहले वह कन्नौजकी सर्वेसर्वा थ।। आज एक लुटी-पिटी विधवा थी। परिस्थितियोके दुर्दाम चक्रने उसका राज्य और श्री दोनो लूट लिये थे। जब उसने इस चक्रके प्रणेताको अपने कक्षके द्वारपर खडा पाया, तो वह चोक पडी।

"कौन, कीर्त्तिसेन, जयकीर्त्तिका भाई।"

"हॉ, मै ही हूँ," कीर्तिसेनने भीतर पग रखते हुए कहा। "मैंने आपकी युगोसे सचित साध पूरी की है। आपका हृदयेश्वर, राजा शशाङ्क, कन्नौजकी राह पर है और सन्ध्या तक आया ही चाहता है।"

राज्यश्रीका मुख लज्जा, अभिमान और परितापके मिश्रित आवेगसे तमतमा गया। वह आहत बाघिनकी तरह उठ खडो हुई और उसकी मुट्ठियॉ भिंच गई। विपमे बुझे हुए तीरोंकी तरह उसके मुँहसे शब्द निकले।

"नीच, जिस प्रकार तू देशद्रोही है, उसी प्रकार मुझे भी विश्वास-घातिनी समझता है। क्या तुझे मालूम नही कि मै उस राज्यवर्द्धनकी बहन हूँ, जिसके प्रतापसे आज पृथ्वीकी दसो दिशाऍ कॉप रही है? क्या मै एक आर्य नारी होकर अपने पतिके अतिरिक्त किसी अन्य पुरुपका चिन्तन भी कर सकती हूँ? सच है, एक देशद्रोहीके अतिरिक्त किसीमें इतनी कुबुद्धि नहीं हो सकती कि वह अपनी विकृत भावनाओंकी कसौटी-पर एक सुशीला नारीकी भावनाओको परख सके।"

युवक कीर्तिसेनके हाथोंके तोते उड गये। उसे मालूम हुआ कि वह इस प्रकार बीच मैदान खडा है, जहॉ सिर मुँडाते ही ओले पड़े हो! जब एक असफल राजनीतिज्ञ सहसा ही यह देखता है कि उसकी कूटनीति केवल एक निम्नस्तरकी आत्मप्रवञ्चना थी, तो सम्भवतः उसके जैसी दयनीय

स्थिति संसारमे किसी बुद्धिजीवीकी नही होती। जितनी देर राज्यश्री बोलती रही उतनी देर वह उसकी ओर आँखे फाड़े देखता रहा। फिर प्रयत्न करके उसने अपनेको सयत किया।

"देवी, प्रतीत होता है कि मैने अपने जीवनकी सबसे बडी भयङ्कर भूल की है। अब और कोई नही, केवल मेरा हृदय जानता है कि मैं अदृष्ट रहकर अपने स्वार्थके साथ-साथ आपकी आकाङ्क्षा-पूर्तिमें योग दे रहा था। बगालमें भ्रमण करते समय मुझे जनश्रुतियोंसे ही यह पता चला था कि आप शशाङ्ककी ओर आकृष्ट हैं। स्वय राजा शशाङ्कने एक बार भी इस धारणाका खण्डन नही किया। मेरी शत्रुता आपसे नही, आपके भाई राज्यवर्द्धनसे है। एक आर्यनारीके रूपमे आप मेरी पूज्या हैं। मैने अपनी भूलसे एक ऐसा खेल खेला है, जिसमें एक परमपूजनीया आर्य-नारीका सर्वस्व लुट गया है। ओह, मुझे दुःख है कि यह भूल कलङ्क बनकर सदा ही मुझे डसती रहेगी। किन्तु, देवी, मै देशद्रोही नहीं हूँ। मैने अपनी मातृभूमिको शत्रुके हाथो नहीं बेचा है।"

कीर्त्तिसेनकी बातें सुनते-सुनते राज्यश्री परितापके आवेगसे कातर हो उठी। उसने कहा, "अब भी तुम्हें यह कहते लज्जा नही आती कि तुम देश-द्रोही नहीं हो? कन्नौज वर्द्धन-साम्राज्यका प्रहरी था। यह कन्नौज ही था, जो छाती तनाये पूर्वसे बगाल और पश्चिमसे मालवाके आक्रमणसे वर्द्धन-राज्यके दक्खिनी द्वारकी रक्षा कर रहा था। तुमने दोनों विरोधी शक्तियोको एक करके इसे बीचमे रखकर पीस डाला, मेरे प्राणोसे प्रिय पतिकी हत्या कर डाली। अरे, पापी, तूने मेरी आकाङ्क्षा पूरी नही की, अपने देशका द्वार शत्रुके लिए खोल दिया है।"

"नही, नहीं, देवी, ऐसा न कहिए", कीर्त्तिसेनने भी उसी भाँति कातर होकर उत्तर दिया। "यह द्वार अभी बन्द है। इस द्वारकी रक्षा करनेवाला मेरी योजनामे भी जीवित था और अब भी जीवित है। यदि आप शशाङ्ककी रानी बनतीं, तो भी अपनी प्रमुख शक्तिके द्वारा वर्द्धन-

साम्राज्यको जीतनेका स्वप्न उसके हृदयसे तिरोहित कर सकती थीं। कन्नौज का प्रजा-हृदय उस समय भी आपका रहता और अब भी आपका है। आप चाहें, तो वर्द्धन-साम्राज्यका यह दक्खिनी द्वार अब भी बन्द रहेगा।"

"हूँ!" राज्यश्री हुंकारी। "तुम्हारे पापका प्रायश्चित्त तो मुझे करना ही होगा, किन्तु जीवित रहकर नहीं, अपने पतिके साथ सती होकर। कन्नौजकी रक्षा करनेके लिए राज्यवर्द्धन सन्ध्या तक आया ही चाहता है।"

"नहीं, आप सती नहीं होगी, देवी! आपके पलायन करते ही यह द्वार खुला रह जायगा। राज्यवर्द्धनको मेरी प्रतिशोधकी आगमें भस्म होना ही पड़ेगा। भगवान् जानता है कि मेरी शत्रुता अपने देशसे नहीं, अपने देशके एक व्यक्तिसे है। सयोगसे वह व्यक्ति वर्द्धन-साम्राज्यका अधिपति है। एक अधिपति जा सकता है, दूसरा उसके स्थानपर आ सकता है। हर्षवर्द्धनमें इस साम्राज्यको सँभालने और उसे विस्तृत करके अपने वशकी कीर्त्तिपताका फहरानेकी अधिक योग्यता है। उसके हाथोंमें आते ही इस राज्यकी सीमाएँ मालवा, कन्नौज और बगालको आत्मसात् कर लेगी। लेकिन यह तभी होगा, जब आप चिताका आलिङ्गन न करें।"

राज्यश्रीने कहा, "यदि तुम देशद्रोही नहीं हो तो मेरे सामनेसे हट जाओ, मेरी राह छोड दो। एक आर्यनारी अपने कर्त्तव्यको नहीं भूल सकती! पतिके सम्मुख ससारकी सम्पदाएँ उसके लिए तुच्छ है।"

कीर्त्तिसेनने सिर झुका लिया, "मै आपको रोकनेमें भौतिक शक्तियोंका उपयोग नहीं करूँगा। किन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि पतिके पार्थिव शरीरके साथ जल मरनेके स्थानपर उसके उद्देश्योंकी पूर्त्तिमें लगे रहना ही नारीका सच्चा धर्म है।"

"मैं इस विषयमें तुमसे उपदेश सुनना नहीं चाहती। तुम हमारे वंशके हत्यारे हो और अब भी तुमने हत्यापर कमर कस रखी है। राज्यवर्द्धनमें तुमसे उलझने योग्य बल है। तुम मेरी राह छोड दो।"

"आप मेरी ओरसे स्वतन्त्र है, देवी! आपकी इच्छापूर्त्तिमें अब कोई बाधक नहीं बन पायेगा," कहकर कीर्त्तिसेन मुड़ा और कक्षसे बाहर निकल गया।

सन्ध्या होते-न-होते शशाङ्क कन्नौजमें आ धमका। मालव-नरेश देवगुप्तके कपटी हृदयसे अपना दूषित हृदय मिलाकर वह महलोंके सामने आया। किन्तु वहाँ कीर्त्तिसेन अपने अङ्गरक्षकोंके साथ डटा खडा था। शशाङ्कने अश्व छोडते ही उसके कन्धोंपर हाथ रखकर कहा, "हम अपने उपसेनापतिको इस प्रथम विजयके अवसरपर बधाई देते हैं। कहाँ है हमारी मोहिनी?"

कीर्त्तिसेनने तिरस्कारसे होंठ सिकोड लिये। "वह आपकी मोहिनी नहीं है, महाराज शशाङ्क! आपने मुझे धोखेमें रखा। वह सच्ची आर्य नारी है और अपने पतिके अतिरिक्त अन्य किसी भी पुरुषका ध्यान करना उसके लिए सबसे बडा पाप है। मेरे रहते आप उसको छू भी नहीं सकते।"

शशाङ्कने उसके कन्धे परसे अपने हाथ हटा लिये। "यह कैसा विश्वासघात है! हम तुमसे यह आशा नहीं करते थे। क्या हमारा आपसी समझौता तुम्हें स्मरण नहीं रहा?"

"वह मुझे खूब अच्छी तरह स्मरण है," कीर्त्तिसेनने कहा, "किन्तु वह तभी पूरा हो सकता था, जब देवी राज्यश्रीकी इच्छा आपके साथ जानेकी होती। मै आज तक यही समझता रहा कि देवी आपकी ओर आकर्षित है। उनसे बाते करनेपर यह धारणा मिथ्या सिद्ध हुई। अतः अब उनके सतीत्वकी रक्षा करना मेरा पहला कर्त्तव्य है, जिसे आप मेरे रहते पूरा नहीं कर सकते। वङ्गभूमिमे पहुँचकर आप इसके लिए मुझे दण्ड दे सकते है। यहाँ आपकी शक्ति तुच्छ है। इस समय वङ्ग-सेनाओं का मै सेनापति हूँ।"

शशाङ्कने होठ भींच लिये। पर वह विवश था। कुछ देर बाद वह

अपनी विमूढतासे निकलकर हँसा, "अच्छी बात है। हम तुम्हे अवश्य दण्ड देंगे। इस छोटी-सी बातके लिए हम तुम्हें एक इतना छोटा-सा दण्ड देंगे, जो हमारे उपसेनापतिके गौरवके पूर्ण अनुरूप होगा। राज्यवर्द्धनकी सेनाएँ कन्नौजकी सीमाएँ छू रही हैं। पहले हमें उसका स्वागत करना है।"

राज्यवर्द्धनसे सन्धि करनेके लिए शशाङ्क और मालव-नरेश दोनोंकी ओरसे एक राजदूत गया। तय हुआ कि तीनो राजाओका एक सम्मिलित भोज होगा और उसीमे सब सन्धिकी शर्त्तोंपर विचार होगा। राज्यवर्द्धनने इस बातको मान लिया। जहाँ तीसरा राजा भी हो, वहाँ विश्वासघातकी सम्भावना नही थी। फिर साथमे अङ्गरक्षक रहेंगे। तीनों सेनाओंके मिलन-स्थलपर एक शिविरमें इस भोजका प्रबन्ध किया गया।

अगले दिन सुबहके समय इस शिविरमे राज्यवर्द्धनका स्वागत किया गया। कहना न होगा कि राज्यश्रीको इस समस्त कार्यवाहीसे अनजान ही रखा गया और महलपर इस बीच बडा पहरा रहा ताकि कोई व्यक्ति न भीतर जा सके, न बाहर आ सके।

जब भोज समाप्त हो गया और बातचीत आरम्भ होनेको हुई, तो सहसा ही कीर्त्तिसेन कमरमें खड्ग लटकाये, अपना कटा हुआ हाथ खोले अपने शत्रुके सामने जा खडा हुआ। अपने शत्रुको सम्बोधन करके वह बोला, "ओ वर्द्धन-साम्राज्य के कलङ्क, तुझे पहले मुझसे बाते करनी है। इस हाथको देख, इसे तूने काटकर यह समझा था कि तूने पृथ्वीसे शौर्यका नाम उठा दिया है। मै तुझे अपने इस बाये हाथसे ही युद्ध करनेके लिए ललकारता हूँ। यदि तू कायर नही है और पराक्रमी प्रभाकर-वर्द्धनका पुत्र है, तो सामने आ।"

राज्यवर्द्धन एक लम्बे-चौड़े राज्यका अधीश्वर था। उसने हूणों, गुर्जरों और महासेन गुप्तसे लोहा लेकर उनके दाँत खट्टे किये थे। उसमे इतनी बात सुननेकी सामर्थ्य नही थी। उसने अपने अङ्गरक्षकसे खड्ग

लिया और आसनसे नीचे कूद गया। "मुझे अपनी भूल ज्ञात हो गई थी," उसने कहा। "किन्तु प्रतीत होता है, दैवने मेरे ही हाथों तेरी मृत्यु लिखी है।"

कीर्त्तिसेन ठहाका मारकर हँसा। "किसकी मृत्यु किसके हाथों लिखी है, यह तो निकट भविष्य बतायेगा। किन्तु यदि तू युद्धमें मारा गया, तो अपने अङ्गरक्षकोंको कह दे कि चुपचाप सिर धुनते वापस लौट जायें। यदि मैं मारा गया, तो मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि वङ्गभूमि और मालवा तेरे चरणोंपर लोटेंगे।"

राज्यवर्द्धनने अपने अङ्गरक्षकोंको इच्छित आदेश दिया और शिविरसे बाहर विस्तीर्ण मैदानमें दोनों शूरवीरोंका द्वन्द्वयुद्ध आरम्भ हुआ। कुछ ही देरके द्वन्द्वमें दर्शकोंपर प्रकट हो गया कि वर्द्धन-साम्राज्यके अधीश्वरसे जीतना वङ्गसेनापतिके लिए दुरूह है।

मगर कौन जानता था कि यह राज्यवर्द्धनको उत्तेजित करनेकी एक चाल थी। युद्धका अन्त आया समझकर उसने अनवरत प्रहार करने आरम्भ कर दिये और उसका आत्मरक्षाका पक्ष ढीला पड गया। कीर्त्तिसेन इसी अवसरकी खोजमें था। नरपतिका वार बचाकर उसने अपने बायें हाथके एक ही प्रहारसे उसका सिर धडसे अलग कर दिया।

कीर्तिसेनका स्वप्न पूरा हुआ। राज्यवर्द्धनके अङ्गरक्षकोंके हाथ पहले ही बँध चुके थे। विस्मयान्वित हुआ राजवर्द्धनका सिर अभी तक फडक रहा था। किसी प्रकारकी जयके नारे नहीं लगाये गये। तीनो सेनाओंके मिलन-स्थल पर उत्तेजना वर्जित थी। राज्यवर्द्धनके अङ्गरक्षक अपने स्वामीके विलग अङ्ग उठाकर वापस अपनी सेनाको लौट गये। सन्ध्या होते-होते वर्द्धनोंकी पूरी सेना शोकमें मग्न हो गई। सबकी भुजाएँ भडक रही थीं, मगर उनका मूल प्रेरक नहीं था। तत्काल हर्षवर्द्धनके पास, थानेश्वरमें यह दुःखद समाचार भेजा गया।

इधर मालव-नरेशने कन्नौजकी क़िलेबन्दी की। कीर्तिसेनने राज्यश्रीकी

पाल्की सजवाई और शशाङ्कसहित उसने बंगालकी ओर कूच कर दिया। जाते-जाते कीर्तिसेनने अपनी वीरतासे प्रभावित मालव-नरेशसे क्या वचन लिया यह शशाङ्क न जान सका।

कीर्त्तिसेनके सेनापतित्वमें भेजा हुआ यह अग्रिम दल शीघ्र ही शशाङ्कके अधीन बंगालके शेष शक्तिसे जा मिला, जिसकी सेनाओंने कन्नौजसे काफी बचकर अपने पड़ाव डाल रखे थे। यहाँ पहुँचते ही शशाङ्कने सेनाओंको सज्जित होनेकी आज्ञा दी और अपने सेनापतिकी हर हालतमें रक्षा करनेकी शपथ खाये हुए उसके अङ्गरक्षक-दस्तेसे अलग हट जानेको कहा। किन्तु वीर योद्धाओंने उसकी आज्ञा माननेसे इनकार कर दिया। इसी बीच कीर्त्तिसेन आगे आ गया।

"महाराज शशाङ्क," कीर्त्तिसेनने कहा, "आपके प्रति ये लोग नहीं, मैं उत्तरदायी हूँ। मैं जानता था कि निराश प्रेमी कहाँ चलकर चुटीले साँपकी तरह अपना डंक मारेगा। मेरी साध पूरी हो गई है। मैं दण्डके लिए अपनेको आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।"

शशाङ्कने कहा, "उँह! हम वीरताका सम्मान करनेवाले नरपति हैं! हम ऐसे वीरको पृथ्वीसे उठाना नहीं चाहेंगे, जो अपनी समानता नहीं रखता। हमारा पुरस्कार हमारे सामने है। हमारा रास्ता छोड़ दो। हमारी नजर उस पालकीपर है।" और उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही राजा शशाङ्कका अश्व उछलता हुआ पालकीके सम्मुख पहुँच गया, जहाँ पालकीके वाहक इस काण्डको देखकर सहमे हुए-से खड़े थे।

पालकीके पास पहुँचते ही शशाङ्क चिल्लाया, "पालकीका आवरण हटा दो!"

कहारोंने हड़बड़ाकर उसकी आज्ञाका पालन किया।

किन्तु यह क्या! पालकी खाली थी! राज्यश्रीके स्थानपर वहाँ कुछ बड़े-बड़े पत्थर रखे थे। शशाङ्कका चेहरा देखते-देखते अग्निका पुञ्ज बन गया। उसके नेत्र क्रोधके अतिरेकसे फैल गये। वह तुरन्त घोड़ा कुदाता

हुआ वापस लौटा और उसने अपने सैनिकोको आज्ञा दी, "इस विश्वास-घातीको पकड लो ! हम इसे ऐसी सजा देंगे कि यह भी याद रखेगा !"

युवक कीर्त्तिसेनके मुँहपर एक अपूर्व तेज था । "वङ्गपति, सजा पानेके लिए ही मैं यहाँ तक आया हूँ । ससार ही इस तथ्यको पहचानेगा कि मै विश्वासघाती हूँ; देशद्रोही हूँ, या कीर्त्तिसेन हूँ । देवी राज्यश्रीका ध्यान मनसे हटा दीजिये । वह महासती है, और इस समय मालव-नरेशके प्रबन्धमें अपने पतिके मृत शरीरके साथ चिताकी ज्वालाओंका आलिङ्गन कर रही होगी । उसके लिए वह आलिङ्गन आपके शरीर-स्पर्शसे कहीं अधिक सुखदायी होगा ।"

"ओह !" शशाङ्क क्रोधसे दाँत किचकिचाता हुआ चिल्लाया, "इसे सामनेके पेडसे बाँध दो !" उसने अपने सैनिकोंको आज्ञा दी ।

सैनिकोने अपने सेनापतिकी आज्ञाका पालन किया ।

कीर्त्तिसेनकी यही स्थिति थी, जब हर्षके अधीन उसके भाई जयकीर्त्तिके नेतृत्वमें वर्द्धनोंकी विशाल सेनाएँ कन्नौजमे मालव-नरेशका मानमर्दन करती हुई, राज्यश्रीको चितावरोहणसे रोककर कन्नौजकी विधवा महा-रानीके पदपर प्रतिष्ठित करती हुई, शशाङ्कका मस्तक नवानेके लिए बगालके पथपर बढी चली आ रही थीं । शशाङ्क कभीका वहाँसे पलायन कर चुका था । उन सेनाओका स्वागत करनेके लिए रह गया था केवल एक निःसहाय युवक, वृक्षसे बँधा हुआ, दो दिनका भूखा-प्यासा, मैला कुचैला, शारीरिक प्रवृत्तियोंकी यातनाओंसे त्रस्त, किन्तु जिसके प्रतिशोधकी आग अब उसे नही जला रही थी ।

हर्षका हाथी सामने इस विचित्र दृश्यको देखकर ठिठका । तत्काल सेनापति जयकीर्त्ति आगे आया और जब उसने छातीकी ओर झुका हुआ उस युवकका सिर ऊपर उठाया, तो एकबार उसकी आँखे छलछला आईं । उसने पुकारा, "कौन, कीर्त्तिसेन !"

क्षीणस्वरमें कीर्त्तिसेनने कहा, "हाँ।"

बस, स्नेहकी प्रवृत्तियोंने यही तक काम किया। देखते-देखते जयकीर्त्ति का स्वाभिमान अगडाई लेकर उठ खडा हुआ और वह चिल्लाया, "रे नीच, तूने मेरी माँकी कोखसे क्यो जन्म लिया। क्या तेरे जैसे साँपको रहनेके लिए कोई और बाँबी नहीं मिली थी ? रे देशद्रोही, क्यो तू अभी-तक पृथ्वीके ऊपर अपना भार डाले उसे दहला रहा है।"

युवकके मुँहपर क्षीण और उदासीन मुसकराहट आई। उसने उत्तरमें कहा, "इन सब प्रश्नोका एक ही उत्तर है। मै अभीतक अपने उस भाई की कीर्त्तिको देखनेके लिए जी रहा हूँ, जिसने उसी माँकी कोखको पवित्र किया था, जिससे मेरा जन्म हुआ था।"

"क्या तू मुझे अपना भाई कहता है ?" जयकीर्त्तिने आँखे तरेरकर कहा, "तेरी जबान नही कटकर गिर पडती।"

जयकीर्त्तिने तत्काल अपने आदमियोंको सङ्केत किया और उन्होंने कीर्त्तिसेनको वृक्षसे खोल दिया। एक पूरी चादरमें लिपटे उसके शरीरसे ऐसा लगता था मानो प्रेतात्मा प्रेत-लोक छोडकर दिनमें ही भूपर उतर आई हो। बड़ी कठिनाईसे उसने खडे रहने योग्य शक्ति एकत्र की।

जयकीर्त्तिने कहा, "सुना है तूने अपने बायें हाथसे ही धराको कम्पित-कर रखा है ? सुना है तूने बड़े-बड़े अधीश्वरोंके सिर इसी कलङ्कित हाथसे काट डाले हैं ! ले यह खड्ग, आज भाईका सिर भी काट।" उसने खड्ग उसकी ओर फेंकी, जो आधार न पाकर कीर्त्तिसेनके कदमोंमे जा गिरी। जयकीर्त्तिने कहा, "क्यो, खड्ग उठाते भी लज्जा आती है ! उस समय लज्जा नहीं आई, जब तूने थानेश्वरको अनाथ किया था, जब तूने महा-देवीको पतिविहीन किया था, जब तूने अपने दूषित पग शत्रुके दरबारमे रखे थे ? अब क्यो लज्जा करता है ? उठा खड्ग, मैं भी रास्तेका हारा-थका हूँ और तू भी शायद भूखा सिंह है...उठा, नहीं तो भगवान्‌की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि तेरा सिर इस खड्गसे अलग कर दूँगा।"

कीर्त्तिसेन अब भी एक फीकी हँसी हँसकर रह गया। उसने कहा, "भैया, तुम्हें उत्तर देकर अब मैं और अधिक दुःखी नहीं करना चाहता। अब मैं तुमसे किस लिए लड़ूँ? मेरा उद्देश्य पूरा हो गया है। मेरे स्वाभिमानके साधन समाप्त हो गये हैं, इसलिए तुम जो जीमें आये कहकर अपने ऊपरसे मेरा कलङ्क धो सकते हो। अब मुझे जीनेकी रचमात्र भी साध नहीं रह गई है, इसलिए तुम मेरा सिर काट सकते हो। किस भाईको इतना बड़ा सौभाग्य मिल सकता है कि मरते समय उसका सिर अपने बड़े भाईके कदमोंमें लोटता हो।"

जयकीर्त्तिपर इन बातोंका कोई असर नहीं हुआ। उसने उसी आवेशमें कहा, "रे अधम, मैं जानता हूँ कि तूने तक्षशिलामें खूब साहित्य घोटा है। तू पत्थरको पानी बना देने वाले वाक्योंकी रचना कर सकता है। अच्छी बात है, यदि तू अपने उस पापी हाथको भी प्रयोग नहीं करना चाहता, तो यह ले", और उसने अपना खड्ग उठाकर एक ही प्रहारमें कीर्त्तिसेनका सिर उसके धड़से अलग कर दिया।

कटे हुए उस सिरके मुँहपर अभी तक झीनी मुसकराहट थी। मालूम नहीं उसमें जीवनका कौन-सा दर्शन छिपा था। किन्तु सम्भवतः अपनी अन्तिम इच्छाके कारण ही वह बड़े भाईके कदमोंमें जाकर गिरा। उसके धड़की चादर जहाँ-तहाँसे उधड़ गई, और उस समय हर्षवर्द्धनके साथ जयकीर्त्ति तथा अन्य महावीरोंने देखा कि उस सिरसे हीन धड़में दायें हाथके साथ-साथ बायाँ हाथ भी कटा हुआ था।

• प्राणोंका मूल्य

प्राण ससारमे सबसे महँगी वस्तु समझी जाती है, क्योकि यही एक ऐसी वस्तु है, जिसे मनुष्य सब कुछ खोकर भी देना नहीं चाहता किन्तु मनुष्य मनुष्यताके प्रारम्भसे ही कुशल व्यापारी भी रहा है। उसके पास कोई ऐसी वस्तु नही, जो बेची न जा सके। इसलिए समय-समयपर उसने प्राणोंको भी बेचा। समय-समयपर प्राणोका मूल्य भी भिन्न-भिन्न रहा है, और ऐसा भी समय भारतीय इतिहासमें आया है, जब भारतीयोने यह अनमोल वस्तु वृद्धा सस्कृतिकी अर्थीपर खुले हाथोंसे बिखरा दी। यह कहानी ऐसे ही एक समयकी है।

मेवाडपतिके महाराणा प्रतापका भाई शक्तसिंह सतरह पुत्रोका पिता था। ये सतरहके-सतरह बेटे प्राणोके व्यापारी थे। अपने पिताके नामपर इनके वशका नाम शक्तावत पडा। जब शक्तसिहकी मृत्यु हो गई, तो सबसे बड़े पुत्र भाजीको छोडकर शेष सोलह पुत्र पिताके शवको श्मशान तक ले जानेके लिए मैसरोरके क़िलेसे निकले। अन्त्येष्टि-क्रिया सम्पन्न हो जानेपर जब वे वापस लौटे, तो उन्होने देखा कि क़िलेके फाटक बन्द है और फसील पर मोर्चाबन्दी है। मेहराबके ऊपर भाजी दोनो हाथ कूल्हों पर रखे तना हुआ खडा था। जब शक्तावतोमे से एक भाई बालेने पुकार कर कहा, "भाजी, यह क्या बात है? फाटक कैसे बन्द है?" तो भाजीने उत्तर दिया, "जब एक म्यानमे दो तलवारे नही रह सकतीं, तो सतरह कैसे रह सकती है! मैसरोरके क़िलेमें केवल एक ही तलवार समा सकती है।'

दूसरे भाई जोधाने चिल्लाकर कहा, "निकालना था, तो लडकर निकालते, भाइयोको धोखा देते लज्जा नहीं आई।"

उतने ही तीव्र स्वरमें भाजीने उत्तर दिया, "वे भाई और होते हैं, जो भाइयोसे लडते हैं, तुम सबमे जिसकी इच्छा हो मेरी जगह आ जाये। मै तुम सोलहके साथ मिल जाऊँगा। मगर मैंसरोरमें एक ही भाई रहेगा। हम सब शक्तावत है, एक-एक भाईमे एक-एक क़िलेको सर करनेकी शक्ति है। घरसे बाहर निकलकर देखो ससार कितना बडा है, और उसमे इतना यश है कि सारी उमर मेहनत करके बटोरा नहीं जा सकता। तुम सब उसे मिलकर बटोरो, नहीं तो कहो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। लेकिन मैसरोरमे केवल एक शक्तावत रहेगा।"

सोलहके-सोलह भाई एक दूसरेके मुँहकी ओर ताकने लगे। कौन कायर बनकर भाजीकी जगह जाये ? बहुत देरके वाद-विवादके बाद निश्चय हुआ कि भाजी ही शायद ठीक कहता है। बालोने कहा, "अच्छा, हम यश ही बटोरेंगे, और इतना बटोरकर मरेंगे कि तुमसे जीते जी पचेगा नही। हमारे घोड़े और हथियार भिजवा दे।"

भाजीने हँसकर कहा, "बहुत अच्छा, तुम यश लाभ करो और मै सुन-सुनकर मोटा होता रहूँगा। तुम्हारे घोडे और हथियार पहलेसे ही पहाडीके नीचेवाले एक पेडसे बँधे हैं।"

सोलह भाइयोंने जन्मभूमिकी मिट्टी माथेसे लगाई और आँखोमे उसके प्यारका जल लिये पीठ मोडकर चल दिये। पहाडीके नीचे पहुँचने पर उन्हें वाञ्छित सामान मिल गया और उन्होंने ससारकी विस्तृत राह पर अपने घोड़े छोड दिये।

ईदरके राजाने इन मतवालोंको अपने यहाँ शरण दी। ईदरके सङ्कुचित क्षेत्रमे उन्होंने कुछ दिनों तक आनेवाली परीक्षाके लिए अपने बदन माँजे, हथियार पैने किये और उन्हें अपने हाथोंसे सधाया। आखिर वह समय भी आ गया, जो हर आदमीके जीवनमें एक-न-एक बार आता है। अवसर पहचाननेवालोने उस समयको पकडा।

महाराणा प्रतापका पुत्र अमरसिंह मुगलोंसे लडते हुए अभी तक अपने

वंशके गौरवकी रक्षा कर रहा था। भामाशाहका खजाना अभी तक समाप्त नही हुआ था। जब राणा अमरसिंहको यह मालूम हुआ कि उसके सोलह चचेरे भाई ईदरमे टिके हुए हैं, तो उसने उन लोगोके लिए साँडनी भेजी। साथमें एक पत्री भेजी : "...राजपूतोका गौरव अभी तलवारकी नोक पर टँगा है। तलवारे नीची न करो, अभी माँ को उनकी जरूरत है। मेवाड़के राणाकी बॉहें तुम्हें छातीसे लगा लेनेके लिए तड़प रही है. "

सोलह भाइयोने उसी समय घोड़े कस लिये। जब घोड़े सज गये, तो बालोने कहा, "भाइयो, तलवारें ऊँची और नजरें नीची कर लो। भाजी हाथ मल-मलकर रो न दिया, तो बालो नाम नही...।"

वायुवेगसे सोलह भाई महाराणा अमरसिंहकी बॉहोंमें जा सिमटे। मेवाडको एक अपूर्व शक्ति मिली—शत्रुओंके कलेजे दहल गये, चिरकालसे बिछुड़े हुए एक ही रक्तके दो अणु जैसे एक-दूसरे-से आकर्षित होकर आपसमे लुढ़कते-पुढ़कते मिल गये हों।

मगर समय बीतते-न-बीतते राजपूत सैनिकोको यह शीघ्र ही पता चल गया कि इन सोलह भाइयोंमें राजकुमारो-जैसी कोई बात ही नही थी। डेरे गाडनेसे लेकर पानी खींचने तकके काममें एक-न-एक शक्तावत दिखाई पडता था। शायद ही कोई सैनिक बचा हो, जिसे शक्तावतके हाथका परोसा भोजन न मिला हो। शायद ही कोई घोडा ऐसा हो, जिसके मुँह पर किसी शक्तावतका हाथ न फिरा हो। शायद ही कोई सरदार ऐसा हो, जिसने बालोके शारीरिक बलके करतब न देखे हो। आदमी क्या था देव था—पॉच मन पक्केका वजन दोनो हाथोंसे मेमनेकी तरह उठा लेता था।

कुछ ही दिनोमें सोलह शक्तावतोने राणा अमरसिंहका मन मोह लिया। अन्य भी कितने सरदारोका मान उनकी दृष्टिमें ऊँचा था, और

उनमें चूडावत सरदारका रुतबा सबसे ऊँचा था। राणाकी सेनाके अग्र-दलका नेतृत्व चूडावत सरदारके हाथमें ही था। यह मान परम्परासे उनके वशमे चला आता था। एक दिन अकारण ही बालोसे इन चूडावत सरदारकी भिडन्त हो गई।

बात कुछ भी नही थी। सेनाके उपयोगके लिए लकडियाँ बनानेको पेड गिराये जा रहे थे। बड़े-बडे आरे लगे हुए थे। अचानक कुछ मन-चले नौजवानोमें ठहर गई कि एक मोटेताजे पेडको बिना आरेसे चीरे ही गिरा दिया जाये। पेडमें रस्से बाँध दिये गये और जवान उस रस्सेपर जूझ गये। काम सालुम्बराके सरदार चूडावतकी देख-रेखमे हो रहा था। वह शानके साथ मूँछोकी नोकोंको मरोडकर ऊपर करनेकी चेष्टा करते हुए यह तमाशा देख रहे थे। उसी समय उधरसे बालोका गुजर हुआ। उसने एक नजर पेडपर डाली, एक उसे गिरानेके प्रयत्नमे रत जवानोपर और एक चूडावत सरदार पर। उसने पास आकर चूडावत सरदारसे हँसते हुए कहा : "सरदार साहब, मूछोंकी नोक इस तरह मरोडनेसे ऊँची नहीं होगी, इनपर पसीनेका लुआब लगाइये।"

सरदार चूडावतने आँखे तरेरकर नौजवान बालोकी तरफ देखा। तबतक बालो रस्सेके साथ जूझ गया। छातीमें साँसभर, उसने रस्सेको अपनी कमरके चारो तरफ लपेट लिया और जवानोंने पीछेकी ओर जोर किया। कुछ देर तक मालूम दिया कि पेड इस समस्त सघर्षको व्यर्थ करके ज्यो-का-त्यो आकाशमें सिर ऊँचा उठाये खडा रहेगा। अनजाने ही चूडावत सरदारके होठोपर एक व्यङ्गपूर्ण मुसकान खेल गई। किन्तु उसी समय सहसा भारी आवाजके साथ पेडका तना चरमराया और देखते ही देखते उसका विशाल शरीर मानव-शक्तिका सम्मान करनेके लिए भूमिपर दण्डवत् लेट गया।

बालोने देरसे रोकी हुई साँस छोडी, जैसे अजगरने फुङ्कार मारी हो। पैर सीधे करके वह तनकर खड़ा हुआ। पुष्ट गरदनको घुमाकर उसने

चूड़ावत सरदारकी ओर मुँह किया। उसके मुँह और शरीरपर उभरे बड़े-बड़े स्वेदकणोंके कलेवर सूर्यकी किरणोंको चूमकर तडप गये। उसके होंठों पर भी एक मुसकान हौलेसे उभरी। चूडावत सरदारने इस मुसकानमें व्यग्यका अनुभव किया। उन्होंने कहा, "बालोजी, इतना ही जोर रणमें दिखाओ तो तुर्क एक दिनमें भारतकी सीमाके बाहर हो जायें..."

उँगलीसे माथेका चुहचुहाता हुआ पसीना समेटकर भूमिपर गिराते हुए बालोने उत्तर दिया, "जिस दिन नेतृत्व जवानोंके हाथमें आयगा, उस दिन दुश्मन भारतसे ही नहीं, धरासे उठ जायगा।"

चूडावत सरदारने अपनी लम्बी और सफेद मूँछोको दाँतोसे नोचा। जी चाहा कि तलवारसे उसका सिर धड़से अलग कर दें। उनके वशके एकमात्र अधिकारको चुनौती देनेवाला बालो निमिषमात्रमें उनकी आँखोंके खूनमें उतर गया। यही सरदार चूडावत थे, जिन्होंने युद्धके भयसे पीछे कदम हटाते हुए राणा अमरसिंहकी विलास-क्रीडाके प्रतीक, एक आदमकद शीशेको फरशका पत्थर मारकर चूर-चूर कर डाला था और राणाको घिघियाते बच्चेकी तरह कमरसे उठाकर घोड़ेकी पीठपर सवार करा दिया था। जिस महावीरने मेवाड़के राणाकी अक्ल ठिकाने लगा दी थी, उसीके गौरव और अधिकारको आज एक शक्तावत ललकार रहा था!

चूड़ावत सरदारने कहा, "बालो जी, मुँहमें जबान है, तो इसके अर्थ ये नहीं कि दाँतोकी पहरेदारी जाती रहे। राणाके सम्मुख तुम्हें अपनी उच्छृङ्खलताके लिए उत्तरदायी होना पड़ेगा।"

और बालो केवल हँसकर रह गया। उसकी चौडी छातीने शान्तिके साथ साँस लेना आरम्भ कर दिया।

दिन बीता और रात आ गई। डेरोंके बाहर सैनिकोंने आग जलाई और भोजनके लिए बाजरा पकना आरम्भ हो गया। राणा अमरसिंहने डेरेसे कुछ दूरीपर दरबार जोड़ा और सभी प्रमुख सामन्त चारो ओर

यथासम्मान आसीन हो गये। बीचोंबीच लकडियोंका एक बेडा अम्बार लगाकर आग जलाई गई और जाडेसे सुरक्षित होकर सरदारोंने आगे युद्धकी योजनाके लिए अपने-अपने विचार रखने आरम्भ कर दिये।

मुगलोंकी सीमापर पडनेवाले सबसे पहले किले ऊनतालकी दृढ दीवारोंको भेदनेका प्रश्न उठा। राणाने चारों ओर निगाह पसारकर कहा, "सरदार चूडावत दिखाई नहीं देते, क्या बात है?"

उसी समय एक शक्तावतने आकर लकडियोंका एक गट्ठर बीचमें जलते हुए आगके टीले पर डाल दिया। भभकती हुई आगसे शक्तावतका मुँह जैसे लाल आभासे प्रदीप्त हो उठा। राणाने श्रमके पुतले बालोको एक क्षण प्रशंसाकी दृष्टिसे निहारा और फिर बोले, "बालोजी, अब तो थक गये होंगे। छोड दो अब कामको।"

बालोने मुखर होकर उत्तर दिया, "राणाजीने अभी शक्तावतोंकी शक्ति नहीं देखी, इसीलिए ऐसा कहते हैं। जिस छातीपर हाथी भी गुजर जाये, तो साँस न छूटे, उसमें थकानका अनुभव कैसे हो सकता है?"

इस गर्वोक्तिपर सरदार लोग चौंके। यह तो प्रकट था कि बालोमें अपूर्व बल था, मगर हाथीमें भी कुछ वजन होती है। राणाने हँसकर कहा, "हमारे सरदारोंमें प्रथा है कि जो जबानसे निकल जाये उसे पूरा करके दिखाते हैं। जो किया नहीं जा सकता उसकी डींग मारना वीरोंके लिए शोभाजनक नहीं होता, बालोजी।"

इतनी-सी बातपर बालो तनकर खड़ा हो गया। "मैं इसी समय, सब सामन्तोंके सामने जो मैंने कहा है वह पूरा करके दिखाऊँगा। हाथी मँगाया जाय।"

बालोकी गर्वोक्ति सुनकर एक बार तो सभी सनाका-सा खा गये। पलक मारते वह सैनिक-राजसभा खेलका अखाड़ा बन गई। राणा अमरसिंहने उसी समय अपना खास हाथी मँगवाया। यह हाथी जहाँ बहुत

अधिक बलवान् था वहाँ अत्यन्त आज्ञाकारी भी था। राणाका विचार था कि यदि अदूरदर्शितासे बालो हाथीके पैरोतले कुचलने भी लगा, तो वह उसी क्षण हाथीको आज्ञा देकर अपना पग पीछे हटानेके लिए मज़बूर कर सकते थे।

दूर-दूर तक पड़ी राजपूत छावनीमे यह समाचार पहुँच गया। दो घड़ीके भीतर-भीतर सारा जङ्गल इस अद्‌भुत खेलके दर्शकोंसे भर गया। बालो प्रसन्न था! उसने ईदरमे रहकर समय व्यर्थ नहीं खोया था। अन्तमे जब खेलकी तैयारी पूरी हो गई तो राणाने फिर निगाहे पसारकर देखा। चूड़ावत सरदार कही भी दिखाई नहीं पड़ रहे थे। उन्होंने उसी समय अपने अङ्गरक्षकको उन्हें डेरेसे बुला लानेके लिए भेजा। कहलवाया कि ऐसा अद्‌भुत खेल उन्होने सारे जीवन नही देखा होगा।

कुछ देरमें सन्देशवाहक चूडावत सरदारका उत्तर लाया: "राणाजीका निमन्त्रण सिर ऑखोपर, मगर चूड़ावत वशके वीर कभी इस तरहके बचकाना खेलोमे रस नही लेते। उनका मनोरञ्जन रणस्थलीके अतिरिक्त और कही नहीं होता.."

राणा अमरासहके मनको आघात लगा। कोई किसीकी गर्दन पकड़कर सही रास्तेपर भले ही लगा दे, मगर जिसकी गर्दन पकड़ी जाती है वह एकबार उसे हाथोसे सहलाता जरूर है, एकबार अपने उद्दण्ड शुभचिन्तककी ओर रोषभरी दृष्टिसे देखता जरूर है। चूडावत सरदारकी पहली उद्दण्डताका कोई बीज अभीतक राणा अमरसिहके मनमे कही छितरा हुआ था। यह दूसरी बार उसमे खाद पड़ी, ओर वह खूनका घूँट पोकर रह गये। जो व्यक्ति इस वीरतापूर्ण अद्‌भुत प्रदर्शनमे रस ले रहे थे, चूड़ावत सरदारने उन सभीको बच्चोकी श्रेणीमे डाल दिया था।

जब तक राणा इन विचारोमे डूबते-उतराते रहे, तब तक खेलका आरम्भ भी हो गया और वह हाथीके द्वारा पहुँच सकनेवाली हानिके प्रति सचेत नही रह सके। सहसा द्वेष-निद्रासे चौककर उन्होने देखा कि

बीच मैदानमें, छाती पर लकडीके तख्ते रखे, बालो साँस फुलाये पडा है और सधा हुआ हाथी एक क्षणके लिए अपने चारों पैर तख्तेपर रख-कर उतर चुका है। हाथीके अलग हटते ही शक्तावत भाई बालोकी ओर दौडे। साथ ही दौड़े सब सरदार, अपने-अपने हृदयमें आशङ्का छिपाये—शायद इस वीरकी कुचली हुई लाश ही देखनेको मिले!

मगर बालो धोंकनीकी तरह साँस छोडता हुआ उछलकर खडा हो गया। शक्तावतोंने भाईको कन्धोपर उठा लिया और सामन्त-सरदारोंने उसकी पीठ ठोकी। जब शक्तावत बालोको कन्धोंपर उठाये राणा अमरसिंहके सामने लाये तो वह नीचे कूद पडा और राणाने उसे अपने वक्षसे लगा लिया। फिर उल्लासपूर्ण स्वरमें बोले, "तुमने अपनी मेहनत और बलसे यहाँ उपस्थित सभी सरदारोंका मन मोह लिया है। हम नहीं समझ पा रहे है कि हम तुम्हें पुरस्कारमें क्या दें—फिर भी, हमारी सेना-ओंके अग्रदलका नेतृत्व अबसे शक्तावतोंके हाथमें रहेगा।"

राणाके इस असामयिक पुरस्कार-दानको सभी उपस्थित जनोंने सुना और दातोंमें उँगली दबा ली। जिस अधिकारपर आज तक चूडावतके वंशका आधिपत्य था वह अकारण ही निमिषमात्रमें उससे छिन गया था। इस अधिकार-हननका रौद्र रूप भविष्यमें क्या होगा इसकी कल्पना न कर पानेके कारण सरदारोंके हृदय आशङ्कासे काँप गये। क्या चूडावत-सरदार इस अपमानको इतने ही सहज भावसे पी जायेंगे?

मगर शक्तावतोंके डेरोंमें घीके चिराग जले। जो सम्मान उन्हें मिला था वह अकल्पनीय था—फिर चाहे वह किसीके भी अधिकार-क्षेत्रसे नोचकर दिया गया हो। आज वे उस दिनको सराह रहे थे, जिस दिन भाजीने धोखा करके उन्हें मैसरोरके बन्द फाटक दिखाये थे। वे यश खोजनेके लिए निकले थे और उन्हें यश मिला था।

इस समाचारको चूडावत-सरदारके पास वह व्यक्ति लेकर गया, जो उसे सबसे अधिक उत्तेजक ढंगसे सुना सकता था। वह था चूडावत

५

सरदारका भाट। उसने गीतोंमे चूडावत वंशके उन कृत्योंका उद्बोधन किया, जिन्हें सुनकर चूड़ावतोंकी ही नहीं, साधारण राजपूतोंकी बाहुएँ भी फडक उठती थीं। गौने आई पत्नीने एक समय अपने हाथों अपना सिर काटकर मोहसे ग्रस्त पतिके पास भिजवाया था : "जाओ, अब निश्शङ्क होकर लडो। तुम्हारी मोह-मूर्ति तुम्हारे पास रहेगी।" और चूडावतने रानीका सिर अपने गलेमें बाँध लिया था। उसके हाथोंमे रणचण्डी उतर आई थी और आँखोंमे साक्षात् अग्नि फूट निकली थी...कहाँ गये वे समय ? कहाँ हैं वे वीर ? कहाँ है वे..।

तड़पकर चूडावत-सरदार बाहर निकले। "बन्द करो यह गाना ! क्या तुम किसीको शान्तिसे बैठने नहीं दोगे ! क्यो पागल आदमीकी तरह चिल्ला रहे हो ?"

भाटने सिर झुका दिया। "चुप ही रहूँ, राणावतजी, अब आखिरी बार इस गीतको गा रहा हूँ। फिर नही गाऊँगा। कलसे केसरिया ध्वज शक्तावतोंके हाथमें जा ही रहा है।"

"क्या बकते हो !" चूडावत-सरदार गरजे। "जानते नही किससे बाते कर रहे हो !"

"जानता हूँ, राणावतजी.. " और उसने बीते हुए काण्डको अक्षर-अक्षर जोडकर इस तरह कहना आरम्भ किया, इस तरह दुहराया कि यदि स्वयं चूड़ावत सरदार भी वहाँ उपस्थित होते, तो इस प्रकार नहीं देख सकते थे। भाटके बोल ज्यों-ज्यो उसके कानोंमें पडते गये त्यो-त्यों मानो ढला हुआ सीसा उनमे ढलता रहा। झपटकर उन्होने म्यानसे तलवार खींची और राणा अमरसिंहके डेरेकी ओर चल पडे, जहाँ शक्तावतो सहित सामन्तगण फिरसे ऊनतालके किलेको सर करने की योजना बना रहे थे।

समस्त सरदारोंकी निगाह एक साथ ही द्वारकी ओर उठ गई, और सबके नेत्र आश्चर्यसे फटे रह गये। चूडावत सरदार हाथमें नगी तलवार

लिये उपस्थित जनोपर नेत्रोसे आग बरसा रहे थे । सरदारोको सम्बोधित होते देखकर उन्होने गरजकर कहा, "कौन माईका लाल है, जो चूडावतोके हाथसे केसरिया पताका लेगा—शेरनीका दूध पिया हो, तो सामने आये !"

बालो उछलकर खडा हो गया । जोधाने तलवार फेंकी और वह बालोके हाथमें जादूके मन्त्रकी तरह आ गई । क्षणमात्रमें सभी सामन्त उठ खडे हुए । बाहर प्रज्वलित अग्निका प्रकाश डेरेकी विशाल दीवारोपर छायाके साथ आँखमिचौनी खेलने लगा ।

निकट ही था कि बिजलियाँ कौंध जातीं कि राणा अमरसिह बीचमे आ गये । ललकारकर उन्होने चूडावत-सरदारसे कहा, "राणावतजी, तलवार ही लेकर आये हो, तो उडा दो हमारा सिर । चूडावतोके हाथसे यही काम होना बाक़ी रह गया है ।"

चूडावत-सरदारने अपमानको पीकर कहा, "आप ही इस काण्डके उत्तरदायी हैं—आप बीचमेंसे हट जाइये, राणाजी !"

"ठीक है," राणाने कहा, "हम उत्तरदायी है, तो हम ही उत्तर देंगे । नेतृत्व परम्पराकी बपौती नहीं है, नवीनताका अनुगामी है । बाप्पा-रावलके गौरवको बने रहना है, तो नेतृत्व वृद्ध हाथोंसे जवान हाथोंमे देना ही होगा । तलवारको म्यानमें करके जवाब दो, नहीं तो हमारी नजरोंसे दूर हो जाओ । हमे उद्दण्ड सरदारोंको सहनेकी आदत नहीं है ।"

चूडावत-सरदारको अब अपनी स्थितिका भान हुआ । उन्होने राणा और सरदारोंके दृढ मुखोंकी ओर देखा और शान्तिके साथ तलवारको कमरपेटीमे खोंस लिया । फिर बोले, "आयु ही वीरताका प्रमाण नहीं होती, राणाजी, मेरे वशका परम्परागत अधिकार मुझसे छीननेसे पहले आपको नवीन शक्तिकी श्रेष्ठता प्रमाणित करनी थी । हाथीको छाती-परसे गुज़ार देना एक बात है और तुर्कोंकी अक्षौहिणी सेनाको गुजारना

बिलकुल दूसरी। बच्चोंके खेल वीरताके मापदण्ड कभी नहीं बन सकते।"

इस मारपीटके श्रीगणेशसे एक-न-एक दिन अन्य सरदारोंको भी अपने परम्परागत अधिकार छिननेका भय हुआ। इसलिए सभी एक स्वरमे बोल उठे, "राणावतजी ठीक कहते हैं।"

शक्तावतोंने आशङ्कासे राणा अमरसिंहके चेहरेको देखा। देखे अब राणा अपना दिया हुआ पुरस्कार किस प्रकार वापस लेते हैं! राणाने कुछ क्षण विचार करके कहा, "अच्छी बात है, परीक्षा ही प्रमाण होगी। चूडावतों और शक्तावतोंमेसे जो सबसे पहले ऊनतालके किलेमे प्रवेश करेगा वही वशानुक्रमसे केसरिया ध्वजका रक्षक रहेगा।"

सरदारोंने महाराणा प्रताप और महाराणा अमरसिंहके नामका जयघोष किया। जब यह कलरव धीमा पडा, तो सबने देखा कि वहाँ डेरेमे न चूडावत सरदार थे और न शक्तावतोंमेसे कोई था। वे जल्दीसे-जल्दी अपनी-अपनी सेनाओ सहित ऊनतालके किले तक पहुँचनेके लिए विदा हो चुके थे। रात्रिके समय ही राजपूती शिविरोंमे रणभेरी बज उठी। चारों दिशाओंमे वनप्रदेश जैसे सिंहकी ललकारोंसे गूँज उठा।

शक्तावतोंने अपने हाथियों सहित कभीका कूच बोल दिया था। शत्रुको गुमान भी नही हो सकता था कि सीमापर हमला करनेमे दुश्मन इतनी अकल्पनीय शीघ्रता करेगा। बालो और जोधाकी योजना थी कि ऊनतालके रक्षकोंको वेखबरीमे धर दबोचा जायेगा, और यदि वे समय रहते खबरदार हो गये, तो मुख्य द्वारपर हाथी हूल दिये जायेंगे। इस महाप्रयाणके पथपर कौन गिरेगा, कौन बढ़ेगा, इसकी चिन्ता न किसीको थी, न होने वाली थी।

चूडावतोंने अपने घोड़ोंपर भरोसा किया। ऊनतालको पीछेकी ओरसे दपना ही उनका उद्देश्य था। अपनी घुडसवार सेनाके साथ शक्तावतोंसे पहले ही पहुँचकर वे शत्रुको चकित कर सकते थे। साथमे पाँच सौ भील

धनुर्धर थे, जो ऊनतालकी फसीलोंपर उभरने वाले एक भी सिरको बिना तीरका निशाना बनाये न छोडनेकी कसम खाकर चले थे।

भारतीय इतिहासमे प्राणोका शुल्क देकर खेली जानेवाली यह प्रतियोगिता अद्वितीय थी, अपूर्व थी।

किन्तु दोनो ही पक्षोके अनुमान गलत निकले। शत्रु उतना अचेत नही था, जितना सोचा गया था। प्रातःकालके उठते हुए बालरविकी किरणोंमें ही दूरसे चमकती हुई धूलको बुर्जोंपर खडे हुए सन्तरियोने देख लिया। तत्काल भेरी बज उठी और क्षणभरके भीतर-भीतर मुगल फसीलोंपर आ गये। उन्होंने धोखा खाया, तो सिर्फ एक बातमे, उन्हें यह स्वप्नमे भी गुमान नही था कि आक्रमण एक साथ दो तरफसे होगा, और आक्रमण-कारी किला सर करनेके लिए नही आये है, बल्कि बाजी सर करनेके लिए आये हैं—और इसमे अक्लको दखल नही होगा।

राजपूतवाहिनीके निकट आते ही किलेपर मार पडनी आरम्भ हो गई। चूडावतोंने दीवारकी रेखाके समानान्तर भीलोकी एक दुहरी पङ्क्ति बनाई और तीरोंकी छाया तले चूडावतोंके अश्व लम्बी-लम्बी रस्सीकी सीढियोंको लिये हुए तेजीके साथ पहाडीपर चढने लगे। किलेकी बुरजियोसे बारूदी तोपे दगनी शुरू हुईं। पत्थरोंके छोटे-बडे टुकडोंके साथ धूल और गुब्बार, और उसमें राजपूत सैनिकोंके कटे-फटे अङ्ग आकाशमे उछलने लगे। मगर किलेकी दीवार तक पहुँचना टेढी खीर थी। मृत्युके मुँहमे निर्भय होकर प्रवेश करनेवाले सैनिकोंको उसके विकराल दाँतोसे बचानेके लिए न वहाँ असख्य हाथी थे, न पहियेदार खडे तख्ते थे। हर राजपूत शत्रुके पैने हथियारोंके सम्मुख छाती ताने आगे बढ रहा था।

किलेकी दूसरी ओर शक्तावतोंने हाथियोंकी सहायतासे ज़ोर बाँध लिया था। लोहेकी मोटी जालीके अभेद्य कवच धारण किये शक्तावत अपनी सारी सेनामे हर स्थानपर मौजूद दिखाई पडते थे, बालो और जोधा मुख्य

ाटकको हाथियोके मस्तकोकी चोटोसे तोड देनेका उपक्रम कर रहे थे।
्सरी ओरसे ज्यो-ज्यो उन्हे चूडावतोका रणघोष सुनाई पड जाता था,
यो-त्यो उनके शरीरोमे मानो साक्षात् बिजली भर जाती थी। तोपोकी
ारज इधर भी रह-रह कर सुनाई पड जाती थी। मगर एक-एक करके
ात्तावतोने शत्रुके तोपचियोको ही बेकाम कर दिया था। उनके निशाने
नचूक थे।

दोपहर तक इसी प्रकार युद्ध चलता रहा। इस बीच चूडावत खाई
ार करके किलेकी दीवार तक पहुँच चुके थे और उनकी रस्सियोकी
ीढियॉ अनगिनत सख्यामे दीवारके कगूरोमे फॅस गई थी। सैकडो बॉसकी
नी सीढियॉ दीवारके साथ लग चुकी थीं और उनपर राजपूत, ऊपरसे
रसते हुए पत्थरों और शस्त्रोसे आहत होकर गिरते-पडते ऊपरकी ओर
ढनेका प्रयत्न कर रहे थे। इधर बालो और जोधाने लोहेकी मोटी
ालीकी झूल पहनाकर, माथेपर भारी लोहेका तख्ता लगाकर, तीरोकी
ायामे पहला हाथी मुख्य द्वारकी ओर हूल दिया था।

हाथी द्वारको लक्ष्य बनाकर तेजीके साथ लपका। किन्तु ऑखोपर
ोहेका तख्ता बॅधनेसे पहले ही सम्भवतः हाथीको यह भान हो गया था
क जिस द्वारसे वह टक्कर लेने जा रहा है, उनमें भारी, मोटी और पैनी
ोलोंके छत्ते के-छत्ते लगे हुए है। यदि किसी कारण उन पैनी कीलोंके
लेवर उसके माथेमे घुस गये, तो स्वय ब्रह्मा भी उसके प्राणोकी रक्षा
ही कर सकता। जानवरकी भावना कौन समझे? द्वार तक तो हाथी
जीके साथ झपटता चला गया और शत्रुके शस्त्र उसके कवचसे आ-आ-
र टकराते रहे। मगर द्वारके पास पहुॅचते ही सहसा वह ठिठका, और
हावतके लाख अङ्कुश चलानेपर भी वह लौटकर अपने ही लोगोंको
ुचलता हुआ भाग खडा हुआ।

समय नही था। दूसरी ओरसे चूडावतोका रणघोष तीव्र-से-तीव्रतर
ता जा रहा था। जोधा दूसरे हाथी पर स्वयं सवार हुआ। अङ्कुश हाथ

मे लिया और हाथीके मस्तकमे जोरसे चुभो दिया। उन्मत्त हाथी चिंघाड-कर आगेकी ओर भागा। जब तक वह ठिठके, जोधाने एक अङ्कुश और मारा और हाथीने तड़पकर द्वारकी कीलोमे मस्तक देकर सारे शरीरका वेग तौल दिया। द्वारकी चूले जोरके साथ हिलकर चरमराई और ढेर-सा पत्थर उनमे झड़कर नीचे गिर पड़ा। किन्तु मज़बूत कीलोंने हाथीके मस्तकपर लगे भारी लोहेको तोड दिया था और कीले हाथोके मस्तकमें घुस गई थीं। हाथी जोरसे चिंघाडकर बीस-पच्चीस कदम पीछे हटा, सूँड ऊपर उठाकर मुँह खोला, फिर एक गगनभेदी चिंघाड मारी और वही भूमि-पर पहाडकी तरह पसर गया।

जोधा दूर जाकर पडा। साथ ही फिर चूडावतोका रणघोष सुनाई पडा और बालोने देखा कि तीसरा हाथी कदम पीछे हटा रहा है। वह जोरके साथ चिल्लाया : "या तो अब, नहीं तो कभी नही...।" महावतने हाथीको पुचकारा, बहलाया, अङ्कुश चलाया, मगर हाथीको शायद अपने साथीकी चीत्कारोका कारण मालूम हो चुका था। वह आधी दूर जाकर उलटे पैरो वापस लौट गया। बालोने भेरी बजाई।

कुछ देरमे सोलह-के-सोलह शक्तावत एक स्थानपर एकत्र हो गये। सामने कायर हाथी खडा था और बालोका मुख सन्ध्याके सूर्यकी भाँति क्रोधसे लाल हो रहा था। उसकी चौडी छाती रह-रहकर उठती बैठती थी और उसका जी चाह रहा था कि हाथीको कच्चा चबा जाये। सहसा एक विचार उसके मस्तिष्कमे कौंधा और हाँफते हुए जोधासे उसने कहा, "हाथी कीलोंके भयसे वापस लौट आते है।"

"हाँ", जोधाने कहा। "मस्तकके सामने लगा लोहेका तख्ता उसकी रक्षा कर पायेगा इसमें हाथीको सन्देह रहता है। काश कि इस कम्बख्त जानवरमे इतनी अक्ल न होती. ।"

"अच्छी बात है," बालोने होंठ चबाते हुए कहा, "जैसा मै कहता हूँ वैसा करो।"

"आप सरदार है, जो कहेंगे वही किया जायेगा," जोधाने कहा।

बालोने सीधी आज्ञा दी, "मेरी पीठ सामने करके हाथीके मस्तकके साथ मेरे शरीरको बाँध दो। पीठ पर लोहेका तख्ता बाँधो और हाथीको हूल दो."

यह बात सुनकर शक्तावत भौंचक्के रह गये। क्या यह सभव हो सकता था? क्या यह सम्भव है? जोधाने कहा, "यह आप क्या कहते है! द्वारके और हाथीके मस्तकके बीचमें आप पिस जायेंगे। अगर तख्ता टूट गया, तो कीले हाथीके मस्तकको छेदनेसे पहले आपके बदनको पार करेंगी"

"यही तो मै चाहता हूँ। यही हाथी चाहता है कि उसके मस्तकपर आनेवाले सकटको कोई जीवित मानव-शरीर अपने ऊपर ओट ले। देर न करो। हमे चूडावतोंसे पहले किलेके भीतर पहुँचना है—जिन्दा या मुरदा, हममेंसे किसी-न-किसीका शरीर चूडावत सरदारसे पहले ऊनतालके भीतर होना चाहिए। जल्दी करो, समय हाथसे जाता है। मैने हाथीको अपनी छातीपरसे गुजारा है, उसके जोरसे मै मर नही जाऊँगा।"

जोधाका सिर चकराया। बाकी भाई एक क्षणके लिए किकर्त्तव्य-विमूढसे खड़े रहे। जब बालोकी आवाजने दहाडकर कहा, "जल्दी करो, मूर्खो, समय जा रहा है!" तो वे सहसा मशीनके पुरजोकी भाँति काम करने लगे।

बालोके शरीरको औधा करके हाथीके मस्तकके साथ और बालोकी पीठपर लोहेकी बहुत मोटी चादर बाँध दी गई। हाथीको अपने मस्तकपर जीवित मनुष्यके शरीरका स्पर्श हुआ और उसे सन्तोष हो गया कि कीलोंके तीखे सस्पर्शको अनुभव करनेवाला उससे पहले उसका मालिक है। इस बार एक ही अङ्कुश पर्याप्त हुआ और हाथी ऊनतालके मुख्य फाटककी ओर वेगके साथ दौडा, जैसे जीवित महाकाय पर्वत उडा जा रहा हो।

ऊपरसे सैकडो शस्त्र और पत्थर बरस पडे और हाथीके शरीरके

साथ फूलकी तरह लगकर पृथ्वी चूमने लगे। द्वारके निकट पहुँचते ही महावतने एक जोरका अङ्कुश चलाया, हाथीने पागल होकर मस्तकका अग्रभाग द्वारकी कीलोंपर पूरी ताकतके साथ दे मारा। बालोकी रुकी हुई साँस जैसे एक बार छूट जानेकी हुई, मगर रह गई। द्वारकी चूलें भी उसी अनुपातसे मानो उखडते रह गई।

महावतने एक अङ्कुश और किया। उसी समय ऊपरसे एक भारी पत्थर आया और महावतकी पीठपर धमाकेके साथ गिरा। पकड छूट गई और वह धराशायी हो गया। हाथी वेगसे पीछे हटा और महावतको अपने पैरोंतले कुचलता हुआ फिर दूनी शक्तिसे द्वारके साथ जा टकराया. फिर तीसरी बार, फिर चौथी बार. और पाँचवी बार टक्कर मारते ही लोहेकी मोटी चादर दुहरी हो गई। एक दबी हुई चीख हाथीके मस्तकके ऊपरसे सुनाई पडी। किन्तु शोक! हाथीको लौटा लेनेवाला महावत वहाँ मौजूद था—बालोकी साँस छूट गई थी हाथीने किसी ओर ध्यान न देकर एक बार द्वारपर उसी वेगके साथ और प्रहार किया, और भारी फाटक अरराकर पीछेकी ओर ढह पडा।

शक्तावत भाई प्रसन्नता और आशङ्काके सम्मिलित वेगसे अपनी सेनाओंको लिये-दिये हाथीके पीछे-पीछे किलेके भीतर घुस पडे। चूडावतों का भारी रणघोष अब भी सुनाई पड रहा था—किलेके भीतरसे या बाहरसे वह कोई भी निश्चय न कर सका। उन्होंने आगे जाकर हाथीको रोका और उसे बैठाया। फिर लोहेकी चादरकी हालतको देखकर सहसा सभीका कलेजा मुँहको आ गया। चादर फट चुकी थी और गरम-गरम मानव-रक्त उसकी फटी हुई दरारोंमेसे निकलकर, पूरी चादरको भिगोता हुआ हाथीकी सूँडपर बह रहा था।

भाइयोंने मिलकर बालोके क्षतविक्षत शरीरको हाथीके मस्तकसे अलग किया। वह अचेत था। किन्तु साँस न जाने कैसे अभी धीमी-धीमी चल रही थी।

आस-पासके सैनिकोंने राणा अमरसिंहके आते-न-आते किलेको अपने अधिकारमे कर लिया। मगर आधा किला शक्तावतोंके अधिकारमे आया और आधा चूडावतोंके। चूडावत-सरदारका भी प्राणान्त हो चुका था, और उनका शव भी किलेके भीतर उस समय पाया गया, जब शक्तावत किलेको अधिकारमे ले रहे थे। बादमें चूड़ावत सैनिकोंने आकर समान रूपसे किलेको अधिकार में लिया।

चूडावत-सरदारके शव और बालोके अचेत शरीरको देखकर राणा अमरसिंहकी ऑखोसे रोकते-रोकते भी पानी बह निकला। वह एक हाथ बालोकी रक्त-रंजित पीठपर और एक हाथ चूडावत-सरदारकी छातीपर रखते हुए भूमिपर गिर पडे।

कुछ देर बाद उन्हें हटनेके लिए कहकर राजवैद्यने बालोकी नाडी देखी, और उठकर बोला, "थोडी देर बाद नाडी छूट जायेगी। मृत्युसे पहले एक बार चेतन किया जा सकता है—कहिए तो..."

"हॉ, हॉ, करो, करो," राणा अमरसिंहने कहा। "मरने से पहले उसे यह तो पता चल जाये कि उसके प्राणोंका मूल्य पूरा-पूरा उसे मिल गया है, और आजसे शक्तावतोंका यह अधिकार होगा . ."

"ठहरिये, राणाजी," एक चूडावतने आगे बढकर राणाको आगे बोलनेसे रोका। "मेरा दावा है कि चूडावतोंने पहले किलेके भीतर प्रवेश किया।"

राणाके नेत्रोंके डोरे खिच गये। वह कड़े शब्दोंमे बोले, "प्रमाण?"

"यह रहा प्रमाण," चूडावतने अपने पीछेसे कुछ साथियोको आगे आनेके लिए जगह दी। उन लोगोंके हाथमें एक चूडावतका शरीर था। राणाके सम्मुख पहुँचकर उन्होने उस व्यक्तिके कानोमें झुककर कहा, "राणाजीके सामने हो। कह दो जो कहना हो।"

उस व्यक्तिने धीमेसे ऑखे खोलीं और कहा, "राणाजी, अधिक

नहीं बोल सकता, क्षमा करें चूडावत-सरदार जब फसील पर पहुँचे, तो उसी समय...शत्रुके तीरसे उनका स्वर्गवास हो गया। वह फसीलके ऊपर ही गिर पडे। उसी समय पीछेसे मै पहुँचा। सामने ही किलेका चरमराता हुआ फाटक दिखाई पड रहा था। मैंने चूडावत-सरदारके मृत शरीरको हाथोमे उठाकर क़िलेके भीतर फेक दिया, और प्रमाणके लिए सामने ही टूट कर गिरते हुए फाटकमे एक तीर मारा। तीर लगनेके साथ ही साथ फाटक. पीछेकी ओर गिर पडा और और मेरा तीर आपको उसके नीचे मिलेगा। पहले मेरा तीर फाटकके नीचे दबा, उसके बाद शक्तावत किलेमे घुसे...यही मेरा प्रमाण." और उस वीर सैनिकने अपनी बात शेष करके, तीन बार हिचकियॉ लेकर दम तोड दिया।

राणाने एक घूँट-सा निगला। एक बार उनकी निगाहें फिर बालो और चूडावतके शरीरोंपर पडी और फिर उन्होने दोनो हथेलियोंसे उन आँखोको ढक लिया। धीमे शब्दोंमे उनके मुँहसे निकला, "मेरे अधिकारमे कुछ नही है। मै मेवाडका राणा नही हूँ ओह! इस बाजीमें मैंने अपने दोनो हाथ कटवा दिये हैं. इस अपग राणाका केसरिया ध्वज निश्चय ही चूडावत लेकर चलेंगे, किन्तु कोई मुझे बताओ कि मै इस हारे हुए विजेताको क्या दूँ!"

सभी उपस्थित जनोके मुख शोक और परितापसे झुक गये। राजवैद्य अपनी परिचर्यामें लगा रहा। कुछ देर बाद बालोके नेत्र खुले। कुछ देर स्थिर रहकर उसकी दृष्टि चारो ओर उपस्थित चेहरोको पहचानने लगी। राणाको देखकर उसकी दृष्टि जोधापर गई और उसके होंठ कुछ फडफडाये। जोधाने कठिनाईसे, उबलकर आते हुए, कलेजेको रोककर कहा, "हॉ, हॉ, हमारी जीतका फल हमें मिल गया. !"

बालोके मुखपर एक क्षीण-सी मुसकराहट आई और उसकी ऑखे सदाके लिए बन्द हो गईं।

• बन्नी

दिल्लीके बादशाहको दक्षिणमें फँसा हुआ देखकर गुजरातके सुलतान फीरोजशाहने राजपूतानेपर चढाई कर दी। नागौरके राजा मानसिंहके बेटे दिल्लीके बादशाहके साथ दक्षिणमें गये हुए थे, इसलिए उसकी सैनिक शक्ति बहुत कम रह गई थी। गुजरातकी इतनी बडी सेनाका सामना करनेकी ताब न लाकर मानसिंहने नागौर खाली कर दिया। रनिवासकी वृद्धाओं, राजरानियों और अनुपम सुन्दरी राजकुमारी पन्नाको उसने सीमा प्रदेशके एक छोटेसे पहाडी किलेमें भेज दिया। फिर अपने घरानेके मूल्यवान जवाहरातों और अपने राज्यके हर खड्गधारी सैनिकको लेकर वह भी उसी पहाडी किलेमें जा छिपा।

नागौरपर अधिकार करनेके बाद फीरोजशाहने नागौरके नरपतिको भी अपने अधिकारमें करना आवश्यक समझा, और उससे भी अधिक आवश्यक समझा उस अनुपम सुन्दरीपर अधिकार करना, जिसके लिए उसने-राजपूतानेकी रेत फाँकी थी। उसने उसी पहाडी किलेकी ओर कूच बोल दिया, जहाँ अपने परिजनोंसहित उसकी स्वप्न-सुन्दरीने आश्रय लिया था।

मानसिंहने उस छोटेसे किलेको जहाँ-तहाँसे युद्धकी साजसज्जासे सज्जित करके उस सेहीका रूप दे दिया, जो भीड आ पडनेपर तनकर अपने काँटे खडे कर लेती है। मगर जिस प्रकार दिनके बाद निशाका आगमन निश्चित होता है, उसी प्रकार इतने दिनों ऐश्वर्यका सुख भोग लेनेके बाद मान-सिंहको अपना पराभव निश्चित दिखाई दे रहा था। हार और जीतकी चिन्ता उसे नहीं थी, चिन्ता थी उन परिजनोंकी, जो उसके भाग्यके साथ

बँधे हुए थे। सबसे अधिक चिन्ता थी राजकुमारी पन्नाकी, जिसने सूरज-मुखीके फूलकी तरह सदा जीवनका प्रकाशमान पक्ष ही देखा था।

इस प्रकाशमान पक्षका चलबिन्दु था एक पन्द्रह सालका लडका बन्नी। बन्नो एक ऐसे राजपूत सरदारका पुत्र था, जिसने मानसिहके अधीन, शत्रुओसे लडते वीरगति पाई थी। इसी पहाडी किलेकी रक्षा करते-करते उस सरदारके घरकी स्त्रियोने जौहर किया था और जब आक्रमणकारी किलेमे घुसा था, तो उसे वहाँ बच्चे और बूढे व्यक्तियोके अतिरिक्त यौवनके नाम एक ऐसा वीरान मिला था जिसके सामने जगल भी रोता है। वह दृश्य इतना भयानक था कि विजेताको भी किलेके भीतर घुसनेका साहस नहीं हो सका था। कालान्तरमे चलकर यह किला किस प्रकार वापस मानसिहको मिला, यह एक बडी कहानी है। बालक बन्नी इतना अधिक सुन्दर था कि एक बार अपने परिवारमे उस भोली-भाली मूर्तिको दिखाने लाकर फिर मानसिह उसे अपने परिवारसे अलग करके धायको सौपनेमे असमर्थ रहा।

इस तरह बन्नी और पन्ना एक साथ बडे हुए थे। दो-चार दिनकी छोट-बडाई छोडकर दोनोकी एक ही आयु थी। बीते हुए पन्द्रह सालके अरसेमे बन्नीके रूपमे एक ऐसे व्यक्तित्वका विकास हुआ था, जो मान-वोचित सौन्दर्यमे स्त्रियोको लज्जित करता था, हँसनेमे खिला हुआ फूल था, चपलतामे गिलहरीको मात करता था। अपना समस्त कोश लेकर उसमे स्वय जीवन प्रस्फुटित हो रहा था।

रनिवास और राजसभाके बीच एक लम्बी और घूमघुमौवा गैलरी थी। उसी गैलरीसे बाहरकी राजसभाका रनिवाससे सम्बन्ध था। सुलतानकी सेना किलेके बाहर क्या-क्या कर रही है और उसके विरोधमे मानसिहकी क्या प्रतिक्रिया है यह जाननेके लिए रनिवास बहुत अधिक उत्सुक था। बन्नी तीरकी तरह उस गैलरीमे आता था और राहमें खडी अनेक राज-रानियोके द्वारा टोका जाता था.

"अब सरदारोंने क्या निश्चय किया है ?"

"किलेकी सेना हँसीखेल नहीं है," बन्नीका उत्तर होता था। "नाको चने चबवा देंगे...समझ क्या रखा है !"

और इसके बाद बन्नी हवाकी तरह गायब हो जाता था। किसी भी सुन्दर स्त्रीको अपनी सुन्दरतासे लज्जित कर देनेवाला पन्द्रह वर्षका वह विद्युत्‌की भाँति चपल लडका अब यहाँ होता था, तो अब वहाँ। उसकी चपलताका अन्त केवल एक कक्ष होता था : राजकुमारी पन्नाका कक्ष।

रात हो गई और राजमहलमे किलेसे छूटनेवाली तोपोकी आवाज आनी आरम्भ हो गई। क्या दासियाँ, क्या रानियाँ सब गैलरीमें एकत्र हो गये। बन्नीको बाहर गये बहुत देर हो गई थी। बाहरसे समाचार आनेका और कोई साधन नहीं था। अधिकाश रमणियोके हृदय धडक रहे थे, कुछके मुँहपर तेज था। एक आशङ्का थी, जो बार-बार अँधेरी रातमे बिजलीकी भाँति कौंध जाती थी : क्या वीर मानसिह जौहरका निश्चय करेगा ?

रात गाढी-से-गाढी होती जा रही थी। दीपक जल उठे थे। तोपोंके दहाने रह-रहकर गरज उठते थे। इसके अतिरिक्त रनिवासमें बाहर होती हुई हलचलका कोई चिह्न नजर नहीं आता था। तभी सहसा बन्नी आता दिखाई पडा। 'बन्नी आया,' 'बन्नी आया,' कहती हुई अनेक रमणियाँ आगे बढ़ीं, किन्तु आशाके विपरीत बन्नीके पगोमेसे चपलता कूच बोल गई थी। वह आ रहा था, जैसे कोई उठाये लिये आ रहा हो। एक साथ कई नारी-कठोसे प्रश्न निकला : "क्या हुआ क्या समाचार है ?"

बन्नी चुप था। चेहरेपरसे हँसी उड गई थी। पलके धीरे-धीरे झपक रही थीं ! केवल पग एक ही चालसे आगे बढे जा रहे थे ! राजमाताके कक्षके बाहर जाकर वे रुक गये, द्वारपर ही वृद्धा खडी थी। उसे देखकर

वह भीतर चली गई। पीछे-पीछे बन्नी गया, और उसके पीछे पचासों रमणियाँ भीतर पहुँच गईं।

बन्नीके मुँहपर पास ही रखे दीपकका प्रकाश हिलता रहा। दो क्षणके लिए कक्षमें ऐसी चुप्पी छाई रही, कि सूई भी गिरती तो आवाज सुनाई पड जाती। वृद्धाने पलगपर लेटते हुए पूछा, "क्या बात है? कोई समाचार लाया है रे?"

बन्नीकी दृष्टि दीपककी लौपर जमी हुई थी। सहसा वहाँ उपस्थित नारीवर्गने देखा कि बन्नीका एक हाथ आगे बढा और उसकी उँगलियाँ दीपककी लौ को छूने लगीं, तुरन्त ही चीख मारकर बन्नीने अपना हाथ खींच लिया और घूमकर वह स्त्रियोंके बीचमेंसे राह बनाता हुआ बाहरकी ओर दौडा। सब स्त्रियोंके कलेजे जोर-जोरसे धडकने लगे।

"जौहर होगा!" "जौहर होगा!" "जौहर होगा!" कानों-ही-कानोंमें यह समाचार पलभरमें सारे रनिवासमें फैल गया।

बिछवा साँपकी तरह बल खाई हुई छोटी-सी चमकदार कटार लिये पन्ना द्वारपर बन्नीके पदचाप सुनकर घूम गई। बन्नीके नेत्र आतङ्कसे फटे हुए थे। पन्नाके नेत्र विस्फारित होकर थोडी देरके लिए उन नेत्रोंसे मिले। सहसा पन्नाके मुँहसे निकला : "नहीं, नहीं! मुझे आगसे बहुत डर लगता है। मैं चितापर नहीं चढूँगी। देखो, देखो, मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं. मैं आगमें पैर नहीं रखूँगी!"

बन्नीकी दृष्टि एक झटकेके साथ पन्नाके हाथमें थमी बिछवा कटारपर जाकर स्थिर हो गई। फिर पन्नाके मुँहपर जाकर टिकी। कमरेके झकाझक प्रकाशमें लडकीका मुँह सरसोंके फूलकी भाँति पीला दिखाई पड रहा था। चेहरेके आधे भाग तक खम्भेपर लटके हुए परदेकी छाया पड रही थी, मानो उसके नेत्र उस छायामें अपना आतङ्क छिपानेकी चेष्टा कर रहे हों।

बन्नीने कहा, "अभी तीन दिन तक क़िलेके भीतर अनाज और पानी है। तीन दिनमें सुलतान तोबा बोल देगा." फिर साथ ही उसने कहा,

"मुझे सुलतानसे बडा भय लगता है। सुना है उसकी लम्बी-लम्बी काली दाढी है और उसकी आँखे हमेशा लाल रहती है। वह ऐसा ही होगा, जैसा उस कहानी वाला देव; जिसमे एक राजकुमारीसे विवाह करनेके लिए एक राजकुमार अमर फल लेने जाता है, राजकुमारीको वह देव उठा ले जाता है और राजकुमार उसे देवके पजेसे छुडाकर लाता है, और.. . "

पन्ना एकटक बन्नीका मुँह देख रही थी। वह सोच रही थी कि क्या बन्नी, ससारकी विषमताओंसे अपरिचित भोला बन्नी, उस वीर राजकुमारके स्थानपर अपनेको नही रख रहा है ? क्या ऐसा कोई राजकुमार हो सकता है, जो इस कठिन परिस्थितिमे राजकुमारी पन्नाकी रक्षा कर सके।

तभी स्मृतिकी एक कलाबाजीके पीछे-पीछे उसकी नजरोंमे अरकडीकी पहाडियोका वह धुँधला आकार साफ होने लगा, जो उसके कक्षकी खिडकीसे आकाशपर खिंची हुई टेढी-मेढी रेखाओंके रूपमे हर सध्याको नजर आता है। इन पहाडियोसे उलझती हुई उसकी दृष्टिमे एक बाँका राजपूत युवक आया। तीन वर्ष पहले अपने दस हजार योद्धाओंके साथ इस युवकने उसके पिताके साथ मिलकर शत्रुओंको छकाया था, और अन्तमे विजयश्री मानसिंहको मिली थी। इसके बाद एक छोटेसे बजर भूभागको लेकर, जो पाँच-छः पीढियो पहले इस युवक उम्मेदसिंहके वशमे चला आता था और बादमें राजनीतिक घटना-चक्रसे मानसिंहके वशमे चला आया था। इन दोनो वशोंमें एक तनातनी खडी हो गई। कितनी ही बार पन्नाने युद्धके साजमे सजे हुए उस युवकको देखकर सोचा था कि काश, भविष्यमे चलकर उसे भी ऐसा ही पति मिले। क्या उसमे इतनी सामर्थ्य है कि वह गुजरातके सुलतानके दाँत खट्टे कर सके ?

कहानीकी चर्चा समाप्त करके बन्नी कह रहा था, "हम दोनो एक साथ मरेंगे...ज्वालाओंमे जलकर नही ..इस कटार से. ."

पन्नाकी दृष्टि फिर ऊपर उठी। "बन्नी, क्या तुम अरकडीकी पहाडियों तक पहुँच सकते हो?"

बन्नी यह प्रश्न सुनकर चौंका। "वाह! कोई भी पहुँच सकता है। इस किलेमें ऐसा कौन राजपूत है, जिसे राजकुमारी पन्ना आदेश दे और वह क़िलेकी दीवारसे नीचे उतरकर सुलतानकी तेगका शिकार बननेमें गौरव अनुभव न करे!"

"सुलतानकी तेगका शिकार नहीं बनना है", पन्नाने सयत स्वरमें कहा, "अरकडीकी पहाडियों तक पहुँचना है. . किसी भी कीमतपर पहुँचना है। अगर जौहरकी ज्वालाओंसे इस पूरे रनिवासको बचाना है, तो किसी न किसीका उस पर्वतश्रेणी तक पहुँचना अनिवार्य है . "

"असम्भव!" बन्नीने कहा। "उम्मेदसिंहका हृदय अब वैसा नहीं रहा। इसके अतिरिक्त सुलतानकी सेनाका सागर किलेके पत्थरोंको चारों ओरसे छू रहा है। लेकिन राजकुमारी पन्नासे उम्मेदसिंहका क्या सम्बन्ध?"

पन्नाको आश्चर्य हुआ। बन्नीकी आँखोंमें एक अवर्णनीय ईर्ष्याका भाव दिखाई पड़ रहा था। वह हँस पडी, "तुम पागल हो। क्या तुम समझते हो कि पन्ना उसे विवाहका सन्देश भेज रही है?"

बन्नी तिरस्कारका भाव मुँहपर लाकर कहा, "हूँ! मानो मैं कुछ समझता ही नहीं! अभी बच्चा ही हूँ! तुम किलेमेंसे जिसे चाहो भेज दो। पर कहे देता हूँ, सुलतानके सागरको लाँघकर कोई अरकण्डीकी पहाडियों तक नहीं पहुँच सकेगा . "

"नहीं, नहीं! वह आदमी पहुँच सकता है, जिसके हृदयमें मेरे प्रति श्रद्धा होगी, विश्वास होगा, स्नेह होगा और मेरी इच्छाको पूरी करनेकी लगन होगी। इस किलेमें ऐसा एक ही व्यक्ति है, और वह है बन्नी। बन्नी, क्या तुम मेरे लिए इतना भी नहीं करोगे?"

"नहीं," बन्नीने कठोरताका भाव मुँहपर लाकर निश्चयके स्वरमें कहा।

पन्नाने होंठ काटे। हाथमें पकड़ी बिछुवापर उसकी मुट्ठी कस गई। फिर सहसा ही वह ढीली पड़ गई। मुँहपर हास्य छा गया। बोली, "मैं उम्मेदसिंहको राखी भेजूँगी।"

"राखी!" आश्चर्यके अतिरेकसे बन्नीके मुँहसे निकला।

"हाँ," पन्नाने कहा। "अगर उसने राखी स्वीकार कर ली, तो जौहर नहीं होगा। दस हज़ार सूरमा सुलतानकी पीठमे तीर चुभो देंगे। राजपूत चाहे वैरी भी हो, किन्तु एक कष्टमे फँसी हुई राजपूत कन्याकी राखीको अस्वीकार नहीं कर सकता। बोलो जाओगे?"

"पर.. पर," बन्नीने आँखे फाडकर कहा, "यह तो असम्भव..."

"बन्नी, एक ही लक्ष्य है: अरकण्डीकी पहाड़ियो तक पहुँचना। वीर अर्जुनको केवल चिड़ियाकी आँख दिखाई दी थी। तुम्हें भी अपना लक्ष्य दिखाई देना चाहिए। सफल होकर लौटोगे, तो पन्ना तुम्हारी प्रतीक्षामे पलके बिछाये बैठी होगी। असफल हो जाओगे, तो समझना कि पन्ना भी साथ ही स्वर्ग पहुँच जायेगी...जाओगे?"

"आज ही?" बन्नीने आतङ्कित भावसे पूछा।

"अभी," पन्नाने विचलित स्वरमे उत्तर दिया। "रातका अन्धकार तुम्हारी सहायता करेगा।"

"तो यह बिछुवा मुझे दो।"

"क्यों?" पन्नाने सहम कर पूछा।

"इससे सुल्तानकी छाती चीरूँगा—अगर उसने मेरी राह रोकी, तो यह बिछुवा उसकी छातीमें घुस जायेगा...मूठ तक।"

"तो, लो", पन्नाने बिछुवा आगे बढ़ा दिया। बन्नीकी सुन्दर आँखे एक क्षणके लिए पन्नाके रसीले लम्बे नेत्रोसे मिलीं और बिछुवा उसके हाथोंमें आ गया।

थोडी-सी हिचकिचाहटके साथ मानसिंहने इस योजनाको स्वीकार कर लिया। रातके अँधेरेमें ही एक रस्सीके सहारे किलेकी दीवारसे बन्नीको

खाईमें उतार दिया गया। एक पत्तातक न खडका और बन्नी खाईके दूसरे किनारेसे जा लगा। इसके बाद खाईसे सिर उठाकर उसने चारों ओर दूर तक देखा।

मशालें-ही-मशालें नजर आ रही थीं। सुल्तानकी सेनाओंके डेरे दूर-दूरतक फैले थे। असख्य सैनिक हाथोंमे मशाले लिये इधर-उधर गश्त लगा रहे थे। सुल्तानने किलेकी ओरसे अप्रत्याशित गोलाबारीसे बचनेके लिए रातको दिन बना रखा था।

बन्नीकी आँखोंके ठीक सामने दो मशालें थोडे-थोडे समयके अन्तरसे आकर मिल जाती थीं और फिर एक दूसरीको पार करके दूर-दूर चली जाती थीं। ऐसे ही एक अवसरको थामकर वह पानीमे से ऊपर उचका और चुस्त गिलहरीकी तरह उसने एक छोटी-सी दौड मशालोंके दूसरी ओर दिखाई देनेवाले डेरे तक लगाई। उसने गश्ती सिपाहियोंकी पहली पङ्क्ति पार कर ली थी। मगर उसके आगे असख्य पक्तियाँ थीं, जिन्हें उसे पार करना था।

दो डेरोंकी आडमे खड़े होकर उसने फूलते हुए दमको साधा। सामने फैले हुए मशालोंके आकाशको एक कोमल चिडियाकी भाँति मिचमिचाई आँखोंसे देखा। इसके बाद उसने एक क्षणमें निश्चय कर डाला। लोमडी की तरह वह फुरतीसे बाहर निकला और साँपकी तरह बल खाते हुए रास्तेका तखमीना लगाकर, अन्धकार-ही-अन्धकारमें, सिपाहियोंसे कन्नी काटता हुआ भागा।

अधिक दूरतक वह सिपाहियोंकी नजरोंसे नहीं बच सका। तुरन्त सब तरफ एक शोर मच गया और सैकडों सिपाही उसके पीछे लग गये। अब उसने प्रकाश और अन्धकारका विचार भी छोडा। कभी दौडता-दौडता वह किसी मशालके घेरेमें आ जाता, और कभी अन्धेरेमे छिप जाता। किसीको धक्का देता, किसीकी मशाल गिराता बन्नी अभी आधा

मार्ग भं तै नही कर पाया था कि धरा गया। उसके कपडे गीले थे, उसका साँस फूल रहा था और बदनमे से चिनगारियाँ-सी निकलती प्रतीत हो रही थी।

जिसने पकडा था वह उसे ले चला। इतनेमे और भी पास आ गये। तब एकने उसका मुँह मशालके प्रकाशमे देखकर कहा, "अरे, यह तो औरत है औरत !"

"खुदाकी कसम ?" दूसरेने विश्वास न करके पूछा।

"मामूली औरत नहीं, हीरा है हीरा। न हो, तो दाढी मुँडा लूँ," पहलेवालेने कहा।

"तोबा ! तोबा ! जासूसीका काम औरतोसे लेते है। खुदाकी लानत है ऐसे काफिरो पर. "

"तो, सुल्तानके पास.. ?"

"हाँ।"

बन्नीको फीरोजशाहके डेरेमे ले जाया गया। चेहरा परिश्रम और पकड़े जानेके परितापसे लाल हो रहा था और आँखोमें खून उतर आया था। बन्नी सैनिकोंके हाथो-ही-हाथोमे छटपटा रहा था। निगाह पड़ते ही सुलतान मुँह बाये रह गया। "वाह ! क्या हुस्न अता फरमाया है अल्लाहने !"

"हजूर," पकडनेवालेने अपना महत्त्व जतानेके लिए कहा, "अभी कमसिन मालूम होती है।"

"मगर राजपूतोमे औरतोंको जासूसी करते हमने आज तक नही सुना था !" सुलतानने आश्चर्यसे कहा। "अगर यह सच है, तो ये कम्बख्त तो धरती फाड़ डालेगे।"

"हजूर, हाथ कङ्गनको आरसी क्या ?" सैनिक बोला। "हुक्म दिया जाये, तो इसकी जबानसे भेद उगलवाया जाये ?"

"जरूर, जरूर," सुलतानने कहा। "यह काम पहला है। बता, ऐ नाजनी, इस तरह छिपकर आनेमे तुम्हारा क्या मक़सद था?"

बन्नी एक बार फिर छूटनेके लिए छटपटाया। सैनिकोने उसे छोड दिया। बन्नी त्रस्त हिरनकी तरह चारो ओर छूटनेका साधन खोजने लगा। हाथ और पैर भागनेकी मुद्रामे मुडे हुए थे। वह चुप था।

फरमाबरदारने कहा, "जहाँपनाह, जब तक यातना न दी जायेगी इसकी जबान नही खुलेगी।"

"नहीं, नहीं," सुलतानने वासनापूर्ण दृष्टिसे बन्नीकी ओर देखते हुए कहा। "इसे हमारी ख्वाबगाहमे ले जाया जाये। हम प्यारका हथियार इस्तेमाल करके इससे सब बाते पूछ लेगे।"

यह योजना सभी सैनिकोको पसन्द आई। आखिर उन्होने जो कारगुजारी दिखाई है उससे सुल्तान मनोरञ्जन प्राप्त कर रहा है, उससे बढकर उनका सौभाग्य और क्या हो सकता था?

कुछ ही समय बाद सुलतान अपने उस डेरेमे पहुँचा, जिसमे पडा-पडा वह गरजती तोपोके बीच नाजनीनोंके ख्वाब देखा करता था। यह सही है कि बन्नीने अब तक मुँह नहीं खोला था क्योकि जबानसे अधिक उसका तीव्र मस्तिष्क इस मुसीबतसे भाग निकलनेकी तरकीब सोच रहा था, मगर इस प्रकार अपमानित होनेसे वह बफरा बैठा था। कभी-कभी सुल्तानकी क्षुद्र बुद्धि पर हँसी भी आती थी। सुल्तानको अकेले भीतर आता देखकर बन्नीके शरीरकी धमनियाँ तेजीके साथ खूनको इधर-से-उधर फेंकने लगीं।

इस स्वप्न सुन्दरीको बाहुओमे समेट लेनेके लिए हाथ फैलाये हुए सुलतान आगे बढा। "आ, ऐ नाजनी, मेरी आगोशमें आ, और समझ ले कि तेरी क़िस्मतका सितारा पलट गया है। इस पहाडी इलाकेमे सिर्फ दो टकोंके लिए जासूसीका गदा काम करनेकी अब तुझे जरूरत नही

रही। तुझपर गुजरातकी सारी दौलत कुरबान है.." और उसने झपट-कर बन्नीको हाथसे पकडकर खींच लिया, जिससे वह उसकी छातीसे आ लगा।

मगर शीघ्र ही सुल्तानको कुछ विचित्र-सा अनुभव होने लगा। उसके वक्षमें कोई तेज़ धारदार चीज़ चुभती जा रही थी। उसने झटका देकर बन्नीको अपनेसे अलग करना चाहा, मगर उसके दाँत मजबूतीसे उसकी छातीके वस्त्रको पकड़ चुके थे। इसलिए झटकेसे स्वयं सुल्तानका सन्तुलन बिगड गया और वह जमीन पर आ रहा।

बन्नी उसकी छातीपर चढ़ बैठा। अब सुल्तानने आँखे फाडकर देखा कि उसकी छातीपर एक बल खाई हुई चमकदार छोटी-सी कटार सीधी खडी थी और उसकी मूठ उस 'नाजनीन' की गोरी मगर मजबूत मुट्ठीमें फँसी हुई थी।

"यह क्या करती है, नाबकार! अगर तूने यह नापाक काम कर डाला, तो सारी फौज तुझपर टूट पड़ेगी और तेरे टुकड़े-टुकड़े उडा देगी।"

अब पहली बार बन्नीकी जबान खुली, और उसने कहा, "तेरे इस दुनियासे उठ जानेसे हमारे किलेका मुहासिरा उठ जायेगा।"

"नहीं, नहीं! ओह! अगर मै उठ भी गया, तो मेरा बेटा इस किलेको सर करेगा। आह! मुझे छोड दे। सच कहता हूँ तुझे मालामाल कर दूँगा। अपने हरमकी खास मल्काका ओहदा दूँगा..... आह!" बन्नी मल्का बनना नहीं चाहता था, इसलिए उसकी कटारकी बारीक नोक सुल्तानकी छातीमें आधा इंच पेबस्त हो गई थी। साथ ही वह पन्नाके शब्दोंको सोच रहा था। उसे अपने लक्ष्यपर पहुँचना था। वह सुल्तान की हत्यासे पूरा नही होगा। वह मारा जायेगा और पन्ना उसके दुःखमें प्राण दे देगी।

उसने कहा, "तो, ओ बेवकूफ़ सुल्तान, सुन : मै औरत नहीं, मर्द हूँ।

और मेरा घर अरकडीकी पहाडियोंमें है। मै अपनी बहनके लिए इस पहाडी क़िलेमे उसके मैकेसे भेट लेकर आया था कि तेरी फौजने किलेको घेर लिया। मैं वापस अपने घर जा रहा था। अब भी वहीं जाना चाहता हूँ। तू बड़े शौकसे इस किलेको सर कर, मगर मुझे अपने रास्ते जाने दे। नही तो मै तुझे अभी यमपुर भेजता हूँ।"

"तोबा, तोबा!" सुल्तानने ऑखें ऊपर चढाकर कहा। "कैसी अहमकाना ग़लती हो गई है! तोबा, तोबा! लडके, तू अपने घर जा सकता है."

"तो उठकर खास अपना घोडा डेरेके सामने मॅगाकर खडा करवा," बन्नीने आज्ञासूचक स्वरमें कहा "और मै तेरे बराबर बिछवा लगाये खडा हूँ। अगर जरा भी इधर-उधर हुआ, तो बिछवाके बल खाये दुधारे तेरे शरीरके भीतर जा पहुँचेगे।"

बन्नी उछलकर अलग हो गया और सुल्तान तोबा-तोबा करता हुआ उटकर खडा हुआ। बन्नीने बिछवा उसकी पसलीसे सटा दिया। सुलतानने पहरेदारको बुलाकर अपना घोडा डेरेके सामने लाकर खडा करनेका हुक्म दिया।

जब घोडा आ गया, तो बन्नीने फुरतीसे बिछवा दॉतोके बीच दबाया और तीरकी तरह डेरेसे निकलकर सामने खडे घोडेकी पीठपर उछला। अगले ही क्षण अरबी घोडा भारी रेत उडाता हुआ हवासे बाते करने लगा। पीछे-पीछे सुल्तानने उसे पकडनेके लिए अपने घुडसवारोको भेजा। मगर सुल्तानका घोडा हाथ न आना था, नहीं आया। इसीलिए तो बन्नीने खास सुलतानका घोडा मॅगाया था।

सुबह होते-न-होते बन्नी अरकडी पहाडियोके पीछे जा पहुँचा। गॉवके लोगोको किलेमे जाने देनेके लिए फाटक खुल चुके थे। उन्हींके साथ लगा-लगा बन्नी महलके भीतर पहुँच गया। सजे हुए घोडेके मुँहसे

फेन निकल रहा था और बन्नीका शरीर एक प्रकारसे उसपरसे झुका पड रहा था। एक हाथसे उसने अपने सिरकी पगडी थाम रखी थी।

राजमहलके पास पहुँचकर उसने केवल इतना कहा, "उम्मेदसिह. " और अचेतन होकर घोड़ेपर लटक गया। लक्ष्य आ गया था, इसलिए चेतनाने कुछ समयके लिए विश्राम ले लेना चाहा।

दोपहरसे पहले ही बन्नी ताजा हो चुका था। उसके मुँहसे उसकी कथा सुनकर कुँवर उम्मेदसिंह बहुत हँसे। इसके बाद बन्नीने उनके सामने पन्नाकी राखी रखी। सोनेकी कलीदार जडाऊ राखी देखकर कुँवर उम्मेद-सिंहका जोश भड़क उठा। उन्होंने बन्नीके देखते-देखते राखी उठाई और अपनी पगडीमे राखीको कसकर बाँध लिया। इसके बाद उठकर उन्होंने अपने सेनापतिकी ओर देखा : "जय भवानी !"

सेनापतिने कहा, "जय भवानी !"

सुलतानके घोडेपर बन्नी फिर सवार हुआ और कुँवर उम्मेदसिहके दस हजार वीर अगली सुबहको राजस्थानकी रेतको अपने पाँवो तले पीसने लगे। पहाडी चूहेकी भाँति कुँवर उम्मेदसिंहने अपने सारे दलको पहा-डियोमे बिखरा दिया और गुजरातसे मानसिहके क़िलेको तोडनेके लिए आनेवाला, पुर्त्तगालियो द्वारा संचालित, भारी तोपखाना बीच राह मे ही रोक लिया गया। साथ-ही-साथ सुल्तानकी रसदकी आमदनी भी बन्द हो गई। कुछ ही दिनोंमें आसपासके राजपूत राजा भी सोई नीदसे जाग उठे। जब उन्होने देखा कि देर या सबेर सुलतानको पीछे लौटना पडेगा, तो वे भी विजयश्रीमे अपना भाग बँटानेके लिए अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर उमड पड़े।

सुलतानको सन्धि करके जीता हुआ इलाका वापस करना पडा।

हर्षसे उन्मत्त अरकडी सेना मानसिहके किलेमें घुसी। साधारण राजपूत सैनिक उम्मेदसिहके पैर चूमने लगे। हर जगह उम्मेदसिंहके नाम

की माला जपी जाने लगी। मानसिहने उसे गलेसे लगा लिया, बोला, "जो माँग लोगे वही दे दूँगा। सब कुछ तुम्हारा है।"

कुँवर उम्मेदसिंहने पीछे खड़े बन्नीको आगे करके कहा, "और इस स्त्रीको क्या देंगे ?"

बन्नी शरमके मारे लाल हो उठा। मानसिहने उसे पैर छूनेसे रोकते हुए हृदयसे लगाकर कहा, "पन्ना मेरी बेटी है, तो बन्नी मेरा बेटा है।"

कुँवर उम्मेदसिहने निराश स्वरसे कहा, "तब तो मेरे लिए कुछ भी नहीं रह जाता।"

मानसिह प्रसन्न होता हुआ बोला, "आप मुँहसे कहिये तो सही। फिर देखिये, वह वस्तु आपके सिरपर न्योछावर होती है या नहीं।"

कुँवरने कहा, "तब, मुझे अपने परिवारका सबसे सुन्दर रत्न, पन्ना, दीजिये।"

मानसिंहने कहा, "क्या! आप राजकुमारी पन्नाका पाणिग्रहण माँगते हैं! कुँवर, एक बार फिर सोचिये, राजकुमारी पन्ना आपको राखी-बद भाई बना चुकी है।"

बन्नीका मुँह देखते-देखते सफेद पड गया। इस वार्त्तालापके बीच उसके चेहरेपर एक रग आ रहा था और एक जा रहा था।

कुँवरने कहा, "आप बुजुर्ग हैं, मेरा विचार है कि इतना अवश्य जानते हैं कि विवाहसे पहले ससारकी प्रत्येक नारी पुरुषके लिए माँ है या बहन है। फिर, मैंने उस राखीको अपनी पगडीमे रखा है, हाथमे नहीं बाँधा है।" यह कहकर उन्होंने अपनी पगडीमेसे उस राखीको निकाला और हथेलीपर रखकर मानसिहके सामने कर दिया।

बन्नीका मुँह फक् हो गया। मानसिहने कहा, "इसका निर्णय केवल पन्ना ही कर सकती है, कुँवर जी, यदि वह हृदयसे आपको भाई मान चुकी है, तो खेद है कि मेरे पास इस प्रार्थनाको पूर्ण करनेकी शक्ति नहीं होगी। यदि वह स्वीकार कर लेती है, तो पन्ना आपकी है।"

प्रसन्नतासे फूले न समाकर कुँवरने कहा, "मुझे स्वीकार है। चलो, बन्नी, हमें अतिथिगृह ।" लेकिन बन्नी वहाँसे लोप हो चुका था।

आज फिर वही गैलरी थी। वे ही रमणियाँ गैलरीमें एकत्र बिखरी हुई थीं। उसी प्रकार कुँवर उम्मेदसिंहके स्वागतके समाचार जाननेकी उत्सुकता सबके हृदयमें थी और उसी प्रकार बन्नी तीरकी तरह, उन सबके टोकनेकी परवाह न करता हुआ, पन्नाके कक्षकी ओर भागा जा रहा था। कमरेमें पैर रखते ही देखा पन्ना सजीधजी खडी थी। आज उसका रूप और भी अधिक तीव्रताके साथ निखर आया था। बन्नीको आते देखकर वह हर्षसे लगभग चीत्कार कर उठी : "बन्नी।"

बन्नी दरवाजेके पास ही खडा हो गया। उसके नेत्र पन्नाके नेत्रोंसे मिले और वह बोला, "तुमने जो कहा था वह मैंने कर दिया. "

"ओह ! तुम कितने अच्छे हो, बन्नी !" पन्नाने कहा।

बन्नीपर इसका कोई प्रभाव नहीं पडा। उसका मुख पूर्ववत् ही गम्भीर था। वह बोला, "तुम मेरे लौटनेकी प्रतीक्षामें पलकें बिछाये बैठी थी.. "

पन्ना घबराई, "तुम ऐसे क्यों देख रहे हो ! क्या बात है ?"

बन्नीने नहीं सुना। उसकी आँखें स्थिर थीं और उनमें असंख्य प्रश्न झाँक रहे थे। उसने आगे कहा, "और मैं यह भी नहीं समझता था कि कुँवर उम्मेदसिंहको विवाहका सन्देश भेज रही थी..."

"नहीं, नहीं," पन्नाने नकारस्वरूप अपनी हथेली आगे बढाकर कहा।

"तब कान खोलकर सुनो :" बन्नीने कहा, "कुँवरने किलेकी रक्षा की है। कुँवरके ही कारण किलेमें जौहरकी ज्वालाएँ नहीं उठीं। मगर कुँवरने तुम्हारी भेजी हुई राखी भी नहीं पहनी। वह पगडीमें रखकर उसे यहाँ लाया है। वह राखी लौटाकर इसके बदलेमें तुम्हारा हाथ पकडना चाहता है। अब बात तुम्हारी हाँ या नापर अटक गई है। कहो क्या कहती हो ?'

पन्नाको अपने कानोंपर विश्वास नहीं हो रहा था। पल भरमें अतीत और भविष्यके अनेक विचित्र चित्र उसकी पलकोंपर छायापटकी भाँति चिपक गये। वही कुँवर उम्मेदसिंह, जिसे देख-देखकर वह अपने भावी दूल्हेके रूपकी कल्पना करती थी, आज उसका दूल्हा होनेके लिए तत्पर है, बात उसके ऊपर अटकी हुई है..। और सामने खडा है बन्नी. उसका वह कल्पनाशील दावेदार, जिसने केवल उसके इङ्गितसे अपनी जानको एक टूटे हुए पत्तेकी भाँति क़िलेकी खाईके पानीमें डाल दिया था।

धीरे-धीरे वातावरण भारी-से-भारी होने लगा। प्रकाशकी जगह अन्धकारके टुकडे काले बादलोंकी तरह घिर-घिरकर कक्षमें फैलने लगे। पन्ना लडखडाई और उसने खम्भेके परदेको पकडकर उसका सहारा लिया। उसकी पुतलियाँ विचार-सागरमें डुबकी लगाते-लगाते ऊपर चढ गईं और वहीं खम्भेपर अपने बदनकी रगड लगाती हुई फरशपर गिरने लगी। उसकी यह अवस्था देखता हुआ बन्नी स्थिर खडा था। वह केवल अपने प्रश्नोंका उत्तर चाहता था।

सहसा पन्नाकी मुद्रा कडी पड गई। नेत्र पूरे खुल गये। उसने स्थिरताके साथ खडे होते हुए कहा, "लाओ, मेरा बिछुवा वापस करो, जो तुम मुझसे चलते समय ले गये थे।"

लेकिन एक ही लडाईमें भाग लेनेसे बन्नी समझदार हो गया था। उसने कहा, "तो यही है तुम्हारा उत्तर! यह बिछुवा तुम्हारे काम आ सकता है, तो मेरे भी आ सकता है।" कहकर वह वहाँ एक पल भी नहीं ठहरा।

बेटीकी चुप्पीसे मानसिंहने स्वीकृतिका अर्थ लगाया। जब तक विवाह की विधियाँ सम्पन्न होती रहीं, पन्ना आधी खुली हुई आँखोंसे सब निरखती रही। बन्नी स्थिर भावसे अपनी शक्तिभर सब कामकाजमें हाथ बँटाता रहा। जब पन्नाका डोला विदा होने लगा, तो बन्नी दूर खडा उसे देखता

रहा। उसी समय एक दासीने आकर उससे कहा, "राजकुमारी पन्ना तुम्हें बुलाती है, डोलेमे है।"

एक क्षणके लिए बन्नीके भावसे मालूम हुआ कि वह पन्नाकी इस प्रार्थनाको स्वीकार नही करेगा। मगर फिर वह हिला और धीमे पगोसे डोलेके पास गया, पन्नाने स्वय अपने हाथोंसे आवरण उठा दिया। फिर बोली, "मैं जा रही हूँ!"

बन्नी चुप रहा।

"जिस दिन मै सुनूँगी कि तुमने बिछुवा छातीमें चुभो लिया है उस दिनमे मैं भी विष खा लूँगी।" पन्नाकी आँखे डबडबा आई।

बन्नी इस बार भी चुप रहा।

पन्नाकी आँखोके उमडते आँसू उसके गालोपर बह चले! विचलित स्वरमे उसने कहा, "बन्नी, क्या तुम नहीं समझते कि मनुष्य कितना पराधीन होता है। राजकुमारी पन्ना देवदानवकी कहानियो वाली राजकुमारी नहीं है, बल्कि अपने परिवार, समाज, राज्य और राजनीतिक घटनाओसे बँधी हुई नारी है, काश कि कुँवर उम्मेदसिंह हमारे परिवारके रक्षक बनकर न आते, काश कि तुम उनकी जगह होते! बन्नी, इतिहाससे एक भूल हो गई है। क्या तुम इस भूलके कारण अपने स्वप्नोकी पन्नाको दण्ड दोगे?"

बन्नीने बच्चोकी भाँति अपने अंगरखेके पल्लेसे उमडती हुई आँखों को पोछा। यही उसका उत्तर था। उसने कहारोको सङ्केत किया और उन्होंने डोला उठा लिया। पोछनेपर भी बन्नीकी आँखोंसे आँसू ढलते रहे। बहुत देर तक वह पन्नाके डोलेको देखता रहा, जब तक कि वह दृष्टिपथसे ओझल होकर उसकी आँखोकी पुतलियोमे न समा गया।

एक मुसकराहट बन्नीके मुखपर आई और विलीन हो गई।

• मूँछका बाल

उस दिन रहस्यमय सम्राट् अकबरकी दाढीपर गुलाबजल लगाते लगाते जब नुसरत हज्जामने डरते हुए यह निवेदन किया कि वह तन्त्र-मन्त्रकी विद्यामे पारङ्गत है यहाँतक कि आदमीको जीवित ही जन्नतमे भेज सकता है, तो विद्वान् बादशाहको बडा कुतूहल हुआ।

बादशाहने गम्भीर होकर कहा, "नुसरत, हमारी इतनी बडी शहशाहियतमे तेरे जैसा बुद्धिमान् मनुष्य और कोई नही है।"

थोडी ही दूरीपर रेशमी वस्त्रकी प्रतीक्षामे खडी लौडी दाँतोमे उँगली देकर हौलेसे मुसकराई। शायद वह बादशाहके व्यङ्गको समझ रही थी।

हज्जामने कहा, "आलीजाहके मुँहसे झरे फूलोको चुन लूँ। हज्जाम तो आखिर हज्जाम ही है। कौन नहीं जानता कि हजूरकी सल्तनतमे अक्ल जहाँ पहुँचकर दम तोड बैठी है, वह राजा साहब बीरबल है।"

अकबर उसी मुद्रासे बोला, "मालूम होता है कि जन्नतमे तेरा कोई काम अटका हुआ है।"

नुसरत बोला, "हजूरको उमर चाँदसितारोसे बाते करे। इन खूबसूरत चमकती गेंदोके ऊपर, जन्नतकी रगीन चारदीवारीके भीतर, हजूर आलीजाहके पुरखोकी रूहें तैर रही है। बेटेपर अपनी जान कुरबान कर देनेवाले गाजी पादशाह बाबर और खुदाकी इबादतकी राहमे कुरबान हो जानेवाले गरीबपरवर बादशाह हुमायूँकी आत्माएँ रात-दिन जहाँपनाहकी जानको सौ-सौ दुआएँ देती होगी। इस विद्याको जानकर उनकी खैरियतका पता लगानेका ख्याल ही गुलामके दिलमें सबसे पहले उठा था। मगर सल्तनतके सबसे अधिक बुद्धिमान् मनुष्यके अतिरिक्त और कोई इस विद्याको सीखकर जन्नतमे कैसे पहुँच सकता है?"

बादशाहका दिल चाहा कि उसी वक्त हज्जामका सिर धड़से अलग करनेका हुक्म दें। लेकिन वह ठढा करके खाता था। वह ठठाकर हँस पड़ा और नुसरत सहमकर बादशाहकी ओर देखने लगा।

अकबर बादशाह किस समय विनोदको अपने हृदयमे प्रश्रय देता था और किस समय क्रोधको—इसका पता आजतक किसीको भी नहीं चल पाया था। नुसरत कोपके प्रहारसे बाल-बाल बच गया। दाढ़ी बनानेका काम खत्म हुआ और उसने जल्दी-जल्दी अपना सामान बुकचेमे बन्द करके तोन बार जमीनको चूमा। उसके जानेके बाद अकबर फिर एक बार जी खोलकर हँसा। लौड़ी नज़रें नीची किये रेशमी वस्त्र और जलका पात्र लेकर आगे बढ़ी। सोनेकी तूँबीसे उसने बादशाहके हाथोंपर पाली डालकर चपलताके साथ उन्हे पोछा। बादशाहने गुलाबजलसे मुँह धोया। उसी समय कक्षके बाहर खडी लौड़ीने सेवामें उपस्थित होकर विनयपूर्वक कहा, "जहाँपनाह, राजा साहब बीरबल, मिर्जा राजा मानसिंह, हजरत मुल्ला-दो-प्याजा और वजीर सदर अब्बुलफजल साहब कदमबोसी चाहते हैं।"

"बहुत खूब!" अकबर इस समय अपने इन रत्नोका आगमन सुनकर प्रसन्न हाता हुआ बोला, "हाजिर किये जाये।"

सब लोगोंने कक्षके भीतर आते ही तीन-तीन बार माथे तक हाथ ले जाकर गिराया। बादशाहके चेहरेकी तरफ देखकर बीरबलने कहा, "जहाँपनाह, साफ हो गई!"

बादशाहने घुटी हुई ठोढीपर हाथ फेरते हुए भृकुटी चढ़ाकर पूछा, "क्या साफ हो गई राजा साहब!"

राजा बीरबलने कहा, "हजूर, रीवाँके राजा रामचन्द्र वाली बात साफ हो गई. ."

वजीर अब्बुलफजलने कहा, "हजूर, बीचमें दखलअन्दाजीकी माफी चाहता हूँ, बात बिलकुल भी साफ नहीं है, बल्कि ज्यों-की-त्यो उलझी

हुई है। तीन साल हो गये, रीवाँका राजा हर बार अपने बेटोको खिराज अदा करनेके लिए भेज देता है, मगर खुद कभी दरबारमे नही आता। यह ठीक है कि हम लडाई नही चाहते, मगर इसका यह मतलब नही कि हमारे आधीन राजा हमें बराबरी तकका दरजा न दें। तीन सालके बाद राजा रामचन्द्रके खुद आगरेके दरबारमे उपस्थित होनेकी बात थी, मगर वह इस चौथे साल भी नही आया " अब्बुलफजलने कमरेमे बिछी हुई स्वच्छ चॉदनीके ऊपर अपने खंजरकी मूठकी नोकसे एक गहरी रेखा खींचते हुए कहा, " . अब रीवॉनरेश मुगल दरबारके सम्मानके रास्तेमे एक ऐसी लकीर बन गया है, जिसे मिटाये बिना शहशाहियतकी भाग्य-रेखाको अपना बडप्पन कायम रखना मुश्किल हो गया है।"

बादशाहने अपने रत्नको प्रशसाकी निगाहसे देखते हुए कहा, खूब! माबदौलतने युद्धके पक्षमे फजल साहबकी दलीलोंको सुना। आप क्या कहते है, राजा साहब?" अकबरका सङ्केत बीरबलकी ओर था।

राजा बीरबलने कहा, "जहॉपनाह, इस अकिञ्चनका विचार है कि फजल साहबने जो रेखा इस बेशकीमती चॉदनीके ऊपर खींचकर इसका बड़प्पन दिखाया है, वह इस रेखाको मिटाये बिना भी छोटा किया जा सकता है ।" इसके बाद बीरबलने लोंडीके हाथसे मोरकी पखी ली और उससे चॉदनीपर खिंची पहली रेखाके पास ही एक और बडी रेखा खींचते हुए बोले, "देखिए, जहॉपनाह, फजल साहबकी खींची हुई युद्धकी लकीर मेरी शान्तिकी लकीरसे छोटी हो गई..."

अकबर जोशसे चिल्लाया, "वाह, वाह! आपने कमालकी दलील दी है।"

राजा मानसिंह बोले, "अगर राजा साहब इसे व्यवहारमे भी कर दिखाएँ, तो यह करिश्मा सचमुचमें बहुत बडा माना जायेगा।"

बीरबलने कहा, "मै राजा रामचन्द्रको मुगल दरबारमें ले आऊँगा, अगर जहॉपनाहकी ओरसे यह आश्वासन प्राप्त हो सके कि उनका स्वागत

एक अधीन राजाकी तरह न होकर सम्मानित अतिथिकी भाँति होगा।"

मुल्ला-दो-प्याजा चहके, "अजी, खुदाका नाम लो! राजा रामचन्द जैसा घमंडी आदमी इस दुनियाके तख्तेपर दूसरा कोई हो सकता है य शुबेकी बात है। वह आगरेमे पैर रखनेको भी हिमाकत समझता है।"

बादशाहने कहा, "यह बात तो ठीक है। राजा रामचन्द्रका दि माबदौलतकी तरफसे साफ नही है। हम सारे हिन्दुस्तानको मिलाक एक ऐसा आईना बनाना चाहते है, जिसमे विदेशी हमलावर अपनी सूर देखते ही डर जाये। हिन्दुस्तानके छोटे-छोटे राजाओंकी अधीनताव बजाय साफदिलीकी हमे ज्यादा जरूरत है। न हम अपने दिलमे को घमड रखना चाहते, न अपने किसी दोस्तके दिलमें अपनी ओरसे को ग़लतफहमी चाहते। अगर राजा रामचन्द्र हमारे दरबारमे आनेके लिए राजी हो जायँ, तो हम उनका खिराज तक माफ कर सकते हैं...मगर, राजा साहब, आजकल आगरेसे बाहर क़दम रखना आपके लिए ख़तरेसे खाली नहीं है।"

राजा वीरबलने कहा, "हजूर, जब तक जहाँपनाहका हाथ मेरे सिर पर "

"आप पुरानी बात दोहरा रहे हैं", बादशाहने कहा। इसके बाद उन्होने नुसरतवाली बात सबका सुनाते हुए कहा, "इससे जाहिर होता है कि कुछ सिरफिरे मौलवी हर कीमतपर आपकी जान लेना चाहते हैं। यहाँतक कि वे बेवकूफ हमसे भी यह उम्मीद रखते हैं कि हम उनकी अन्धविश्वाससे भरी बातोंमे आकर आपको अपने पुरखोंकी खबर लानेके लिए जिंदा ही जन्नत भेज सकते हैं—नामाकूल कहींके!"

"इसके अलावा", मुल्ला-दो-प्याजाने कहा, "यह भी कतई गैर-मुमकिन है कि राजा रामचन्द्र राजा वीरबलके समझाने-बुझानेसे ही इनके साथ-साथ आगरेकी तरफ चल देंगे। लातोंका भूत बातोंसे नहीं मानता।

अगर राजा साहबने इस गैरमुमकिनको मुमकिन कर दिखाया, तो यह गुलाम अपनी दाढ़ी मुँडवा देनेके लिए तैयार है।"

राजा बीरबल बोले, "मैं हजूर आलीजाहसे निवेदन करता हूँ कि माननीय मुल्ला-दो-प्याजाकी दाढ़ीको खास शाही हज्जामके हाथों मूँडे जानेका सौभाग्य प्रदान किया जाये।"

अकबरने कहा, "माबदौलतको खेद है कि मुल्ला-दो-प्याजाकी यह इच्छा पूरी नहीं की जा सकेगी, क्योंकि नुसरत हज्जामका सिर आज ही कलम हो जानेके लिए फरमान जारी हो जायगा।"

"माफ करें, जहाँपनाह," राजा बीरबलने कहा, "नुसरत हज्जामने सही कहा है। मैं उसकी विद्या सीखकर जन्नतसे हजूरके पुरखोंकी खबर जरूर लाऊँगा।"

बादशाह सलामत चौंके। "आप भी, राजा साहब! क्या आप भी इन मूर्खताओंमें विश्वास रखते हैं?"

"जी, जहाँपनाह, रखता तो नहीं था, मगर अब देखता हूँ कि रखे बिना काम नहीं चलेगा। हजूर जहाँपनाह मुझ नाचीजपर विश्वास रखें और नुसरतकी कोई सजा देनेसे पहले मुझे स्वर्गसे वापस आ लेने दें!"

राजा मानसिंहने कहा, "राजा साहब, आप बड़े मजेदार राजा साहब हैं, इसलिए हम आपको अकेले-अकेले जन्नत तशरीफ नहीं ले जाने देंगे।"

बीरबल बोले, "मुझे कोई एतराज न होता, मगर अफसोसकी जन्नतसे अकेला बीरबल वापस आ सकता है, बाक़ी जो साथ जायेगा वहींपर रहने लगेगा!"

इसपर एक कहकहा लगा। राजा बीरबलने फिर कहा, "जहाँपनाह, क्या यह सेवक एकान्तमें कुछ निवेदन कर सकता है?"

"ज़रूर, जरूर," अकबरने कहा। "सज्जनो, माबदौलत एकान्त चाहते हैं।"

फौरन् राजा वीरबलको छोड़कर सब लोग बादशाहके सामनेसे हटकर कक्षके बाहर चले गये। अब राजा वीरबलने कहा, "हजूर, जन्नतके रास्तेसे ही मैं रीवाँ पहुँच सकता हूँ। अगर धरतीके रास्तेसे गया, तो धर्मान्ध शत्रु जरूर मुझे खोज निकालेंगे और पहचान लेंगे। अगर मै रीवाँके राजा साहबको आगरे न ले आऊँ, तो हजूरकी सेवामे नहीं आऊँगा, और सचमुच जन्नत जा पहुँचूँगा...मगर ऐसा नहीं होगा। पहले जो थोड़ा-बहुत अनिश्चय था, वह भी अब नहीं है।"

बहुत देर सलाह-मशवरा करनेके बाद आखिर अकबर बादशाहने राजा वीरबलको जन्नत जानेकी इजाजत दे दी।

शामके समय तक सारे आगरे शहरमें यह विचित्र अफवाह फैल गई कि राजा वीरबलको नुसरत हज्जाम जन्नतमें भेज रहा है और वह वहाँसे बादशाहके पुरखोंका समाचार लायेंगे। सैकडो-हजारों विरोधोंके बावजूद, रोने-चिल्लाने और हँसी-ठट्ठेकी उपेक्षा करते हुए, राजा वीरबल एक विशेष चितापर बैठकर स्वर्ग सिधार गये।

×　　　　×　　　　×

तीन मासके बाद एक दिन सुबह ही सुबह, जब नुसरत हज्जाम अपने घरपर, बदनपर तेल मल-मल कर दण्ड पेल रहा था, उसकी बीवी भीतर आई और बोली, "मियाँ, दुनिया भिखारीसे बादशाह हो गई, मगर तुम यों-के-यो ही रहे। अगर इस तरह मौकोंको हाथसे जाने दिया करोगे, तो सारी उमर हजामत बनाते ही बीतेगी।"

हज्जामने दण्ड पेलना रोककर पूछा, "क्यो, क्या मुझे कोई बादशाहत का पैग़ाम देने आया है?"

"मुँह धो रखो," बीवीने कहा। "एक-एक सीढ़ी चढ़ा जाता है। जो आदमी जहाँ होता है खुदा उसे वहीं बरकत देता है। बाहर एक बाल खरीदने वाला खडा है। तुम तो रोज लोगोंकी हजामत मूँड़ते हो। जरा

बुलाकर तो पूछो कि क्या भाव लेता है। सडकपर न भाड़े घरपर उठा लाये। आदमी तिजारतसे ही तरक्की कर सकता है।"

नुसरत मियाँ फौरन् बाहरकी तरफ लपके, तो देखते क्या हैं कि एक बहुत बूढा आदमी गलीमें आवाज लगा रहा है, "कोई बाल बेचो बाल!"

न जाने कम्बख्त सुअरके बाल खरीदता है या आदमी के? नुसरत मियाँने दो पल दाढ़ी खुजाई, इसके बाद आवाज दे ही तो बैठे: "ओ मियाँ बाल खरीदने वाले. . जरा यहाँ आना तो।"

बूढा जब पास आ गया, तो बोला, "अरे, आप तो शाही हज्जाम हैं!"

नुसरत मियाँने अकडकर अपनी दाढीपर हाथ फेरा। बोले, "कैसे पहचाना?"

"ए लो, सुनो इनकी बातें! मियाँ, तिजारत करते हैं, कोई घास नहीं बेचते। बाल खरीदनेका पेशा है, तो बाल काटने वालोंको नहीं पहचानेंगे? लाओ, है कुछ माल?" बूढेने पूछा।

नुसरत मियाँने कहा, "इस वक्त तो नहीं है, मगर कलसे होने लगेंगे। तुम बताओ क्या सेरके भाव खरीदते हो?"

बूढा खिलखिला कर हँसा! "मियाँ, मजाक करते हो! कहीं बाल भी अनाजकी तरह सेरोंके भाव खरीदे जाते हैं। हम तो छँटवा बाल खरीद करने वालोंमेंसे हैं, और एक-एक बालकी गिनकर क़ीमत देते हैं।"

हज्जामकी हालत सुनते ही बुरी हो गई। वह आश्चर्यसे बूढेका मुँह ताकने लगे। "एक-एक बालकी कीमत! यह कैसे मुमकिन है?"

बूढेने कहा, "मियाँ, तुम कुएँके मेढक मालूम होते हो। तुम्हें क्या पता कि बालोंकी क्या क्या कीमतें होती हैं। अब यही लो, अगर तुम कहींसे बादशाह बाबरका एक बाल भी ला सको, तो बदा यहीं खड़े-खड़े एक हजार टका क़ीमत दे सकता है। किसी चीजकी कीमत होती ही इस बात की है कि वह कितनी मुश्किल और दिक्कतसे मिल सकती है।"

उनकी बातें सुन-सुनकर आसपासके लोग इकट्ठे होने शुरू हो गये

थे, इसलिए नुसरत मियाँने बूढेको भीतर आनेका इशारा किया और घरमे ले जाकर, एक चारपाईपर दरी बिछाकर उसे बैठाते हुए बोले, "भला, बडे मियाँ, इतनी कीमत देकर बादशाह बाबरके बालका कोई करेगा क्या ?"

बीबी, जो दरवाजेकी ओटमे खडी सब सुन रही थी, मियाँको इस बेबातकी हुज्जतपर मन-ही-मन पेच ताव खा रही थी। वहींसे बुरका खीचते हुए बोली, "ए मियाँ, तुम्हे इन बातोसे मतलब क्या, कोई कुछ भी करे। न हो बादशाह अकबर उसे छातीसे चिपकाकर ही सो जाये। मरहूम बादशाह बाबरकी पाक हस्तीकी कोई भी चीज उतनी ही पाक होगी।"

बूढेने कहा, "मियाँ, माफ करना, तुमसे तुम्हारी बीबी ज्यादा अक़्लमन्द मालूम होती है।"

नुसरत मियाँ बीबीकी तरफ मुड़कर तुनकते हुए बोले, "ए, तुम जाकर बडे मियाँके लिए शरबत बना लाओ.. हाँ, तो बड़े मियाँ, अगर मै बादशाह अकबरके बाल आपको ला दूँ, तो आप क्या कीमत देगे ?"

बडे मियाँ अपनी सफेद दाढीपर हाथ फेरते हुए बोले, "मियाँ, तुम तो समझकर भी नही समझे। जो चीज आसानीसे मिल सकती है, उसकी कीमत कुछ भी नही होती, जैसे पानी। फिर यह देखा जाता है कि चीज किस काममे आयेगी। बादशाह अकबरके बाल उनके पोते-पडपोते अच्छी कीमत मे खरीद सकते है, लेकिन तब तक तुम जिन्दा नहीं रहोगे। हाँ, अपने बालबच्चोके लिए रख जाओ, तो रख जाओ। अच्छी वरासत रहेगी। मगर बादशाह अकबरकी मूँछका बाल जरूर कुछ क़ीमत रखता है। उनकी मूँछका एक बाल रखकर कोई भी महाजन लाखो रुपये कर्ज दे सकता है। मगर उसके लिए जरूरत इस बातकी है कि मूँछका बाल नोचा हुआ होना चाहिए, उस्तरेसे कटा हुआ नहीं, क्योंकि कटा हुआ बाल किसी क़ीमतका नही होता।

यह सुनकर नुसरत मियाँ सिर खुजलाने लगे। इतने मे बीबीने शरबत

का कटोरा लाकर थमाया और उन्होंने बड़े मियाँकी नजर किया। फिर बोले, "बड़े मियाँ, यह तो बड़ी मुश्किलकी बात है। बादशाह अकबर हमेशा मूँछोंके उस्तरा ही लगवाते हैं। वह बाल नोचे जानेको बरदाश्त नहीं कर सकते।

बूढ़ा शरबत पीता हुआ बोला, "और अगर किसी दिन नोच डालो, तो तुम्हारा सिर धड़से अलग हो जाये। देखो, हुई न एक बालकी कीमत एक आदमीका सिर?"

नुसरत मियाँने कहा, "मानता हूँ, बड़े मियाँ। आप जैसा अजीब सौदागर मैंने आज तक नहीं देखा था। और कैसे-कैसे बाल आप खरीद सकते हैं?"

"देखो," बूढ़े मियाँ बोले, "वक्त-वक्तपर बालोंकी कीमत घटती बढ़ती रहती है। मिसालके लिए, अभी तीन दिन पहले जमुनाके किनारे दीवान-खासकी मजलिस हुई थी। उसमें सुना है कि बादशाह सलामत रीवाँके राजापर इतने खफा हुए कि अगर वह सामने होता, तो उल्टा लटकवा देते। मजबूरन वह सिर्फ इतना कहकर रह गये : 'अगर वह हाथ जोड़े माब-दौलतके हजूरमें न आ खड़ा हुआ, तो माबदौलत उसकी मूँछें नोच डालेंगे, चाहे हमें उसके एक-एक बालके लिए अपने तख्तका एक-एक हीरा क्यों न अदा करना पड़े' अब, बंदे खुदाके, अक्लपर जोर देकर सोचो कि बादशाह सलामतके तख्तके एक हीरेकी कीमत कम-से-कम एक लाख रुपये तो होगी ही। बस, समझ लो, अगर रीवाँके राजाकी मूँछका एक बाल भी नोचा जा सके, तो एक लाख रुपये उल्टे हाथसे बादशाह सलामतसे वसूल किये जा सकते हैं। वसूल करनेका काम मेरा रहा, बाल तुम नोच लाओ। नकद पचास हजार रुपये दूँगा। बोलो, हो तैयार?"

भीतर नुसरत मियाँकी बीबी तो खुशीके मारे गश खाकर गिर पड़ी। नुसरत हज्जामने बूढ़े मियाँके पैर पकड़ लिये। बोला, "बड़े मियाँ, अपना

पता बताते जाओ। आजसे एक हफ्तेके अन्दर-अन्दर रीवाँके राजाकी मूँछका बाल नोचकर न ला दिया, तो मेरा नाम नुसरत हज्जाम नहीं।"

"अच्छी बात है", बडे मियाँ खडे होते हुए बोले। "तुम मुझे एक हफ्ते बाद शाही मसजिदकी सीढियोपर देखते रहना। किसी-न-किसी वक्त वही मिल लूँगा। मै घूमता-फिरता आदमी हूँ, कोई एक ठिकाना नहीं है।"

बडे मियाँ तो चले गये, मगर नुसरत हज्जामने रीवाँके सफरकी तैयारी शुरू कर दी। अर्जी लिखकर बादशाह सलामतसे गैरहाजिरीकी माफ़ी तलब की और मिलनेपर दोपहर होते-न-होते रीवाँकी तरफ कूच बोल दिया।

तीसरे दिन रीवाँके राजाके सामने हाजिर होकर नुसरत हज्जामने सिर झुकाया और निवेदन किया: "हजूर, हिन्दुस्तानके शहंशाहका खास नाई हूँ। गुलाबजल दाढ़ीपर लगाते हुए जरा चुटकी सख्त हो गई, तो खड़े-खड़े निकलवा दिया। महाराज, मेरे बराबर सफाईसे हजामत बनाने वाला सारे हिन्दुस्तानमे मिल जाय, तो मूँछे मुडा दूँ। हजामत बनवानेवाला सो जाता है, और जब जागता है, तो देखता है कि दाढी साफ हो गई है। सरकार कदरदानी करे।"

बादशाह अकबरसे दण्डित हुआ व्यक्ति रीवाँके राजाके यहाँ शरण पाये, तो इसमे स्वय राजा साहबकी ही बडाई थी। रीवाँके राजाने उसी दिन दाढी बनवाई और नुसरतको राजकीय नाईका पद मिल गया।

अगले दिन हजामत बनाते-बनाते नुसरतकी नरम उँगलियोने राजा रामचन्द्रकी लम्बी-लम्बी मूँछोंके दो-चार बालोको भी रगडा और उनकी जडमे उसके नाखूनसे निकली हुई कोकीन लग गई। हजामत खत्म होने तक कौशलके प्रयोगसे उसके हाथ तीन बाल आये। नुसरतकी कुशल उँगलियोने उन्हे खीच लिया और राजाको बिलकुल भी दर्द महसूस नहीं हुआ।

दूसरे दिनकी हजामतके वक्ततक नुसरत रीवाँ छोड़ चुका था।

बात-चीतके एक सप्ताह बाद, अपने वादेके अनुसार, बड़े मियाँ शाही मसजिदकी सीढियोंके पास मिले। नुसरतको देखते ही बडी उत्सुकतासे उन्होंने पूछा, "लाये ?"

"एक नहीं, तीन," नुसरतने प्रसन्नतासे फूलकर उत्तर दिया।

"देखो, भाई," बडे मियाँने कहा। "इस वक्त तो मेरे पास पचास हजार रुपये है। इसलिए एक बाल दे दो। अगर बादशाह सलामतसे इसकी क़ीमत वसूल हो गई, तो बाकी दोनो भी मै ले लूँगा। मजूर है ?"

नुसरतको क्या इनकार हो सकता था। उसने पचास हजारको माले-ग़नीमत जाना। बडे मियाँने बडी बारीकीसे बालका मुआयना किया और जब इतमीनान हो गया, तो पचास हजार रुपये नुसरतके हाथपर रखे। नुसरत हैरतके साथ इस विचित्र सौदेको सम्पन्न होता देखता रहा और जब बूढे मियाँ वहाँसे चले गये, तब कहीं जाकर उसे यक़ीन हुआ कि एक बाल पचास हजार रुपयेकी क़ीमतका हो सकता है।

× × ×

इसके एक सप्ताह बाद रीवाँके प्रमुख सरदारोंमे एक हलचल मच गई। जो भी सामन्त रीवाँके राजासे मिलने आता उसके मुँहपर एक सशयका भाव दिखाई पडता और वह रीवाँके राजाको विचित्र दृष्टिसे देखता। आखिर राजा रामचन्द्रसे न रहा गया और एक प्रमुख सरदारको बिदा करते समय उसने कहा, "क्या बात है, आज जो कोई मुझसे मिलता है, ऐसे मिलता है, जैसे मै राजा रामचन्द्र नही, कोई और हूँ ?"

"श्रीमान् ही इस रहस्यको भलीभाँति जानते हैं," सामन्तने कहा, "किसे मालूम था कि महाराज रामचन्द्र रीवाँका प्रतापी राज्य बादशाह अकबरके यहाँ बन्धक रख सकते है ?"

"क्या कहा ?" राजा रामचन्द्रकी त्योरियाँ चढ गईं। "रीवाँका राज्य बन्धक रखा, मैने! असम्भव! यह हमारा अपमान है।"

"क्षमा चाहता हूँ, सरदारोंके पास इसका प्रमाण है ."

"किन सरदारोंके पास है ?. तुम्हारे पास है ?" राजा रामचन्द्रने मूँछे चबाते हुए कहा ।

"जी, श्रीमान्, इसी सेवकके पास है । बादशाह अकबरका राजदूत आज मन्त्रीजीके पास आया था । उसका कहना है कि राजा रामचन्द्र चार दिनके भीतर-भीतर रीवाँका राज्य खाली कर दे क्योंकि जो रकम श्रीमान्ने आगरेके बादशाहसे ली थी उसे वापस नही कर सके ।"

"आप क्या बक रहे है !" राजा रामचन्द्रकी आँखे क्रोधसे लाल हो गई । "कही आप सब लोगोने मिलकर आज भॉग तो नहीं पी ली ?"

"श्रीमान्, यह खबर जल्दी ही सारे राज्योंमे फैल जायेगी और राजपूतोंके हौसले पस्त हो जायेगे । उस समय सभी लोग भॉग पिये हुये होगे यह नहीं समझा जा सकता ।"

"उस राजदूतको हमारे सामने उपस्थित किया जाये", राजा रामचन्द्र ने कहा ।

कुछ देर बाद जर्कबर्क पोशाकमे एक सफेद दाढी वाला बूढा वहाँ आकर उपस्थित हो गया । पीछे कई सामन्त खडे थे । राजा रामचन्द्रने कहा, "यह गप इन सरदारोको आकर तुम्हींने सुनाई है कि हमने आगरेके बादशाहके यहाँ अपना राज्य गिरवी रख दिया है ?"

"जी, श्रीमान्," बूढेने निवेदन किया । "यह सत्य मेरी ही वाणीसे प्रकट हुआ है ।"

राजा रामचन्द्रकी उत्सुकता बढ गई । मन-ही-मन उबाल खाकर उसने पूछा, "तुम्हारे पास इसका प्रमाण है ?"

"जी, श्रीमान्," बूढेने फिर विनयपूर्वक कहा, "इतना बडा प्रमाण जिसे कोई भी झुठला नही सकता । श्रीमान्ने तीन साल पहले आगरेको सल्तनतसे एक ऐसी चीज ली थी, जिसकी कीमत रीवाँका राज्य है ।

श्रीमान्‌ने वचन दिया था कि या तो तीन सालके भीतर-भीतर उस चीजको वापस कर देंगे, नहीं तो रीवाँका राज्य बादशाह अकबरको सौंप देंगे ”

“सरासर झूठ है,” राजा रामचन्द्रने तलवारकी मूठपर हाथ रखते हुए अपना क्रोध प्रदर्शित किया ।

“कृपा करके मेरे सिरको एक राजदूतका सिर समझिए,” बूढे व्यक्तिने राजा रामचन्द्रकी तलवारकी मूठपर नजर गडाकर कहा । “मेरे पास प्रमाण है, और वह है श्रीमान्‌की मूँछका एक बाल, जिसे रीवाँके राज्यके बदले श्रीमान्‌ने आगे काम आनेके लिए बादशाह अकबरके हजूरमे बधक रखा था ।”

“ओह !” राजा रामचन्द्रने अपने कानोंपर हाथ रख लिये । “इतना बडा झूठ आज तक नहीं सुना था ”

लेकिन तब तक बूढा एक नक्काशीदार सोनेकी खूबसूरत और क़ीमती डिबिया अपने कपडोंके भीतरसे निकाल चुका था । उसने उसे खोला और राजा रामचन्द्रके सामने रख दिया । “प्रमाण उपस्थित है, श्रीमान्, अपने राज्यके अच्छे-से-अच्छे पारखीको बुलाकर हजूर इस बालकी पहचान करवा सकते है ।”

राजा रामचन्द्रने स्वय डिबिया उठाकर उसमेसे बालको निकाला । उसे एक ही नजर देखकर उन्होने कहा, “नहीं, कोई जरूरत नहीं है । हम इसे पहचान सकते हैं । यह हमारी ही मूँछका बाल है ।”

“श्रीमान्‌की परख बेदाग है,” बूढे व्यक्तिने कहा ।

“लेकिन हमारे साथ चालाकी खेली गई है ।”

“वह क्या चीज थी, जो हमने अपना राज्य बधक रखकर ली थी ?”

“सद्‌भावना ।”

“क्या !” रीवाँनरेश आश्चर्यसे बोले ।

“जी, श्रीमान्, तीन साल हुए आपने बादशाह अकबरको वचन दिया था कि आप जल्दीसे-जल्दी उनके द्वारा आपको दी हुई सद्‌भावनाको

लौटा देंगे। बादशाह अकबरने तीन साल तक उसकी प्रतीक्षा की, मगर आप आगरेके दरबारमें अपने राजकुमारोंको भेजते रहे, स्वयं कभी नहीं गये। आपको भय था कि शायद बादशाह अकबरके सामने आपको सिर झुकाना पड़े। भय और सद्भावना साथ-साथ नहीं रह सकते। बादशाह अकबर आपको अपने अधीन नहीं रखना चाहते। वह सारे हिन्दुस्तानको एक शक्तिके रूपमें देखना चाहते हैं। बिखरी हुई ताक़तोंमें एकको दूसरीसे मिलानेके लिए दो ही चीजें होती हैं : युद्ध या शान्ति। सन्देह और भय युद्धको जन्म देते हैं, सुविचार और सद्भावना शान्तिको। यदि युद्ध होगा, तो रीवाँका राज्य आगरेकी ताक़तके सामने नहीं बचेगा, शान्ति होगी तो आप आगरेके बादशाहके साथ तख्तपर बराबर-बराबर बैठेंगे, और ऐसा तभी होगा, जब आप आगरा जायेंगे—अपनी मूँछका बाल वापस लेनेके लिए आपको आगरे जाना ही होगा।"

राजा रामचन्द्रकी दृष्टि स्थिर थी। सहसा नजरें नीची करके वह बोले, "और अगर हम न जायें?"

"तो आप रीवाँका राज्य हार बैठे हैं, यह बाल इसका प्रमाण होगा" बूढ़ेने कहा। "सारा रीवाँ राज्य आपको घृणाकी दृष्टिसे देखेगा।"

राजा रामचन्द्र खिलखिलाकर हँस पड़े "और जो हमें घृणाकी दृष्टिसे देखेगा वह इस जमानेके चाणक्य राजा वीरबलको नहीं पहचान जायेगा। वाह, राजा वीरबल, यह आपकी ही अक़्लका नमूना है...।"

सामन्तगण आश्चर्यसे यह व्यापार देख रहे थे। वीरबलका नाम सुनते ही उनकी आँखें फट गईं। राजा वीरबल सीधे हो गये और क्षणभरमें ही दोनों राजा एक दूसरेके गले लगे हुए थे।

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि राजा वीरबल रीवाँके राजाको अपने साथ लेकर आगरा लौटे और बादशाह अकबरने उनका असाधारण सम्मान किया। लेकिन राजा वीरबल तो साथ-ही-साथ स्वर्गसे बूढ़ों वाली दाढ़ी भी बढ़ाये आये थे और बादशाहके पुरखोंका समाचार भी लाये थे।

किस प्रकार उन्होंने बादशाहको आकर बताया कि स्वर्गमे नाइयोकी कमी है, बादशाहके पुरखोके बाल बढ़े हुए है, और किस प्रकार बादशाहने यह सोचा कि नुसरतसे अच्छा हज्जाम स्वर्गमे उनके पुरखोकी सेवा करनेके लिए नहीं मिल सकता—यद्यपि उसके जलनेके लिए जो चिता बनाई जायेगी वह किसी सुरगके मुँहपरबनी हुई नहीं होगी—और किस प्रकार नुसरत हज्जामने बीरबलके पैरोंपर माथा टेककर, उनके पचास हजार रुपये सूद सहित लौटाकर अपनी जान बख्शी करवाई और मुल्ला-दो-प्याजाकी दाढी मूँडनेका सम्मान प्राप्त किया, ये सब बादशाह अकबर और राजा बीरबलकी लोकप्रिय जनश्रुतियोंकी बाते है।

• रामराज्यका सपना

आजसे पूरे दो सौ बरस पहलेकी बात है : ये ही दिन थे, यही समय था, इसी तरहकी राजनीतिक हलचलोंसे भारतके पूर्वका समुद्री प्रवेशद्वार अपने जर्जर ढाँचेमे आश्चर्यके साथ दरार पडती देख रहा था। इस दरारमें औरंगजेबके पौत्र और बंगालके सूबेदार आजमशाहकी कृपासे गोरी जातिके पाखण्ड-पण्डितोंने कलकत्ता, गोविन्दपुर और छूतानटीकी जागीर पाकर उसमें अपने पैर जमा लिये थे।

ऐसे समयमें एक दिन कलकत्तामें बंगाल और बिहारके वाणिज्याधिपति जगत्सेठ अमीचन्दकी कोठीमे दैनिक चहल-पहल कुछ अधिक बढ गई थी। कारण था कुछ विशिष्ट राजपुरुषोंका असाधारण आदर-सत्कार और उसके लिए जगत्सेठके सेवकोंकी असामान्य तत्परता।

कोठीके एक बहुत बडे कमरेमें दीवारके सहारे-सहारे चारों ओर मसनदें लगी हुई थीं और उनपर विभिन्न प्रकारके लोग बैठे थे। कोई ऐसा नहीं था, जिसकी कमरमें भवानी न हो और मूँछोंपर हाथ न हो। जो आयुदोषके कारण अभीतक मुच्छविहीन ही थे उनकी बात जाने दीजिये, किन्तु शेषको देखकर यह भली प्रकार कहा जा सकता था कि बंगालका वीररस वहाँ एकत्र हो गया था। इन सबकी केन्द्र-मूर्त्तियाँ थीं नवाब सिराजुद्दौलाके प्रधान सेनापति मीरजाफरके सहकारी दुर्लभराम और उनका नौजवान बेटा छतरसिंह, जिसकी चौडी छातीको देखकर कवि लोग हाथीके मस्तकसे उपमा चाहे न दें, पर उसकी भीगी हुई मसें उसके शरीरके भीतर उबलते हुए खूनका परिचय दे रही थीं।

दुर्लभरामके माथेपर सलवटें थीं, होठोंपर किसी अदृष्टके प्रति अवज्ञा और तिरस्कारकी भावना थी और हाथोंकी उँगलियोंमें कुछ-न-कुछ शीघ्र ही

कर डालनेकी चञ्चलता थी। जगत्सेठ इतने बड़े कमरेके एक कोनेमें नितान्त अकिञ्चन बने एक शाल ओढ़े बैठे थे। सहायक सेनापति कह रहे थे :

"अन्यायका प्रतिकार न हो, तो फिर वही सिरपर चढ़ जाता है। आँखे मींचकर चलनेसे रास्ता समतल होता न कहीं देखा न सुना।"

जगत्सेठने एकबार शान्तिसे पलके झपकी, फिर बोले : "अन्यायका प्रतिकार तो होना ही चाहिए। यह सत्य जिस प्रकार भगवान् रामके युगमे प्रतिष्ठित था उसी प्रकार आज भी है। किन्तु न्याय क्या है और क्या नही, इसकी परिभाषा भगवान् रामके समयमे और थी, नवाब मन्सूरुलमुल्क सिराजुद्दौलाके समयमे और हो गई है ", उन्होने एक क्षण रुककर उपस्थित लोगोके चेहरोको सूक्ष्मदृष्टिसे देखा और बातका प्रवाह रखते हुए कहा, "यही आप कहना चाहते है न, सेनापति जी ?"

मेजबानका इतना सहारा पाकर अतिथिका रोष उबल पड़ा। इतनी देरसे जो कुछ हृदयमे दबाये बैठे थे वह सब अनायास प्रवाहित हो चला।

"रामराज्य एक आदर्श राज्य था। तब जो कुछ सत्य था वही सत्य शाश्वत और चिरन्तन है। योग्यता और वीरताके कारण तब एक वानरतक को भगवान्की सेवाका अवसर था। आज सत्य नहीं बदल गया है उसका रूप कुरूप हो गया है। जो राजा हो जाये उसीकी आज्ञा मानना कर्त्तव्य हो गया है। परन्तु जहाँ वीरताका सम्मान नहीं, वह राज्य त्याग देने योग्य है।"

इस लम्बी-चौड़ी नीति-वार्त्ताके भीतरसे कौन-सा सत्य प्रकट होने वाला है, इसका अभी कुछ पता नही था। उस सत्यको उभारकर धरातलपर लानेके उद्देश्यसे जगत्सेठने कहा, "किन्तु वीरताका सम्मान करने वालोकी कमी अब भी नही है। पुत्र छतरसिंहने तलवारबाजीमे इब्न-

मोहम्मदको पछाड़कर हम लोगोका मुँह उज्ज्वल किया है, इसके लिए हम उसे बधाई देते हैं और वचन देते हैं कि पुरस्कार भी देंगे। आज सारे कलकत्तेमें छतरसिंहकी चर्चा है। वीरताका सम्मान न होता, तो यह सब कैसे होता?"

अब तक छतरसिंह चुप था। अब वह बोला, "वीरता म्यानमे बन्द पड़ी रहे, तो उससे क्या होता है, चाचा जी? नवाब हजूरवालाने इब्न-मोहम्मदको दूसरे सहायक सेनापतिका पद दिया है। जीता हुआ खिलाडी मुँह ताकता रहे और हारा हुआ राजसेनामें सेनापतिका पद पाये, इससे बढकर अन्याय और क्या होगा?"

तब अतिथियोके साथ आये हुए एक सज्जन बोल उठे, "मुसलमान भाई-भाई हैं.."

दुर्लभराम चौंके। प्रश्नको यह रूप देने का मशा उनका नहीं था। हो सकता है हृदयमें कहीं यह बात चुभ रही हो, लेकिन ऊपरका मन उसे नहीं जानता था। बोले, "हिन्दू भी मुसलमानोंके भाई है. ."

"लेकिन सौतेले", जिसकी बात बीचमें कट गई थी उसने फिर उसका सिरा पकडते हुए कहा। "म्लेच्छोकी सेवा स्वीकार करके हम स्वयं म्लेछ बन गये हैं। इतनेपर ही बस नही है। दिल्लीसे लेकर बंगाल तक मुहम्मद साहबके चेलोंने रामकी सन्तानका जीना दूभर कर रखा है।"

इस बातपर इस छोटी-सी घरेलू सभामे अकस्मात् असाधारण चुप्पी छा गई। मानसिक प्रतिरोधको प्रकट करने आकर सम्भव है दुर्लभरामको भी यह गुमान न हो कि बात राजभक्तिकी सीमा पार कर जायेगी। यही नहीं, उस सीमाके समाप्त होते ही देशद्रोहीकी जो सीमा है उसमे भी काफी दूर तक बात पहुँच गई थी। दुर्लभरामने कहा:

"मैं राजद्रोह की गध पा रहा हूँ।"

"मुसलमानोको इस देशसे निकाल बाहर करनेपर ही रामराज्य

स्थापित हो सकता है, इस छोटेसे तथ्यको प्रकट करना भी यदि राजद्रोह है, तो म्लेच्छोंकी तरह मास-मदिराका सेवन करना ही शायद सबसे बडी राजभक्ति गिनी जाने लगे।"

दुर्लभराम उठ खड़े हुए। "मै इस पापाचारकी बातको सुननेसे पहले उठ जाना ही अच्छा समझता हूँ।"

जगत्सेठ मिची-मिची आखोंसे सब कुछ देखते-सुनते रहे। राजभक्ति और राजद्रोहके इतने महत्त्वपूर्ण विषयपर उन्होंने अपनी कोई भी सम्मति प्रकट नहीं की। जब दुर्लभरामको लेकर सारी सभा उखडने लगी, तो उन्होंने कहा :

"सम्मानित अतिथियोंके लिए भोजन और विश्रामका प्रबन्ध झीलके किनारे वाली कोठीमें है। बाहर सेवक तैयार खड़े है। छतरसिंह, मुझे तुम्हारे पुरस्कारके बारेमें दो-चार बातें करनी है, इसलिए चाचाका अनुरोध स्वीकार करके तुम्हें यहीं रुक जाना है।"

छतरसिंह और जगत्सेठ अमीचन्दको छोडकर सारा कक्ष उसी समय खाली हो गया। तब एकान्त पाकर जगत्सेठने कहा : "छतरसिंह, तुम्हारी चाचीने तुम्हे बहुत दिनोसे नहीं देखा है। क्या तुम्हे अपनी चाचीसे मिल-कर प्रसन्नता नहीं होगी ?"

"मेरे मुँहकी बात आपने छीन ली है," छतरसिंहने कहा। "वास्तवमे चाचीजीके दर्शनोंकी कामना ही मुझे यहाँ तक खींच लाई है। नहीं तो मुर्शिदाबादमे अब भी रंगरलियोंकी कमी नहीं है।"

जगत्सेठ मुसकराये। दुशाला सँभलकर उनके कन्धोंपर आ गया और पैरोमे हल्की जरीकी खड़ाऊँ डालनेके लिए उन्होंने उन्हें नीचे लटकाया। फिर उठते हुए बोले, "इधर तुम्हारी चाचीकी अवस्था ही दूसरी है। इस बार तुमसे मिलकर वह तुम्हें वापस आने देगी, इसमे सन्देह ही है।"

उसी समय उस बड़े कमरे का बाहर जाने वाला दरवाजा खुला और

एक मनुष्यने भीतर प्रवेश किया। उसकी ओर उत्सुकतासे ताककर जगत्-सेठने अपने लटकते हुए गालोंको ऊपर उठाया और बोले, "क्या है ?"

हाथ जोडकर भृत्यने निवेदन किया, "दो फिरगी आपसे भेंट करना चाहते है। मैने उन्हे बहुत देरसे वाटिकामे बैठा रखा है।"

सुनते ही जगत्सेठकी आँखे अलक्ष्य भावसे चमक उठी। उन्होंने कहा, "अच्छा, अच्छा। तुम इन्हे लेकर जनानखानेमे जाओ। मै देखता हूँ उन लोगोंको मुझसे क्या काम है। ये लोग फेरी वालोंकी तरह सुबहसे लेकर शाम तक अपने व्यापारकी धुनमे बस चक्कर ही काटा करते है।"

छतरसिंहको उसकी चाची ही रोक रखना चाहती हो यह बात नहीं थी। वहाँ एक और भी आकर्षण था, जो स्वय उस वीर सिपाहीको रुक जानेके लिए कम प्रेरित नही करता था। कल्पना ही कल्पनामे उसने सोचा—शायद जगत्सेठकी कन्या अब तो बहुत बडी हो गई होगी। उसे देखनेके लिए तो वह मुर्शिदाबादसे रोज कलकत्ता आ सकता है। लेकिन कौन आता है और कौन आने देता है ?

जगत्सेठका अन्तःपुर छोटा नही था। कमोवेश सौ स्त्रियोंका परिवार था। इन सबमे कितनी कुलवधुएँ थीं और कितनी दासियाँ थी, इसका कुछ ठीक अन्दाज न होनेपर भी छतरसिहको सौन्दर्यका नया-से-नया रूप वहाँपर दिखाई पड रहा था। कौन जगत्सेठकी साली लगती थी और कौन भानजी-भतीजी इसका कुछ हिसाब न था। लम्बे-चौडे दालानों, बगीचो और बडे-बडे कमरोंके बीचमेसे होकर जब वह गुजरा, तो सारी विगत स्मृतियाँ लौट-लौटकर उसके मस्तिष्कको छूने लगी।

फिर चाचीका कक्ष आया, जहाँ एक बडे पलगपर राजरानियोंकी तरह इस विस्तीर्ण गृहकी देवी विश्राम कर रही थी। दो दासियाँ पैर दबाने में लगी थीं और दो पंखा झल रही थीं। दो-तीन कुलवधुएँ कुछ सीना-पिरोना लिये बैठी थीं। सेवकने द्वारपर रुककर सूचना दी : "सहायक

सेनापति दुर्लभरामके सुपुत्र छतरसिंह पधारे है। अनुमति हो, तो भीतर ले आऊँ !"

कुछ देर उत्तरकी प्रतीक्षा करनेके बाद भीतरसे किसी नारी-कण्ठने कहा, "अनुमति है। नहीं भी होगी, तो क्या ये लौटकर थोडे ही जायेंगे ?"

सेवकने मुस्कराकर मार्ग छोड दिया और छतरसिंह कक्षके भीतर चला गया। पलगपर पडी स्त्रीने तनिक उठगकर कहा, "आओ बेटा ! इतने दिनों बाद आये हो और ऐसे आ गये, जैसे अचानक वर्षा आ जाती है। बैठो।"

बैठते-बैठते छतरसिंहने प्रणाम किया और जुडे हुए हाथोंके बीचसे उसने कक्षके भीतर एक विहङ्गम दृष्टि डाली। कुलवधुएँ सीना-पिरोना अपनी आँखोके और निकट ले आई थी। दासियाँ अपने कामोंमे और भी अधिक तीव्रताके साथ प्रवृत्त हो गई थीं। केवल एक लडकी एक खुली हुई खिडकीमे ज्यो-की-त्यो बैठी थी। खिडकीके एक पल्लेसे पीठ टिकाकर उसने दूसरे पल्लेसे पैरोके पजे टिका रखे थे और उसके मुडे घुटनोपर एक किताब खुली हुई थी। प्रणामके जुडे हुए हाथ नीचे गिराकर छतरसिंह कुछ अधिक देर उसकी आर देखनेका लोभ-सवरण नहीं कर सका।

चाचीने कहा, "इस नटखटको क्या देखता है, बेटा ! यह तो पुरुष होती और इसे कोई बडा-सा ओहदा नवाब साहबके यहाँ मिल जाता, तो ठीक था। जानते हो क्या-क्या करती रहती हैं ! अब फिरगियोकी भाषा सीखनेकी धुन सवार हुई है !"

लडकीने अपनी लम्बी लम्बी पलकें ऊपर उठाई और तमककर बोली "टिड्डी दलकी तरह ये फिरगी जो हमारी खेतियोपर मँडरा रहे है, माँ जी, सो खेती चाटनेकी कैसी-कैसी तरकीबे इनकी भाषामे लिखी है यह सब ए बी सी डी पढकर ही तो पता लगेगा न। सुना है इगलिस्तान

में इनके खेतोमें अनाज नहीं लोहा पैदा होता है, इसीलिए दूसरोकी रोटी छीननेको सात समुन्दर पार करके ये लोग हिन्दुस्तानमे आये है.. ”

“लो, और सुनो !” चाचीने कहा, “यह सब इसने सुना है । मै कहती हूँ यह सब इसने इन निगोडी किताबोंमे पढ़ा है । थोड़े दिन और पढेगी, तो इसके लिए यही घरके भीतर एक कचहरी खोलनी पडेगी, और, बेटा, इन न्यायाधीश्वरीके सम्मुख अपराधियोंको पकड-पकडकर तुम लाया करोगे ।”

छतरसिंह मुसकरा उठा । वह बोला, “सबसे पहला अपराधी तो मैं ही हूँ, चाची जी ।”

तब उन कुलवधुओंमेंसे एकने कहा, “तुम कैसे अपराधी हो, लाला ?”

अब छतरसिंहके मुँहसे झोकमे निकले शब्दोंका गूढ़ अर्थ लगाकर सभी हल्की-हल्की मुसकराहटके साथ उसकी ओर देखने लगे, तो वह लज्जित होते हुए बोला, “सिराजुद्दौलाकी दरबारी प्रतियोगितामे मै एक अपराध आज कर आया हूँ ।”

इस बातपर लडकी झटसे बोल उठी, “मुझे मालूम है, माँ जी, नवाब हजूरके दरबारमें इन्होंने एक मक्खी मार दी थी ।”

इसपर जो कहकहा उस स्थानपर उपस्थित नारी-समाजमे लगा, तो युवकको मुँह छिपानेके लिए जगह नहीं मिली । उसने झेपकर कहा, “माँ जी, युग बदल गया है । काग़जपर अक्षरोके कीडे-मकोड़े मारने वालोंके सामने सचमुचकी मक्खियाँ मारने वालोकी पूछ कहाँ ।”

इसपर फिर एक सुसभ्य ठहाका लगा और खिड़कीपर बैठी लडकीने झल्लाकर किताब बन्द कर दी । फिर उसने कहा, “हूँ । ये ही सचमुचकी मक्खियाँ मार-मारकर तो यहाँ रामराज्य स्थापित होगा !”

युवक चौंक पड़ा । “यह रामराज्यकी बात यहाँ तक कैसे आई ?”

पलंग पर पडी चाचीने कहा, “इसपर आश्चर्य न करो, बेटा । जगत्-

सेठके घरकी दीवारोंके भी कान होते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि बात घरकी घरमें ही रहती है, बाहर नहीं जा पाती।"

"बात भी तो झूठी नही है," एक कुलवधूने कहा।

कौन बोला यह देखनेके लिए युवकने गरदन फेरी, किन्तु कुछ मालूम न हो सका। उसने कहा, "माँ जी, अब म्लेच्छोंका राज्य असहनीय हो उठा है। सरकारी नौकरियोंमें, वाणिज्य-व्यापारमें, जीवनके हर क्षेत्रमे इन-जैसा पक्षपाती देखनेको नहीं मिला। हम भारतवर्षमे इतने हिन्दू हैं, क्या प्रयत्न करनेपर हम यहाँ रामराज्य स्थापित नहीं कर सकते ?"

शायद माँ जी कुछ कहतीं, लेकिन उनकी सुपुत्री उनसे बहुत अधिक मुखर थी। फिरंगियोंकी भाषा पढ-पढकर उसने शायद सबसे पहला गुण यही सीखा था। वह तुरत बोल उठी, "नहीं।"

इसपर उस बडे कक्षमे उपस्थित प्रत्येक मानव-प्राणीकी दृष्टि उस छोकरीपर पड गई। सबकी आँखोमे आश्चर्य था। उसकी माँने कहा, "यह क्या तेरी कोई नई वाचालता है, री ?"

"नही, माँ जी" लडकीने कहा। "सम्राट् अशोक और विक्रमादित्य का युग ही जब हम निकटसे वापस नहीं ला सकते, तो दूरगामी रामका युग ही कैसे वापस आ सकता है? संघर्षसे बचकर निकल जानेकी चाहमें हम अतीतको वापस लाना चाहते है, लेकिन यह भूल जाते हैं कि संघर्ष तो अतीतमे भी था। लङ्काका महायुद्ध, कौरव-पाण्डवोंका महाभारत, कलिङ्गकी महाहिंसा और सिकन्दर, महमूदके सर्वनाशी आक्रमणोंको फिरसे लाना हो, तो पुराना युग वापस लाओ। राईमे सरसों मिलाकर तेल निकल जानेके बाद दोनोंको अलग करना आता हो, तो निश्चय ही भारतवर्ष से मुसलमान निकल जायेंगे। फिर प्रत्येक असम्भव बात सभव हो जायगी और आश्चर्य नहीं कि रामराज्य भी वापस आ जाय! पर, मा जी, कहीं ऐसा न हो कि इन दोनों तेलोंको अलग-अलग करनेके चक्करमें कोई तीसरा बीचमें आकर सारा तेल ही बिखरा दे।"

विद्यालय-जैसा वातावरण वहाँ क्षणभरमें छा गया। सबको लगा मानो कोई बडा पण्डित कक्षामें उपस्थित विद्यार्थियोको इतिहासका पाठ पढ़ा रहा हो। पलग पर अधलेटी नारीने एक लबी सास खींचकर लडकी को सम्बोधन करते हुए कहा, "छोकरी, कलसे यह पोथी-पुस्तक उठाकर रख दे, नहीं तो जगत्‌सेटसे कहकर मै तुझे इस अन्तःपुरसे निकाल बाहर करूँगी। तेरे सामने सबको ऐसा लगता है, जैसे दुधमुँही बच्चियाँ हो..."

उसी समय बाहरसे पदचाप सुनाई दिये और सेवक-सी आवाज सुनाई दी : "जगत्‌सेठ भैया छतरसिंहको बुला रहे है।"

छतरसिह तुरन्त उठ खडा हुआ। उसने श्रद्धासे चाचीके पैर छुए और फिर दर्शन करनेकी कामना प्रकट करते हुए एक छिपी हुई नजर उस ओर डाली, जहाँ फिर पोथी खुल चुकी थी। क्षणभरको होठोंकी झीनी-झीनी मुसकराहट लिये हुई पुस्तकवाली दृष्टि उठी और अदृश्य रूपसे होठोंके हास्यका विस्तार करके फिर जहाँकी-तहाँ लग गई।

युवक छतरसिंह अनमना मन लिये हुए वहाँसे वापस लौट चला। वह बहुत कुछ सोच चुका था, बहुत कुछ सोच रहा था और बहुत कुछ सोचनेको उसके पास शेष था। बस, उस समय उसके मनकी स्थिति लगभग यही थी।

बड़े कक्षमें बहुतेरी मसनदोकी खाली पक्तियोके पार उसी कोनेवाली मसनदपर जगत्‌सेठ उठँगकर लेटे हुए थे। छतरसिह कमरेमें आ भी गया और जाकर उनके सामने बैठ भी गया। फिर भी उनकी बन्द आँखे नहीं खुलीं। युवक प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देरमें आँखे बन्द रखे-रखे ही जगत्‌सेठने कहा :

"बेटा, ऐसा प्रतीत होता है, जैसे मुझे भविष्य-दर्शन हो रहा हो। मेरे सम्मुख भविष्यका चित्र इस तरह खिंच रहा है, जैसे मैं अपनी सूरत दर्पणमें देखता हूँ।"

"कैसा चित्र है, चाचाजी ?" युवक छतरसिंहने पूछा।

जगत्सेठकी आँखें बन्द-की-बन्द ही रहीं। वह बोले, "मुझे लगता है कि जिस अन्तःपुरमें तुम अब होकर आये हो, उसपर असख्य सैनिकोंका आक्रमण हो रहा है।"

"ऐं!" छतरसिह आश्चर्यके उद्रेकसे चमककर बोला। 'यह आप क्या सोच रहे हैं!"

"मैं नहीं सोच रहा हूँ," जगत्सेठने कहा, "मुझे भविष्य-दर्शन हो रहा है। मुझे लगता है कि असख्य सैनिक, शायद नवाब सिराजके सैनिक मेरे मानसम्मानको मिट्टीमे मिलानेके लिए मेरे अन्त.पुरमे घुसे जा रहे हैं। रक्षाका प्रबन्ध भी कम नहीं है। शायद मुख्य प्रवेशद्वारपर एक सजीला, लडाका सेनापति मेरी रक्षा करनेके लिए दोनो हाथोंमे तल-वार लिये खडा है। जबतक वह वहाँ खडा है, तबतक इससे आगेका चित्र मेरे सामने स्पष्ट नहीं होता न जाने क्यों? जानते हो वह सेनापति कौन है?"

"कौन है?" जैसे प्रतिध्वनिमे किसीने पूछा हो।

"तुम!" जगत्सेठने मानो बेचैनीसे सिर हिलाते हुए कहा, "तुम्हें इस रक्षाभारसे मुक्त करके मै आगेके चित्रकी यथार्थ कल्पना नही कर पाता।"

"लेकिन क्यो, चाचा जी?" युवकने घबराकर पूछा। "आप ऐसा निरर्थक स्वप्न क्यो देख रहे है?"

"स्वप्न नहीं," जगत्सेठने कहा। "यथार्थकी कल्पना है। पहले भी लोगोंको इस तरहका भविष्य-दर्शन करते सुना है। हो सकता है इसका कारण मेरी समझमे आ गया हो।"

"अब आपकी बात समझमे आ रही है, चाचाजी,' युवकने कहा, "कोई-न-कोई कारण होना ही चाहिए। मुझे बताइये वह क्या है?"

जगत्सेठकी आँखे खुल गई। उनमे किसी उत्तेजनाके कारण लाली छा गई मालूम पडती थी। तकियेपर रखे उनके हाथकी उँगलियोंने अलक्ष्य

रूपसे तकियेपर २ का चिह्न बनाया और फिर उसके ऊपर वह उँगली घूम-घूमकर छः बिन्दियाँ बना गई। उन्होंने किंचित् मुसकराकर युवककी ओर देखा, फिर तुरन्त ही गम्भीर होकर बोले, "मै वङ्ग-भूमिपर फिरसे रामराज्य की स्थापनाका निश्चय कर चुका हूँ। मेरा सारा धन इस काममें होम हो जाये, तो भी मै अपना पग पीछे नही हटाऊँगा। हिन्दू प्रजाका कल्याण अब इसीमे है कि समस्त भारतवर्षमे रामराज्यकी पुनःस्थापना हो। नहीं तो जीना व्यर्थ है और इस जीवनको धिक्कार है।"

"लेकिन यह सब होगा कैसे ?" युवकके मुखपर अब चिन्ताके चिह्न स्पष्ट रूपसे परिलक्षित होने लगे।

"कैसे होगा ?" जगत्सेठने गरदन नीचे कर ली। "जिस विश्वासघात, क्रूरता, दमन और युद्धसे कलियुगने सतयुगपर विजय पाई है, उन्ही मार्गोंमें होकर गुजरना होगा। राजनीतिके बन्धन राजनीतिसे कटेंगे। शत्रुकी नीतिसे ही शत्रुपर विजय प्राप्त की जायेगी। बेटा, अपना मन टटोलकर बताओ तो सही उसमे कितना दम है ?"

युवक सब कुछ सुनकर सन्न रह गया। रामराज्यकी कल्पना उसके मस्तिष्कमे भी मौजूद थी, लेकिन यह योजना इतनी जल्दी बन जायेगी, इसका विचार तक उसे नहीं था। किन्तु जिस वीरताने इब्नमोहम्मदको सरे दरबार हराया था, वह आड़े वक्तमे सिर उठाकर सामने खडी हो गई। उसने उत्साहसे कहा, "मर मिटनेकी साध पूरी हो जायेगी, तो बादमे मनके टटोलने वालोंकी भी कमी नही रहेगी, चाचाजी।"

"तब रास्ता साफ है," जगत्सेठने कहा। "व्यापारका लोभी फिरंगी अपना जन-बल और धन-बल हमे देनेको तैयार है। तुम्हारे ऊपर तीन काम हैं : अपने पिता दुर्लभरामको तैयार करना, उनके द्वारा प्रधान सेनापति मीर जाफरको बंगालकी गद्दीका लोभ दिलाकर फोड़ लेना, और सबके बाद इस अन्तःपुरके मुख्य द्वारकी दलबल सहित रखवाली करना।

तीनों काम कठिन है, ऊपरसे देखनेपर असम्भव हैं, लेकिन करने योग्य हैं। रामराज्य लानेके लिए यह सब आवश्यक है।"

युवकको ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे पास ही से कोई गहरी साँस खींच रहा हो। किन्तु इधर-उधर नजरें पसारकर देखनेपर कुछ नहीं दिखाई दिया। फिर उसने उस कमरेकी दीवारोंपर एक नजर डाली। उसके मस्तिष्कपर कुछ शब्द उभर आये। 'इन दीवारोंके कान हैं!'

वह आगेकी ओर झुक गया। जगत्सेठके कानोंमें उसने कहा, "चाचाजी, चिन्ता न कीजिये। तीनों काम होंगे। उसके बाद क्या होगा यह आप सोच लें, कहीं ऐसा न हो. "

जगत्सेठ मुसकराये। "घबराओ मत। घबरानेसे आगे बढ़नेमें रुकावट आती है। हमारी योजना पक्की है। फिरंगीको व्यापारकी सुविधाएँ चाहिए। हिन्दुओंका राज्य स्थापित होनेपर उन्हें व्यापारकी सुविधाएँ मिलेंगी, किन्तु वैसी ही सुविधाएँ और सबको भी मिलेंगी और हमारे देशका व्यापार नहीं कटेगा। मीरजाफरको राजगद्दी मिलेगी, लेकिन राजकोषके रूपमें उसके पाये नहीं होंगे। फिरंगीसे हमें नकद बीस लाख रुपया मिलेगा बीस लाख और मेरा समस्त धन मिलाकर यहाँ हिन्दुओंकी एक ऐसी अखण्ड प्रभुता स्थापित हो जायेगी, कि मराठोंको हमारे साथ मिलना पड़ेगा। इसके बाद, बेटा, मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे प्रयत्नोंका जो ऋण मुझपर चढ़ जायेगा और पहलेसे ही कन्याका जो ऋण मेरी छातीपर रखा है उन दोनोंसे मैं एक साथ ही मुक्त हो जाऊँगा।"

इतने सारे चित्रोंने मिलकर, जिसमें विकृत और उज्ज्वल सभी प्रकारके चित्र थे, युवककी कल्पनापर एक ऐसा विशाल चित्रागार उपस्थित कर दिया, जिससे मुक्त होना शायद किसी भी युवकके लिए सम्भव न होता। उसने जगत्सेठके चरणोंमें सिर झुकाया।

दुर्लभराम पहले तो बेटेकी बात सुनकर तड़का-भड़का, लेकिन राम-राज्यका सुनहरा स्वप्न उसके भीतर भी हिलोरें ले रहा था। ऊपरसे

कर्मठ पुत्रकी तत्परता और हठ उसे विचलित करने लगे। आखिरकार उसने अपनी स्वीकृति दे दी।

मीरजाफर इस प्रस्तावको सुनकर हो हो करके हँसा। खुदा जब देता है छप्पर फाड़कर देता है। कितने दिनोंसे बंगालकी गद्दी उसके हृदयके भीतर बैठी हुई थी! आज अवसर मिला, तो उसे छोड़ना नितान्त मूर्खता लगी। वह विश्वासघातपर उतारू हो गया।

फिरङ्गी कमेटीके अध्यक्ष क्लाइव और सेनापति वाट्सने अपने हस्ताक्षरोंसे सन्धिपत्र तैयार किये और सिराजुद्दौलाके अन्तिम संस्कारपर सबके हिस्सोंकी मोहर लग गई! सन् १८५७ ई० के भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामसे ठीक सौ साल पहले प्लासीके मैदानमें बंगालके नवाब सिराजुद्दौलाके भाग्यका फैसला हो गया। ऐन समयपर पैंतालीस हजार सेना अपने साथ लेकर प्रधान सेनापति मीरजाफर फिरंगियोंकी तरफ चला गया। इसके बाद मुर्शिदाबादकी सड़कोंपर फिरंगियोंके बूट भारत माँकी छातीको रौंदते हुए चलने लगे। शेष घटना इसके बाद की है।

जगत्सेठ अमीचन्दकी कोठीके बाहर लगभग पाँच सौ सैनिकोंके साथ युवक छतरसिंहका पहरा था। उसकी आँखोंके सामने-सामने बंगालकी राजधानीका सुहाग लुट चुका था। कलकत्तामें भी फिरंगियोंने कम उत्पात नहीं मचाया था। और अब गोरी फौजके सैनिक संगीन चढ़ाये दलबन्द पागल कुत्तोंकी तरह घूम रहे थे।

जगत्सेठको उसका हिस्सा देनेके लिए क्लाइव और स्काफ्टन साहब दलबल सहित उनकी कोठीपर पधारे। वही युवक, जो जगत्सेठके अन्तःपुरकी रक्षा करनेके लिए सन्नद्ध हुआ था, चुपचाप सहस्रोंकी संख्यामें फिरंगी बूटोंको कोठीके भीतर जाते देखता रहा। वे तो रक्षक थे, उनसे सुरक्षा कैसी!

वही बड़ा कक्ष था। वे ही मनसदें थीं, वे ही दीवारें थीं। क्लाइवके ठीक सामने जगत्सेठ उसी मुद्रासे दुशाला ओढ़े बैठे थे। उनके मुखपर

प्रसन्नताकी तरगें मनमे उमंगोंके साथ नाच रही थीं। अब रामराज्य आ गया है!

क्लाइवने मुसकराकर सन्धिपत्र पढा। इसमे बीस लाख रुपयेकी कोई चर्चा नहीं थी, हिन्दुओंके रामराज्यकी स्थापनाकी कोई बात नहीं थी। मीरजाफरको बगालका नवाब बनाकर फिरगियोंसे क्या-क्या बच रहेगा इसका कोई हवाला नही था।

जगत्सेठ कॉपते हुए उठ खडे हुए। "यह क्या है! यह वह सन्धि-पत्र नहीं है, जो मुझे दिखाया गया था। वह लाल कागजपर था।"

"और यह सफेद कागजपर है, यही कहना चाहते है न?' क्लाइवने कहा। "लेकिन, सेठ साहब, लाल रग अशान्ति और युद्धका रग होता है और सफेद रंग शान्ति और सन्धिका रंग होता है। हम-जैसे शान्तिके रक्षक अपने साथ लाल रग लिये कैसे घूम सकते है? स्क्राफटन साहब, शायद सेठ साहबको कुछ भ्रम हो गया है। सच्ची बात बता दो ना।"

स्क्राफटन साहबने खँखारकर गला साफ किया। "जगत्सेठ, लाल रग वाला सन्धिपत्र जाली था और सफेद रग वाला असली है। बस, इतना-सा फरक है। खेद है कि आपके नाम इसमे एक कौडी तक नहीं है।"

जगत्सेठके पैर लडखडा गये। वह धडामसे जमीनपर गिर पडे। फिरगी सरदार कुछ क्षणों तक हक्के-बक्के खडे देखते रहे। फिर उन्होंने कमरेमें चारो ओर मूल्यवान वस्तुओंपर निगाह जमाई और साथ ही एक बडे जोरकी दिल दहला देने वाली चीख किसी ओरसे आकर कमरेमे उपस्थित सभी लोगोंके दिलोंको कम्पायमान कर गई। फिर जैसे सचेत होकर क्लाइवने चिल्लाते हुए अपने सैनिकोंसे कहा: "लूट लो!"

और सबसे बडी लूटका माल तो अन्त.पुरोंमे होता है..

ड्योढ़ीपर छतरसिंह मूँछोंपर ताव देता हुआ कोठीकी रक्षा कर रहा था। चीखकी आवाज उसके कानों तक पहुँची और वह हक्का-बक्का-सा

खड़ा देखता रहा। किन्तु शीघ्र ही उसे चेतना आई और वह अपने सैनिकोंके एक दलके साथ भीतरकी ओर भागा।

फिरंगी सैनिकोंसे मुठभेड हुई और उसके साथी पीछे छूटते चले गये। वह दोनो हाथोंसे तलवार घुमाता हुआ सीधा अन्तःपुरमें पहुँच गया। लेकिन वहाँ एक और ही दृश्य उसकी दृष्टिकी प्रतीक्षा कर रहा था।

जगत्‌सेठके अन्तःपुरकी समस्त कुलवधुओंके शरीर भूलुंठित पड़े थे। किसीका सिर ही धडसे अलग था, तो किसींकी छातीमे कटार घुसी हुई अपना दस्ता ऊपर उठाये हँस रही थी। फिरंगियोंके हाथ सबकुछ लगा था, किन्तु भारतीय ललनाओंका सतीत्व उनकी पहुँचके परे था।

युवकके नेत्र फट गये। उसने पागलोंकी भाँति चारो ओर देखा। फिर उसके पैर चाचीके उसी कक्षकी ओर बढे, जहाँ वह पहले एक बार आया था और फिर कई बार आ चुका था।

कक्ष खाली था। केवल उसी खुली खिडकीपर, एक पल्लेसे पीठ टिकाकर दूसरे पल्लेसे पैरोंके पंजे टिकाये, घुटनोपर असहायकी भाँति हाथ रखे एक लड़की बैठी थी। यह लडकी खूब जानी-पहचानी थी। उसने उसके पास पहुँचकर उसका हाथ पकडकर हिलाया, किन्तु वह निर्जीव स्तम्भ-सा लटक गया। उसके उन्नत वक्षःस्थलपर भी कटारका एक दस्ता हँस रहा था। उसके होंठ फड़फडाये, युवकने अपने कान पास ले जाकर सुना :

"अब रामराज्य आ गया है!" और लडकीका सिर लटक गया।

उसी समय पीछेसे एक धाँयकी आवाज हुई और युवक तडपकर लडकीकी गोदीमे लुढ़क गया।

जगत्‌सेठके भविष्य-दर्शनमे थोडी-सी भूल रह गई थी।

६

• हरमका क़ैदी

बेरहमीसे अपने भाईको कत्ल करके सत्ता हासिल करनेकी जो मिसाल औरङ्गजेबने क़ायम की उसके बेटे-पोतोंने उसपर पूरा-पूरा अमल किया। उसके छोटे बेटे मुहम्मद मुअज्जमने अपने बड़े भाई मुहम्मद आजमशाहकी कब्र अपने हाथोंसे बनाई और उसपर अपना तख्त बिछाया। वही बादमें शाहआलमके नामसे प्रसिद्ध हुआ। अपने जीवन-कालमें ही अपने चार बेटोंमें वही लक्षण प्रकट होते देखकर छः वर्ष हुकूमत करनेके बाद वह भारी असन्तोष और चिन्तासे मरा। उसके सबसे बड़े बेटे मौजुद्दीनने किस प्रकार धोखाधडी और ऐयारीसे अपने तीन भाइयों—मुहम्मद आजम, रफ़ीउल-कादिर और खुजिश्ता अख्ताका नामनिशान, दुनियासे मिटाकर तख्त हासिल किया यह एक लम्बी और शर्मनाक कहानी है उसने अपनेको जहांदारशाहके नामसे विख्यात किया।

इतना सब करके जहांदारशाहने अनुभव किया कि उसे और तो सब कुछ मिल गया है, लेकिन निरन्तर उपेक्षा करके वह अपने अन्तःकरणसे हाथ धो बैठा है। क्रूर रक्तपात और घृणित परिश्रमसे हाथ आये हुए वैभव-का बेतहासा उपभोग करनेके लिए वह सिरसे पाँवतक विलासितामें डूब गया। उसके पास गमको गल्त करनेके लिए यही एकमात्र तरीक़ा रह गया था। इस विलासितामें केन्द्रमूर्ति विगत शाहआलमके दरबारकी एक खूबसूरत गायिका और नर्तकी लालकुँवर थी।

लालकुँवर असाधारण सौन्दर्यकी स्वामिनी थी। बोलते समय उसकी जबानकी मिठास लक्ष्य करनेकी वस्तु थी। कलाकी निरन्तर सेवासे शाह-आलमके दरबारमें उसने ऊँचा पद प्राप्त किया था। किन्तु वैभवके शिखर-पर पहुँचकर कलाकारने अनुभव किया कि शाह जहाँदारके पास उसकी

कलाकी अपेक्षा उसके शरीरका ही मूल्य अधिक है। वह उसके ठुमकोंपर जान जानेकी दुहाई देता है, उसके मीठे बोलोंको आँखें मीचकर सुनते ही रहनेकी कामना प्रकट करता है, तो उसके शरीरको भूखे भेडियेकी तरह घूरता भी है। इस भावनाका अनुभव करके नर्तकीका मन घुटने लगता। लगता कि दिल्लीका शाहीमहल एक कैदखाना है, जहाँ रोज-रोज उसकी कलाके मरणपर फातिहा पढा जाता है। शाह उसके नृत्य और गीतोंकी तारीफ करता-करता उसके अङ्ग-विन्यासमें उलझ जाता है। वह उसके शरीरके उतार-चढावपर प्रशंसाओंके पुल बाँधता है। उसके प्रेम-निवेदनमे प्रेमीकी व्याकुलता नहीं है, शक्तिका मद है।

एक दिन इसी प्रकार जब शाह शराबकी अधिक मात्रा पी लेनेसे नशेमे बकता-झकता बेहोश हो गया, तो लालकुँवर तनकी थकान मिटानेके लिए बाहर बारहदरीमे निकल आई। अटारीसे नीचेकी छोटी-सी बगीचीमे चाँदनी छिटकी हुई थी और बेलेकी मधुर महक ऊपर उठी आ रही थी। लालकुँवर थकानके मारे निढाल हो रही थी। उसने एक बार ऊपर आकाशकी ओर दृष्टि उठाई। सोचा—काश कि उसमें इस बन्धनसे मुक्त होकर इस नीले-नीले आकाशमे स्वच्छन्द वायुमण्डलमें उडनेकी ताकत आ जाती। तब वह भी पख फैलाकर उडनेवाले पक्षीकी तरह दुनियासे अलग रहकर उसपर छाई रहती।

उसे थकानसे चूर देखकर बारहदरीमें खडी एक सोती-जागती लौंडी गुलाबपास उठाकर उसपर सुगन्ध छिड़कनेके लिए आगे बढी, लेकिन उसने उसे इशारेसे रोक दिया। फिर धीरे-धीरे वह चौडी सीढियोंसे नीचे बगीचीमें उतर गयी।

बगीचीके एक अँधेरे कोनेमे उसके आकस्मिक स्वागतके लिए एक व्यक्ति पहलेसे ही उपस्थित था। वह इतिहासप्रसिद्ध बादशाहोको बनाने और बिगाडनेवाले दो सैयद भाइयोंमेसे एक था जिनके नाम हसनअली-खा और अब्दुल्लाखा उस समय शैतानकी तरह मशहूर थे। अँधेरेमे

सैयदकी दाढ़ीकी छाया हरी घासकी चाँदनीपर पड़ी देखकर लालकुँवर भयसे लगभग चिल्ला उठी।

हसन अलीने उसका मुँह दबोचकर चीखकी आवाजको निकलनेसे रोका। "क्या कहती है? एक हफ्तेसे तेरी एक निगाह इधरसे फेरनेके लिए मैं एक टाँगसे रातभर यहाँ खड़ा रहता हूँ और तू अब कुत्तोकी मौत मरवाना चाहती है?"

हसनअलीके रोबदार चेहरेको पहचानकर लालकुँवरको सान्त्वना मिली, और फिर उसके मुँहपर थकानके कारण उत्पन्न वितृष्णाके भाव उभर आये। लापरवाहीसे उसने कहा,—"इस दुनियामें बड़े-बड़े आशिक है, सिरके बल आने वाले, एक टाँगसे खड़े रहनेवाले और सिरपर पाँव रखकर भाग जाने वाले। आपने कुछ अजीब नहीं किया, सैयद साहब!"

"क्या बकती है?" सैयदने कानपर हाथ रखकर तोबा करते हुए कहा। "मुझे भी क्या उस नामुराद शाह जैसा समझ लिया है, जो यह भी नहीं जानता कि गम क्या होता है, लेकिन उसे हमेशा ग़लत करनेकी फिक्रमें रहता है? मैं सैयद हूँ और दुनियाको गुनाहोंसे पाक रखना ही मेरा पहला फर्ज है। तुझ जैसी गुनहगार चीजसे इश्क करना मेरा काम नहीं है।"

बहुत अधिक थक जानेके कारण लालकुँवर सैयदके सामने ही चाँदनी पर बैठ गयी। "आज तक कोई इस गुनहगार दुनियाको गुनाहोंसे पाक नहीं कर सका है, सैयद साहब! आप चाहें तो खुद अपनेको पाक कर सकते हैं।"

"जबानदराज लड़की, मैं तुझे मिल्लतका हुक्म देने आया हूँ, तुझसे बहस करके अपना कीमती वक्त बरबाद करने नहीं आया। तुझे शाहने मुँह चढ़ा रखा है इसलिए तेरी जबान बड़े-छोटेका लिहाज नहीं करती। मैं एक राजकी बात तुझसे कहना चाहता हूँ। क्या तू पाकपरवरदिगारको

हाजिरनाजिर जानकर कसम खायगी कि इस राज़की बातको कभी तालूपर भी नहीं लायेगी ?"

लालकुँवर उठ बैठी। उसने खड़े हुए सैयदको बैठे-बैठे ही शोखीसे आदाब बजा लाकर कहा, "कनीज इतनी भारी इज्जत बख्शी जानेके लिए शुक्रिया अदा करती है। लेकिन लोग कहते हैं कि कसम खाने वाले झूठे होते हैं। अगर कोई राज़को बात है तो मुझ नाचीज़को उससे अनजान ही रखे जानेकी रहमत फरमाई जाये। शायद कनीज उस राजदारीको न निभा सके।"

"नहीं।" सैयद चिन्तामग्न हो गया। तुझसे कहे बिना काम नहीं चलेगा। साथ ही अगर तू इस राज़के कामको अमलमें न ला सकी, तो तुझे फौरनसे पेश्तर इस दुनियासे उठा दिया जायेगा।"

"यह तो जनाबकी किसी क़दर ज्यादती है, बुजुर्गवार। जिस गुनाहमें कनीज फँसना नहीं चाहती उसमें उसे घसीटना बेजा है। इससे अच्छी तो इश्ककी बातें ही होती है, जिन्हें सुनकर दो घड़ी खुशीका आलम तो रहता है।" लालकुँवरने शैतानीसे सैयदकी तरफ देखा।

सैयदने कानोंपर हाथ रखकर एक बार फिर तोबा की। "लेकिन तेरे बिना कोई यह काम कर नहीं सकेगा। इस कामकी पाकीजगीसे जो सवाब होगा उससे तू आगे तरक्की करेगी, अगर उज्र करेगी तो दोजखकी आगमें जलेगी।"

"कनीजके लिए तो यही दोजख है, सैयद साहब।" लालकुँवरने इत्मीनानका प्रदर्शन करते हुए कहा।

बार-बार इस तरह झुठला दिये जानेसे सैयदकी भौंहें तन गयीं। उसने धीमी किन्तु रोबदार आवाज़में गम्भीरताके साथ कहा,—"लड़की।"

लालकुँवर सारी शोखी भूलकर सहम गयी। उसने झुककर माथेपर हाथ ले जाते हुए कहा, "हजूर।"

"यह उसका हुक्म है, जो कलामे पाकको रोज-रोज अपनी जबानसे अदा करता है। तुझे यह हुक्म मानना ही पडेगा।"

"अगर कनीजको पहले ही यह हुक्म दे दिया जाता तो अब तक वह अमल भी हो चुका होता। उसके लिए जन्नतका लालच और दोजखका डर दिखानेकी बिलकुल भी जरूरत नही थी, हजूर आली।"

"'तो सुन," आवाजको और भी धीमी करके सैयदने अपने अमामेमेंसे एक सफेद पुडिया निकालते हुए कहा—"शाह जहाँदार एक निकम्मी शख्सीयत और शरीयतका मुजरिम है। वह दिन-रात बुरी चीजको होठोंसे लगाये पडा रहता है, खल्के खुदा उसके गुनाहोंसे बेजार है। शरीयतके हामी एक जान होकर तुझे यह हुक्म देते हैं कि तू इस कातिल जहरके जरिये इस गाफिल बादशाहको हमेशाके लिए गफलतकी नींद सुला दे, ताकि वह उस पाकपरवरदिगारके हजूरमे जाकर अपने गुनाहोंकी तोबा कर सके।

सैयदकी बात सुनकर लालकुँवर चौंककर दो कदम पीछे हट गयी। "सैयद साहब, यह आप क्या फरमा रहे हैं।"

"अल्लाहके वास्ते जिस कामकी नीयत की जाती है उसपर यकीन करना चाहिए। उसके महत्त्वको समझना चाहिए।" बात खुल जानेके बाद सैयदने एक क्षण पैनी निगाहोंसे लालकुँवरकी मुखाकृतिको आशङ्काके भावसे देखा।

"फिर क्या होगा?" लालकुँवरने पूछा।

"इस अत्याचारी और विलासी बादशाहको तख्तसे उतारकर हम दूसरे बादशाहको तखतपर बिठायेंगे, जो रहमदिल होगा और रियायाका हिसाब करेगा।"

"और अगर उसने भी जनताको इन्साफ न दिया तो?" लालकुँवरने पूछा।

"कोशिश करना इनसानका फर्ज है," सैयदने उत्तर दिया।

"नहीं, सैयद साहब, कोई बादशाह इन्साफ करनेके लिए इन्साफ नही करता। बादशाह इन्साफ करनेके लिए पैदा ही नही हुए। बादशाह तो एक व्यापारी है। कोई व्यापारी न्यायकी तराजूमे पासग रखना ही अधिक लाभकी बात समझता है तो कोई दयानतदारीके बहाने रियायाका पैसा लूटता है। बादशाहोंको अदलाबदलीसे इस बिगड़े हुए जमानेकी रगत कब ठीक हुई है? सैयद साहब, हिम्मत हो तो इस रगतके खिलाफ आवाज उठाइए, सेनाओके बलपर नही, कत्लके बलपर नहीं, उन लोगोंके बलपर जो अपने खूनपसीनेकी कमाई शासन-सत्ताके गलेके नीचे न चाह कर भी उतार देते है, और इस तरह उन्हे ताक़त देते है कि वे हम जैसी कनीजोंको जरखरीद गुलाम बनाकर विलासिताका जीवन व्यतीत करे। पर इसमे हाथका कौशल काम नही आयगा, हृदयका साहस और बुद्धिका बल काम आयगा।" लालकुँवरका मुँह चॉदनीकी एक किरण पाकर चमक उठा।

तलवारके योद्धापर इस विनम्र उपदेशका कोई असर नहीं पडा। वह उकताकर तीखे स्वरमे बोला, "लडकी, मै मिल्लते-कौमकी तरफसे तुझे हुक्म देता हूँ कि जो कुछ तुझे कहा गया है उसपर अमल कर।"

लालकुँवर तनकर खड़ी हो गई। "नहीं, नहीं, कनीज इस हुक्मपर अमल करनेसे साफ इन्कार करती है।" और उसके खूबसूरत चेहरेपर भयकी घटाएँ घुमड़ आईं।

क्षणमात्रमे सैयदके हाथोंमे एक खमदार चमचमाती हुई कटार दिखाई देने लगी। "याद रख, तू सैयदके सबसे अजीज राजकी मालिक है, और सैयद कोई काम अधूरा नही छोडता, और वह फतेह हासिल करता है क्योंकि वह अपने लिए कोई काम नही करता। सैयद सिर्फ खुदाकी मरजीका पाबन्द है।"

लालकुँवर कातर होकर बोली, 'हॉ, बुजर्गवार, मार दो इस कनीजको, ताकि वह इस बादशाहतके जलील और चक्करदार गोलदायरेसे जनात पा

सके। लेकिन लालकुँवरके हाथो एक इन्सानका खून नहीं होगा, नहीं होगा। कनीजकी छातीमे यह कटार पेवस्त कर दो क्योंकि यही एक चीज़ उन घिनौनी चीजोंमेंसे रह गई जिन्होंने कनीजकी छातीको छूकर नापाक किया है।" और चॉदनीमे उसके वक्षके उतार-चढावकी गति स्पष्ट रूपसे परिलक्षित होने लगी।

सैयद दो कदम आगे बढा। "लडकी, अपने अगले-पिछले गुनाहोंको याद कर। खुदाके हजूरमे उनकी तोबा कर। तेरी रूहको इस फानी जिस्ममे अब बहुत देर रहनेकी इजाजत नहीं दी जा सकती।"

"कनीजने कोई गुनाह नहीं किया है, सैयद साहब," लालकुँवरने कहा। "लोगोंने मेरे बहाने गुनाह किये है, और कर रहे है। अगर खुदाको उनकी तोबामे यकीन हो सके, तो वे ही अपने गुनाहोंकी तोबा करें। कनीज मरनेके लिए तैयार है। हकीकतमे कनीजको अबसे बहुत पहले मर जाना चाहिए था। लेकिन ताअज्जुब है किस तरह इन्सानकी जिन्दगी इतनी बदबू से गुजर जाती है।"

सैयदकी वेधडक दृष्टि लालकुँवरके चेहरेपर जा टिकी। वहाँ उदासी और उपेक्षाके भावोंने उसके मुखको करुणाजनक बना दिया था। सैयद की विकराल छाया अन्धेरेसे निकलकर दो कदम आगे बढी। हरी घासपर उसकी परछाईं लम्बाकार होकर फैल गई। लालकुँवर ऑखें बन्दकर जहाँ-की-तहाँ पत्थरकी मूरतकी तरह खडी रही।

कत्ल करना सैयदका अभ्यास था। वही उसका पेशा था। औरङ्गजेब के बाद न जाने कितने भाग्यहीन उसकी चमचमाती कटारको चूमकर दम तोड चुके थे। किन्तु लालकुँवरकी कमजोर, लाचार और शान्त मुद्राके सामने उसकी मजबूत कलाई भी कॉप गई और कटारको अछूती रखकर वह बोल उठा, "लालकुँवर।"

लालकुँवरने उसके बोलका उत्तर नहीं दिया। वह बोली, "कनीज अचानक आपको सामने देखकर आदाब बजाना भूल गई थी। अब वह

जाते वक्त ऐसी गुस्ताखी नही करेगी, सैयद साहब ! कनीज आदाब अर्ज करती है ।" और वह घुटनोके बल झुक गई ।

कातिलने आज पहले-पहल कत्ल करते हुए हिचकिचाकर कहा, "न जाने क्यो, तुझे मारनेको जी नहीं चाहता ।"

लालकुॅवर अब भी ऑखें मीचे रही । "नही, सैयद साहब, खेल न खेलाइये । आगे बढकर अपना काम खतम करिये । अगर कोई दूसरी दुनिया है, तो वह कम-से-कम इस दुनियासे तो खूबसूरत होगी ।"

सैयदने कटार म्यानमे रख ली । "नहीं शायद खुदाकी यही मरजी है । वादा कर कि यह राज राज ही रहेगा ।"

लालकुॅवरने ऑखें खोल दीं । उसने आश्चर्यके साथ सैयदके अन्दर कुछ देरके लिए उभरे हुए इन्सानको देखकर कहा, "सैयद साहब, जब तक राज़ राज रहेंगे दुनियासे गुनाहोंका जनाजा नहीं उठ सकेगा ।"

हताश होकर सैयदने कहा, "जा, मै तेरी भोली सूरतपर विश्वास करता हूॅ । जब तू गुनहगार इन्सान तकको मरने नहीं देती, तो पाक जिस्म तेरे हाथोसे फरना नहीं हो सकेंगे ।"

लालकुॅवरने उत्तरमे कहा, "काश कि यही विश्वास दुनिया वालोंको हमेशा-हमेशा रहता ।" वह फिर आदाबके लिए झुकी । सैयद उसे तसलीम करके पीछेके घने अन्धकारमे लोप हो गया ।

लालकुॅवर मुडकर अटारीके जीनेकी तरफ बढी । धीमे-धीमे थके हुए पग रखती वह जीनेसे ऊपर चढ़ गई । वहॉ बारहदरीमें लौडी अपनी नियत जगहपर नही थी यह उसने लक्ष्य नहीं किया । वह उसके पीछे-पीछे गुलाबपाश लेकर बगीचेमे गई थी यह भी उसे ध्यान नही था । बगीचेसे लालकुॅवरके जानेके बाद वह पेडोंके झुरमुटसे घबराहटके साथ निकली । एक हाथ अपने धडकते हुए हृदयपर रखकर वह घबराहटके साथ जीनेकी ओर बढी । जहॉपनाहको इस षड्यन्त्र और उससे लालकुॅवरकी अद्भुत पवित्रताका पता देनेसे भारी इनाम मिलने की आशा थी ।

अगली सुबह होशमें आते ही शाहके सामने वह वफादार लौंडी पेश हुई और उसने पिछली रातका कुल हाल उसके सामने खोल दिया। लेकिन वक्त हाथसे निकल चुका था। सैयद हसनअली खॉं और सैयद अब्दुल्लाखॉं उसे तख्तसे उतारनेका पक्का इरादा कर चुके थे। इससे पहले कि शाहशाहके विशेष अङ्गरक्षक उनकी गिरफ्तारीका परवाना लेकर पहुँचे वे दोनो बगालकी ओर कूच कर चुके थे, जहॉं विगत मुहम्मद आजमके बेटे और वर्त्तमान सुल्तानके भतीजे फरुखसियरको निमन्त्रण दिया जाना था कि वह जहॉंदारशाहको तख्तसे उतारकर स्वय उसकी रौनक बढाये, दूसरे शब्दोंमें मुगलिया सलतनतके डगमगाते हुए सिहा-सनपर उठे हुए कॉंटोपर गिरकर अपनी ऑंखें फोड ले, अपनी जान दे दे, जिसका साक्षी उस समय कोई न था केवल आनेवाला इतिहास था।

जहॉंदारशाह अब भी मुगल शाहशाहियतकी अपार सेनाओंका स्वामी था। सैयद भाइयोंको पकड न पानेकी अपनी सफलतापर उसने उपेक्षासे सिर हिलाया और फिर नृत्य और गायनसे अपने हृदयकी धडकनको दबा देनेके लिए वह लालकुँवरमे उलझ गया। दीवानेखासको रङ्गमंचका रूप दिया गया और लालकुँवरको उसपर सुराही और जामके साथ उतार दिया गया।

शाहकी निगाहोंमे लालकुँवर पहले एक परी थी। बीती हुई रातकी घटना सुनकर वह उसके लिए देवी हो गई। साथ-ही-साथ उसने अपनेको भी देवता मान लिया, और देवताओंका काम होता है अपने लिए हलवे-मॉंडेका प्रबन्ध करके कुत्तोंको रोटी देनेका दम्भ करना। शाहकी जान-कारीसे अनजान लालकुँवरने जब रोजकी तरह अपने चेहरेपर बलपूर्वक एक मुसकान लाकर नृत्यका एक चक्कर लगाया और सुराही उठाकर शराबका एक जाम उसके सामने पेश किया, तो वह आह्लाद और मस्तीसे झूम उठा। तड़पकर उसने कहा, "आज शाहशाह हिन्दकी तबियत है कि

तू उनके हजूरसे दुनियाकी वेशक़ीमती-से-वेशक़ीमती चीज मॉगे और वह तुझे अदा फरमाये ।"

लालकुँवरने सहज स्वभावसे हास्यके साथ कहा, "जो कनीज अपने हाथोंसे किसीको जहर पिलाती है वह इतनी बडी इनायतके क़ाबिल नही है ।" और उसने मद्यरूपी विषसे भरी सुराहीकी ओर उँगली बढाकर उसे छलका दिया ।

लालकुँवरकी इस भोली अदापर हजार जानसे न्यौछावर होते हुए शाहने कहा,—"नहीं, हम उसे कुछ देना चाहते है, जिसके हाथोंमे आकर यह जहर भी अमृतका काम करता है । मॉग ले, लालकुँवर, अगर तू हमसे हमारी अजीजतरीन चीज भी मॉगेगी, तो हम देनेसे उज्र नही करेगे ।"

बादशाहकी ऑखोमे दानका वह अपूर्वभाव देखकर लालकुँवरकी ऑखोमे उसकी सबसे अधिक इच्छित वस्तुका रूप घूम गया, किन्तु साथ ही उसकी अलभ्यताका अनुमान करके उसके उन भोले नेत्रोमे जल छलक आया । सहसा वह शाहके सामने घुटने टेककर गिडगिडा उठी, "शाहंशाह आलमकी इस कदर मेहरबानी देखकर कनीजकी जबान नही खुलती । अगर जहॉपनाहका यही रहम व करम है, तो कनीजको उसकी सबसे अजीजतरीन चीज अता फरमाई जाये । उसे उसकी आजादी वापस लौटा दी जाये ।" एक बार रुककर फिर उसने अपनी प्रार्थना दोहराई । "दीजिये, शाहशाह हिन्द, लौंडीका गला इस घुटने वाले वातावरणकी उँगलियोंसे आजाद कर दीजिये ।"

जहॉदारशाह चमककर उठ खडा हुआ, उसे तत्काल अपनी भूलका अनुभव हुआ । अपने सकल्पके महत्त्वसे अवगत होकर उसने लालकुँवरको घबराहट की ललचाई दृष्टिसे देखा, "हः हः, आजादी भी कोई चीज है, जो शाहशाहोसे मॉगी जाती है ? तू हमसे हमारे ताजका सबसे बडा हीरा मॉगती, हम तेरे कदमोपर उसे चूमकर रख देते, तू हमारे हरमका सबसे ऊँचा

ओहदा माँगती, हम तुझे अपने सिर आँखोंपर बिठाकर अपनेको खुश-किस्मत समझते। लेकिन तू हमारी आँखोसे दूर होकर हमारी खुशी हमसे छीन लेना चाहती है। यह कैसे हो सकता है?"

न देने वाले कर्जदारकी आँखोमे जो चमक होती है वही उस समय शाहको आँखोमें देखकर लालकुँवर दूसरेके सामने अपने मनके अचानक खुल गये धागोको यत्न करके समेटने लगी। इस दुनियामे न जाने कितने इन्सान बन्धनकी दम घुॅटनेवाली परिस्थितियो और घृणापूर्ण वातावरणमें पडकर छटपटाया करते हैं। लालकुँवर स्वतन्त्रताके लिए पिंजरेकी तीलियों पर सिर मारते हुए पछीकी तरह जहाँदारशाहकी ठोकरोमे लोट गयी, "जहाँपनाह अगर कनीजको आजादी नहीं दे सकते, तो उसे उसकी मौत ही दे दी जाये।"

"यह तो सबसे बडी आजादी है, लालकुँवर," शाहने कुटिलतासे होंठ वक्र करके कहा, "तेरा दिमाग आज अपनी जगहपर नहीं है, माबदौलत तुझे आराम करनेका हुक्म देते हैं।"

शाह चला गया और लालकुँवर जहाँ-की-तहाँ चित्रलिखित-सी बैठी रही। कैसा उत्पीडक है यह बन्धन, जहाँ आराम करनेका भी हुक्म मिलता है।

शामके समय जब फिर शाहजहाँदारकी खुमारीका वक्त आया और वह दिन भर असाधारण रूपसे हरमसे दूर रहनेसे उकता गया, तो फिर लालकुँवरकी हाजिरीका हुक्म दिया गया, कुछ देर बाद लालकुँवर उसके सामने पहुँची, तो वह उसे देखकर ठकसे रह गया।

आज लालकुँवरने जी भरकर शृङ्गार किया था। उसके अङ्गोसे सुगन्धिका सागर उमडा पडता था। हीरोसे उसकी पोशाक झिलमिला रही थी। एक लाल पन्ना उसके माथेपर खूनका रङ्ग बिखेर रहा था। शरीरमे चपलता भरी थी। उसे देखते ही जहाँदारशाह पलकें झपकाना

भूल गया। क्या आज तक जो इस परीने सिंगार किया था वह नहींके बराबर था? वह प्रसन्नतासे चिल्लाया :

"शुक्र है खुदाका, कुँवर, बडी जल्दी तुझे अक्ल आई। भला क्या-क्या ख्यालात तुझे आये हम भी तो सुनें?"

लालकुँवर मुसकराई। "कनीजने सोचा कि शाहशाह तो आखिर शाहशाह है।"

"हाँ।"

"और कनीज कनीज ही है।"

"बहुत खूब।"

"और शाहशाह सबसे बडा है।"

"वाह, वाह!"

"लेकिन शाहशाहसे भी एक बडी चीज़ है।"

"वह क्या?" जहाँदारशाहने खुमारीसे चोंककर पूछा।

"व्यवस्था, जिसे आमलोग चलन कहते हैं। जहाँपनाह! शाहशाह आज सिर्फ इसलिए शाहशाह हैं कि व्यवस्था उनके पक्षमें है। कनीज सिर्फ इसलिए कनीज है कि चलन उसके विपरीत है। शाहंशाह सिर्फ इसलिए सबसे बडा है कि चलनने उसे सबसे बडा मान रखा है।"

"सही है," शाहने किसी क़दर खुश होते हुए कहा।

लेकिन इस चलनमें भी एक खराबी है, जहाँपनाह! आग जिस तरह जितनी बढती है उतने ही अपने शत्रु पैदा कर लेती है। इसी तरह कोई व्यवस्था जितनी फैलती है उतने ही उसके दुश्मन पैदा हो जाते हैं। यही वजह है कि शाहशाह शाहशाह नहीं रहते, कनीजें कनीजें नहीं रहतीं, कुछ मर जाती है कुछ बदल जाती हैं। ज़माना आगे बढता है यही नियम है और चलन जब तक खत्म नहीं हो जाता तब तक अपने ही तनको नोचता रहता है और..."

जहाँदारशाह जैसे स्वप्न देखते-देखते भयसे चिल्ला उठा, "चुप रह, लडकी ! तेरे मुँहसे आज बदअमनीकी बू आ रही है । खुदा खैर करे, न जाने क्या ऊल-जलूल बकती जा रही है । माबदौलत हुक्म देते है कि..."

लेकिन अभी जहाँदारशाहकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि जरूरी दूतके आगमनकी सूचना देनेवाला घडियाल जोरके साथ बज उठा "कौन है, हाजिर किया जाये" शाहने हुक्म दिया ।

कासिद हाजिर हुआ । उसने फर्शी सलाम झुककर अर्ज की, "पचास हजार फौजके साथ सैयद हसनअली, सैयद अब्दुल्ला खाँ और हजरत फरुखसियर मारामार दिल्लीकी तरफ बढे चले आ रहे है । जानबख्शीकी अमान चाहता हूँ । सब कातिल फौज है और उनमे चालीस हजार घुडसवार हैं ।"

शाह उछलकर खडा हो गया । उसने दरवाजेकी ओर क़दम बढ़ाये कि रहस्यमयी लालकुँवरने उसे बाजूसे पकडकर रोक लिया । "इस जरा-सी बातके लिए शाहशाह खुद तकलीफ गवारा कर रहे है ।"

निश्चय और अनिश्चयके बीचमे झूलते हुए परेशानीसे शाहने लाल-कुँवरकी ओर देखा । वह आँखोमे मस्ती भरकर मुसकरा रही थी और उसके माथेका झूमर शाहको जाने देनेकी वर्जनामें हिल रहा था । झूमरका लाल पन्ना मानो शाहको रुक जानेके लिए लाल हिलती हुई रोशनी दिखा रहा था ।

शाह माथेपर हाथ रखकर बैठ गया । फिर सिर उठाकर उसने सिर झुकाये कासिदको आज्ञा दी, "वजीर आली जनाब जुल्फिकार खाँ साहबको हाजिर होने का हुक्म दिया जाये ।"

"जो हुक्म, जहाँपनाह", कहकर दूत वहाँसे प्रस्थान कर गया ।

विद्रोहियोके विरुद्ध पन्द्रह हजार अश्वारोहियोंके साथ अपने बेटे यामुद्दीनको भेजकर भी शाह निश्चिन्त नहीं हो सका । एक ओरसे लाल-कुँवरने अपने समस्त आकर्षणोके तार खींच रखे थे, दूसरी ओरसे

भविष्यका दुःस्वप्न और अतीतके चलचित्र बेरहमीसे उसे खींचे जा रहे थे। भोग-विलासके क्षण बदहजमीके कौर थे, जिन्हें न खाते बनता था न उगलते।

शिवलरमकी लडाईमें यासुद्दीनके भाग्यका फैसला भी हो गया। वह बुरी तरह पराजित होकर आगरेकी ओर भागा, और उससे भी पहले जब उसका दूत पासा पलटनेका समाचार लेकर दिल्ली आया, तो शाहजहाँदार लालकुँवरके प्यालोंके प्रतापसे मदहोश पडा था। दूतका स्वागत लालकुँवरने उसी बारहदरीमे किया जहाँके कालीन उसके परिश्रमके पसीनोसे भींग-भींगकर सूख गये थे।

"कहो, क्या समाचार लाये ?" उसने पूछा।

दूत शाहके निकट उसके रुतबेको जानता था। वह बोला, "जहाँपनाहसे अर्ज करनी है, हमारी फौजे बडी बहादुरीसे लडी, लेकिन क़िस्मत खिलाफ थी, इसलिए दुबारा ताकत हासिल करनेके लिए शाहजादे साहब वापस तशरीफ ला रहे है।"

लालकुँवर मुसकराई। "तो किस्मत खिलाफ भी होने लगी, इतनी जल्द! जाओ, जहाँपनाहके आराममें खलल न डालो। गोकुलदास जहाँपनाहके सबसे बडे अजीज हैं। उन्हें ही यह समाचार सुनाओ।"

अपनी जिम्मेदारी बाक़ायदा कम करनेके लिए दूतने वजीर जुल्फिकार और गोकुलदास दोनोको एकके बाद एक यह दुःसमाचार सुना दिया। दोनों ही योद्धा थे, लेकिन आपसमें द्वेष रखते थे। वक्तकी कमान किसके हाथमें रहे इसके ऊपर बादशाहकी गफलतमें बडा तूलतवील मचा, और जब दोनो योद्धा आपसमें लडकर भी इस बातका फैसला न कर सके, तो खूनमें लथपथ वे दोनो सुबह-ही-सुबह शाहके हजूरमे हाजिर हुए, जो अधखुली आँखोसे इस वक्त भी आधे नशेमें चूर नये दिनके आरम्भको दार्शनिक दृष्टिसे देख रहा था।

वह भी बाहर निकल आया। दोनोको लहूलुहान देखकर वह उनकी

पीठ ठोकता हुआ बोला, "वाह, दुश्मनको मारकर आये हो। मावदौलत तुम्हारी बहादुरीकी कदर करते हैं। कहाँ है दुश्मनका सिर ?"

"गुस्ताखी माफ हो, जहाँपनाह", लालकुँवर बोल उठी, "दुश्मनका सिर अभी तक उसके धड़पर मौजूद है, और वह दिल्लीसे अभी बहुत दूर है। जब तक वह मरनेके लिए आगरे आये शराबका एक जाम और पिया जा सकता है। शाहजादे साहब उसके आगे आगे हैं। इन लोगोंको उनकी मदद करनेका हुक्म दीजिये और जीवनकी कल्पनाको फिर एक बार ढील दीजिये।"

शाहने नीम बेहोशीमे फिर लालकुँवरका हाथ थामकर अन्दरकी तरफ बढते हुए हुक्म दिया, "तामील हो।"

दोनों वीर शाहके हुक्मकी तामील करनेके लिए आगरेसे निकल गये।

यासुद्दीनसे मिलकर ये तीन जानिसार आगरेके निकट फरुखसियरसे भिड़ गये। डगमगाती हुई नावको बचानेमें गोकुलदास काम आया और उस भाग्यहीन नावके शेष दो मल्लाह, शाहजादा यासुद्दीन और वजीर जुल्फिकार खाँ, एकके बाद एक बादशाहको उसकी आँखों उसके भाग्यका निर्णय दिखानेके लिए बेतहाशा दिल्लीकी ओर भागे।

लालकुँवरकी अलकोंसे उलझा बादशाह कह रहा था, "इस लड़ाई को जीत लेनेके बाद मे तुझे अपनी मल्का बनाऊँगा।"

लालकुँवरकी आँखोमे घृणा और मुँहपर मुसकराहट थी। जहाँदार-शाहने ही अपने व्यवहारसे उसे यह अभिनय सीखनेके लिए मजबूर किया था। उसने कहा, "हर हालतमें असलीयतसे ख्वाब बेहतर है। मैं खुशीसे मरी जी रही हूँ, जहाँपनाह।"

अचानक बाहर भारी शोरशराबा सुनाई देने लगा। जल्दीमे लाल-कुँवरके हाथका जाम चढाकर शाहने पूछा "यह क्या है ? इन लोगोंसे कह दो गुल न मचायें।"

"कोई कुत्ता मर रहा होगा, जहाँपनाह। लोग मरते हुओंको भी घसीट

कर दिल बहलाव करते है। मै अभी रोक देती हूँ।" और लालकुँवर शाहको ऊँघता छोडकर बाहर निकली।

शाहजादा यासुद्दीनको कन्धोपर उठाये सिपाही बगीचीकी राह इसी ओर चले आ रहे थे। वह जखमोसे चिल्ला रहा था। अटारीपर खडी लालकुँवरको देखकर वे लोग रुक गये। लालकुँवरने इतने जोरसे कहा कि जहाँदारशाह भी सुन ले, "जाओ, ले जाकर कब्रिस्तानमे दफना दो। जहाँपनाह इस वक्त आराम फरमा रहे हैं।"

"लेकिन ये तो अभी जिन्दा है," एक सिपाहीने दबी हुई आवाज मे कहा।

"कोई हरज नही है," लालकुँवर बोली। "थोडी देरमे मर जायगा।"

शाह लालकुँवरकी इतनी देरकी जुदाई भी बरदाश्त न कर सका। वह पीछे-पीछे अटारीपर निकलकर आया। उसे देखकर सिपाही चिल्लाये, "जहाँपनाहकी दुहाई है"

दुहाई सुननेके पहले ही शाहने झूमकर कहा : "अरे, क्या तुम लोगोंने माबदौलतका हुक्म नहीं सुना? जाओ, कोई हमे परेशान न करे। अभी न मरा हो, तो मारकर दफन कर दो।"

फिर आरामके लिए वापस चलते हुए लालकुँवरने कहा, "कुछ देर बाद सब हकीकत खुल जायगी, जहाँपनाह।"

"कैसी हकीकत?" शाहने पूछा।

"मेरा मतलब है कि जामको लबोसे लगानेसे पहले जो कुछ नहीं समझता, जाम पीनेके बाद तो उसके सामने हकीकत ही खुल जाती है।"

"तेरा दर्शन माबदौलतकी समझमे नहीं आता।" शाहने उत्तर दिया।

"एक दौर खतम होनेके बाद समझमे आ जाता है, जहाँपनाह।"

यासुद्दीन जखमोंकी अधिकतासे एक घण्टे बाद मर गया। उसके पीछे वजीर जुल्फिकार आया। लेकिन उसके सिरपर स्वय आक्रमणकारी

फर्रुखसियर हाजिर था। दिल्लीको बचानेके लिए छोटे-मोटे इन्तजाम किये गये, लेकिन वे बेकार थे। जिस वक्त दोनों सैयद भाइयोंको लेकर फर्रुख-सियर नङ्गी तलवार लिये महलकी उस अटारीपर चढ़ा, सबसे पहले लाल-कुँवर बाहर निकलकर आई और माजरा समझकर तुरन्त अन्दर चली गई।

"क्या बात है, कुँवर?" शाहने पूछा।

"सूरज चाँदकी जगह लेनेके लिए आ पहुँचा है, जहाँपनाह, ताकि वह दिन भर चमके और शामसे पहले-पहले पश्चिमके किसी लाल कोनेमें डूब जाये। यह अमावस्याका काला पखवारा है, अभी तारोंकी सत्ता दूर है, जहाँपनाह, आइये, सूरज मेरे चाँदको अपनी लपलपाती किरणसे चूमनेके लिए बाहर बुला रहा है।"

शाह तपाकसे उठा और लालकुँवरका हाथ पकड़कर बाहर आया, जहाँ लालकुँवरका सूरज अपनी नङ्गी तलवार लिये बेसब्रीसे उसका इन्त-जार कर रहा था। इससे पहले कि जहाँदारशाह कुछ बोले सैयदोंने पकड़कर उसकी मुश्कें कस डालीं, और वह चिल्लाता रहा, "लालकुँवर, लाल-कुँवर, ये लोग माबदौलतको क्यों परेशान कर रहे हैं?"

आधी मूँदी आँखोंसे प्रतिहिंसाकी पूर्णतामें मुसकराता हुआ हरमका वह क़ैदी बोल उठा, "ये आपको लालकुँवरका दर्शन समझानेके लिए ले जा रहे हैं, जहाँपनाह, घबराइये नहीं, जब एक दौर समाप्त होता है, तो खुमारीके असरसे अक्सर बदन टूट जाता है, फिर चाहे वह जहाँपनाहका बदन हो या उस चलनका, जिसने जहाँपनाहको जहाँपनाह बनाया था।"

"लालकुँवर," रस्सीके कसनेकी वेदनासे शाह चिल्लाया। "मैं बेहद दर्दसे मरा जा रहा हूँ।"

"कोई हरज नहीं, जहाँपनाह, आपका बदन भी अगर टूट रहा हो, तो उसे उस वक्त तक सहलानेकी तकलीफ गँवारा कीजिये, जबतक कि वह कतई टूट न जाये! आमीन।"

फरुखसियरने बगीचेमे ले जाकर जहाँदारशाहका सिर धडसे अलग कर दिया। फिर उसके धडको एक मत्त हाथीके माथेपर बाँधा और वजीर जुल्फिकारखाँको उसकी पूँछसे बाँधकर दिल्लीके बाजारोमें घसीटनेके लिए छोड दिया। लालकुँवरने यह सब देखा और अपने आँचलसे आँखोंमें आया एक बूँद आँसू पोछ डाला। फरुखसियरने उससे उसकी इच्छा पूछी। उसने एकान्तकी इच्छा प्रकट की।

सलीमगढके मशहूर कैदखानेमे एक मनोरम और एकान्त स्थानपर लालकुँवरका निवास बना दिया गया, जहाँ रहकर वह अपने दर्शनके अनुसार शाहंशाहियतके दूसरे दौर, फरुखसियरका दिल हिला देनेवाला परिणाम भी देख सके, क्योंकि अभी तारोंकी सत्ताका युग तो दूर है, बहुत दूर है।

० गिरजेका कंगूरा

हस्तिनापुर पाण्डवोंकी प्रसिद्ध नगरी थी। उनका बहुत कुछ इतिहास हस्तिनापुरसे सम्बद्ध है। आजकल वहाँपर जैनियोंके दो मन्दिर है—दिगम्बर और श्वेताम्बर। यहाँके दिगम्बर मन्दिर और मयराष्ट्र जनपदमे सरधनेके सबसे ऊँचे कँगूरे वाले गिरजाघरमे कुछ आपसी सम्बन्ध भी है। यह सम्बन्ध कैसे बना—यह कहानी उसीकी है।

समरूकी बेगम विधवा थी, हजरत ईसामे विश्वास रखती थी और सरधनेके इलाक़ेकी एक मात्र कठोर शासिका थी। दीवान सगमलाल जैन युवा थे, मसें उभरी हुई थीं, खूबसूरत भी थे और साथमे धर्मभीरु भी।

दशलाक्षणी पर्व समाप्त हो चुका था। चतुर्दशीके निराहार व्रतसे निवृत्त हो दीवान सगमलाल पडवाके दिन बेगमसे उत्सवकी स्वीकृति लेने महलमें पहुँचे। सब जरूरी कामोंमे निश्चय दीवानका होता था और अन्तिम स्वीकृति बेगमकी होती थी। बालाखानेमे दीवानको बैठा लौंडीने बेगमके हुजूरमें आदाब बजाई: "दीवान सगमलाल तशरीफ रखे हुए हैं।"

"आते है।"

बहुत देर हो गई। दीवानके आनेपर बेगम कभी इतनी देर नहीं लगाती थी। अचानक सिर उठाकर दीवानने देखा—परीकी तरह सजी हुई सरधनेकी निरकुश शासिकाके गम्भीर पदचाप बालाखानेकी खिडकीके सामने जाकर रुक गये। एक नन्हीं किरणने तडपकर बेगमके होठोको चूम लिया। ठढी और हलकी धूपने वक्ष-स्थलके उभारपर पसरकर उसके नीचेके सायेको गहरा कर दिया। दीवानने नजरे नीची कर ली।

"दीवान!" बेगमने नन्हे सूरजकी ओर दृष्टि गडाये हुए पुकारा।

"श्रीमतीजी!" दीवानने उत्तर दिया।

"तुम्हें मै इस वक्त कैसी लगती हूँ ?" वेगमने अप्रत्याशित प्रश्न किया।

"खूबसूरत !" दीवानने उत्तर दिया।

"बहुत खूबसूरत ?" वेगम खिल गई।

"बहुत खूबसूरत !" दीवानने आँखें बन्द कर लीं।

"कितनी ?" वेगमने विभोर होकर पूछा।

"मेरी माँ भी अगर शाही लिबासमे होती तो ऐसी ही लगती।"

"दीवान !" वेगम चिल्ला पडी।

स्थिति बिगड गई थी। दीवान सगमलाल लपेटमे आ गये थे। उन्होने घबराकर सिर झुका लिया।

"किस लिए आये थे ?" वेगमने कठोर होकर पूछा।

"जैनियोंके उत्सवमे आपकी मजूरीके लिए।" सक्षिप्त उत्तर देकर दीवानने कागज खोलकर सामने रख दिया। वेगमने हस्ताक्षर करके एकदम कहा, "जाओ !"

दीवान सिर झुकाये बालाखानेसे उल्टे पैरो बाहर चले गये। उस दिन उत्सव हुआ, किन्तु आश्चर्यके साथ लोगोने देखा कि श्रीजीकी गद्दीके लिए दीवान संगमलालकी नीलामी बोली कुछ नहीं बोली गई। कुछ सोचते हुए दीवानने सारा दिन दीवानखानेमे बिता दिया। अपने निश्चयकी स्वामिनी थी वेगम। दीवान उसकी आदतोंको अच्छी तरह जानते थे, वेगमके क्रोधसे उसका बेटा भी नहीं बच सका था, जिसे उसने चरित्रहीनताके अपराधमे सूलीपर चढवा दिया था। बालाखानेकी घटना रग लायेगी। आजकी शाम खैरियतसे गुजर जानी कठिन है। वेगम अवज्ञाका बुरा दण्ड देती थी और यहाँ उपेक्षा भी शामिल थी। जब कभी वह क्रोधित होती थी तो उसकी निगाह सबसे पहले अपराधीके गर्वोन्नत मस्तककी तरफ जाती थी और उसके बाद वही मस्तक उडा देनेका आदेश होता था।

अन्धकार हो जानेपर कुछ निश्चयकर दीवान सगमलाल पगडी सिरपर रख, रेशमी अँगरखा पहन और तलवार कमरमें लटकाकर बेगमके महलकी ओर चले। चलते जाते और सोचते जाते थे—एक काली घटा उनके ऊपर घिर आई थी और न जाने कब गाज गिरे और सब कुछ समाप्त कर दे। बेगमके कोपसे बचना असम्भव था। वह निश्चयमें देर करती थी, किन्तु एक बार निश्चय हो जानेपर फिर इधर-से-उधर होता दीवानने कभी न देखा था।

ड्योढीपर लौंडी आदाब बजा लाई। दीवान सिर झुकाये अन्तर तक चले गये। हाथ जोडकर ताजीम से खडे खवाससे कहलवाया, "दीवान साहब क़दमबोसी चाहते हैं।"

आरामगाहमें पडी हुई बेगमने अपनी खास लौंडीसे पुछवाया, "क्या काम है?"

यह भी बिलकुल नई बात। आज तक हरएक खास और आम बात किसी बिचोलिएके जरिये बेगमने नहीं पुछवाई थी। यह उपेक्षासे उत्पन्न मान है या क्रोध है? बेगम अपराधीकी सूरत भी नहीं देखना चाहती। दोनों बातें हो सकती हैं, दीवानने सोचकर कहलवाया, "हुजूरको अभी फ़ुरसत न हो तो नाचीज फिर हाजिर हो?"

यह उत्तरसे मिलता-जुलता ही प्रश्न था। दीवानने कभी बेगमके सामने अपनेको नाचीज नहीं कहा था। समरूकी बेगमका दीवान और नाचीज़! बेगमके दिलपर यह बात ठीक आशाके अनुरूप लगी। हुक्म हुआ कि उन्हें आरामगाहमें भेज दिया जाये।

"हे भगवान्," दीवानने सोचा, "क्या सब अनहोनी आज ही होगी? बेगम अपनी आरामगाहमें मुझसे बातचीत करेगी!" वह आश्चर्यसे खवासके पीछे-पीछे एक सुन्दर कमरेमें पहुँचे, जहाँ तीन सालकी दीवानीमें वह आज तक न पहुँचे थे।

मोढेपर बैठनेका इशारा कर, ओंठे ऊपर किये मसहरीदार पलगपर सीधी लेटी हुई बेगमने पूछा, "अब क्यों आये हो ?"

बेगमके यौवनप्रदर्शनसे घबराकर दीवान नीची नजर किये ही बोले, "डर था कि आपके दर्शन किये बिना ही कहीं रातको सूलीपर न चढा दिया जाऊँ।"

बेगम और अधिक गभीर न रह सकी। उनकी ओर करवट लेकर उसने मुसकराते हुए पूछा, "क्यों तुम्हारे लिए सूलीपर चढ़नेसे पहले मेरे दर्शन क्या बहुत जरूरी थे ?"

"जी, हाँ, बहुत जरूरी थे।"

दीवानके उत्तरसे छतकी ओर देखती हुई बेगम हँस पडी। पूछा, "क्यो ?"

"सुनते है कि मरनेसे पहले बिना मालिकके दर्शन किये नौकरको स्वर्ग नसीब नहीं होता।"

मालिक और नौकर! आशाके प्रतिकूल दीवानके इस उत्तरसे बेगम खुश तो न हो सकी, लेकिन इस बातसे उसे दीवानकी अब तककी वफ़ादारी याद आ गई, इसलिए फिर क्रोधित होनेको जी न चाहा। पूछा, "क्या चाहते हो ?"

दीवान इसी प्रश्नकी राह देख रहे थे। बोले, "मै जानता था कि आपके गुस्सेसे बचना मुश्किल है। इससे पहले कि मै सूलीपर चढूँ, मै चाहता हूँ कि गृहकलहमें जो अपनी जान बच जानेके एवजमे मनौती मैंने मॉगी थी, वह पहले पूरी हो जाये, ताकि मरनेके बाद उसका बोझ मेरे कन्धोंपर न रखा रहे।"

राजगृहमे काफी झगडा और खून ख़राबी होनेके बाद ही बेगमका सिक्का चला था। एक बार उसके और दीवानके जानलेवा फन्देमें फँस जानेपर दीवानने यह मनौती मानी थी कि अगर वह बेगमको इस फन्देसे बचा सके तो अपनी जन्मभूमि शाहपुरमें एक विशाल जैन

मन्दिर बनवा देंगे। यह तो पता नहीं कि उनके बचनेमें इस मनौतीका कहाँ तक भाग रहा, किन्तु उसके बाद तीन सालतक एक व्यवस्थामें फँसे रहनेके कारण दीवानको उसका ख्यालतक न रहा। समरूकी बेगमको मालूम था कि यह मनौती दीवानने अपने लिए नहीं, बल्कि स्वय बेगमके लिए मानी थी।

आज मौतको सिरपर जान जिस प्रकार दीवानने उसकी चर्चा न कर केवल अपनी जान बचनेके एवजकी बात कही थी, उससे दीवानके प्रति बेगमका मोह द्विगुणित हो गया। इसके ऊपर दीवानकी उपेक्षासे नेत्र आर्द्र कर बेगमने पीठ फेरते हुए कहा, "आप जाइए, छुट्टीका परवाना पहुँच जायगा।" थोडा रुककर फिर कहा, "सूलीसे पहले ही।"

अनुभवी दीवान बेगमके उन आँसुओंको अपनी आँखोसे नहीं देख सके, लेकिन उनकी नमीने उनके मनःप्रदेशपर एक ठढी सिहरन दौडा दी। घर पर उनकी सुन्दर पत्नी है, बच्चा है, किन्तु क्या किसीके भी प्यारकी तुलना बेगमके मोहसे की जा सकती है?

उसी रात एक तेज घोडीपर सवार हो दीवान सगमलाल शाहपुरकी ओर दौड पडे। अगले दिन सुबह मन्दिरकी नींव रख दी गई। हजारो मजदूरोंने खून-पसीना एक कर बेगमकी जान बचानेका धन्यवाद भगवान्को भेट किया। सात दिन तक ताबडतोड मेहनत की गई। आठवें दिन वेदीकी प्रतिष्ठा कराके दीवान सगमलालने पूजा की और साष्टाग दण्डवत्कर निराकार निर्लेप पारसनाथकी मूर्त्तिके सामने पड गये। सकल जनोंको सुनाते हुए उन्होंने कहा, "हे भगवन्, यदि बेगमके क्रोधसे मेरी रक्षा हो, तो हस्तिनापुरके उजडे हुए वन-खण्डमें एक मन्दिर और बनवाऊँगा, जहाँ हर साल हजारो धर्मके दीवाने जाकर धर्मलाभ करेंगे।" निर्विकार भगवान् ज्योंके-त्यों ही बने रहे और अपने मनकी भावनासे आप ही सन्तोष प्राप्तकर दीवान सगमलाल, रोते हुए घरवालोंसे बिदा ले, सरधनेकी

१०

ओर चल दिये। किन्तु बेगमका गुप्तचर उनसे पहले सरधने रवाना हो चुका था।

अगले रोज बेगमके हुजूरमे हाजिर होते ही सबसे पहले बेगमने कहा, "तुमने नये जैन मंदिरमे कुछ मनौती मानी है?"

दीवानने नतमस्तक हो कहा, "जी, हाँ।"

"तुम समझते हो, दीवान," बेगमने चहलकदमी करते हुए पूछा, "कि यह मनौती मानकर तुमने कितनी बड़ी तोहमत हमपर लगाई है! जिसे तुम दुनियामे सबसे बड़ी ताकत मानते हो, उसे हमारे खिलाफ भडकानेकी कोशिश की है। हमने कोई जोर तुमपर नहीं दिया। हमने तुम्हें मजबूर नहीं किया। ऊँचेसे-ऊँचे तख्तपर बैठकर भी औरत यही चाहती है कि कोई छाती ऐसी भी हो जो उसे जीत ले। हमने तुम्हें उसका मौका दिया था। मगर हमें अफसोसके साथ कहना पडता है, दीवान, कि तुम हमारी जातकी नब्जको पहचाननेसे क़ासिर रहे।"

उसी तरह सिर झुकाये दीवानने उत्तर दिया, "मुझे अपनी गलतीका आभास है।"

अचानक घूमकर कठोर दृष्टिसे देखते हुए बेगमने कहा, "तब क्यों तुमने हमें उस बगावतमे हलाक नहीं हो जाने दिया? क्यों तुमने हमारी जानके एवज खुदाको उसका बड़ा घर बनवा देनेका लोभ दिया? क्या तुम अपनी गलतीको ठीक करनेके लिए तैयार हो?"

"मुझे अफसोस है, बेगम," दीवानने इनकारीको दूसरी तरह बयान करते हुए कहा, "मेरा मजहब इसकी इजाजत नही देता।"

"और तुम एक ग़ैरमज़हबकी जानपर मनौती मान सकते हो, और उसके ऊपर इतना बडा मन्दिर बनवा सकते हो! मोहब्बतके लिए तुम्हारे मजहबमे अजीब फतवे हैं! ईसामसीहकी कसम, तुम्हारी जगह अगर और कोई होता तो उसके मजहबका नामोनिशान हमारे इलाक़ेमें नज़र

न आता, हमारी जानकी अमानपर जैन-मन्दिर नहीं, गिरजावर बनता। दुनियामें रहकर दुनियाकी मोहब्बतपर ईमान लाने और उसकी कद्र करनेकी इजाजत जिसका मजहब नहीं देता, वह समरूकी वेगमका दीवान नहीं रह सकता। हमें तुमपर और तुम्हारे मजहबपर रहम आता है। ऐसे आदमीको सूली देकर भी दुनिया वैरागियोंसे पाक नहीं होगी। जाओ, चौबीस घण्टेके अन्दर अपनी जानकी सलामती लेकर हमारी रियासतकी हदसे बाहर निकल जाओ।"

दीवान बिना पीठ फेरे ही झुकते हुए बाहर निकल गये। अगले चौबीस घण्टोंमें उन्होंने रियासत छोड दी। उनकी जान बच गई थी, समरूकी वेगमके कोपसे उनकी रक्षा हो गई थी, किन्तु किस वेगैरती और वेइज्ज़तीके साथ!

बुझे मनसे पण्डितों, सङ्घसाजों और राजोंको ले एक सप्ताह बाद दीवान सङ्घमलालने बिरादरीके दूर-दूरके मुखियाओंको साथ ले अपनी मनौती पूरी करनेके लिए हस्तिनापुरकी ओर कूच किया। पण्डितोंने शास्त्रों का अवलोकनकर और हस्तिनापुरकी जमीनको देखभालकर जो स्थान मन्दिरके लिए निश्चित किया, वहाँ हस्तिनापुरके आस-पासके गाँवोंके आदि-निवासी गूजरोंका वृक्षदेवता पीपल खडा था। पीपल हटकर ही मन्दिरकी नींव पड़ सकती थी। उन्हें प्रलोभन देनेकी बहुत कोशिश की गई, लेकिन इस प्रश्नको लेकर एक तुमुल विरोध ग्रामीण जनतामें उठ खडा हुआ। सङ्घमलालको धमकी दी गई कि अगर पेड कट गया तो उनकी जानकी खैर नहीं, पण्डितोंसे विचार-विनिमय हुआ। शास्त्रोंके अनुसार और कोई स्थान इतने मार्केका नहीं निकल रहा था।

धीरे-धीरे दूर-दूरके जैन लोग वहाँ एकत्रित हो गये। रातके अन्धेरेमें एक तेज आरेसे पहलवानोंको भिडा दिया गया। पन्द्रह मिनिटमें पेड़ कटकर गिर पडा। किन्तु खबर छिपी न रही। हजारों मनुष्योंका समूह, गूजरोंके गोलके-गोल अपने देवताकी रक्षा करने और अपराधीको दण्ड देनेके लिए

हस्तिनापुरकी ओर पिल पड़े। इधर पेड कट जानेपर वहाँ नींवकी ईंट रख दीवान सगमलाल बहलीपर सवार हो, तेज बैल जुतवा, वायुवेगसे बह-सूमेकी ओर प्रस्थान कर गये। गूजरोंको मालूम हुआ कि पछी उड गया तो सैकडों घोड़े बहलीके पीछे-पीछे अपराधीको पकड पानेके लिए दौड़ पड़े।

आधे रास्तेमें घोडोंने बहलीको पकड लिया। छतरीपर सैकड़ों लाठियाँ पडी और वह भिर्रेभिर्रे हो गई। निकट था कि दीवान सगमलाल अपने कियेको भुगतते कि यकायक पीछेसे भयङ्कर मार-काट शुरू हो गई। सिर उठाकर दीवानने देखा कि समरूकी बेगमके सिपाही थे। थोडी देरमें खेत साफ हो गया, लेकिन डर अभी बाकी था। सिपाही बहलीको अपनी रक्षामें लेकर तेजीसे बहसूमेके राजाके महलकी ओर चले। यथास्थान शरण पा जानेपर अगले दिन प्रातः सिपाहियोंके नायकसे दीवानने पूछा, "तुम्हें किसने भेजा था ?"

"बेगम साहबाने," नायकने उत्तर दिया।

"बेगम साहबा कहाँ हैं ?"

"शाहपुरका जैन मन्दिर लूटनेके लिए कल रात रवाना हो चुकी है।"

दीवान सगमलालने यह सुना तो स्तभित रह गये। बेगमका मिजाज समझमें नहीं आया। पूछा, "तुम्हारे साथ खुद तशरीफ लाई थी ?"

"जी, हाँ, आपके बहसूमे आ जानेपर ही उन्होंने यहाँसे पलायन किया था," नायकने उत्तर दिया।

दीवान तुरन्त एक घोडा ले शाहपुर दौड़े। हाँफते-हाँफते शामको वह शाहपुर पहुँचे। मालूम हुआ मन्दिर लुट चुका था, बेगमने लूटके मालके सात ऊँट भरे थे। लाखों-करोडोंका हीरा-जवाहरात लादकर बेगम तीसरे पहर ही सरधने कूच कर गई थी। उजड़े हुए मन्दिरको एक नजर देख दीवानने तुरन्त घोड़ेकी रास मोड़ी और सरधनेके कच्चे रास्तेपर सरपट दौड़ा दिया।

घोडा फेन उगलने लगा था और दीवान करीब-करीब बेहोश थे, जब कि सरधनेके करीब पहुँची हुई बेगमने ऊँटपर ऊँचे बैठे-बैठे, दीवानको घोडेसे गिरते देखा। ऊँट रुकवा दिये गये। दीवानकी सेवा-शुश्रूषा शुरू हो गई। अपनी रानोंपर दीवानका सिर रखे बेगम उनके मुँहमें जल टपकाती रही।

आँखें खुलनेपर दीवानने बेगमको देखा और उठते हुए पूछा, "आपने उन लोगोंसे मुझे क्यों बचाया था?"

बेगमने गम्भीर होकर कहा, "अहसानका बदला उतारनेके लिए।"

"आपने यह नहीं सोचा कि मन्दिर लूटनेसे हजारों लोगोंकी धार्मिक भावनाको ठेस पहुँचेगी?" दीवानने फिर पूछा।

बेगम उठकर खडी हो गई। बोली, "काश कि हस्तिनापुरमें पीपलका पेड़ कटवाते वक्त भी तुम यही सोचते!"

दीवानने निरुत्तर होकर कहा, "लेकिन यह मन्दिर आपकी जानकी एवजी था।"

"हूँ," बेगमने उत्तर दिया, "एक ईसाईकी जानकी एवजी मन्दिर नहीं हो सकता—गिरजाघर होता है।"

दीवान क्या कहें? बेगमके अन्दर धार्मिक पक्षपातकी भावना उन्हींके कारण उत्पन्न हुई थी। निराश होकर उन्होंने अन्तिम बार कहा, "लेकिन यह मन्दिर मेरी जान बचनेकी मनौती भी तो था।"

"उसके लिए तुम एक ऊँट वापस ले जा सकते हो। हम बुतशिकन नहीं हैं। चलो।" और बेगमका काफिला एक ऊँट पीछे छोड राजधानी की ओर चल दिया। दीवान सगमलाल खडे हुए उसे तब तक देखते रहे जब तक कि वह क्षितिजके पास जाकर एक धब्बेके रूपमें परिवर्तित न हो गया।

उसके बाद गिरजाघर बना और तब-तक बनता रहा जब-तक कि

मन्दिरकी लूटकी एक-एक पाई उसमें खर्च न हो गई। तैयार होनेपर बेगमने हुक्म दिया कि गिरजेका कंगूरा राजधानीके तमाम धार्मिक भवनोंसे ऊँचा रहे। बिना और कुछ कष्ट किये एक जैन-मन्दिरकी जरा ऊँची बढी हुई चोटीका कलश उखाड दिया गया।

इसमे प्रेमसे प्रवञ्चिता नारीके सिर ऊँचा करके चलनेका अभि-मान था।

• मोटा आदमी

हर मोटे आदमीका एक इतिहास होता है। इतिहास स्वय मोटे और पतले आदमियोका सग्रहालय है। ऊपरसे देखनेपर हर ऐतिहासिक व्यक्तित्व पत्थरका तराशा हुआ बुत मालूम होता है। उन बुतोके भीतर झाँकनेसे ऐसा मालूम नहीं होता कि पोलके सिवा कुछ मिल जायगा। जब इस पोलके भीतर कुछ सूक्ष्म तत्त्व मिल जाते हैं, तो वही ऐतिहासिक व्यक्तित्व एक जीता-जागता इन्सान बन जाता है। ऐसा ही एक इन्सान था फजलअली।

फजलअलीके बारेमें कुछ दन्तकथाएँ प्रसिद्ध थी। उनमेंसे एक यह थी कि किसी आदमीको आज तक उसका वजन मालूम नहीं हुआ था। बहुत कोशिश की गई कि कोई तरकीब ऐसी निकले, जिससे चुपकेसे सरकारका वजन ले लिया जाय। मगर किसी भी अच्छे-भले मोटे आदमी के सामने उसके वजनकी बात करने-जैसी हिमाकत क्या हो सकती है।

लेकिन दुनियामे एक-से-एक उस्ताद भरे पड़े है। करमअली मल्लाहने एक दिन वह काम कर दिखाया, जो आज तक कोई नही कर सका था। पूरी बात यो है :

नवाब सआदतअलीखाँने फजलअलीको ग़ाजीपुरका सूबेदार नियुक्त कर दिया था। सूबे उस समय एक प्रकारसे नीलाम किये जाते थे। जो भी ज्यादा रक़म देनेका दावा करे वही सूबेदार। फजलअलीने लम्बा-चौड़ा वादा किया। लाखोकी बात मुँहसे कह दी और सूबा बिना उसके स्वयके आकार-प्रकारकी ओर ध्यान दिये उसे दे दिया गया।

फजलअली हकूमत करने जब अपने सूबेमे पहुँचा, तो सभी

बाबू लोग (जमींदार) उसे देखकर सनाका खा गये। उस समय वह आया तो हाथी पर था, और हाथी भी काफी नाजोअन्दाजसे चल रहा था, लोग समझे कि हाथीसे चला नहीं जा रहा है। सलाम झुकाते, मगर नजरें नीची न होतीं। कोई कनखियोंसे, कोई किसीकी पीठके पीछेसे, तो कोई बदतमीजीसे—गरज कि लोग किसी-न-किसी तरह फ़जलअलीको देखकर अघा नहीं रहे थे। गाजीपुरका ग़रीब और बारीक-सा इलाका, और उसमें फजलअली जैसा व्यक्तित्व—घड़ेमें तरबूज था!

फजलअलीकी तसवीर बनाना कोई मुश्किल काम नहीं था। एक सीधे-सादे किसानने जाकर अपनी घरवालीको बताया कि वह सरकार साहबको देखकर आया है। घरवालीने कहा कि मैं कैसे जानूँ। किसानने कहा कि कोई मुश्किल बात नहीं है। वह दौडा-दौडा अपने तरकारियोंके बग़ीचेमें गया। वहाँसे वह थोडी देरमें एक बोरी कन्धे पर लादकर लाया। और फिर उसने फजलअलीकी मूर्ति खडी करनी आरम्भ की। सबसे पहले दो लौकी उसने जमीनमें टिकाईं। उनके ऊपर घरका सबसे बडा मटका रख दिया। मटकेके मुँहपर एक बडा भारी सीताफल रखा और सीताफलके ऊपर अपने सिरसे उतारकर पगडी रख दी। फिर घरवालीसे बोला, “देख, यह है हमारे सरकार!”

नजराना-शुकराना देने-दिवानेके बाद कानों-ही-कानों में सवाल पूछे जाने लगे। वजन वाला सवाल न जाने किस उजड्ड देहातीके दिमागकी उपज थी। पर चौबीस घण्टे बीतते-न-बीतते लोगोंको इस बातकी सख्त जरूरत महसूस होने लगी कि उनकी नई सरकारका वजन क्या है?

महीनों तक लोगोंका यह सवाल उत्सुकता जगाता रहा। फिर सवाल दब गया और दबदबा रह गया। सुना कि सरकार खुद कभी महलसे बाहर नहीं निकलते—महलवालोंका कहना था कि सरकार कभी दरबारसे बाहर नहीं आते। लेकिन दरबारका हाल दरबारको मालूम था। वहाँ एक ही जगह ऐसी थी, जो खुदासे पनाह माँग रही थी।

फिर करमअलीने एक दिन अपनी चॉटी बना ली। न जाने किसने प्रेरणा दी कि एक दिन फजलअलीने नावमे बैठकर विहार करना स्वीकार कर लिया। गोमती या गगा तक जानेका विचार करना फजलअलीके लिए एक मुसीबत थी। अतः विहार करनेका प्रबन्ध एक झीलमे किया गया।

नाव काफी मजबूत थी और बीसियो आदमी उसमें बैठनेका ख्याल रखते थे। मगर जब फजलअलीने उसमें पॉव रखा और कुछ देर बाद पैर सम्भालकर सहारेसे वह नावमें चढ गया, तो करमअलीने चिल्लाकर और लोगोको नावमे चढनेसे रोक दिया। उसकी बात सच माननी ही पडी। नावके डूब जानेका खतरा पैदा हो गया था। पानीके निशानपर चाकूसे चिह्न करते हुए उसने लोगोसे कहा कि जहॉ दो-चार आदमी चढ़े कि नाव सरकारको लिये-दिये पानीमे चली जायगी।

कुछ देर नावमें सैर करा लाने और बदलेमें पुरस्कार पा लेनेके बाद वह अपने साथी मल्लाहोके साथ बैठकर लतीफे सुनने लगा। कुछ देर बाद एक लतीफा सुनते-सुनते उसे कुछ ख्याल आया और वह तुरन्त उछलकर खड़ा हो गया। उसके साथियोंने देखा कि वह पत्थर उठा-उठाकर अपनी नावमें भर रहा है। जब दूसरे मल्लाहोंने उसका यह पागलपन देखा, तो चिल्लाने लगे। मगर करमअली कब माननेवाला था। उसने चिल्लाकर कहा कि वह पागल नहीं है और अपने साथियोसे इस काममें सहायता करनेको कहा। उसकी नाव ईर्ष्याका विषय थी। अतः उसके साथियोने जब नाव डुबोनेकी यह नई झक देखी, तो फौरन उसकी सहायतापर कमर कस ली। वे भी पत्थर उठा-उठाकर उसकी नावमें भरने लगे।

कुछ देर बाद जब नाव नीचे बैठने लगी और पानी उस निशानतक आ गया, जो उसने फजलअलीके नावमे बैठे-बैठे चाकूसे लगाया था, तो वह चिल्लाने लगा : "बस, भाइयो, बस। काम हो गया।"

अब फजलअलीने तीन पाँवोंके सहारे एक बहुत बडी तराजू (काँटा) लगायी और उन पत्थरोको तौलने लगा। जब सारे पत्थर तुल चुके और पत्थरोका जुडा वजन निकल आया, तो उसे गश आ गया ! उसे विश्वास नही हुआ कि उसकी नावमें कोई इतने वजनका आदमी भी बैठा था। मगर जो भी हो, फजलअलीका वजन मालूम हो गया था।

यहाँ हम वजनको बतानेकी आवश्यकता नहीं समझते। इससे एक विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्तित्वका मान घटता है। फजलअली जो था सो था। जब था, तब था। इतिहासके पन्नोमे वह अमर है, अमिट है।

नवाब सआदतअलीखाके साथ उसका लंगोटिया याराना था। लखनऊमें कभी साथ-साथ खेले-कूदे थे। वह जमाना भी कितना प्यारा-प्यारा जमाना था ! आज वह लखनऊके नवाब थे और वह गाजीपुरका सूबेदार था। यह सूबेदारी केवल रकमके वादेमे ही नही मिल गई थी। फजलअलीने उसे अपनी बहादुरीके कारनामेसे हासिल की थी। वह बहादुरीका कारनामा अपनेमें अभूतपूर्व था, अद्भुत था और इतिहासके पन्नोपर वीर अभिमन्युको छोडकर कोई ऐसा दिलेर नहीं मिलता।

अफगान सरदार अहमदशाह चढकर आया था और लखनऊके नवाब सआदतअलीखाँ सरहिन्द पर मुकाबलेमे डटे हुए थे। अफगानोंके पास भारी मात्रामे गोला-बारूद था और फौजकी सख्या भी बहुत ज़बरदस्त थी। उधर नवलरायने नवाब सआदतअलीखाँका ध्यान बँटा देखकर फजलअलीसे कोई पुराना वैर निकाला और फजलअलीके पुरखोंकी जागीर छीनकर एक करमुल्ला साहबको दे दी। फजलअली उसी वक्त एक मजबूत-से घोड़ेपर चढ़कर (उस समय उसका वजन कुछ कम था) दिल्ली पहुँचा ओर वहाँसे सरहिन्दकी तरफ अपनी छोटी-मोटी फौजके साथ रवाना हो गया।

वहाँ चल रहा था धुँआँधार। फजलअली और उसकी फरियादको पूछनेवाला वहाँ कौन था। नवाब साहब कहीं दिखाई नही पड रहे थे।

फजलअलीने अपने दस बारह आदमियोंको हुक्म दिया कि उसे उठाकर एक हाथीपर बैठा दिया जाये। आज्ञाका तुरन्त पालन किया गया। अब हाथीपर बैठकर धुएँके गुब्बारमें फजलअली नवाब साहबका हाथी देखनेकी कोशिश करने लगा।

सहसा उसी समय गोलाबारी तेज हो गई। एक भारी धमाका ठीक फजलअलीके हाथीके कानोंके पास हुआ। बस, फिर क्या था, हाथी अपने सवारके बोझसे शायद पहलेसे ही परेशान था, उसपर यह पटाखेबाजी, मस्ता ही तो गया! महावतने लाख रोका, मगर हाथीने किसीकी न सुनी। सूँड उठाकर वह चिंघाडता हुआ, फजलअलीके शरीरको लिये-दिये, तेजीके साथ अफगानोंकी सेनाकी तरफ झपटा।

अफगानी सेनाने देखा कि पर्वत-का-पर्वत, जिसपर महावत और एकसे अनेक आकारका एक सवार बाक़ायदा मौजूद, उनकी तरफ तेजीसे धिकला आ रहा है! अब तोपचियोंका हाल बेहाल हो गया। देख किधर रहे हैं और पलीता किधर लग रहा है! ऊपरसे मानो काला बादल घिरा आ रहा था और एक तोपचीका पलीता बजाय तोपके दहानेपर लगनेके, भागादौडीमे जा लगा इकट्ठी बारूदके ढेरमे—एक भारी अब्बरतोड धडाका हुआ और अफगानोंके कलेजे दहल गये। समझे कि खुदाने कोई फरिश्ता साकार रूपमें हाथीपर बैठाकर उन्हे पददलित करनेके लिए भेजा है। सारी फौज अपने प्राणोंकी चिन्तामे इधर-उधर तितर-बितर हो गई। इधर महावत बराबर अकुश-पर-अकुश चला रहा है, उधर बेचारा फजलअली दुश्मनके चक्रव्यूहमे अपनेको फँसा देखकर शुतुर्मुर्गकी तरह रेतमे मुँह छिपानेकी कोशिश कर रहा है और उसकी छोटी-सी टुकडीके सिपाही अपने मालिकके पीछे-पीछे चिल्लाते हुए अफगानोंकी भागती हुई सेनाके पद-चिह्नोंपर चल रहे है! मैदान नवाब सआदतअलीके हाथो सर रहा—कहना चाहिए कि उस लडाई का हीरो फजलअली था।

भारी शोर मचाकर हिन्दुस्तानी सेनाके सिपाहियोंने फजलअलीके

विशाल शरीरको हाथों-हाथ उठा लिया। इस प्रकार जीतेजी आगके मुँहमें घुसना वीरताकी पराकाष्ठा है, और फजलअलीने यह करतब कर दिखाया था। उसके हाथीको हूलकर महावत नवाब साहबके शिविरमें ले गया। वहींपर फजलअलीको उतारा गया। नवाबने कहा, "माँगो, जो कुछ माँगोगे वही दूँगा।"

फजलअली सामनेकी तरफ अपनी छोटी-छोटी टाँगे पसारे बैठा था। तोंद पैरके अंगूठोंको छू रही थी। दो हाथियोंकी सूँडोंकी तरह हाथ निढालसे पड़े थे। मटकेके ऊपर सचमुच एक तरबूज-सा रखा हुआ था, जिसमें दो ढिबरी-सी लगी थीं। मुँहकी जगह एक सीवन-सी दिखाई दे रही थी और छोटी-सी नाक जैसे किसीने झाडके ऊपर चिपका दी हो। मुँहसे बुदबुदाहटके साथ निकला : "हुजूर, मेरी ग़ाजीपुरकी जायदाद जनाव नवलराय साहबने छीन ली है और करमुल्लाको दे दी है। बस, वही वापस दे दीजिये, तो मेहरबानी होगी।"

नवाब साहब बोले, "ओह, नवलरायने बडी हिमाक़त की! खैर, हमने कह दिया। जायदाद फिरसे तुम्हारी हुई...मगर एक शर्त पर।"

"फरमाइए, हुजूर?" फ़जलअलीने अपनी आँखे टिमकाते हुए पूछा।

"जरूर करमुल्लाने ज्यादा मालगुजारी देनेका वादा किया होगा। तुम्हें हर हालतमें उससे ज्यादा मालगुजारी देनेका वादा करना होगा।"

"बहुत अच्छा, हुजूर," फ़जलअलीने अपनी आँखोंको टिमकाया।

जब नवाब राजधानी वापस लौटे, तो नवलरायके हुक्मको रद्द किया और आठ लाख सालानाकी मालगुजारीपर फजलअलीको फिर अपनी जायदाद मिल गई। आठ लाख क्या, फ़जलअली दस लाख, पन्द्रह लाख, किसी भी क़ीमतपर अपनी पुश्तैनी जायदाद नहीं छोड सकता था।

मगर कहाँ ग़ाजीपुरका गरीब इलाका और कहाँ आठ लाखकी मालगुज़ारी। फ़ज़लअली आरामसे जाकर फिर अपने कोठेनुमा दरबारमें

बन्द हो गया और मालगुजारी इकट्ठी करनेके लिए लगान कडाईसे वसूल किया जाने लगा।

साल पूरा होनेपर जब मालगुजारी लखनऊ नहीं पहुँची, तो वजीर-खास नवलरायने नवाबसे शिकायत की। नवाबने कहा, "अगर फजलअली मालगुजारीकी रक़म फौरन जमा न करे, तो उसे कहो कि सीधा लखनऊ चला आये और जायदाद किसी और को दे दो।"

नवलरायकी तरफसे राजदूत गाजीपुर पहुँचा मालगुज़ारी वसूल करने। फजलअलीके सरदार तो जानते थे कि अन्दरूनी मामला क्या है। उन्होंने राजदूतको ले जाकर फजलअलीके सामने पेश कर दिया। जहाँ वह उसी तरह अपनी छोटी-छोटी टाँगोंके ऊपर पेट रखे, आँखें टिमकाता हुआ बैठा था।

राजदूतने कहा, "हुजूर, नवाब साहबने मालगुजारी मँगाई है।"

"अच्छा," कहकर फ़ज़लअली चुप हो गया। ज्यादा बोलना उसके बसकी बात थी नहीं।

राजदूतने मन ही मन पेचताव खाकर कहा, "तो, हुजूर, हुक्म दीजिये कि मैं लेता जाऊँ।"

"किस तरह दूँ?" फजलअलीने कहा।

राजदूत चकराया। यह भी कोई सवाल है। उसने कहा, "हुजूर, मैं वजीर साहबको बुला लाता हूँ और आपके खजान्चीको ले आता हूँ, दोनोंको कह दीजिये।"

"अच्छा," फ़जलअली निर्दोष और निर्विकार भावसे बोला।

कुछ देरमें दूत दोनों सज्जनोंको बुला लाया। फजलअलीने वजीरसे कहा, "सरदार साहब, इनको दे दो न जो यह माँगते है।"

वजीर बोला, "हुजूर, यह तो मालगुजारीकी रकम माँगते है!"

खजान्चीने कहा, "और सरकार, खज़ाना खाली पडा है।"

फज़लअलीने गाल फुलाकर दूतको लक्ष्य करते हुए कहा, "देखा, क्या कहते है ये लोग ?"

दूतने होंठ काटे और बोला, "तो, हुजूर, मुझे हुक्म हुआ है कि आपको अपने साथ लखनऊ लेता चलूँ।"

"अच्छा," फ़ज़लअलीका उत्तर था। उसे किसी बातसे इनकार नहीं था।

अब फज़लअलीके लखनऊ जानेकी तैयारियाँ शुरू हो गईं। साथमें हरमकी पालकियाँ सज गईं और एक हाथीपर फज़लअलीको बैठाया गया। पूरी सरकारकी सरकार लखनऊकी तरफ़ चल दी। लखनऊ पहुँचते ही नवाब सआदतअलीकी तरफ़से नियत एक महलमें यह सारा काफिला उतरा। तुरन्त नवलराय साहब हाजिर हुए, दुआसलाम हुई और दोनो आपसमें गले मिले।

नवलरायने कहा, "क्यो, हज़रत, यह क्या दिल्लगी है कि पहले आपने वादा कर लिया, और अब मालगुजारी अदा नहीं करते!"

फ़ज़लअली टुकुर-टुकुर नवलरायकी तरफ़ देखने लगा। ऐसा मालूम होता था कि एक अनघड पर्वत है, जिसके सामने नवलराय खड़े कुछ माँग रहे हो! सन्तोषसे गाल बिचकाकर फज़लअली बोला, "लोग लगान ही नही देते।"

नवलरावने अपने करम ठोके। "अगर लोग लगान नहीं देते, तो आप किस लिए हैं! आपने उनसे वसूल क्यों नही किया ?"

"उनके पास हई नही," फज़लअली बच्चो-जैसे निर्दोष भावसे बोला।

"क्यो नहीं है ?" नवलराय तेजीसे बोले।

"खुदाने दिया नहीं," सम भावसे फ़ज़लअलीने उत्तर दिया।

"तो फिर समझिये कि खुदाने गाजीपुर आपसे लेकर फिर करमुल्लाको दे दिया है।"

"अच्छा," फ़जलअलीने कहा।

नवलरायने जाकर नवाबको रिपोर्ट दी कि "फजलअलीमें हकूमत करनेका कोई गुण नहीं है, वह बिलकुल निकम्मा आदमी है, और मसखरों जैसी बातें करता है; बेहतर हो कि उसे लखनऊमें ही नजरोंके सामने रखा जाय, जिससे और लोगोंमें हुक्मअदूलीकी बीमारी न फैले।"

फजलअलीका लखनऊ-वास आरम्भ हो गया।

ऊपरसे देखनेमें यह बात जितनी सरल मालूम होती है उतनी नहीं थी। लखनऊके तमाशे और लखनऊके तमाशाई दोनों मशहूर हैं। दो ही दिनके भीतर-भीतर सभ्य और शिष्ट जबानोंपर फजलअलीका नाम चढ गया। लोग आपसमें तजकिरा करते: "अमाँ, सुना है कि खुदाने दस रूहोंको एक ही जिस्मके भीतर कैद कर दिया है।"

जवाबमें कोई साहब फरमाते: "लेकिन अल्ला मियाँने इन्साफ किया है। अगर दस रूहोंको एक जिस्ममें कैद किया है, तो जिस्म भी, मासाअल्ला, उतना ही लम्बा-चौडा बनाया है. .चीज देखने लायक है।"

चीज देखने लायक है इसके माने लखनऊमें बहुत कुछ थे। जल्दी ही एक मेला-सा उस महलके सामने जुड गया, जिसमें फजलअली रौनक बढा रहा था। एक आता तो साथमें चार जन आते, और एक जाता, तो उसका स्थान दो घेर लेते। महलके सामनेका रास्ता चलना बन्द हो गया। लोग उस आदमीको देखना चाहते थे, जिसके भीतर खुदाने दस रूहोंको बन्द कर रखा है और जिसके अकेले शरीरमें दस शरीर समाये हुए हैं।

इसी बीच नवाब सआदतअलीखाँने फजलअलीको बुलानेके लिए दूत भेजा। एक लखनवी पीनस लेकर नवाबका दूत फज़लअलीके महलमें जा पहुँचा। पीनसके साथ चार मजबूत कहार लगे हुए थे। जब फजलअली पीनसमें बैठ गया, तो उसने अपनी गरदनको सहारा देनेके लिए पीछे गाव तकिये पर टिका ली, भारी तोदको पैरोंके ऊपर रखा और जब

अच्छी तरह जमकर बैठ गया तो, उसने इशारा किया कि अब पीनसको सावधानीसे उठाया जाये।

बीच आँगनमें चारो कहार पीनसके डण्डोपर जुट गये। मगर पीनस टससे मस न हुई। कहारोंने भौचक्के होकर एक दूसरेकी तरफ देखा। आज तक अगर वे लोग परोंका बोझ कन्धों पर लादकर चलते थे, तो आज उन्हें चक्कीके पाट उठाने पड रहे थे! फज़लअलीके वजीर और नवाबके दूत दोनोंने उन्हे धमकाया: "याद रखना, अगर सरकारका मिज़ाज बिगड गया, तो कोडे लगेंगे।"

कहारोने घबराकर अपने खुदाको याद किया, एक जोरकी 'हेश्या' लगाई और झटकेके साथ पीनसके बमोंको उठाकर कन्धों पर रख लिया। इसके बाद शराबियोकी तरह टेढे-मेढे कदम रखते हुए वे लोग मुख्य द्वारकी ओर बढे। ज्यों-त्यो करके पीनस दरवाजेसे बाहर निकली। पीनसके डण्डे जोर-जोरसे बोलकर अपनी समस्त लचकका जोर आज़मा रहे थे।

दरवाज़ा पार करते हुए जरा निचाई पडती थी। अनुभवी कहारोंने बहुत सावधानीसे निचाई पर पैर रखा और फिर एक बार अपने शरीरो का सारा जोर तौलकर उन्होंने पीनस सँभालनेके लिए डण्डो पर जोर दिया। लोगोंने जोर-जोरसे आवाजे लगानी शुरू कीं। भारी शोर बरपा हो गया। मगर..

मगर दो चार लचक और खाते ही डण्डोका दम खिसक गया। पीछेके दोनो डण्डे चड़-चड करके टूट गये और पालकी एक जोरदार 'थड' की आवाज देती हुई ज़मीन पर जा लगी। भीतर बेचारा फजल-अली बोरा-सा लुढक कर रह गया।

अब क्या था, लोगोने उसके दर्शन करनेके लिए पीनसके परदे फाड डाले। बीच बाज़ार, हज़ारों लोगोके समूहमे, नीचे धरती ऊपर आसमान, फजलअली लेटा हुआ था—और लोग कहकहे लगा रहे थे।

इमामबाड़ेपर उस दिन सालाना जशन था। वहाँ हजारों फकीर इकट्ठे हो गये थे। उन्होंने भी जब सुना कि फज़लअली जैसे व्यक्तित्वके दर्शन सुलभ हैं, तो अपने-अपने ठिकाने छोडकर महलकी तरफ़ भाग खड़े हुए। एक तरफ़से उनका रेला आता हुआ दिखाई पड़ा।

इधर फ़ज़लअलीको उठाकर मजबूत बॉसोकी बनी पालकीमे रखनेका प्रबन्ध हो रहा था। उधर फ़क़ीरोके दिलोपर फ़जलअलीको देख-देखकर सॉप लोट रहा था। आखिर एकसे जब नहीं रहा गया, तो आसमानकी ओर हाथ उठाकर उसने कहा, "या अल्लाह, या परवरदिगार, तूने तो एक ही पेट इतना बडा पैदा कर दिया है कि उसमें तेरे पैदा किये हुए सारे नान (रोटी) और गिजा समा जाये—फिर तो ऐसा कर, तू हम गरीबोको उठा ले।"

एक हवाको हिला देनेवाला कहक़हा लगा और लोग फ़ज़लअलीको उठाकर पालकीमे रखा जाना देखते रहे। फज़लअली निर्विकार भावसे यह तानाजनी सुन रहा था। मगर चेहरेपर एक भी शिकन दिखाई न दे रही थी। हाँ, मुँहको प्रकट करनेवाली जो पतली-सी रेखा थी वह ज़रा चौड़ी हो गई थी।

इतनेमें भीतरसे वजीर साहब पचीस-तीस सिपाहियोंको लेकर निकले और इकट्ठी हुई भीडपर कोड़े बरसाने लगे। मगर फज़लअलीने बड़े कष्टसे एक हाथ उठाकर वजीरको रोका। वह पास आकर बोला, "हुजूर, ये लोग बदतमीजीपर उतर आये हैं। आपकी आला शख्सियतका मजाक उडा रहे है।"

फजलअलीने बुदबुदाते हुए कहा, "उडाने दो—खुदाने इनके साथ मजाक की है, ये लोग खुदासे मजाक कर रहे हैं। ऐसे ही सारी दुनिया चलती है।"

कोड़े बरसने बन्द हो गये। पालकी इस बार बड़ी थी और उसे उठानेके लिए आठ आदमी लगाये गये थे, इसलिए इस बार कोई दुर्घटना

नहीं हुई और पालकी सकुशल नवाब साहबके महलमें पहुँच गई। दीवानखानेमें एक बडी मसनद विशेष रूपसे फजलअलीके लिए बिछी हुई थी। उसीपर उसे बैठा दिया गया।

कुछ देर बाद नवाब साहब पधारे। फजलअलीने दोनों हाथ जमीन पर टेककर उठनेकी चेष्टा की और हिल कर रह गया। नवाबने मुसकराहट चेहरेपर लाकर कहा, "रहने दो, फज़लअली, रहने दो। हमने तुम्हारी ताजीम (सम्मान-प्रदर्शन) कबूल की। कहो, इस बार तो तुम्हारी तन्दुरुस्ती पहलेसे कहीं बालातर नज़र आ रही है।"

फज़लअलीने होठों ही होठोंमें कुछ कहा और आसमानकी ओर हाथ उठा दिया, जिसका मतलब नवाबने यह लिया कि सब ऊपरवालेकी मेहरबानी है। नवाब साहब फिर मुसकराये और बोले, "तो, फजलअली साहब, जो लोग अपना वादा पूरा नहीं करते उन्हें पहलेसे ज्यादा तन्दुरुस्त नज़र आनेका हक नहीं है—हम इस बारे में आपका ख्याल जानना चाहेंगे।"

अगर नवाब साहब सिकंदरकी जगह होते और फज़लअली पोरसकी जगह, तो फज़लअलीका उत्तर नोट करके यूनान भेजा जाता, जहाँ वह आज तक सुरक्षित रहता। उस बेचारे मोटे आदमीने कहा, "हुजूर, जो लोग तन्दुरुस्त होते है वे कभी वादा नहीं करते। वादा हमेशा वही आदमी करता है, जिसमें कोई कमी होती है, जो बीमार होता है।" फिर सिर झुका कर उसने बहुत ही गभीर स्वरमें अपने जीवनकी कलई खोद दी। "आलीजाह, मै जो तन्दुरुस्त नज़र आता हूँ, वास्तवमें यही मेरी बीमारी है।"

मगर इन सैद्धान्तिक बातोंसे आठ लाख रुपयेकी कमी पूरी नहीं होती थी। नवाबने इस बातको प्रकट किया। फज़लअलीने फिर वादा किया कि इस साल नहीं, तो अगले साल सोलह लाख जमा कर देगा। न करे, तो जो इलाज चोरका सो उसका। नवाबको फिर अपने बचपनके खेलकूदकी

याद आई और मामला फज़लअलीके हकमें रफा-दफा हो गया। उसे फिर गाजीपुर जाकर हकूमत चलानेकी इजाजत मिल गई।

फज़लअलीका फिर वही दौर चलने लगा। जितना खाया जा सकता था, उतना खाना, बाकी अनखायोंमे बाँट देना और पड़े-पड़े सडराना। न कोई कहनेवाला था, न सुनने वाला। जो था वह लखनऊमे था और लखनऊ अभी साल भर दूर था।

सालभर गुजर गया। जमींदारीमे सालकी गिनती इसी तरह होती है, जिस तरह हम लोग दिनकी करते हैं।

जब नियत तारीखोंपर फिर मालगुजारी नहीं भेजी गई, तो नवाब साहब इस बार बहुत बिगड़े। नवलराय बुराईपर तुला हुआ था ही। उसने समझाया कि लखनऊमें उसे बुलाना सिरदर्द मोल लेना है। अच्छा यह हो कि कोई और इतजाम किया जाय।

नवाबने ठोढ़ी पर हाथ रखा, फिर जोरसे हुक्म दिया," इसी वक्त दो सजावाल बुलाये जायँ।"

सजावाल उस वक्त कोतवालसे कम नहीं होते थे। कोतवाल शहरकी पुलिसका प्रधान होता था, तो सजावाल गश्ती पुलिसका। लिहाजा नवाब साहबका समन पहुँचते ही दो सजावाल तुरन्त आकर सेवामें उपस्थित हो गये।

नवाबने हुक्म दिया, "इसी वक्त तेज़ घोड़े लेकर गाजीपुर जाओ। फज़लअलीसे कहना कि एक-एक लाख रुपया हर महीने किश्तोंमे अदा करे, अगर न किया, तो सजा मिलेगी। जब तक एक लाख रुपया पहली किश्तका, और एक-एक हजार रुपया रोज तुम दोनोकी तनख्वाह का न मिले, तब तक उसका खाना-पीना, उठना-बैठना—सिवा ज़रूरी ज़रूरियातके—बन्द कर दिया जाय। नवलराय, इन्हें परवाना मय हमारी मोहरके दे दिया जाय।"

नवलरायकी बाँछें खिल गईं। यही तो वह चाहते थे। अकरमुल्ला

अब गाजीपुरका सूबेदार बना ही रखा है ! झटसे दौड़कर अपने दफ्तरमें पहुँचे और एक परवाना लिखकर उसपर नवाब साहबकी मोहर कराई। वह परवाना लेकर सजावाल मारामार ग़ाजीपुर पहुँचे। साथमे सैकड़ो सिपाही थे। जाते ही उन्होने फ़ज़लअलीके शरीरपर धरना दे दिया।

किसी मोटे आदमीपर उसका खाना-पीना बन्द कर देने जैसा अत्याचार और क्या हो सकता है ! दोनो सजावालोने अपनी शर्तें फ़ज़लअलीके निर्विकार मुखके सामने उपस्थित होकर रखीं और बिना किसी तरहका जवाब पाये दरवाजेपर आकर डट गये। फ़जलअलीने शून्य भावसे सारी स्थितिको देखा और बार-बार गाल फुलाकर जहाँ-का-तहाँ बैठा रह गया। समाचार सारे गाजीपुरमे फैल गया। लोगोंकी भीड़ इकट्ठी हो गई। मगर फ़ज़लअलीकी उँगली तक हिलनेमें दर्द करती थी। मिट्टीके माधवकी तरह वह ग़रीब सूबेदार जहाँ-का-तहाँ पसरा पडा था।

दोपहरको खानेका समय आया। सब सिपाहियो और दोनो सजावालो की दावत की गई, मगर जब एक थाल सजाकर भीतर भेजा जाने लगा, तो सजावालोने रुकवा दिया। उनमेंसे एकने केवल इतना कहा : "इजाजत नहीं है।"

फ़जलअलीके सारे सरदारोके चेहरे यह सुनते ही मुरझा गये। उस वक्त सब-के-सबने अनशन किया। ऐसा अत्याचार तो आज तक न देखा था, न सुना था। अनेक, जो कच्चे दिलके थे, आँसू भी टपकाने लगे। मगर सज़ावाल जो भेजे गये थे, वे मामूली सजावाल नहीं थे, बहुत जब्र थे, जर्री थे, जालिम थे, उनकी भौहों पर बल तक नहीं पड़े।

रातके वक़्तका खाना उन लोगोने हण्डे जलवाकर, ठीक उस दरवाज़े के बीचमे बैठकर खाया, जहाँसे फ़जलअली उन्हें देख सकता था। खाना भी एक-एक लुकमेको देख-देखकर, उसकी तारीफ़ आपसमें कर-करके, बहुत स्वाद ले-लेकर खाया—और इस बीच फ़जलअलीका सम्पूर्ण आकार-प्रकार, जिस मुद्रामें पहले बैठा था, उसी मुद्रामे अन्त तक बैठा रहा।

मजाल है कि चेहरेपर एक शिकन तक आ जाय। हाँ, आँखोंके भीतरसे, नथुनोंकी श्वाससे, और गालोंकी फडकनसे एक चीज थी, जो बार-बार सूक्ष्म वायुमें अपनी उपस्थितिका आभास करा रही थी—और वह चीज थी भूख, एक मोटे आदमीकी भूख !

रात न जाने बेचारे फजलअलीपर कैसी गुज़री। सुबह होते ही फजलअलीके वजीर साहब एक सजावाल साहबके पास पहुँचे और बोले, "जनाबआली, हम लोग सब मिलकर पैसा इकट्ठा कर रहे हैं और अगर खुदाने चाहा, तो कल तक आपके हाथमें एक लाख रुपया "

"और तीन दिनकी हम दोनोंकी तनख्वाह, यानी छः हजार रुपये ज्यादा," सजावालने उन्हें बीचमें ही टोका।

वजीरने खूनका घूँट पीया। फिर बोला, "अच्छा छः हजार वह भी हो जायेगा खुदाने चाहा तो।"

सज़ावालने निर्लिप्त भावसे इनकार करते हुए कहा, "और अगर खुदाने न चाहा तो?"

"तो फिर किसमें ताक़त है कि खुदाकी मरजीको टाल सके?" वजीरने सवाल किया।

"बहुत ठीक," सजावाल बोला, "अगर खुदाकी यही मरजी हुई कि बेचारे फ़जलअली साहबका सम्मानित व्यक्तित्व बिना खाये-पीये ही इस दुनियासे उठ जाये, तो मजबूरी है।"

"मगर, जनाब, मैं तो आससे यह दरख़ास्त करने आया था कि मेहरबानी करके कल तक सबर कीजिए और हुजूरको खाना पहुँच जाने दीजिये," वजीरने प्रार्थना की।

"इजाजत नहीं है," सजावालने सद्दित और खरा उत्तर दिया।

वज़ीरका जी चाहा कि सजावालका भेजा अपनी तलवारकी मूठसे फोड दे। पर मन मसोस कर रह गया। ऊँचे स्वर में चिल्लाकर फज़ल-

अलीको लक्ष्य करते हुए उसने कहा, "हुजूर, आप फ़िकर न करें, हम लोग रकम इकट्ठी कर रहे हैं।"

फ़जलअलीने इस घोषणाको भी श्रोताके भावसे सुना।

सरदारोंने उस दिन प्रजापर कड़ाई करनेमें सीमा पार कर दी, अपने-अपने घरोंके जेवर बेच दिये, हकूमतकी कई इमारतें नीलाम हो गईं। अगले दिन तक उन लोगोंने एक लाख छः हजार रुपया एकत्र किया और सारे सरदार मिलकर सजावालोंके पास आये। उन्हें थैली दिखाकर उन्होंने कहा, "देखो, इस थैलीमें एक लाख छः हजार रुपये हैं।"

जिस बोरेको वे लोग थैली बता रहे थे उसे देखकर एक सजावाल बोला, "अच्छा, है।"

"अब इन्हें देंगे खुद सरकार तुम्हारे हाथोंमें," वज़ीर बोला। "उनकी आज्ञाके बिना हम एक पैसा भी तुम्हें नहीं देंगे।"

सजावाल होंठों ही होंठोंमें मुसकराया। बोला, "अच्छी बात है। यह बात हमें मंजूर है।"

दरवाजा खोल दिया गया और सब सरदार मय दोनों सजावालोंके फ़जलअलीके सामने पहुँचे। वह अपने आसनपर जैसा-का-तैसा पड़ा था। वजीरने कहा, "हुजूर, हम आपके खिदमतगार आपसे माफी चाहते हैं कि हम आपके कुछ काम नहीं आ सके, सुखके साथी रहे और दुःखमें मुँह ताकते रहे। हम लोगोंने यह एक लाख छः हजारकी रक़म इकट्ठी कर ली है। इजाजत दीजिए कि इस रकमको सजावाल साहबको देकर विदा किया जाय।"

फ़जलअलीमें कोई हरकत पैदा नहीं हुई। आँखें सामने देख रही थीं, सो देखती रहीं। पलकें झपकती रहीं, जिससे पता चलता था कि जीव कायाका पिंजरा छोड़कर नहीं भागा है। बस, एक बुदबुदाहट उसके होंठोंसे निकली—बहुत धीमी सीः "वजीर साहब, हमें एक तजरुबा हुआ है।"

फ़जलअलीको कोई तजरुबा हुआ है यह बात जानकर उसके सरदार

लोग उत्सुक हो गये। सजावाल लोगोंने भी कान खड़े किये। वजीरने पूछा, "हुजूरको क्या तजरुबा हुआ है?"

फ़जलअलीने कहा, "हमें तजरुबा हुआ है कि यह ज़िन्दगी दूसरोंके आसरेपर है तो है, नहीं तो नहीं है।"

बहुत साधारण बात थी। सरदारोंने एक दूसरेकी ओर इस आशयसे देखा कि शायद इसमें किसीको कोई नवीनता नजर आई हो। फिर वजीर बोला, "सो तो हई है, हुजूर।"

फजलअलीने अपनी बात जारी रखी, "और जिनके आसरेपर है आखिर उन्हे तो हम देते नहीं, जिनके आसरे पर नहीं है, उनका घर भरते है।"

"क्या बात कही है, सरकार।" वजीर उछल पडा और इसके साथ-साथ सरदारोंने भी 'वाह, वाह' की। वजीर बोला, "हजूरने बस निचोड कह दिया है हज़ार तजरुबोंका।"

फजलअलीने बातको और आगे कहा, "और जिन्हे हम देते नहीं, वे फिर रोते है, चीखते है और ईर्ष्या करते है—हाथ उठा-उठाकर देनेवालेको कोसते है, यहाँ तक कि कभी मज़ाक भी कर बैठते है, जिस पर देनेवाले नाराज हो जाते है।"

"जी, हुजूर," वजीर इसका मतलब ठीकसे न समझकर आशङ्काके भावसे बोला। "फिर?"

फ़जलअलीका स्वर स्पष्ट और आज्ञासूचक हो गया। उसने हुक्म दिया, "यह एक लाख छः हजार रुपया लखनऊ ले जाओ, और इमाम-बाडेके उन फकीरोंमें बाँट दो, जिन्होने हमारी मजाक उडाई थी। उनसे कहना कि उनका मजाक इतना ज्यादा कीमती था कि उसकी पूरी क़ीमत नहीं चुकाई जा सकती, मगर यह एक कोशिश है।"

सजावाल, सरदार लोग, वजीर—सब-के-सब आँखें फाडकर तीन

दिनके भूखे-प्यासे फजलअलीको देख रहे थे और अभी तक उनके कानोंमें उसकी आज्ञाके स्वर गूँज रहे थे।

"हुजूर...!" वजीरने आपत्ति प्रकट करनी चाही।

"बकवास मत करो," फ़जलअली चिल्लाया। "हुक्म इसी वक्त पूरा किया जाय!"

"जो हुक्म, हुजूर," वजीरने सहमकर कहा, और सारे सरदारोंके साथ बाहर आ गया।

मगर सज़ावाल दम-ब-खुद खड़े थे। जब वे हिले, तो सबसे पहली हरकत उनकी यह थी कि हाथ उठकर कानों तक गये। उन्होंने तोबा की, छतकी ओर हाथ उठाकर एक फरिश्तेको भूखा रखनेके कुफ़्की माफी चाही और बाहर निकल आये।

उसी दिन, बिना रक़म वसूल किये ही दोनों सजावाल, मय अपने लाव-लश्करके, लखनऊके लिए रवाना हो गये। नौकरी जाये, तो जाये, मगर अब और कुफ्र नहीं होगा।

मगर हुआ कुछ नहीं। नवाबने मस्जिदमें और नवलरायने मन्दिरमें पश्चात्ताप स्वरूप जमीनपर लेटकर कुछ कहा और अपने-अपने परमात्मासे क्षमा की प्रार्थना की।

तभी तो कहा था कि हर मोटे आदमीका एक इतिहास होता है।

• समयकी आँखें

सौ सालसे भी ज्यादा हो गये हैं। लखनऊकी गद्दी नवाब वाजिद्अली शाहके हाथ लगी-ही-लगी थी। दुनियाकी रंगीनियाँ शाही महलोंमें सिमट गई थीं। करुणा, दीनता और उत्पीडन सखियोंकी तरह गोल बनाकर रिआयाकी छातीपर रस्सी-कुदानका खेल खेल रहे थे। लखनऊकी सडकें कजूस महाजनोंके दिलोंकी तरह तंग थीं। शाही अरमानोंका बोझ ढोनेवाले ऊँट और हाथी जब उन गलियोंसे गुजरते थे, तो उनके इधर-उधर बनी हुई दूकानोंके छज्जे गिर पडते थे। बड़े-से-बडे अमीरकी पगडी सरे-बाजार उछल जानी मामूली बात थी। रात-ही-रातमें राहकी भिखारिन महलोंकी मल्का बन सकती थी। वाजिदअली शाहकी हुकूमतमें कुछ असम्भव नहीं था।

फखरुल जमानी, नवाब ताज आरा बेगम, काल्पीके हसीनुद्दीनखाँकी बेटी, विगत नवाब अमजदअली शाहकी बेगम, और नवाब वाजिद्अली शाहकी माँ थी। लोग उसे आदरसे जनाब औलिया बेगमके नामसे पुकारते थे। पतिके मरनेपर रहन-सहनमे कुछ परिवर्तन जरूर हो गया था, मगर रुतबा अब भी वही माना जाता था, जो वाजिदअली शाहकी प्रधान बेगम, खास महलसे भी बडा था।

सरदियोंके दिनोंमें औलिया बेगमका निवास छतर मंजिलमें होता था, गरमियोंमें चौलखी महलमे और बरसातमें द्वारकादास बागमे, जहाँसे गोमतीका दृश्य साफ दिखाई पडता था। बरसातमे बाग़ महलकी खिडकी पर बैठकर अटारीसे गिरती हुई बूँदोंको वह अक्सर देखा करती थी।

जालीकी पच्चीकारीसे उलझकर जहाँ वर्षाकी झडें दीनहीन लघु बूँदोंका आकार धारण कर लेती थीं, वहाँ खुलेमें गोमतीके विशाल वक्षको पहाड़की

तरह उभार देती थीं, जब-तब अपने साथ किनारेपर बसे हुए गाँवो, झोंप-डियों और असख्य ग्रामवासियोंको लिये हुए गोमतीका वेग उन्मत्त राक्षसकी भाँति उछलता-कूदता चला जाता था।

ऐसे ही दिनोंमे एक दिन खिडकीपर बैठी औलिया बेगम, रातके समय कल्पनाशील कथावाचक गियासवेगके द्वारा सुनाई हुई बहादुर वजीर और खलनायिका विस्वालखीकी कहानीको मन-ही मन दोहराती हुई गोमतीके तीव्र प्रवाहकी ओर देख रही थी कि सहसा वह चौंककर जोरसे चिल्ला उठी :

"अरे, कोई है?"

हुक्मकी इन्तजारमें कमरेकी ड्योढीपर खडी बहरुन्निसा तत्काल भीतर आई और कोरनिश झुकाकर बोली, "हजूर, लौंडी हाजिर है।"

बेगम आवेशके कारण खडी हो गई। बेचैनीके साथ गोमतीके वक्षकी ओर उँगली उठाकर उसने कहा, "देखो, देखो, कोई मौतके जबडोंकी तरफ खिचा जा रहा है...।"

बहरुन्निसाने खिड़कीमेंसे झाँका। दूर गोमतीकी उठती-गिरती छाती पर एक इनसानकी रूपरेखा दिखाई पड रही थी। बेगम चिल्ला रही थी, "जल्दी करो, गुलामोंको दौडाओ। ओह, यह दरिया हर साल न जाने कितनोंको खा जाता है!"

हुक्मकी देर थी, काममें देर नहीं हुई। उसी समय दसियों गुलाम गोमतीकी तरफ दौड़ पड़े।

बहते हुए छप्परके तिनकेको मुट्ठीसे भींचे, जीवनके कच्चे धागेको कसकर पकडे हुए, पानीके थपेड़ोंसे पिटती-जाती वह एक बुढिया थी। उमर सौके आसपास होगी। बेरीकी सूखी झाड़ीकी तरह थर-थर काँपती हुई उसकी देह सिमट गई थी। लखनऊकी कमजोर सत्ताकी भाँति उसकी गरदन गडगड हिल रही थी। अंगरेज रेजीडेण्ट रिचमण्डके बालोंकी तरह उसके सफेद बाल पानीसे खालके साथ चिपक गये थे। चेहरेपर पडी

हुई अनगिनत झुर्रियाँ लखनऊकी गद्दीपर अंगरेजोंके दाँतोंके निशान गिन रही थीं। दाँतोंकी दो जड़ें दिखाता हुआ उसका पोपला मुँह दिन-रात खाली हुए अवधके खजानेकी कहानी कह रहा था।

उसे आगके सामने तपाकर, साफ पोशाक पहनाकर और थोड़ा-बहुत खिला-पिलाकर औलिया बेगमके सामने लाया गया। दीवारोंपर लगे कदेआदम शीशों, छत पर जड़े झाड़फानूसों और फ़र्शपर पाँवोंको छिपा देनेवाले कालीनोंके रोओंको फटी आँखोंसे निरखती वह बुढ़िया जब बेगम औलियाके सामने आई, तो छतकी ओर दोनों हाथ उठाकर उसने दुआ माँगी : "या खुदा, तेरी कुदरतमें हेरफेर न हो।"

अपने द्वारा एक ग़रीबके प्राण बच जानेकी खुशीमें बेगम हँसी। "अरी, बुढ़िया, खुदाकी कुदरतमें फेर-बदल न होता, तो तेरी जान कैसे बचती ?"

बुढ़ियाने अपनी धुँधली आँखोंसे बेगमके चेहरेको पढ़नेकी कोशिश करते हुए कहा, "जान बच जाती है, मगर हकीकत नहीं बचती। जब जंगलकी हवा चलती है, तो जमीनके तिनके आसमानपर और आसमानके तिनके जमीनपर आ जाते हैं। ऐसेमें वे ही पेड़ बचते हैं, जो अपनी जड़ें जमा लेते हैं। खुदा तुझे बरकत दे, बेटी, कि तू आनेवाली हवाको सूँघ सके।"

बेगमने कहा, "खुदा हमपर मेहरबान है। तुम्हारी दुआओंके लिए हम तुम्हारा शुक्रिया अदा करते हैं। तुम बहुत अक्लमन्द हो, अपनी उमरका सही आईना हो। तुम्हारे आखिरी वक्त तक हम तुम्हारी गुज़र-बसरके लिए तीन रुपये महीना वजीफा बाँधते हैं। नवाब वज़ीर अली नकी खाँके दफ्तरसे हर महीने वजीफेकी रक़म ले जाया करो। तुम्हारा और भी कोई है ?"

बुढ़ियाने फिर आपनी आँखें बेगमकी तरफ उठाईं, फिर बोली, "वक़्त जिसका है, उसका सब कोई है।"

बेगम प्रसन्नतासे लगभग चिल्ला उठी : "बहुत खूब ! हमारे जी हजूर अब तक हमें बताते थे कि जिसका कोई नहीं उसका खुदा होता है, मगर तुमने हमें बताया कि खुदा भी उसीका होता है, जिसका वक़्त होता है। हम तुम्हें याद रखेंगे।"

बुढियाने सम्मानमें झुककर फरशी कालीनके रोओंको छुआ। वापस लौटते हुए उसने कहा, "जीती रहो, बेटी। जो याद रखता है वह कभी नहीं मिटता। तूने मुझे दरिया पार कराया, खुदा तुझे समन्दर पार कराये।"

"जो याद रखता है वह कभी नहीं मिटता," बेगमने इस सूत्रको बार-बार मन-ही-मन दोहराया। बुढियाके जानेके बाद भी वह बहुत देर तक उसे अपने सामने खडी देखती रही। कुछ देर बाद बहरुन्निसाको पुकार कर बेगमने हुक्म दिया : "इस बुढ़ियाका पता-ठिकाना मालूम कर लो। नवाब वजीरके दफ्तरमें हमारा फरमान पहुँचाओ कि इसके वजीफ़ेकी रक़म हर महीने इसके घर पर पहुँचा करे, इसे कचहरी आनेकी तकलीफ न दी जाय। उमर और अक्ल हमेशा एक साथ नहीं मिलते।"

बहरुन्निसाने आज्ञाके सम्मानमें अपना सिर झुकाया।

दिन गुजर गया और रात आ गई। इस बीच बेगमने कई बार क़ुरान उठाई, मगर न जाने क्यों बार-बार उसके सामने बुढियाकी शक्ल आ खडी होती। 'तूने मुझे दरिया पार कराया, खुदा तुझे समन्दर पार कराये।' कितनी सीधीसाधी दुआ थी ! काश कि बेचारी बेगम बुढियाके इन निर्दोष शब्दोंके पीछेसे अपना वह भविष्य झाँक पाती, जब लगभग दस साल बाद वह मल्का विक्टोरियासे अपने बेटेका तख्त वापस माँगनेके लिए समुद्र पार करके इंग्लैण्ड गई थी।

पहले पहरके खत्म होनेकी तोप छूट चुकी थी। नवाब औलिया बेगमकी नींदको सुखद बनानेके लिए मशहूर अफसानानिगार मिरजा गियासबेग हाजिर थे। लौडियाँ बेगमके पाँव दबाकर जा चुकी थीं। पहरा

बदल गया गया था और हुक्का तैयार करनेवाली लौंडी कश्मीरी खमीरेकी चिलम उस पर रख रही थी।

जबतक नवाब अमजदअली शाह जीवित थे, मिरजा गियासवेगका स्थान उस परदेके पीछे होता था, जो बेगमके पलगसे कुछ दूरपर खिचा रहता था। मिरजा गियासबेग बहुत दिनोंके बाद इस वास्तविकताको समझ पाये थे कि कमरेमे चारों तरफकी दीवारोंपर जो क़दे-आदम आईने लगे है, इन्हींमेसे सामनेके आईनेमे बेगम उनकी सब हरकते देख सकती थी, मगर वह बेगमके पलंगका पायाँ भी नहीं देख सकते थे। जिस दिन उन्होने इस बातको जाना उस दिन उनके सारे बदनमे भयकी एक तेज लहर दौड गई थी। अगर उनकी भावभगिमासे, बेगमको सामने न जानकर, कोई बेअदबी हो जाती, तो उनका सिर धडसे अलग हुआ रखा था।

मगर बेगमके विधवा होनेके बाद स्थिति बदल गई थी। अब मिरजाका स्थान बेगमके सिरहाने लगे हुए एक नीचे आसनपर था, जिसके पीछे गावतकिया लगा रहता था। बेगम अब अधिक निकटतासे उनके साथ बाते कर सकती थी। फिर भी मिरजा साहबके लिए भयका अब अधिक बड़ा कारण था। मिरजा सत्ताधारियोंसे निकटता पसन्द नहीं करते थे।

जब बहरुन्निसाने मिरजा साहबको उनके आसनपर पीछेवाले परदेसे लाकर बैठाया, तो बेगम वहाँ नहीं थी। जब बेगमने ख्वाबगाहमे क़दम रखा, तो मिरजा हडबडाकर उठे और दाये हाथसे कालीन छूनेके लिए झुकते हुए उन्होने कहा "बन्दा कोरनिश बजा लाता है।"

बेगमने कहा, "मिरजा साहब, आपका कलका अफसाना बहुत दिलचस्प रहा। मगर आज हम आपसे अफसाना नहीं, एक और अफसानेके बारेमें बातें करना चाहते है।"

"बन्दा सिर आँखोंसे हाजिर है," मिरजाने कहा।

बेगम पलगपर बैठ गई और उसी समय लौंडी उनके सामने हुक्का

रख गई। बेगमने पेंच होठोंमें दबाकर एक हल्का-सा कश खींचा और खुशबूदार धुएँकी एक हल्की-सी परत हवामें तैर गई। हुक्केकी तैयारी पर बेगमकी मुद्राका बहुत कुछ दारोमदार था। यह हुक्केपर नियत लौंडीका कर्त्तव्य था कि वह पहले ही कश खींच-खींचकर तम्बाकूको चेतन कर दे। इस वक़्तके हुक्केने बेगमको खुश कर दिया। वह बोली :

"आज खुदाने हमारे हाथों एक बुढ़ियाकी जान बचाई। क्या आपने वह किस्सा सुना है?"

"अबतक तो यह किस्सा सारे लखनऊने सुन लिया है, हजूर।"

"बहुत खूब!" बेगमने कहा, "किसीने सच कहा कि कहानी-किस्सोंके पर होते हैं। मगर खास बात यह नहीं कि बुढिया बच गई और वह भी इसलिए कि हमने उसे देख लिया था। खास बात यह है कि बुढ़िया लखनऊ दरबारके दानिशमदोंसे कहीं बढ़-चढ़कर थी।" इसके बाद बेगमने बुढ़ियाके साथ हुए वार्तालापको ज्यों-का-त्यों मिरजा साहबसे कह सुनाया। फिर बोली, "क्या आप बुढियाकी इन बातोंकी व्याख्या किसी अफसानेसे कर सकते हैं, मिरजा साहब?"

मिरजासाहब पाँच सौ रुपये महीना इन्हीं बातोंकी तनख्वाह पाते थे। यही नहीं, वह अपने हुनरमें उस्ताद भी थे। उन्होंने कहा, "हजूर, इन-सान आजतक अगर हारा है, तो वक़्तकी आँखोंकी खूबसूरती बयान करनेमें हारा है। फिर भी एक अफसाना शायद आपकी दिलबस्तगी कर सके।"

इसके बाद मिरजासाहबने कहानी आरम्भ की :

लाखों बरस गुज़र गये, एक बार खुदाके फ़रिश्ते जिब्रायल और शैतान इबलीसमें एक दिलचस्प बहस छिड़ गई। शैतानका कहना था कि अगर इनसानको अँधेरेमें न रखकर, उसे उसका भविष्य बता दिया जाये, तो यह आनेवाली तकलीफोंसे अपना बचाव कर सकता है और सुखी हो सकता है। जिब्रायल कहता था कि होता वही है जो खुदाको मन्जूर होता है। अगर इन्सानको खुदाकी मरजीका पता पहलेसे ही लग जाये,

तो आनेवाले गजबसे डर-डरकर आधा हो जायेगा और इस तरह उससे भी ज्यादा तकलीफ़ भुगतेगा, जितनी तकलीफ़का वह हकदार है। बहुत बहस-मुबाहसेके बाद दोनोंमें यह बात ठहरी कि पहले इसका प्रयोग जानवरोंपर करके देख लिया जाय।

दोनों फ़रिश्ते आसमानसे जमीनपर उतर आये। चलते-चलते वे जंगलमें पहुँचे, जहाँ आसमानपर हजारों गिद्ध और बाज मँडरा रहे थे। जिब्रायलने उन गिद्धोंमेंसे एकसे पूछा कि उन्होंने आसमानपर इतना तूफ़ान क्यों बरपा रखा है क्योंकि जंगलमें कोई भी मुरदा दिखाई नहीं पड़ रहा है। गिद्धने जवाब दिया कि इस जंगलका बादशाह एक शेर पट्ठा है। सबके सब गिद्ध उस शेरको खाना चाहते थे, मगर क्योंकि वह बहुत ताकतवर था, इसलिए जमीनपर उतरते हुए डर रहे थे।

जिब्रायलने कहा, "जब तुम लोगोंको जमीनपर उतरते हुए डर लगता है, तो तुम किस तरह उस बहादुर और जवाँमर्द शेरको खा सकते हो?"

गिद्धने कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि उस शेरकी आँखें नहीं हैं? आँखें न रहनेसे वह दोस्त और दुश्मनकी पहचान नहीं कर सकता। वह उसीकी हालतसे दुखी दोस्तोंको खा जाता है और खुशामदी दुश्मनोंकी मीठी बोलियाँ सुनकर उन्हें अपना दोस्त समझता है। उसके वे ही खुशामदी दोस्त जंगलमें, दूर, उसके लिए एक गड्ढा खोद रहे हैं, जिसमें फँसकर गिर जानेके बाद उसकी वह ताकत उसके कुछ भी काम नहीं आयगी, जिसकी वजहसे अब जङ्गलका बली-से-बली जानवर उसके पास जाता घबराता है। दुश्मनोंकी खुशामदसे भरी शेरोशायरीने उसके कान बहरे कर रखे हैं। वह दिन दूर नहीं, जब हमें उसका गरम-गरम ताजा गोश्त खानेको मिलेगा।"

जिब्रायल और शैतानको यह बात सुनकर बहुत अचम्भा हुआ और वे दोनों जमीनपर उतरकर उस शेरके पास पहुँचे। उसके पास सैकड़ों गीदड़, भेड़िये और हिरन वगैरह जमा थे। अपनी ताकतके घमण्डमें चूर

होकर वह अपने पुट्ठोंको हिलाता हुआ बैठा था। उसकी पीठके पीछे उसकी वफ़ादार और मददगार लोमड़ी भी उदास बैठी थी। रह-रहकर शेर सिर ऊपर उठाकर गुर्रा उठता था, जिससे गीदड़ सहमकर दो-दो क़दम पीछे हट जाते थे।

शैतानने सलाह दी कि अगर इस शेरको इसका भविष्य बता दिया जाय, तो यह अपनी आनेवाली मौतसे बच जायगा। जिब्रायलने भी यही सोचा और दोनों शेरके सामने जा पहुँचे। उन्होंने सारी हकीकत शेरके सामने बयान कर दी और कहा कि अगर वह मौतके फन्देसे बचना चाहता है, तो लोमड़ीकी सलाहपर चले।

मगर शेरने सवाल किया, "अगर तुम सच कहते हो, तो बताओ वह गड्ढा कितनी दूर है, जो मेरे लिए खोदा गया है?"

जिब्रालयने गुस्सा होकर कहा, "न सिर्फ तुम अपनी ही आँखोंसे देख सकते, बल्कि वक़्तकी आँखोंसे भी नहीं देख सकते, इसलिए तुम ही नही, तुम्हारे मददगार भी साथ-ही-साथ उस गड्ढेमे गिरेंगे, जहाँसे सिर्फ मौत ही तुम्हें निकाल सकेगी।"

यह सुनकर शेर बड़े जोरसे दहाड़ा और जिब्रायल व शैतान इबलीस हवाकी शक्लमें बदलकर अपने रास्ते लगे। इबलीस इस इम्तहानसे खुश था। उसे पक्का यक़ीन था कि शेर अपनी उमर पूरी करके ही मरेगा।

कुछ दिनो बाद इबलीसने जिब्रायलसे कहा, "आओ देखकर तो आयें हमारे दोस्त कि शेर और लोमड़ीपर अपने भविष्यकी जानकारीका कैसा असर पड़ा।"

दोनो फरिश्ते फिर धरती पर आये, तो देखा कि बाज़ और गिद्ध अभीतक आसमानपर मँडरा रहे हैं, गीदड़ोंकी जमात ज्यों-की-त्यों जमा है। फ़रक सिर्फ इतना है कि जिस गड्ढेका खतरा शेरको दिखाया गया था वह उसके काफी नज़दीक आ चुका था। एक फरक यह भी था कि लोमडीके बदनकी हड्डी-हड्डी चमक रही थी।

जिब्रायलने शैतानसे कहा, "देखा तुमने ? जो बेवकूफ होते हैं उन्हें उनका भविष्य बतानेवाले भी बेवकूफ बनते हैं, और जो अक्लमन्द होते हैं, वे भविष्यको वक्तसे पहले जानकर इस लोमडीकी तरह दुबले हो जाते हैं। मगर फिर भी क्योंकि वे बेवकूफोंके साथ बँधे हुए होते हैं, इसलिए खुदा भी उनका साथ छोड देता है। जो समयकी आँखोसे देखता है वही इन्सान दीदेवाला है, अलावा इसके सब अन्धे है।"

लेकिन शैतानको यक़ीन न आया। कुछ दिनों बाद वह जिब्रायलको बताये बिना खुद उस जगलमे शेरकी खैरियत जाननेके लिए आया। मगर देखता क्या है कि शेरकी हड्डिया ही बाक़ी रह गई हैं और माँस चील और कौवे नोचकर खा गये है। बेचारी लोमडीका भी यही हाल था। यह देखकर शैतान अपना मुँह छिपाकर वहाँसे भाग गया।

मिरजा गियासबेगके मुँहसे यह जानवरोंकी कहानी सुनकर बेगम औलिया बहुत हँसी। शैतानको मुँहकी खानी पडी यही उनकी प्रसन्नताका सबसे बडा कारण था। उन्होने कहा, "मिरजा साहब, क्या यह कहानी सच है?"

मिरजा साहबने सिर झुकाकर कहा, "मल्काए आलम, कहानियाँ कभी सच नहीं होतीं, फिर भी कहानियोसे बड़ा सच कोई नहीं होता। खुदा कभी यह नहीं चाहता कि इन्सानको उसका भविष्य पता चल जाये। भविष्यमे क्या हो सकता है इसका ज्ञान ही मनुष्यके लिए सबसे बडी चीज है।"

"बहुत खूब!" बेगम औलिया खुश होकर बोली, "मिरजा साहब, हमे आपका यह अफसाना बहुत पसन्द आया। इसका एक-एक लफ्ज एक-एक सोनेकी मोहरके लायक है।"

मगर मिरजा साहबका मतलब केवल यही नहीं था कि बेगम इस अफसानेको मोहरोंसे तोले। वह इसके बहाने कुछ और जताना चाहते थे। वह कुछ और क्या था यह आँखोंमे उँगली गडाकर बेगमको

सुझाया नहीं जा सकता था। उन्होंने कहा, "हजूर, अक्लमन्दोको इशारा काफी होता है।"

"नही, नही," बेगमने कहा, "मिरजा साहब, हम इशारा ही नहीं देंगे, सचमुच एक लफ्जके लिए एक-एक मोहर अता फरमायेंगे।" साथ ही साथ उन्होंने हुक्म तामील करानेके लिए लौंडीको पुकारा: "बहरुन्निसा!"

मिरजा साहबने होंठ काट लिये। शासकोकी आँखोमें उँगली गडा कर उन्हे सही मार्ग सुझानेका कर्त्तव्य समयके साहित्यकारोका होता है। मिरजा साहब उसके लिए आज कमर कसकर आये थे, उन्होंने एक कदम और आगे रखा: "हजूर, आमोद-प्रमोद, नाच-रग, हीरो-पन्नोकी चमकमें फँसकर सच भी झुठला जाता है। मेरी कहानीका एक-एक पात्र आजके लखनऊमे मौजूद है।"

"माशाअल्लाह!" बेगम खुशीसे चिल्लाकर बोली, "उस चिडियाघरको हम ज़रूर देखेंगे और जब हम देख लेंगे, तो आपको इनामीइकरामसे लाद देंगे।"

मिरजा साहबके होठोंमे खून निकल आया। वह अन्तिम पग रखनेके लिए खुदाको याद करते हुए बोले, "हजूर, क्या यह कल्पना नहीं की जा सकती कि जहाँपनाह, ग़रीबपरवर, वाजिदअली शाह बहादुर इस कहानी.... ."

"जरूर पसन्द करेंगे, मिरजा साहब", बेगमने कहा। "लखनऊमें कौन ऐसा है, जो आपका लोहा न मानता हो?"

इतनेमे बहरुन्निसा आ गई। बेगमने हुक्म दिया, "मिरज़ा साहबको जाते वक्त दो हजार मोहरे अदा की जाये।"

"जो हुक्म," कहकर बहरुन्निसा फिर ख्वाबगाहसे बाहर हो गई।

मिरजा साहबने जीवनका मोह छोड़ दिया। सीधे तनकर उन्होंने

कहा, "हजूर, आप दानिशमन्दोकी सरताज है। बहने वाली बुढिया जो न बता सकी, यह बन्दा जो न बता सका, वह गुलामकी यह कहानी बता रही है। गुलाम अर्ज करना चाहता था कि हजूर बेगम जरा कल्पनासे काम ले। लखनऊका हर बाशिन्दा समझता है कि गुलामकी इस कहानी का शेर खुद जहाँपनाह वाजिदअलीशाह बहादुर हैं।"

सुनते ही बेगम औलियाकी भवें तन गई। विजलीकी तरह पलगसे उठकर वह चिल्लाई, "क्या कहा! तो यह अफसाना इस तरह सुनाया जा रहा था . तुम . तुम एक हकीर गुलाम और तुम्हारी यह हिम्मत . ! बहरुन्निसा!"

बहरुन्निसा आवेशका यह स्वर सुनकर जहाँ थी वहींसे दौड़ पडी। "हजूर, लौंडी हाजिर है।"

बेगमने दहाडकर कहा, "मिरजाको इसी वक्त लोहेके पिंजरेमे बन्द करवा दिया जाय। कल तीसरे पहरसे भीगी हुई बेत इनकी पीठपर उस वक्त तक लगती रहें, जब तक इनका दम निकलकर हवामें उड न जाय।"

"जो हुक्म, "बहरुन्निसा इस आज्ञाका सही कारण न समझकर बोली। "लौंडी यह फरमान हू-ब-हू बजा लायेगी।"

बहरुन्निसाने इशारा किया और मिरजा साहब बेगमके फडकते हुए शरीरके सम्मानमे जमीन छू कर वहाँसे लोंडीके पीछे-पीछे चले गये। उन्होने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया था।

लम्बी गैलरीसे बाहर निकलते-निकलते बहरुन्निसाने बहुत संक्षेपमें मिरजा साहबके मुँहसे सारा माजरा सुना। सुनते-सुनते उसका दिल काँप गया। उसने आश्चर्यसे मिरजाके दुबले-पतले शरीरको देखा। क्या इस कमजोर-सी शक्लके इन्सानमे इतनी हिम्मत हो सकती है?

नवाब नसीरुद्दीनके जमानेमें, हँसी-हँसीमें ताजमें छेद निकाल देनेपर राजा ग़ालिब जंगको जिस लोहेके पिंजरेमे बन्द कर दिया गया था,

चार पहियोंपर चलने वाला वह पिंजरा अब तक सुरक्षित रखा था। आज वही मिरजा गियासबेगका निवास-स्थान बना, बहरुन्निसाने अपने हाथों पिंजरेका भारी ताला बन्द करके जाड़ेमें ठिठुरते हुए मिरजासे कहा :

"क्या आप मेरी मजबूरीको समझकर मुझे माफ़ कर देंगे, मिरजा जी?" इस अप्रिय कामको सम्पन्न करनेका जो दुःख बहरुन्निसाको हुआ था, उसके कारण आई आँखोंकी नमीको उसने दुपट्टेसे पोंछा।

मिरजाने कहा, "खुदा तुम्हें खुश रखे। मैंने अपना फर्ज निभाया है। मुझे किसीसे गिलाशिकवा नहीं है।"

मगर बहरुन्निसाका सौजन्य केवल दिखावेका नहीं था। वह तीन पहर रात तक औलिया बेगमकी सेवामें रत रही, और जब औलिया बेगम सो गई, तो उसका दिमाग तेज़ीसे काम करने लगा। किस प्रकार मिरजाकी जान बचे, सुबह तक वह यही सोचती रही। खुद नवाब वाजिदअली शाहको औलिया बेगमके घरेलू साम्राज्यमें दखल देनेकी हिम्मत नही थी।

सुबहकी किरण जमीन पर पड़ते ही बहरुन्निसाने एक बहुत कमज़ोर धागेका सहारा पकड़ा। उसने दो समझदार संदेशवाहकोंको तैयार किया और धूप फैलते ही वे बहनेवाली बुढ़ियाके गाँवमें जा पहुँचे। उसकी झोंपडीपर जाकर उन्होंने उसे पुकारा।

बुढ़ियाने झोपड़ीसे बाहर निकलकर धुँधली नजरोंसे आनेवालोंको देखा। उसकी गरदन बराबर हिलती रही, जैसे वह मूर्त्तिमान संसारके अस्तित्वसे बराबर इनकार कर रही हो। एक संदेशवाहकने कहा, "ओ खुदाकी बन्दी, तेरी वजहसे लखनऊका एक शरीफजादा मौतके जबड़ोंमें जा गिरा है। चल, नहीं तो तू खुदाके सामने जवाबदेह होगी।"

"मै कुरबान जाऊँ," बुढ़ियाने कहा। "ज़रा खोलकर बता रे, क्या माजरा है?"

बहरुन्निसाने जो कुछ कहा था वह ज्यों-का-त्यों दोहराते हुए संदेश-

वाहकने कहा, "तेरे असूलकी व्याख्या करता हुआ वह शरीफ इन्सान मौतके फनपर हाथ रख बैठा है। दानिशमन्द बहरुन्निसाने कहा है कि उसे अगर कोई बचा सकता है, तो वह सिर्फ बहने वाली बुढिया है।"

"मैं सदके जाऊँ," बुढिया फिर बडबडाई। "चल, मैं तेरे साथ चलती हूँ।"

जिस समय सदेशवाहक बुढियाको साथ लिये लखनऊ पहुँचे, दूसरे पहरकी तोप छूट चुकी थी। यह नवाब औलिया बेगमके उठनेका वक्त था। मिरजाकी कमरको चूमनेके लिए बेंतें नॉदमे भीग रही थीं। शाही भगियोंको सूचना दे दी गई थी और वे आकर स्वय बेंतोका इन्तजाम देख गये थे। अब सिर्फ नवाब औलिया बेगमके अटारीपर आनेकी देर थी। दूरतक फैले हुए अहातेमें हरी घास और फूलोंका बाग था और बीचोबीच मिरजा गियासबेगका अभागा पिञ्जरा था।

बुढिया महलके दरवाजेपर उस समय पहुँची, जब औलिया बेगम अटारीपर आ चुकी थी। चोबदारने बेगमके सामने आकर अर्ज की : "हजूर, बहनेवाली बुढिया सरकारको देखना चाहती है।"

बहनेवाली बुढियाके नामसे उस विशेष बुढियाका बोध होता था, जिसे न केवल औलिया बेगम, बल्कि सारा लखनऊ पहचानता था। बेगमको आश्चर्य हुआ। मिरजाको पिञ्जरेसे बाहर निकाला जा रहा था कि बेगमने इशारा किया और यह काम रोक दिया गया। दरवाज़ेपर बुढ़ियाकी कमज़ोर, गडगड हिलती हुई, जीर्ण-शीर्ण आकृति दिखाई दी। अपनी धुँधली नजरोंसे इधर-उधर देखती हुई बुढिया धीरे-धीरे औलिया बेगमके सामने आई। उसके साथ आये चोबदारने कहा, "ऊपर देख, हजूर सरकार ऊपर अटारीपर है।"

बुढियाने मिचमिचाई आँखोंसे ऊपरकी तरफ देखा। फिर वह कुछ देख न पाकर अनुमानसे ही बोली, "बेटी, मैंने सुना है कि तू अपनी हकूमतमें जिन्दा लोगोंको शेर-चितोंकी तरह लोहेके पिञ्जरोंमें बन्द करा देती

है ! मैंने सुना है कि उन बदकिस्मतोंकी पीठपर इतनी बेतें लगती है कि वे मर जाते है ! क्या यह सब लखनऊमे होता है ?"

औलिया बेगमके चेहरेपर एक रंग आ रहा था और एक जा रहा था। उसकी सत्ताको प्रश्नसूचक दृष्टिसे देखनेवाली, इस पेडकी पत्तीकी तरह कॉपती हुई बुढियाकी क्या हैसियत थी ? मगर उस हैसियतके सामने भी औलिया बेगम एक बेबस बच्चेकी तरह चुप थी।

बुढियाने आगे कहा, "जवाब नही देती ! वे कितने बडे पागल है, जो अक्लकी बातको फनकी शक्करमे लपेटकर तेरे सामने रखते है ! यह नई हकूमत है, जो फनकारोसे चिढती है। मिरजाने जो कहानी सुनाई थी क्या वह झूठ है ? बाज और गिद्धोकी तरह वह फिरंगी लखनऊके शेरपर मॅडरा रहा है, क्या यह भी झूठ है ? लखनऊकी हर अक्लमन्द शख्सियत मददगार लोमडीकी तरह सूख-सूखकर कॉटा हो रही है, क्या यह झूठ है ? दोस्तीकी खाल पहने हुए गीदड खुशामद और नाच-रंगकी महफिल जमाये अन्ने वाजिदअली शाहको बहरा बनाकर रखे हुए है, क्या यह झूठ है ? अगर यह झूठ नहीं है, तो ऐ मेरी मल्का, मिरजाकी कहानी भी झूठ नहीं है। उसने इस वक्तका सबसे बडा सच बयान किया है। जो सच कहनेपर सजा देता है वह खुदाके गुस्सेका शिकार होता है। बोल, जिस इज्ज़तको तू घोल-घोलकर पी रही है, जिस इज्जतपर हरफ आते देखकर तूने गरीब मिरजाको पीटते-पीटते मार डालनेका इरादा किया है, क्या उसी का खयाल करके तू इस बुढियाको भी सजा दे सकती है ?"

बेगम औलिया भीतर-ही-भीतर खूनका घूॅट पी रही थी। इतने स्पष्ट शब्दोमे किसीने आजतक दिल्ली खानदानकी शहजादीकी आँखोमें तकुए नहीं दिये थे। उसका शाही खून उबल रहा था। मगर जबान सहसा उबल पडनेके लिए अभीतक चुप थी।

बुढियाने कहा, "अगर तू चुप है तो तू उमरसे डरती है। मेरी उमर सौ सालकी है। मुझे क्या मासूम था कि एक मल्का भी सौ सालकी उमरसे डर

सकती है। मगर इस सचको आँख खोलकर देख कि आनेवाले सौ साल है, जो तेरी जैसी सैकडो बेगमोको दुनियाके तख्तेसे उठा देगे, जिसमें लखनऊ ही नहीं, सारी हिन्दुस्तानी जमीन खूनके घूँट पियेगी। अगर तू इस सचको नहीं पहचान सकती, जो जाहिर है कि खुदा इसके लिए कुरबानी चाहता है। ले, मै आनेवाले सौ सालोके लिए बीते हुए सौ सालोकी कुरबानी देती हूँ. " और इससे पहले कि बेगम कुछ बोल सके, बुढियाने सामने उठे हुए चबूतरेके पत्थरपर अपना सिर एकके बाद एक कई बार दे मारा।

खूनका तुर्रा छूट पड़ा और अटारीपर बेगम आवेशमे चिल्लाई, "रोको, कोई इसे रोको! या खुदा, क्या अजाब आनेवाला है।"

मगर चोबदारके घबराकर आगे बढनेसे पहले ही बुढियाका खूनसे भरा हुआ मुँह आखिरी बार पत्थरसे टकराया और वह जमीनपर लुढक पडी। उसका साँस तेजीसे चल रहा था। बेगम औलिया, जितनी तेजीसे हो सका, ज़ीनेसे उतरकर नीचे आई। साथमें बीसियो लौंडिया और खोजे थे। आते ही उसने बुढियाका सिर अपने हाथोमें ले लिया। बुढियाने आँखे फाडकर एक बार उसके मुँहकी तरफ देखा और उसने धीरेसे कहा, "सौ साल।" और इसके बाद मिरजाकी रिहाईपर अपनी कुरबानीकी मोहर लगाती हुई बुढिया इस ससारसे बिदा हो गई।

हमसे कोई कहे कि हम भविष्यवाणियो, भाग्य अथवा चमत्कारोपर विश्वास करते है। हम कहेंगे, नही। मगर यह कितनी विचित्र बात थी कि आनेवाले सौ सालके लिए बीते हुए सौ सालकी कुरबानी देनेवाली बुढिया की शहादतका वह दिन था : पन्द्रह अगस्त, सन् अठारह सौ सैतालीस!

• पीरके दीये

लखनऊकी कहानी है। १८५७ से कुछ ही पहलेकी बात है।

इस्लामके प्रवर्त्तक मुहम्मद साहबके पाँवके निशानके सामने सिजदा-करके, कदम रसूलकी इमारत से, सुबहको उगते हुए सूरजकी किरणोंको होंठोंसे चूमते हुए, लखनऊके दो शायर बाहर आये। एक थे हजरत 'असीर' और दूसरे थे हजरत 'कल्क'। पहले साहबने नवाब वाजिद-अली शाहके दरबारमे तदबीरुद्दौला मुदब्बिरुलमुल्क-जैसा लम्बा-चौडा खिताब पाया था, तो दूसरे हजरत आफ़ताबुद्दौला बन चुके थे।

बाहर निकलते ही एक फकीरपर नजर पडी। ठीक दरवाज़ेपर खडा था। हाथमें कासा था और उसमें कुछ टके थे, जिन्हें वह बार-बार कासेको उछालकर बजा देता था। साथ-ही-साथ कहता जाता था: "ले... ले...ले...!"

हजरत 'कल्क' दूरसे ही ठिठके। अपने साथवाले सज्जनसे बोले, "अमाँ, हजरत, यह क्या दिल्लगी है!"

हजरत 'असीर' को भी यह बात अद्‌भुत लगी। बोले, "हमारा ख्याल है कि यह अपने कासेमें से कुछ ले लेनेकी दावत दे रहा है।"

कल्क साहबने जरा उचककर फकीरके कासेकी गहराईमे देखा। उसमें सिर्फ कुछ टके ही नजर आये। नगा क्या नहायेगा, क्या निचोडेगा! सिर खुजाने लगे। असीर साहबने आगे बढ़नेके लिए उनकी पीठपर हाथ रखा। फकीर निष्पक्ष भावसे बराबर "ले...ले..." की सदा लगा रहा था। दोनों शायर उसके सामनेसे होकर आगे निकल गये। जब सडक पर पहुँच गये, तो हजरत असीर ठिठककर जहाँ-के-तहाँ खड़े हो गये।

"क्यो, हजरत, अब क्या ख्याल आया ?" कल्क साहबने पूछा।

"सब समझमें आ गया," असीर साहब बोले। "यह आदमी शायर मालूम होता है।"

"कैसे ?"

"शायरीकी कला क्या है : पहले दस सीढियोकी बात सोच ले, पॉंच-तक छोड दे, छठीसे चढना शुरू करे और जब दस तक पहुँचे, तो "वाह वाह", "क्या कहने हैं", "मुकर्रर"—बस चारो तरफ से यही सुननेको मिलता है। जब आप गजल कहने लगते हैं, तो मामूली आदमी सोच भी नहीं पाता कि आप कहॉं डुबकी लगाने वाले हैं। क्या आपने समझनेकी तकलीफ गवारा की ?"

"मगर इससे इस फकीरके शायर होनेसे क्या ताल्लुक है ?" हजरत कल्कने फिर अपना सिर खुजाया।

"बहुत गहरा ताल्लुक है," असीर साहबने कहा। "इसकी 'ले' से यह मतलब नहीं निकलता कि आप इसके कासेमेंसे कुछ टके लेकर आरामसे चुटकी बजाते हुए निकल जायें। इसका मतलब है कि आप इसके कासेमें कुछ टके डालें। अल्लाह आपकी दानवीरताको देखेगा और क़यामतके रोज इससे हजारों-लाखों गुना आपको देगा। आप अगर इस फकीरको कुछ देंगे, तो वास्तवमें आप देंगे नहीं, बल्कि लेंगे। अब आया आपकी अक्ल-शरीफमें ?"

हजरत कल्क सिर खुजाना भूल गये। जहॉं-की-तहॉं जडकी तरह खड़े हो गये और ऑंखे फाडकर असीर साहबका मुँह देखने लगे।

"क्यों ?" असीरने कहा, 'लाम' और 'ये' इन दो अक्षरोंको मिला कर जो आदमी इतनी बडी बँधी हुई बात कह जाये क्या उसे शायर नहीं कहा जायेगा ?...कहिए।"

कल्क साहब कुछ देर तक तो सोचते-विचारते-से खडे रहे। फिर उल्टे पैरों क़दम रसूलके फाटककी तरफ दौड़े। फकीरके पास पहुँचकर

उन्होने इस बीच जेबसे निकाला हुआ एक चेहरेशाही सिक्का उसके कासेमें डाला, और चैनकी साँस लेते हुए वापस लौटकर आये। आते ही बोले : "क्या आपका खयाल है कि मैने कयामतके रोजके लिए तदबीर की है?"

"जी नहीं, जनाब," असीर साहब आगे कदम बढाते हुए बोले, "मै जानता हूँ कि आपने शायरीके फनकी कद्र की है। आइये, चले।"

"चलिये, मुझे जरा चौकसे हुजूर आलीजाहके लिए कोई उम्दा-सा तोहफा लेना है," कल्क साहब असीर साहबके साथ आगे कदम बढाते हुए बोले—खुदा खैर करे, आज देखते ही खफा होंगे। आप जानते ही है कि नाटक लिखना कोई हँसी-खेल नहीं है, मगर हुजूर हैं कि हमेशा दूरकी कौडी लानेका हुक्म देते है। माशाअल्लाह! जरासा ऐब नजर आया कि सारा कलाम चाक कर देते है।"

असीर साहब हँसे। बोले, "आपको इस बूढे फकीरसे कोई प्रेरणा नहीं मिली? मैने तो समझा था कि आप वाकई उससे कुछ लेकर आये है।'

"मुझे प्रेरणा इतनी आसानीसे नही मिलती, हजरत," कल्क साहबने माथा ठोंककर कहा, "नहीं तो बदा कभीका हुजूर आलीजाहका शागिर्द न रहकर उस्ताद हो गया होता।"

इसी तरहसे बातें कहते हुए दोनो शायर चौकमे पहुँच गये। बीच चौकमे पहुँचकर कल्क साहब ठिठके और बोले "अमॉ, हज़रत, जो तो चाहता है कि इस जगहकी सारी कीमती चीजे हुजूरके लिए ले चलूँ, मगर मुझे कुछ ऐसा मालूम पडने लगा है कि जेब और रोजसे हल्की है," और उन्होंने यह कहकर तुरन्त अपनी दूसरी जेबपर इस तरह हाथ डाला, जैसे मच्छर मार रहे हो। इसके साथ-ही-साथ उनके मुँह पर आश्चर्य और दीनताके भाव दिखाई पडने लगे। असीर साहबकी तरफ देखकर बोले, "अमाँ, हजरत, मालूम होता है कि बीवी नेकबख्तने आज जेबसे बटुआ तीर कर लिया है"

असीर साहबने उनके साथ हमदर्दी जाहिर की, अपनी असमर्थता भी लगे हाथों प्रकट कर दी और दोनो सज्जन चौकके बीचोंबीच खड़े-खड़े यह सोचने लगे कि खाली हाथो किस तरह नवाब वाजिदअली शाहके सामने जाया जाये ।

ध्यान एक जगह लग जानेसे बाजारका कोलाहल कुछ मद्धिम पडा और एक हल्कीसी आवाज दोनों शायरोंके कानोमें कुछ अधिक स्पष्ट हो कर आने लगी: "हाय, गिजा ला ! हाय, गिजा ला !"

"क्या मतलब ?" कल्क साहब चौके ।

"किस चीजका मतलब आप पूछ रहे है ?"

"यह 'हाय, गिजा ला' का क्या मतलब है ?"

"मालूम होता है यह कोई दूसरा फकीर शायर है," असीर साहबने उस निरन्तर आती हुई आवाजपर ध्यान देते हुए कहा । "इस अजीब तरीकेसे यह राहसे गुजरने वालोंसे खाना मॉग रहा है । मगर आपके पास तो जो कुछ था वह आप उस फकीरको दे आये । बटुआ नेकबख्तने निकाल लिया । अब क्या कीजिएगा ?"

"अमॉ, हजरत, आइए, देखें तो सही । फकीरोंकी दुआसे दिलकी मुराद पूरी होती है ।"

दोनों सज्जन चौकके किनारे घुटनोंके बल बैठे एक बूढे फकीरके पास पहुँचे, जिसके केश और दाढी सनकी तरह सफेद हो गये थे, मुँहपर अनगिनत झुरियां थीं, दोनों हाथ आस्मानकी ओर उठे हुए थे । आखे एकटक स्वर्गकी ओर देख रही थीं—और वह पुकार रहा था : "हाय, गिजा ला ! हाय, गिजा ला !" आखोंसे मवाद मिले हुए ऑसू बह रहे थे, मुँहपरके समस्त चिह्न घोर करुणाको प्रदर्शित कर रहे थे, शरीरकी हड्डी-हड्डी दिखाई दे रही थी ।

असीर साहब धीरेसे बोले, "रोटी मॉगनेका यह नया तरीका है ।"

"मगर कल्क साहब तो अपनी प्रेरणाको ढूँढ रहे थे। नवाबके दरबारमें उपस्थित होनेके लिए उनके पास कोई तोहफा खरीदनेका साधन नहीं था। असीर साहब तो झटसे एक कसीदा पढ़ देंगे, और छुट्टी पा जायेंगे। मगर कल्क साहब तो नवाब साहबको अपना उस्ताद बना चुके थे। उस्तादके सामने खाली हाथ क्या मुँह लेकर जायें! अगर असीर साहबकी तरह वह भी कोई कसीदा तैयार कर लेते, तो भी खैर थी। मगर कसीदा और नाटक, नाटक और कसीदा, इन दोनोंके चक्करमें वह सारी रात जागकर भी कुछ नहीं बना पाये थे। वह सिरको नीचा किये, कूल्होंपर हाथ रखे, टकटकी लगाकर उस बूढेकी ओर देख रहे थे, जो 'हाय, ग़िजा ला! हाय, गिजा ला!' की रट लगा रहा था।

असीर साहबने अवसरका लाभ उठाकर एक शेरकी बन्दिश बाँधी ही थी कि कल्क साहब सहसा अपनी सारी मुद्रा बदलकर उछल पड़े। उन्होंने कहा, "अमाँ, हजरत, क्या बात पैदा हुई है!"

शायर साहबकी बंदिश हवा हो गई। भौंह सिकोडकर बोले, "क्या बात है, जो जनाबने पैदा की है?"

"अब दरबारमें ही चलकर बयान करूँगा, आइये," कहकर कल्क साहब उस बूढेको सलाम झुकाकर तुरन्त उल्टे पैरों, जल्दी-जल्दी कदम रखते हुए लपके। असीर साहब भी ज़रा तेज हो लिये। वह पालकीमें जाना चाहते थे, मगर कल्क साहबने उनकी एक न सुनी। इस वक्त उनका दिमाग़ आसमानपर था और पाँव जमीनसे दो बित्ते ऊपर उठे हुए। कई बार असीर साहबने उन्हें टोकनेकी कोशिश की, मगर उन्हें तो प्रेरणा आ रही थी।

गोमतीके किनारे मोतीमहलकी धवल इमारतें सफेद बत्तखोंकी भाँति नजर आ रही थीं। यहीं पर नवाब हुजूरने नाच-गानेका कार्यक्रम निश्चित किया था। उन्हीं इमारतोंमें से एकमें इन दोनोंने प्रवेश किया और वहाँ पहलेसे ही उपस्थित शायरों तथा भाँडोंने इनका स्वागत किया। एक

साहबने कल्क साहबकी ओर सकेत करते हुए कहा, "क्या बात है, अज्ज़ कुछ दुश्मनोंकी तबीयत गमगीन नजर आती है!"

कल्क साहबने उनकी सूरतको देखा, खूब ध्यानसे देखा। जब देखते-देखते इनकी आँखे फटने लगीं, तो वह सज्जन घबराये और बोले, "यह क्या मामला है, हजरत?"

कल्क साहबने जरा आँखें झपकीं और उनकी ओर देखते हुए आगे बढ़े। प्रश्नकर्त्ता महोदय अपनी जगह जड होकर रह गये। कल्क साहब सबके देखते-ही-देखते सहसा उनके गलेसे लिपट गये और फूट-फूट कर रोने लगे। उनके रोनेकी आवाज बारादरीमे दूर तक सुनाई देने लगी।

सभी लोग सहसा ही इस रुदनके स्वरको सुनकर भौचक्के हो गये। चारों ओरसे गुलामों, खोजाओ, शायरों, भाँडोंकी भीड़ उनकी चारों ओर इकट्ठी हो गई। "क्या बात है? क्या मामला है?" की आवाजें हर तरफ से आने लगीं। "यह कल्क साहबको हो क्या गया है?"

मगर हजरत कल्क थे कि रोये जा रहे थे। चेहरा आँसुओंसे भीग गया था।

एक दूसरे साहबने असीर साहबसे पूछा, "आप तो इनके साथ-ही साथ आये है। कहीं रास्तेमें आते-आते जरब तो नहीं खा गये?"

असीर साहब अब तक चुपचाप खड़े थे। बोले, "कुछ नहीं, आप लोग फिकर न करे। कल्क साहबको ख्याल आ रहा है?"

लोगोंने पूछा, "किसका ख्याल आ रहा है? क्या ख्याल आ रहा है?"

असीर साहबने बताया कि यह ख्याल शायराना है, और किसी क़िस्म का ख्याल नहीं है, कल्क साहब इस ख्यालकी बदौलत एक महान् कृति की रचना करनेवाले है।

सुनते ही शायरोके समाजमें अब एक दूसरी ही तरहकी हलचल मच गई। कल्क साहब नवाब वाजिदअली शाहके लाड़ले शायर थे। आजतक

उन्हें जितने भी ख्याल आये थे, नवाब साहब उनपर बल्लियों उछला करते थे। मगर इतना गहरा ख्याल उन्हें कभी नहीं आया था कि जार-जार रो पड़े हों। अगर वाकई यह बात है, तो आज वह जरूर कोई दीवान फरमाने वाले है।

कुछ देरमे कल्क साहब चुप हो गये। वह अपने शुभचिन्तकोसे अलग होकर एक कोनेमें जा बैठे और दोपहर तक वहीं बैठे रहे। किसीने उन्हें छेड़नेकी जुर्रत नही की। यहाँतक कि लोग उनके ख्यालमे अपने-अपने ख्याल भूल गये। शेरोकी बंदिशे जुडते-जुडते रह गईं।

ज्यो ही नवाब साहबके सोकर उठनेकी खबर आई, उनके पास कल्क साहबके अजीबोगरीब ख्यालका समाचार पहुँचाया गया। तुरन्त नवाब साहब गुलाबजलसे मुँह धोकर दीवानखानेमे पधारे, शायरो और भाँडोने उन्हें घेर लिया।

"कहाँ है कल्क साहब?" नवाबने पूछा।

अभी किसीने कोई जवाब भी नहीं दिया था कि नवाबने देखा दो खोजा कल्क साहबको दोनो ओरसे थामे इस तरह लिये चले आ रहे हैं, जैसे किसी दुल्हनको फेरोके वक्त ले जाया जा रहा हो। उनके चेहरेपर हवाइयाँ उड़ रही थीं, बाल अस्तव्यस्त हो गये थे, मुँहपर अजीब करुणाका भाव था और आँखे एक ही अन्दाजसे अपने उस्तादको घूर रही थीं।

नवाब साहब दिक्कतके साथ मसनदपर हाथ टेककर खड़े हुए और बोले, "यह आपका क्या हाल हो गया है, कल्क साहब?"

कल्क साहब नवाब साहबकी दोनो बगलोंमे हाथ देकर फिर सहसा ही फूट-फूटकर रो दिये। नवाब साहबका हाथ उनकी पीठपर फिरने लगा। बोले, "घबराइये नहीं, किसीने अगर आपकी तरफ आँखे उठाकर देखा होगा, तो आँखें निकलवा ली जायँगी उस कम्बख्तकी।"

कल्क साहबका रोना और तेज हुआ। नवाबके दमदिलासेमे तेजी

आई और शायर लोग अपने कसीदे पढ़ना भूल गये। तरह-तरह की चीमींगोइयाँ चारों तरफसे सुनाई देने लगीं।

आखिर जब उनका रोना थमा और वह कुछ बोलने लायक हुए, तो ये शब्द उनकी जबानसे प्रकट हुए: "आज वियोगमें मेरा तन-बदन जला जा रहा है, हुजूर। मेरे जिगर में आग लग गई है।"

शायरोंके चेहरे खिल गये। कुछके मुँहपर मुसकराहट आई। असीर साहब उत्सुकतासे आगे सुननेके लिए बेचैन हो गये। मगर नवाब साहब कल्क साहबके दुःखसे दुःखी बने जैसे-के-तैसे बने रहे। "आह! आपकी तकलीफ नहीं देखी जाती, कल्क साहब! कौन है वह नेकबख्त, जो आपका जिगर जला रही है। परिस्तानमें भी होगी, तो हम बुला भेजेंगे।"

"वह परिस्तानकी रानी है, आलीजाह। उसका नाम है गिज़ाला। आप तो जानते ही हैं, गरीबपरवर, गिजालाके माने हैं हिरनौटा, हिरनका छोटा बच्चा, बस, हुजूर, जैसा नाम है उससे बेश ही है, कम नहीं है।"

नवाब वाजिदअली शाहने दिलपर हाथ रखकर उसे मसोसा। असीर साहब आँखें फाड़े कल्क साहबकी पीठ देखते रह गये। क्या बात खोदकर लाया है कम्बख्त! क्या अजीब तरीक़ेसे पेश की है! उन्हें अफसोस हुआ कि उन्हें क्यों न यह बात सूझी।

"तो कोई गम नहीं," नवाब साहबने फरमाया। "हम परिस्तानकी रानी गिजालाको यहीं पर खींच लायेंगे, चाहे हमें इनके लिए खुद तकलीफ करनी पड़े। आपको इतना रंजीदा होनेकी क्या जरूरत है?"

"मैं अपने लिए नहीं रो रहा हूँ, हुजूर, मेरा जिगर आपके लिए जल रहा है। आलीजाह, गिज़ाला इस दुनियामें सिर्फ आपके लिए है, आप ही उसे अपनी बगलमें पनाह दे सकते हैं। हाय, अगर वह परिस्तानमें रही होती, तो कोई गम नहीं था। मगर उसे तो "हजार दास्तान"का जिन्न

उठा ले गया है। मुझे डर है, हुजूर, कि कहीं मेरी तरह आपका दिल भी ज्वालाओंसे भडक न उठे।"

"ओह! ओह!" नवाब वाजिदअली शाहके ऊपर अभीसे वियोगका प्रभाव नजर आने लगा। "पूरी बात बताइये, कल्क साहब। आपने तो अभीसे जख्म लगाने शुरू कर दिये हैं।"

"क्या बताऊँ, हुजूर, बताया नहीं जाता।" कल्क साहब अपने मुँहको हाथोंमें छिपाते हुए बोले, "गुलाम अपनी आँखोंसे सारा भविष्य देख रहा है। तैयार हो जाइये, हुजूर, उस आगके लिए तैयार हो जाइये, जो अभी तक नहीं लगी, मगर अब सुलगने ही वाली है। मैं देख रहा हूँ कि आप जन्नतकी तरह सजे हुए एक महलमें, खूबसूरत गिजालाकी बग़ल में आराम फरमा रहे हैं। रातके वक्त आप पानी—मेरा मतलब रगीन पानीसे है,—लेनेके लिए उठते है, और काले-काले भयंकर जिन्न ग़िजालाको पलंग समेत उठाकर ले जाते हैं...और आप जब वापस आते हैं, तो आपके गमका कोई ठिकाना नहीं रहता। आपके तनमनमे आग जल उठती है। आप चिल्लाकर हर किसीसे पूछते है: "हाय, गिजाला! हाय, ग़िजाला!" मगर गिजालाका पता किसीको हो तो बताये।"

"या खुदा!" नवाबकी आँखे ऊपरको चढ़ गईं। लटकते हुए गाल खिन्च गये, शरीरमे थरथरी दौड गई।

"और, हुजूर जब अगले दिनतक भी खूबसूरत, परीजाद ग़िजालाका कोई पता-ठिकाना मालूम नहीं होता, तो आप इसकी फ़ुरकत (वियोग) मे जोगी बन जाते है। एक कोपीन आपके बदनपर रह जाती है, एक ख़िदमतगार आपके साथ रह जाता है और आप जगल-जंगल, शहर-शहर गॉव-गॉव ग़िजालाके फिराकमे "हाय, गिजाला! हाय, गिज़ाला!" की रट लगाते हुए घूमते रहते हैं—जिस तरह राजा रामचन्दर सीताजीके वियोगमे घूमे थे—और ग़िजालाका पता नहीं चलता। महलके सारे नौकर-चाकर, दास-दासियाँ, गुलाम, खोजा, बेगमे और ओहदेदार, सब आपकी तकलीफको

अपनी तकलीफ मानकर गेरुए वस्त्र धारण कर लेते हैं। राजधानीमें एक भी आदमी ऐसा नजर नहीं आता, जिसके बदनपर गेरुए कपडोंके अलावा कोई कपडा हो . और, हुजूर, इसी अवस्थामें आपको दस दिन बीत जाते हैं.. ''

''आह ! दस दिन !'' नवाब साहबकी आँखोसे आँसुओंके दो बड़े-बड़े डोरे बह निकले।

''दस दिन, हुजूर, पूरे दस दिन और दसवें दिन आदमजाद तो आदमजाद, जिन्न तक आपकी हालतको देखकर पिघल जाते हैं। एक जिन्न आपको आकर बताता है कि खूबसूरत गिजाला, औरतकी शक्लमें वह नन्हा-सा हिरनौटा, राजा इन्द्रके दरबारमें है, और राजा इन्द्र उसपर फरेफता [मोहित] होकर उसे अपनेसे शादी करनेके लिए सता रहा है—जिस तरह राजा रावणने सती सीताको सताया था, हुजूर—और वह आपके गममें अपने प्राण देनेपर तुली हुई है।''

''बस, बस, आगे न कहो, क्लर्क साहब ! देखते नहीं हमारा दिल फटा जा रहा है!'' और सचमुच नवाब वाजिदअली शाह विकृत चेष्टा बनाकर रोने लगे।

''मगर, हुजूर, आप राजा इन्द्रके दरबारमें भी जा पहुँचे और उससे बातें करके आपने उसे यह विश्वास दिलानेकी कोशिश भी की कि असलमें गिजाला आपकी है और आप उसके हैं। बस, राजा इन्द्रने इस बातपर आपसे पीछा छुडानेकी तदबीर सोच निकाली। उसने आपसे कहा कि पहले आप अपनेको गिजालाके योग्य सिद्ध करें। आप तुरन्त तैयार हो गये। पहले उसने आपको सिर्फ एक छुरी लेकर एक भयानक शेरको मारनेके लिए भेजा। आप उसे फौरन मारकर ले आये। फिर उसने एक भयानक जिन्नके पास आपको भेजा। आपने उसका भी काम तमाम कर दिया और इसी तरहके अनेक बहादुरीके करतब करनेके बाद भी जब आप राजा इन्द्रके सामने अपनी छाती तानकर खड़े हो गये, तो

हुजूर, उसे डर हुआ कि कहीं आप उसकी हकूमतको न छीन लें। इस-लिए उसने आपकी ग़िज़ालाको आपके सुपुर्द किया और आप हँसी-खुशी अपनी राजधानीमें लौट आये। यहाँ जो फिर जशन मनाये गये, तो आलीजाह, मेरे सम्मानित उस्ताद, आपके शहर-जैसा खुशोखुर्रम शहर दुनियाके तख्तेपर और कोई नहीं था..."

वाजिदअली शाहका हाल बेहाल था। आँखोंसे आँसू बह रहे थे और बदनका अङ्ग-अङ्ग फड़क रहा था। चेहरेपर हँसी खेल रही थी और आँखें चमक रही थी। "वाह ! वल्लाह ! क्या खूब ! क्या ख्याल आपने पेश किया है, कल्क साहब ! अब तो आपको अपना उस्ताद कहनेको जी चाहता है। आपने तो तसवीर खींचकर रख दी।"

असीर साहबने होंठ दबाये। कुछ लोगोंने कटती नजरोंसे कल्क साहबकी ओर देखा। एक सम्मानित शायरने वास्तविकताको धरातलपर लाते हुए पूछा, "तो, कल्क साहब, आपने अपना यह नाटक पूरा कर लिया है ?"

नवाबने उन साहबकी तरफ तेज़ निगाहोंसे देखा। अभी तक वह कल्क साहबके ख्यालमें उसी तरह डुबकी लगा रहे थे, जैसे कोई भी शायर अपने कलाममें लगाता है। यह कल्क साहबका नाटक है यह तो वह भी समझ रहे थे, मगर इस बातको खोलकर कहनेसे उनके नन्हें से दिलपर सख्त सदमा गुजरा।

कल्क साहबने उनके भाव ताड़ते हुए कहा, "अमाँ, हज़रत, आज यह नाटक है, कलको वास्तविकता हो जायगी। आप हैं कहाँ ? यह लखनऊ है। यहाँ हर उम्दा ख्याल एक हक़ीकत है।"

"आपने ठीक फरमाया," नवाबने उछलकर कहा। गलेमें एक हीरा जड़ा कण्ठा पहन रखा था। उतारकर कल्क साहबके गलेमें पहना दिया। बोले, "बस, कल्क साहब, अब ज्यादा बेचैन न करो। इस ख्यालको हक़ीकत बना दो।"

कल्क साहबने दोनो घुटनोके बल खड़े होकर आदाब अर्ज की। उपस्थित शायरोने मुबारकबादियोकी झड़ी लगा दी। नवाबने उन्हें महलसे बाहर जानेके लिए मना कर दिया। वहीं उनके आरामका सारा इन्तजाम हुआ। एक कमरा अलग नियत कर दिया गया। दो लौंडियाँ खिदमतमें छोड़ दी गईं। खुशखतिया मुशी पास बैठा दिया गया और ख्यालको हकीकत बनानेके लिए कागजपर उतारा जाने लगा।

दीवालीकी गुलाबी सरदीमें नाटकके खेले जानेकी घोषणा हुई। केसरबाग महलकी नुकरई (रजत) बारादरीके तीन हिस्से किये गये। एकमें राजा इन्द्रका दरबार सजा। खंभोको चाँदीके पत्तरोसे ढाँक दिया गया। दीवारो और छतपर हीरो और पन्नोके जेवर लगाये गये। कमकमों और झाडफानूसोकी बहुतायतसे रातके वक्त यह जगह दमक उठी। प्रकाशको आमने-सामने शीशे लगाकर सैकडो गुना तीव्र कर दिया गया। चारों ओर फैले हुए बगीचेमें चुने हुए फूलोंकी सुगधसे वातावरण महकने लगा। राजा इन्द्रके दरबारके बीचोंबीच एक विशाल सिंहासन रखा गया। सारे बागमें चाँदीके पत्तर जडे मोढ़े डाल दिये गये। हजारों कमकमोंसे बाग-का-बाग प्रकाशमान हो गया।

एक भागमें नवाब साहबका शयनकक्ष बना। उसके बीचमें एक लम्बा-चौड़ा सोनेका छपरखट था। कमरा शीशो और जडाऊ पत्तरोकी बहुतायतसे आँखोको चकाचौंध कर रहा था। चारो ओर गुलाबकी पत्तियो-का नरम कालीन था। छपरखटपर स्वर्गसुन्दरी गिजालाके वेशमें बादशाहकी सबसे प्रिय बेगम, कामदार रेशमी रजाई कमर तक ओढे इस प्रकार सोई पड़ी थी, मानो कोई अलबेली तितली किसी फूलकी पखुडीपर सो गई हो। उससे कुछ दूर नवाब वाजिदअली शाहका भारी और तोंदिल शरीर, देवकुमारोके वस्त्रोंसे अलङ्कृत, खुमारीमें डूबा पडा था।

इस अवस्थामें सुन्दरी गिजाला और उसके सबसे योग्य वर, नवाब वाजिदअलीको देखनेके लिए सारा हरम, सारा महल और लखनऊके

चोटीके अमीर-उमरा आये। वाह ! क्या दृश्य था, क्या नाटक था ! क्या खूबसूरती थी, जो धरा पर न उतर आई हो !

अगले दिन दोपहर तक यही दृश्य चला। दोपहरके समय दूसरा दृश्य आरम्भ हुआ। तिरस्कृत बेगमोंको काले कपड़े पहनकर काले-काले मुँह करके, भयानक जिन्नोंका वेश धारण करना पड़ा और ज्यों ही नवाब साहब एक जाम पीनेके लिए उठे, तो बीसियों बेगमें हॉफ-हॉफकर उस छपरखटको, जो वास्तवमें इसीलिए काफी हल्का बनवाया गया था, सुन्दरी गिजाला सहित उठा कर ले गईं।

बादशाह सलामत जाम पीकर लौटे और छपरखट नदारद देखकर आश्चर्यसे ऑखे मलने लगे। इसके बाद 'हाय, गिजाला ! हाय गिजाला !' की रट शुरू हो गई। लखनऊके आलीजाह अपने पहने हुए कपडोकी एक कत्तर फाड़ते, सामने करते, जमीनपर गिरा देते और मोटी आवाजको काफी दर्दनाक बनाते हुए जोर-ज़ोरसे पुकारते : "हाय, ग़िजाला ! हाय, ग़िजाला !"

हजारोंकी भीड इस तमाशेको देखती थी। सैकड़ो आ रहे थे और जा रहे थे। सभीकी ऑखोसे ऑसू बह रहे थे—और ऑसुओका दरिया बहने लगा था ! कैसी पीड़ा है ! कैसा दुःख है ! देख-देखकर छातीपर सॉप लोटता है !

जब सारे कपड़े फट चुके, तो नीचेसे कौपीन निकल आई। आनेवालोंको पहले ही समझा दिया गया था। देखते-देखते सारे दर्शक गेरुए रंग में रंग गये। लखनऊकी गली-गलीमें मनादी पिट गई : "नाम अल्लाहका, हुक्म बादशाहका—लखनऊकी रियायाको आगाह किया जाता है कि बादशाह सलामत सुन्दरी ग़िजालाके फिराकमें गेरुए कपड़े पहनकर उसे खोजने निकले हैं। खुदाका जो बन्दा आनेवाले दस दिनोंमे गेरुए कपड़ोके अलावा कोई और कपड़ा पहने दिखाई दिया, तो बिना किसी भेदभावके उसका सिर धड़से अलग कर दिया जायगा।"

लखनऊके रंगसाजोंने इस दिनको अपने लिए खुदाकी नियामत समझा। चौबीस घंटेके भीतर-भीतर सारा लखनऊ गेरुए रंगमें रंग गया। लोग आश्चर्यसे एक दूसरेकी तरफ देखकर पूछते : "अरे मियाँ, यह गिजाला कौन थी ? कहाँसे आई थी और कहाँ चली गई ? ओह ! बादशाह सलामतकी प्रेमिका जिन्न उठाकर ले गये ! या अल्लाह ! या परवरदिगार ! हमारे बादशाह पर रहम कीजो।"

उधर बादशाहने कासा हाथमें ले लिया। जंगलमें घूम रहे है, तो घरका कुछ नहीं खायेंगे। किसीको साथ नहीं रखेंगे। बस, एक खिदमतगार साथमें रहेगा और प्रधान बेगमकी तबीयत चाहे, तो वह भी रहें। मगर और कोई नहीं। सब बेगमोंको गेरुए कपड़े पहनने होंगे। खबरदार! हुजूरकी आँखें कपड़ोंपर गेरुए रंगके अलावा और कोई रंग न देखे. . बराबर दस दिन तक। "हाय, गिजाला ! हाय, गिजाला !!"

सारा काम बादशाह सलामतकी इच्छानुसार हुआ। मगर नवाबकी अम्मी, पादशाह बेगम बिगड़ खड़ी हुई। जब लौंडिया कपड़े लेकर उनके पास पहुँची, तो वह जोरसे चिल्लाकर बोली : "यह क्या हिमाकत है ! क्या तमाशा बना रखा है ! यह नाटक है या भाड़ोंका खेल है ! किसने लिखा है यह नाटक ?"

"कल्क साहब ने, हुजूर", उपस्थित प्रधान दासीने सूचित किया।

"बुलाओ उन्हें।"

कल्क साहबकी खोज होने लगी। यहाँ ढूँढा, वहाँ ढूँढा, मगर कल्क साहबको तो पहले ही सूँघ लग गई थी। ऐसे नौ-दो-ग्यारह हुए कि हाथ आने मुश्किल हो गये। मगर पादशाह बेगमके हाथ भी कम लबे नहीं थे। खुर्शीद मंजिलके एक कोनेमें थाम लिये गये और तुरन्त पादशाह बेगमके सामने पेश किये गये।

पादशाह बेगमने पहले तो उन्हें कुछ देर घूरा, फिर बोली, "'कल्क' आपका ही तखल्लुस है ?"

कल्क साहबको अपने उपनामपर पहली बार कलक हुई। जवाबमें अर्ज किया, "हुजूर सही फरमाती हैं।"

"यह अफलातूनी नाटक आपने ही लिखा है?" पादशाह बेगमने दूसरा सवाल पूछा।

कल्क साहब क्या कहें? बोले, "जी, यह खता बन्देसे ही हुई है।"

पादशाह बेगमने व्यंग्य किया, "आपके दिमाग़ शरीफ़में यह बेहूदा ख्याल कहाँसे आया, हजरत?"

"जी, जी, हुजूर आलीजाह बन्देके उस्ताद हैं, और.. .."

"यह लनतरानी छोडिये," पादशाह बेगमने आँखे निकालकर कहा। "सही सही जवाब दीजिये।"

"हुजूर!" कल्क साहब सहमकर बोले, "सही अर्ज करता हूँ: एक पीर फकीर चौकमें बैठा हमेशा 'गिज़ा ला, गिज़ा ला' की सदा लगाया करता है। उसे ही देखकर बन्देके दिमागमें ख्याल पैदा हुआ कि.. "

"बस, ख्यालका बयान रहने दीजिये," पादशाह बेगमने उनकी बातको बीचमें काटते हुए कहा, "हम सिर्फ इतना पूछना चाहते है कि क्या आप अवधके बादशाहको फकीर बना देना चाहते हैं?"

"यह हुजूर क्या फ़रमा रही है!"

" 'हाय, गिजा ला! हाय, गिजा ला!' इसका क्या मतलब है?" पादशाह बेगमने कठोर स्वरमें पूछा।

"गिजाला हिरनके छोटे बच्चेको कहते हैं, हुजूर.. "

"कल्क साहब आप अपने उस्तादको बेवकूफ़ बना सकते हैं, मगर उस्तादकी माँ को नहीं। क्या इसका मतलब यह नहीं है कि 'रोटी दे, रोटी दे'?"

"जी!" कल्क साहबकी घिग्घी बँध गई।

"कलको जब अवधके ऊपर छाया हुआ फिरंगी बादशाद यह सुनेगा कि अवधका असली हक़दार, हाथमें कासा लेकर दरवाजे-दरवाजे

'रोटी दे, रोटी दे' की आवाज लगाता हुआ घूमा करता है, तो आप जानते हैं वह क्या करेगा ?"

"जी. जी.. हुजूर !"

"बस, आप इससे ज्यादा नहीं कह सकेंगे। इन कुछ लफ्जोंके कलाम-पर ही आप लखनऊके ताजदारके सिरपर बैठे हैं। हमसे पूछिये क्या होगा। जब फिरगियोंका ताजदार इस करामातको सुनेगा, तो अपने दलबल सहित आयेगा। साथमें अपने बक्समें बन्द करके एक कासा लायेगा। उस कासेको तुम्हारे बादशाहके हाथमे रखकर कहेगा कि जाओ, माँगो, खाओ, और हकूमतकी बागडोर हमारे हाथमें पकडाते जाओ। भिखमगे बादशाहत नहीं किया करते। उस दिन तुम सब लोगोंको भी एक-एक कासा हाथमें लेना पड़ेगा, लखनऊकी सडकोंपर भिखमगोकी एक बारात बनकर चलेगी और मुँहसे निकल रहा होगा : 'हाय, रोटी दे ! हाय, रोटी दे।' भले ही आपका शायराना दिमाग़ रोटीको दूर समझकर उसके वियोगमें अपनेको वियोगी समझता रहे। समझे ?"

कल्क साहबके होश हवा हो गये, बादशाह वेगमने तिरस्कारसे उनकी तरफ देखा और बोली, "आपने समझा कि आपने अपने उस्ताद और अपने आलीजाहकी क्या खिदमत की है ? जाइये, अब हमें आपको और ज्यादा अपने सामने देखनेकी तमन्ना नहीं है। आपने हमारे लिए, हमारी बादशाहतके लिए बहुत तकलीफ गवारा की !"

कल्क साहब पिटा-सा मुँह लिये बाहर निकले। चेहरेपर हवाइयाँ उड रही थीं—वैसी नहीं, जैसी वह अजीबोग़रीब ख्याल आनेपर उडी थीं। ये हवाइयाँ दूसरी तरहकी थीं। आज तक कभी उन्होंने यह नहीं समझा था कि शायरके ऊपर एक जिम्मेदारी होती है। जब भी इन जिम्मेदारियोंसे बरी होकर वह ख्यालोंकी कुलाचे भरेगा, तभी एक अशुभका उदय होगा।

घरमें जाकर मुँह छिपाया, तो फिर दस दिन तक नहीं निकले। जिस दिन घरके नौकरको उजले कपडे पहने देखा, उस दिन समझमे आया कि

शाही महलमें जशन हो रहे हैं। अपने आप भी सफेद कपड़े पहने, पतली-सी छड़ी हाथमें ली, बगलमें दीवान दबाया और चौककी तरफ चले। बादशाहसे माफी माँगेंगे, खेलकी बेहूदगीका बयान करेंगे, आगे इससे बाज रहनेकी प्रार्थना करेंगे—भले ही सिर कलम हो जाये। मगर इस तरह खाली हाथ जाना नहीं होगा, चौकमेंसे आज बादशाह सलामतके लिए कोई कीमती तोहफा लेना होगा। आखिर उन्होंने हीरेका कंठा दिया था।

चौकमें दूरसे ही भीडभाड़ देखी। ज़रा तेजीसे लपके। जिस जगह वह पीर फकीर बैठा करता था, भीड वहीं पर जमा थी। तरह-तरहकी बातें चल रही थीं। मजमेंके ऊपर उचक कर देखा। एक सफ़ेद कपडा किसीने वहाँ किसी चीजपर डाल रखा था। कोई गठरी-सी मालूम होती थी। कान खड़े करके लोगोंकी बातें सुनने लगे :

" 'हाय ग़िजा ला! हाय, ग़िजा ला।' बेचारा इसी तरह पुकार-पुकारकर दिन भरमें दो रोटीके टके इकट्ठे कर लेता था।"

दूसरेने कहा, "मगर हुजूर बादशाह सलामतकी 'हाय गिजाला' जो लोगोंके दिमाग पर चढ़ी, तो इसकी 'ग़िजाला' की तरफ किसीका ध्यान ही नहीं गया। भूखा ही सो गया हमेशाके लिए।"

उफ्! कल्क साहब कानोंपर हाथ रखकर नवाब वाजिदअलीके निवास-महलकी ओर भागे। पता नहीं रहा कि दीवान कहाँ गिरा और छड़ी कहाँ छोड़ी। उनके सिरपर एक आदमीका खून था। खून ही नहीं था, उन्होंने इन्सानकी भूखके साथ एक बहुत बडा मजाक अपनी शायरीकी कलाके माध्यमसे किया था। वह मजाक इतना बड़ा था, इतना तेज था कि इससे उस पीर मर्दकी जान ही निकल गई!

आज फिर कल्क साहबकी वही हालत देखकर लोग हैरान हो गये। महलमें तो जशन मच रहा था। चारों तरफ़ रागरागनियाँ छिडी हुई थीं।

बादशाह सलामतको उनकी प्रेयसी मिल गई थी। इससे बडी खुशी लख-नऊमें और क्या हो सकती थी!

कल्क साहबको जल्दीसे नवाब साहबके हुजूरमे पेश किया गया। उनकी हालत देखकर नवाबका चेहरा उतर गया। उनकी ओर बढते हुए बोले, "क्यों, कल्क साहब, आज क्या बात है? क्या आप आज भी हमारे लिए कोई वैसा ही तोहफ़ा लाये हैं?"

शायर आज धाडें मारकर नही रो रहा था। लेकिन उसकी आँखोंसे आँसू जरूर ढुलक रहे थे। उसने कहा, "हुजूर, चौकमें एक बूढा फकीर आज 'हाय, गिजाला, हाय, गिजाला!' की रट लगाता हुआ मर गया। उसे किसीने एक रोटी तक नहीं दी। उसीसे मैंने वह ख्याल लिया था, जिसका आज आप जशन मना रहे हैं।"

"लाहौल.।" वाजिदअली शाह चिल्लाये। "सद आफरीं, सद आफरीं (सौ सौ मुबारक बादियाँ)! इतना बडा वियोगी मर गया और लोगोंने उसे एक कफ़नके लिए नहीं पूछा? अरे, कोई है?"

वहाँ बहुत थे। एक आगे आये। नवाबने हुक्म दिया: "देखो, चौकमें एक बूढा फकीर, एक महान् वियोगी अपनी प्रेयसीके नामकी रट लगाता हुआ मर गया है। उस पीर मर्दके लिए जमीन मुकर्रर करके उसकी दरगाह बनाओ और लखनऊके हर खास-व-आमको हमारा हुक्म सुनाओ कि हर दीवालीकी रातको उसकी कब्रपर दीये जलाये जायँ।"

कल्क साहबका कलेजा फटनेको हुआ। वह जोरसे चिल्लाये, "नहीं, नहीं, इससे बडा मजाक और कोई नहीं होगा..." और इनसे पहले कि वह आगे कुछ कहें, उनका शरीर मूर्छित होकर ज़मीनपर गिर पडा। नवाबने हुक्म रोक लिया।

मगर हिन्दुस्तानमें आज भी हर साल करोडों पीरके दीये जलाये जाते हैं।

• काँसेका आदमी

सन् १८५७ ईसवीके प्रारम्भिक दिन थे। बिठूरके क़िलेमें एक विशाल सहभोजका आयोजन था। कानपुर नगर तथा छावनीके ऊँचे-ऊँचे अफसर आमन्त्रित थे। हल्का गुलाबी जाड़ा था। नाना धून्दूपन्तकी रेशमी पगड़ी विशेष आकर्षणकी वस्तु थी। उनके छोटे भाई बाला साहब सम्मानित अतिथियोंको स्वयं प्लेटें पहुँचा रहे थे। खिलखिलाता चेहरा, बडी-बडी आँखे और चुस्त बदनमें बाला साहब हर विदेशीको अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। नाना साहबके भतीजे राव साहबने कमरपेटीमें जो खिलौना तलवार लटका रखी थी वह उनके बूटके साथ बजती थी क्योंकि उन्होंने अंगरेजोकी पोशाक धारण की थी। पाँच वर्षका यह बालक कानपुरके कलक्टर मिस्टर हिलर्सडनको अगरेजी ढंगसे सैल्यूट करके बोला, "हम कैसे लगते है?"

"अत्यन्त सुन्दर!" हिलर्सडनने कहा। फिर उसे पीठकी ओरसे बाँहमें समेटते हुए पूछने लगे: "लिटिल नाइट [नन्हें वीर], हमारी गोदमें बैठोगे?"

"नहीं," नन्हें वीरने कहा, "हम अपनी गद्दी पर बैठेंगे।"

इस भोली-सी अभिव्यक्तिका दूसरा अर्थ लगाते ही हिलर्सडनके मुखका भाव परिवर्तित हो गया। उसने फिर इस नन्हें वीरमे कोई रस न लेकर पीठ मोड़ ली। उनके सामने सलादकी प्लेट रखते हुए बालारावने कहा, "खाँ साहब इसके लिए इंग्लैण्डसे एक गद्दी खरीद लाये है। यह उसके सामने किसीको कुछ नही गिनता।"

नाना साहब दरवाजेपर अभ्यागतोंका सत्कार कर रहे थे। जब सभी उपस्थित हो चुके, तो वह अपनी कुरसीकी ओर बढ़े। कुरसीके आगे खड़े

होकर उन्होंने अभ्यागतोंको सम्बोधन करके कहा, "सम्मानित अतिथियों, अब केवल एक व्यक्तिकी प्रतीक्षा और है..." उन्होंने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि सामनेकी ओर देखकर बोले, "और लो, वह भी आ गये।"

सभी लोगोंकी दृष्टि हालके दरवाजेपर जाकर टिक गई। एक क्षणके लिए आगन्तुकने दरवाज़ेके बीचों-बीच खडे होकर अतिथियोंपर एक सरसरी नज़र डाली और फिर आगे बढा। इकहरा शरीर, बदनपर शेरवानी और पैरोंमे चूडीदार पायजामा तथा लखनवी जूते, सिरपर मराठा पगडी, बहुत हल्की ब्राउन रंगकी मूँछ और दाढ़ी, जिनका कटाव इंगलिश नाईके हाथों किया हुआ था, सिर थोडा आगेकी ओर झुका हुआ, दो-दो पतली रेखाओंमें सिमटी ऑखे, हाथोंमें एक छोटा सा इंगलिश अटैची केस—थोडेमें यही उस व्यक्तिकी रूपरेखा थी।

जब तक वह अपने स्वामी नाना साहबकी कुरसीके बराबर रखी हुई अपनी कुरसीके सामने जाकर खडा हुआ, कलक्टरकी सेक्रेटरी मिसेज ओब्रायनने तनिक झुककर अंगरेजीमे मिस्टर हिलर्सडनके कानोंमें कहा, "मेरा खयाल है यह वही अजीमुल्लाखॉ है, जो दो साल पहले इंगलैंडमे नाना साहबकी पेंशन छुडाने गया था।"

होंठ बिचकाकर मिस्टर हिलर्सडनने अंगरेजीमे ही धीमेसे उत्तर दिया, "हॉ, यह वही धायपुत्र है, जिसे हमलोगोने कीचडसे निकालकर आदमी बनाया था।"

मिस्टर हिलर्सडन अपनी जगह सही थे। सन् १८३७–३८ के अकालमे जब एक दीनहीन लड़का अपनी मॉके साथ सडकपर छः दिनसे भूखा पडा मर रहा था, तो एक अगरेज स्कूलमास्टर मिस्टर पेटनने उसे वहॉसे उठाकर अस्पतालमे भरती कराया था और बादमे कानपुरके फ्री स्कूलमें तीन रुपये मासिक छात्रवृत्ति देकर शिक्षा भी दिलाई थी—इसलिए कि दुनियाके ईसाईयोकी संख्यामे एककी बढती और हो जाये। मगर उसकी

मॉने यह स्वीकार नहीं किया था और वह धायके रूपमें ही अपना पेट पालती हुई मर गई थी। उसने बादमें ब्रिगेडियर स्कॉट तथा ऐशबर्नहमकी मुंशीगिरी की थी। वह मुंशीगिरीपर क्यों नहीं टिक सका और क्यो नाना साहबकी सेवामें आया यह उस समयकी ईसाईयतका एक साधारण रहस्य था। जो भी हो, वह आज दुनियाकी निगाहोंमें नाना साहबका मंत्री था और नानाकी निगाहोंमें एक रहस्यपूर्ण तथा सुबुद्धिमान् मित्र था। जब पेशवा बाजीरावके मरनेपर अगरेजोंने उनके दत्तक पुत्र, नाना साहबकी आठ लाख वार्षिककी पेंशन जब्त कर ली, तो उन्होंने दो वर्ष पहले अपने इस रहस्यपूर्ण और सदा मुसकराते रहनेवाले मित्रको ईस्ट इडिया कम्पनीके डाइरेक्टरोंसे अपील करनेके लिए इग्लैंड भेजा था। अभी दो ही दिन हुए वह इंग्लैंडसे वापस आया था।

मेजर सर जार्ज पार्करने पूछा, "कहिये, खॉ साहब, इंग्लैंड आपको कैसा लगा?"

"आपके इस प्रश्नके लिए धन्यवाद!" मंत्रीने अभ्यर्थनामे गरदन झुकाकर कहा, "वास्तवमे इग्लैंड मुझे उतना ही अच्छा लगा, जितने अच्छे आप लोग स्वय है। वहॉके लोगों और महिलाओंने मुझे भेंटोंसे लाद दिया और मैं यह समझनेमे असमर्थ हूँ कि उन सब भेंटोंका क्या उपयोग करूँ। क्या आप सब लोग इस सहभोजका आनन्द लेते हुए इस अधम सेवककी इस विषयमे कोई सहायता कर सकते हैं?"

नाना साहबने सभी अभ्यागतोसे खानेके विषयमें कोई अपनी सहायता आप करनेकी प्रार्थना की और लोगोके हाथ प्लेटोंकी ओर पहुँचने लगे।

राइडिंग स्कूलके मास्टर मिस्टर गिलने शोरवेका एक घूँट भरकर कहा, "तब आशा है कि आप उन भेटोका प्रदर्शन हम लोगोंके सामने अवश्य करेंगे।"

खान कुरसीपर बैठ गया था, मगर उसका हाथ अपनी प्लेट तक नहीं पहुँच सका था। निश्चित रूपसे मुझे उन भेटोंका प्रदर्शन आप सज्जनोंके

सम्मुख करना ही होगा क्योंकि उन अमूल्य उपहारोमे अधिकाश उपहार भौतिक अस्तित्वके स्थानपर मानसिक अस्तित्व रखते है।"

सभी लोगोंके मुँह तक पहुँचते हुए कॉटे रुक गये। बाजार सारजेन्ट की पत्नी मिसेज रीडने मिसेज ओब्रायनके कानमें कहा, "ही इज इरैजिस्टिब्रिल (इस आदमीकी ओर आकर्षित हुए बिना मन नहीं मानता)!"

"यही तो इसका गुण है," मिसेज ओब्रायनने कहा।

पादरी मिस्टर मर्चेन्ट बोले, "मिस्टर खान, हम लोग आपका मतलब ठीक-ठीक नहीं समझे।"

खानने सामने रखे रसमे चम्मच डालते हुए, उससे खेल करते-करते कहा, "इसका अर्थ बहुत सीधासादा है। असलमें ये उपहार विचारोके रूपसे प्रदान किये गये हैं। ये विचार इग्लैंडके निवासियोंकी बहुमूल्य सपत्ति है, और इन्हें उपहारमे पाकर मै तथा मेरे साथ-साथ हुजूर नाना साहब अपनेको अत्यधिक सौभाग्यशाली समझते हैं। उदाहरणके लिए मै एक उपहार आप लोगोंके सामने रखता हूँ: कम्पनी बहादुरके एक डाइरेक्टर महोदयने मेरी अपीलको देखकर मुझसे अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहा, 'खान साहिब, हम आपके सबसे बड़े मित्र है, मगर एक सिद्धान्त आपको सदा याद रखना चाहिये : सामूहिक राजनीतिक प्रणालीमें व्यक्तिगत भावनाओंका मूल्य उतना ही होता है, जितना उस मूल्यके अंकको समूहकी संख्याके अंकोसे भाग देनेपर भागफल आता है।' आप सज्जनोंने देखा कि यह सिद्धान्त मेरे जबानी याद हो गया है। परन्तु खेद है कि इसका अर्थ समझना मेरे लिए शेष है। मै इसमे नाना साहबकी ओरसे आप सज्जनोंके सहयोग तथा सहायताकी आशा रखता हूँ।"

महिलाओंने अर्थपूर्ण दृष्टिसे एक दूसरेकी ओर देखा। मेजर पार्करने मुँह वाकर स्कूलमास्टर मिस्टर गिलकी ओर नजर घुमाई। मिस्टर गिल एक ठोस मासके टुकड़ेपर छुरी चलाते हुए बोले, "खूब! इससे सिद्ध होता है कि मस्तिष्क ही वास्तवमे ससारका शासन करता है। मिस्टर खान,

मेरा ख्याल है कि आपको मिले उपहारकी सन्दूकचीमें जो मज़बूत ताला लगा है, मेरे पास उसकी कुञ्जी है। बहुत सीधीसादी बात है। आइये, हम एक कथाकी कल्पना करें.. ”

नाना साहबने विनम्रतापूर्वक मुसकराकर बीचमे ही कहा, “वास्तवमें क्या हम लोग अब कोई कहानी सुनने जा रहे हैं ? ओह ! किसी हार्दिक सहभोजके बीचमे कहानियाँ किस प्रकार आनन्दकी सृष्टि करती है यह वर्णनसे बाहरकी बात है !” और उन्होने मग्न होनेके प्रदर्शनमें अपने हाथका चम्मच तस्तरीमे गिरा दिया।

उपस्थित विदेशियोने नानाके द्वारा की हुई इस प्रशंसासे कृतज्ञताका अनुभव किया। मिस्टर गिलने अपनी बातका क्रम पकडते हुए कहा, “धन्यवाद, योर एक्सीलेंसी ! हाँ, तो कथा यह है कि किसी शेरने एक बार एक लोमडीको पकड लिया। लोमडीने प्रार्थना की कि दया और करुणाके नाम पर उसकी जानबख्शी की जाये, जिससे यह सिद्ध हो कि शेर ही वास्तवमें जङ्गलका राजा है। वह दण्ड भी दे सकता है और क्षमा भी कर सकता है। शेरने सोचा कि अपनेको सर्वशक्तिमान् सिद्ध करनेके लिए इससे अच्छा अवसर कौन हो सकता है कि दयाके नामपर की गई अपीलको स्वीकार किया जाये। उसने प्रमाणके लिए लोमड़ीकी पूँछ काटकर उसे छोड़ दिया. .मेरा ख्याल है कि आप लोग कहानीमे रस ले रहे है।”

खान विचारपूर्ण मुद्रामे अभी तक चम्मचसे खेल रहा था। कलक्टरने अपने कॉटेमे फँसे हुए एक टुकड़ेको आँखोके सामने घुमाते हुए, स्कूल-मास्टरको लक्ष्य करके कहा, “मिस्टर गिल, आप कहानी कहनेमे सिद्ध-हस्त है।”

पॉच वर्षकी आयुमे तलवारके धनी हो गये राव साहब अपनी ऊँची कुरसीपरसे प्रयत्नके साथ उतरकर मास्टर गिलकी बराबरमे आ खड़े हुए। मिस्टर गिलने उनके कन्धेपर हाथ रखकर उसे सहलाते हुए कहा,

"लोमडी इससे बहुत कृतज्ञ हुई और उसने अपनी जातिमें पहुँचकर यह प्रचार किया कि सिंह जङ्गलका राजा है। मगर सिंहको तो अपने भोजनसे वञ्चित होना पडा था। साथ-साथ लोमडीके द्वारा उसका प्रचार हो जानेके कारण जङ्गलके सभी जानवर सिंहसे डर-डरकर या तो भाग गये या छिप गये। भोजनकी समस्या कठिन होनेपर जङ्गलके सब सिंहोंने एक सभा की और निश्चय किया कि जो भी सिंह कोई शिकार करे वह सामूहिक संग्रहालयमें लाकर जमा करे, जिससे खाद्य-प्राप्तिकी इस अनियमितताका तो अन्त हो मेरा ख्याल है महिलाएँ इस कहानीमें रस नहीं ले रही हैं।"

मिसेज रीडने प्रसन्नताके साथ कहा, "मैं अपना काँटा नहीं खोज पा रही हूँ, मिस्टर गिल।"

मिस्टर गिलने उक्त महिलाकी ओर अन्दाजसे गरदन मोड़कर कहा, "धन्यवाद। मेरी कहानी बहुत थोडी-सी रह गई है, और तब मेरा ख्याल है आपको अपना काँटा अवश्य मिल जायगा...हाँ, तो उस दिनके बाद सिंहोंकी व्यक्तिगत सत्ता समाप्त हो गई और उनकी शक्ति जगलमें सचमुच सर्वोच्च हो गई। जो शिकार वे करते वह सब एक जगह एकत्र हो जाता और बादमें सबको बँट जाता। अब, एक दिन सयोगसे वही पूछकटी लोमडी फिर उसी सिंहके हत्थे चढ गई, जिसने दयाके वशीभूत होकर उसे छोड दिया था। लोमडीने कहा, "देखिए, मैं वही आपकी पूँछकटी प्रियपात्री हूँ। आप उस गौरवको न खोइए, जो मुझे क्षमादान देनेके कारण आपको मिल चुका है।" मिस्टर खान, सिंहने जो उत्तर दिया, उससे आपके इस उपहारकी कुजी मिल जाती है।"

खानने अपना मुँह ऊपर उठाया। उसके मुखका गौर वर्ण गाढ़ा पड चुका था, और उसकी आँखे और भी अधिक सिकुड गई थीं। गलेकी अटकको निगलते हुए उसने कहा, "धन्यवाद! मेरा ध्यान आपकी ओर पूर्णरूपसे आकर्षित है।"

मिस्टर गिल मुसकराये। उन्होंने कहा, "तब सुनिये : सिंहने उत्तर

दिया, 'प्रिय लोमडीरानी, एक समय था कि मै सर्वशक्तिमान् था क्योंकि मै आत्मनिर्भर था। आज मै पहलेसे अधिक बली हूँ, किन्तु उस गौरवको प्राप्त करनेमे असमर्थ हूँ, जो तुम मुझे देना चाहती हो। अब हमने बीस सिंहोका एक समूह बना लिया है। पहले मेरी भावनाओंका मूल्य इतना था कि मै चार पकड़े गये जानवरोंमेसे एकको क्षमा कर सकता था, इसलिए मेरी दयाभावनाका मूल्य एक लोमड़ीकी जान थी। अब मुझे उस मूल्यको बीसकी संख्यासे भाग देना पडता है, जिससे भागफल केवल एक बटा बीस रह जाता है। पहले मैने पूँछ रख ली थी और तुम्हारे सारे शरीरको छोड दिया था। अब मै पूँछ तो तुम्हारी जातिके उपयोगके लिए छोड सकता हूँ, किन्तु तुम्हे नही छोड सकता। मेरा ख्याल है तुम्हारी पूँछ मेरी भावनाके एक बटा बीससे अधिक महत्त्व नहीं रखती।"

मिसेज रीड उछल पडी। मिस्टर हिलर्सडनने अपना टोप हवामे उछाल दिया। सब ओरसे वाह-वाहकी आवाजें आने लगी। मेजर पार्कर हँसते-हँसते दोहरे हो गये। अन्य सज्जनों तथा महिलाओंने मिस्टर गिल की ओर जातिगौरवकी दृष्टिसे देखा।

कहानी समाप्त होते ही राव साहब पुनः अपने स्थानपर आकर डट गये। अजीमुल्लाखाँ उठा और उसने सब लोगोंको एक नजरमे घुमाते हुए अत्यन्त नम्र स्वरमे कहा, "मिस्टर गिलकी विद्वत्ता निःसदेह उपमा-रहित है। भविष्यमें मै और नाना साहब इस बातका विचार रखेंगे कि हम कहाँ तक इस दुर्लभ ज्ञानका उपयोग कर सकते है। मिस्टर गिलने न केवल हमे उस सूत्रका अर्थ बताया है, बल्कि अन्य उपहारोंकी कुजियाँ प्राप्त करनेका पैमाना भी हमारे सामने रखा है। अब मै आप लोगोंके सामने एक अन्य उपहार रखता हूँ, जो भौतिक अस्तित्व रखता है।" कहते-कहते खानके मुँहका रंग और भी गहरा हो गया।

एकके बाद एक रोचक स्थिति लोगोके सामने आती जा रही थी, इसलिए भोजका प्रमुख कार्य धीमी गतिसे चल रहा था। सबने उत्सुक

नेत्रोंसे देखा कि खानने अपने पास रखा वह अटैची केस उठाया, बडी मेजके ऊपर रखकर उसे खोला। उसमेंसे कुछ आपसमें जुडे हुए मोड़-खाये डंडोंका समूह और उसके बीचमेंसे लेंसकी तरहकी एक चीज निकली। खानने मेजके ऊपर उन डडोंको सीधा किया और जब यन्त्र अपनी तिपाईपर खडा हो गया, तो उसकी ऊँचाई लगभग पाँच फीट थी। उसके ऊपर जो गोल कैमरा-सा लगा था, उसके भीतरसे गोलाईकी परतें निकलती चली गईं और यह अन्तमे जाकर केवल एक इंच व्यासकी रह गई। निःसदेह यह एक शक्तिशाली दूरबीन थी।

मेजर पार्करने कहा, "ओह! यह तो एक टेलिस्कोप है!"

खानने फिर गरदन झुकाई और बोला, "यह उपहार मुझे ईस्ट इंडिया कपनीके डाइरेक्टरोंने सम्मिलित रूपसे और निजी व्ययसे दिया है। आप लोग यह बात जानकर आश्चर्य करेंगे—और मुझे व्यक्तिगत रूपसे, स्वयं मूर्ख बनकर भी, अपने सम्मानित अतिथियोका मनोरंजन करनेमें सकोच नहीं है—कि यह दूरबीन देते हुए मैनेजिंग डाइरेक्टर महोदयने मुझसे कहा कि यह वस्तु निश्चयतः हमलोगोके उस अभावको दूर करेगी, जो हमलोगोके लिए नितान्त पीड़ाजनक है।"

मिसेज़ गीडने चुपकेसे फिर मिसेज ओब्रायनका कान टटोला। "क्या आपको यह अनुभव नहीं होता कि इस आदमीके चेहरेका रंग, जो यहाँ आते समय अशर्फीके रंगमे मिलता-जुलता था, अब काँसेके रगमें बदल गया है।"

मिसेज ओब्रायनने एक क्षण उसकी ओर लक्ष्य किया और बोली, "आश्चर्य है! आपकी बात सही है। सचमुच यह आदमी बिलकुल काँसे की मूर्तिकी तरह मालूम होता है। इसका क्या अर्थ हो सकता है?"

उक्त मिसेजको इसका अर्थ उस समय पता नहीं लग सकता था क्योकि उसकी व्यवस्था शेरों व लोमड़ियोंकी कहानीसे नहीं हो सकती थी, केवल भविष्यसे ही हो सकती थी।

मिस्टर जी नामक एक बूढ़े अगरेजने पूछा, "खान साहब, क्या हम लोग जान सकते हैं कि वह अभाव क्या है?"

खान साहबने कहा, "सम्मानित डाइरेक्टर महोदयने मुझे बताया कि जिस चीजके लिए मै इंग्लैण्ड गया था वह मुझे केवल इसीलिए नहीं मिल सकी कि हम हिन्दुस्तानियोंमे किसी वस्तुका नितान्त अभाव है, उसका नाम है 'दूरदर्शिता'।"

"फाईन (सुन्दर)!" मिस्टर हिल्सडन चिल्लाये। "यह एक बहुत अच्छा मजाक रहा।"

कॉसेका वह आदमी मुसकराया और बोला, "और मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि हिन्दुस्तानी लोग जिस चीजको नहीं जानते, उसे समझ बहुत जल्दी लेते है। हम वास्तवमे उनकी इस सुन्दर हास्य-भेंटके लिए कितने कृतज्ञ है, वह केवल भविष्य ही बता सकता है।"

सभी लोगोंने खानकी इस बातको उन जामोंके उड़ते हुए नशेमें ग्रहण किया, जो इंग्लैण्डसे खानके साथ आई शराबसे भरे गये थे। मिसेज ओब्रायनने इस व्यक्तिसे बातें करनेका अवसर पानेके लिए कहा, "मिस्टर खान, इंग्लैण्डकी महिलाओंके सम्बन्धमे आपके क्या विचार है?"

"मुझे उन सम्मानित महिलाओंकी खुशियों और मुसकराहटोंको देखकर आश्चर्य तथा आनन्द दोनों होते थे," खानने एक-एक शब्दको तौलते हुए कहा। आश्चर्य इसलिए कि उन्हें इस बातकी तनिक भी अनुभूति होती मालूम नहीं होती थी कि उनके बन्धु-बान्धव इतनी दूर, ससारके दूसरे सिरेपर, हिन्दुस्तानकी सर जमीनपर भारी खतरोंके बीच रह रहे हैं!—और आनन्द इसलिए कि जहाँ हज़ार जगहसे फटे कपड़ोंमें तन उघाड़कर हमारे देहातोंकी महिलाएँ लज्जाशीला होनेका दम्भ (!) करती है, वहाँ मूल्यवान और लहराते हुए वस्त्रोंसे समस्त शरीरको आच्छादित करके भी इंग्लैण्डकी महिलाये उनसे कितनी विपरीत हैं! मैंने इस मुकाबलेको

देखनेके लिए उन महिलाओंको निकट भविष्यमें ही हिन्दुस्तान आनेका निमन्त्रण दिया है।"

हल्की खुमारीमें मिसेज ओब्रायनने इसे प्रशंसाके रूपमें ग्रहण किया।

जब दावत खत्म हुई और अभ्यागत विदा होने लगे, तो नाना साहबके सेवकोंने प्रत्येक विदेशीको एक-एक कमलका फूल भेंट किया। किलेसे बाहर निकलकर लैन्डो गाडीमें सवार होते हुए मिस्टर हिलर्सडनने मिसेज ओब्रायनसे कहा, "मुझे याद नहीं आ रहा है कि यह किस चीजका फूल है। बडा तो इतना है, मगर इसमें सुगन्ध तो नाममात्रको भी नहीं है!"

मिसेज ओब्रायनने कलक्टर साहबकी बाँहका सहारा लेकर गाडीमें चढते हुए कहा, "इन हिन्दुस्तानी फूलोंमें सुगंध नहीं होती, फिर भी ये भौंरोंको अपने भीतर बन्द करके उनका साँस घोट डालते है।"

इस कल्पनापर मिस्टर हिलर्सडनने एक खुला ठहाका लगाया।

इसके एक सप्ताह बाद ही, २५ मार्च सन् अठारह सौ सत्तावनको, मेरठमें कमलके फूल भौंरोंको लिये-दिये बन्द होने आरम्भ हो गये। किसी प्रकांड कविकी कल्पनाके ये लाल प्रतीक मेरठसे दिल्ली, अलीगढ़, सीतापुर, लखनऊ होते हुए कानपुर तक पहुँचे और तीन महीनेके भीतर-भीतर समस्त उत्तर भारत कमलके रंगकी तरह लाल हो गया। शरण माँगनेके लिए अंगरेज बिठूरके किलेमें आये। खान नाना साहबके साथ था। नाना साहबने अर्थपूर्ण दृष्टिसे उसकी ओर देखा। काँसेकी प्रतिमाकी तरह सीधे खड़े उस व्यक्तिके मुँहसे संक्षिप्त स्वर निकला : "नौलखाहार।"

नाना साहबने मिस्टर हिलर्सडनसे कहा, "नवाबगंजका खजाना खोलना पड़ेगा। मेरे पास न आदमी हैं, न तोप है, न तलवारें है।"

पास ही खड़े राव साहबने अपनी नन्हीं-सी तलवार पेश की, और अकड़कर बोले, "हूँ, तलवारें कैसे नहीं है!"

मिस्टर हिलर्सडनने कुछ सोचते हुए कहा, "लेकिन नवाबगंजके खज़ानेमें तो नौ लाख रुपया है!"

"ओह !" नाना साहबने कहा, "इतना कम ! लो, मुझे तो यह मालूम ही नहीं था...खैर, फिर भी किसी तरह मै प्रबन्ध करूँगा ही, कम-से-कम पाँच सौ घुड़सवार तो चाहिए ही।"

हिल्संडनने सिर लटका लिया, फिर सिर उठाकर उस काँसेके रगका निरीक्षण किया। वही मुसकराहट थी। घृणा और क्रोधका वर्ण पहचाननेमें फिर एक बार भूल हुई और फलस्वरूप नौलखा नवाबगञ्ज, एक बडी मैगज़ीन (शस्त्रागार), एक छोटा-सा तोपखाना, और पाँच सौ देशी घुडसवार नानाकी वह शक्ति बन गये, जिसने उनका नाम वीर तात्या टोपे और सन् सत्तावनकी दुर्गा रानी लक्ष्मीबाईके साथकी पक्तियोंमें टाँक दिया।

हिल्संडनके विदा होनेके एक सप्ताह बाद ही मेजर जनरल सर एच० एम० ह्वीलरकी किलेबन्दीमें उस परिवर्तित रङ्गके व्यक्तिने प्रवेश किया। मेजर पार्करने उससे बहुत झटकेके साथ हाथ मिलाया, और प्रसन्नतासे कहा, "आखिर हिन्दुस्तानमे कोई तो है, जिसपर हम भरोसा कर सकते है।"

खानने अपने हाथमें दबा हुआ हाथ ढीलेपनसे छोड़ते हुए कहा, "मेजर साहब, सावधान रहिये, कष्टके समय मनुष्यको प्रायः सिद्धान्त याद नहीं रहते।"

"मगर हमे याद है," मेजरने सर ह्वीलरके कमरेकी ओर बढ़ते हुए कहा। "हम इस बातको जानते है कि किसीका भविष्य उसके मित्रोंके चुनावपर ही निर्भर करता है।"

उसी समय मेजर जनरल ह्वीलर अपने कक्षसे निकलते दिखाई दिये। उनके हाथमे एक राइफल थी। खानको देखते ही वह चौक गये। खानने बड़ी गरमजोशीसे हाथ मिलाया और राइफलकी ओर देखते हुए प्रश्न-सूचक स्वरमे पूछा, "एनफील्ड राइफल ?"

मेजर ह्वीलरने अपने अस्त्रको गर्वके साथ देखते हुए कहा, "हाँ, यह नया अस्त्र उन लोगोंको अच्छा सबक सिखायेगा, जो जानबूझकर सैनिक

सिद्धान्तोका उल्लङ्घन करते हैं. देखिये," और उन्होंने जेबसे कुछ कारतूस निकालकर उन्हें दाँतोंसे काटा और राइफलमें भरा। फिर घोडा चढाया, सिपाही-बागके एक फलोंवाले वृक्षकी ओर निशाना लगाया और एकके बाद एक छः फल उसपरसे टूटकर धरती पर गिर पड़े।

चिकने कारतूसोंको मेजरके हाथसे लेकर खानने उन्हें मसला, फिर प्रसन्नता प्रकट करते हुए बोला, "कितनी चमक है इनमें !"

"हाँ," मेजर पार्कसे कहा, "और वे लोग कहते हैं कि इनमे गाय और सुअरकी चरबी लगाई गई है। मक्कार कहींके! धर्मकी आड लेकर तीर मारते हैं !"

खानके चेहरेका ब्राउन रङ्ग सीधी धूप पडनेसे चमकने लगा। "उन लोगोंकी सस्कृति ही दूषित है !" खानने कहा। "वे इस सीधी-सी बातको भी नहीं देख सकते कि फिरङ्गी भारतवर्षमें केवल पवित्र पिता ईसामसीहका सन्देश सुनानेके सदुद्देश्यसे आये है! अगर मेरी पागल माँ मरते समय मुझसे वचन न ले जाती, तो मै स्वय कभीका उस करुणाके दामनको थाम लेता, जो हमारे सौभाग्यसे स्वयं हमारी ओर बढ रहा है!" निःसन्देह मेजरको यह सुनकर परम सन्तोष हुआ।

दूरसे मिसेज रीडने खानको देखा और वहींसे पुकारा, "ओह! मिस्टर खान, आप कितने अच्छे हैं कि मुसीबतमें हम लोगोकी खबर लेनेके लिए स्वय कष्ट करके आये हैं। ठहरिये, बिना मुझसे हाथ मिलाये न चले जाइये।"

जब तक वह पास आये, खानने उसकी ओर प्रसन्नताका हाथ हिला-कर मेजर जनरलसे कहा, "क्या मै उन कृपालु सज्जनोके दर्शनसे वञ्चित रहूँगा, जिनकी सुरक्षाके लिए मेरे छोटेसे दिलमें धुकड-पुकड मची हुई है?"

"नहीं, नही," मेजर जनरल ह्वीलरने कहा। "आइये, सभी लोग आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न होगे।"

मेजरके साथ दो पग आगे बढकर, खानने मिसेज रीडसे हाथ मिलाते

हुए उसे थोड़ा-सा सहानुभूतिसे दबाया और बोला, "विश्वास कीजिये, हम शीघ्र ही आपकी सब मुसीबतोंका खात्मा कर देंगे।"

काश कि प्रसन्नताके उद्वेगमें मिसेज रीड इस आश्वासनका सही-सही अर्थ समझ पाती।

सिपाही-बागके निकट पक्की छतकी बैरककी ओर, अन्य मित्रोंसे मिलनेके लिए जाते समय खानने वह कुआँ देखा, जो फूसके छप्परसे छाई हुई बैरक और स्टोर तथा खाद्य गोदामके बीचके दो सौ फीट चौड़े अहातेके बीचोंबीच बना हुआ था। उसने सिपाही-बागके पीछे बारूदकी गाड़ियोंपर भी एक दृष्टि डाली। बेचारे खानको अपने परमप्रिय मित्रोंसे भेंट करनेके लिए उस डेढ़ फर्लांगके लगभग लम्बी-चौड़ी किलेबन्दीको अनेक बार घूम-घूमकर देखना पड़ा, और अन्तमें जब वह सब लोगोंसे बिदा होकर उनके कष्टोंके प्रति तीव्र सहानुभूति प्रकट करता हुआ बाहर निकला, तो रात हो गई थी। अगर रात न होती, तो उसके बुद्धिमान् मेजबान उसका रंग और सूरत देखकर निश्चय ही उस काँसेकी प्रतिमाका अनुमान करते, जिसके वक्षमें हृदय नहीं होता।

गंग नहरका पुल पार करके, कानपुरके पश्चिमी भागमें प्रवेश करते ही वह बग्घी घेर ली गई, जिसमें खान बैठा हुआ था। मगर बग्घीके घिर जानेपर भी वह चुपचाप बैठा रहा। बाहरसे सेकिंड लाइट घुडसवार पलटनके योद्धा चिल्लाने लगे : "फिरंगियोंका जासूस है, मार डालो!"

एक आदमीने परदा खोलकर भीतर झाँका और आश्चर्यसे चिल्ला पड़ा, "कौन, खान!"

खान मुसकरा रहा था। बोला, "मालूम होता है भाँग खा गये हो, बाला साहब! जिन बच्चोंको पकड़ लाये हो, इनसे मेजर जनरल ह्वीलरकी क़िलेबन्दी नहीं टूटेगी। यह नौलखा हार नहीं है। जिसे खूँटीने निगल लिया था।"

"फिर?" बाला साहबने चिन्तासे पूछा।

"फिर उन मानसिक उपहारोका उपयोग करो, जो हमारे इंगलिश मित्रोने दया करके हमे दिये थे ! ध्यान रखो : भूखे आदमीमें हथियार उठानेकी ताक़त नहीं होती । किलेबन्दीमें उत्तर-पूरबकी दीवारसे सटे हुए राशनके गोदाम है । उनके सहारे फिरंगी जनरल दो महीनेतक एक हजार आदमियोको खिला सकता है और लडता रह सकता है; बिना उनके एक दिन भी नही । तुम्हारे जैसे बुद्धिमान् सेनापतिको इससे अधिक बतानेकी आवश्यकता नही है ।"

बाला साहबकी आँखे भी चमकी । उसने कहा, "यहाँ आप भूले खाँ साहब । भूखा दुश्मन यदि हथियार नहीं उठा सकता, तो प्यासा दुश्मन अपनी भूख भी नही बुझा सकता । ह्वीलरकी छावनीमें पानीका भडार कहाँ है ?"

खानने बाला साहबकी पीठ ठोकी । "तुम तो बाईस वर्षमें ही कुशल सेनापति हो गये हो ! गोदाम और छप्परकी बैरकके बीचमें दो सौ फीटका मैदान है और उस मैदानके ठीक बीचमे कुआँ और चहबच्चा है । जबतक तुम्हारी राइफले चलती रहे, तबतक एक भी आदमी कुएँपर नहीं पहुँचना चाहिए । जाओ, खुश रहो ।"

बाला साहब बग्घीसे नीचे उतर गये और कोचवानसे चिल्लाकर बोले, "आगे बढो !"

कुछ ही दिनोंमे कानपुरकी लगभग सभी सेनाएँ विद्रोही हो गईं । जनरल ह्वीलरकी क़िलेबन्दीमें मेजर जार्ज पार्करकी जीभ प्यासके कारण तालूसे चिपक गई थी और वह सतृष्ण नेत्रोसे उस कुएँकी ओर ताक रहे थे जहाँ-तक पहुँचनेमें अनेक शूरवीर अपनी जान गँवा चुके थे । ऊपरसे रश्मि-राज मार्त्तण्डका कुपितनेत्र सीधा उनकी ओर देख रहा था । दोपहर होते-न-होते उन्हें बड़े जोरका बुखार चढा और संध्यातक उनके प्राणपखेरू तापके देवताकी दृष्टिसे घबराकर पातालकी ओर दौड चले ।

आनेवाले दिनोंमें अनेकों फिरगी युद्ध-विशेषज्ञ सूर्यकी तीक्ष्ण जिह्वाकी

भेंट चढ़ गये। नाना साहब तथा खान साहबकी देशभक्तिका समाचार पलक मारते ह्वीलरकी छावनीमें पहुँच चुका था। किलेबन्दीसे लगभग डेढ़ मील दूर, सावडा कोठीमें नाना साहबने अपनी छावनी बनाई थी।

जिन लोगोंने अँगरेज़ोंके अत्याचारोंसे अपने तथा अपने बन्धुओंके परिवार-के-परिवार नष्ट होते देखे थे, वे अब उनका बदला लेनेपर उतर आये थे। जहाँ-तहाँसे अँगरेज़ोंके ऊपर जनकोपके वज्रप्रहारोंके समाचार अँगरेज़ी छावनीमें आ रहे थे। भीतरकी दशा भी कम ख़राब नहीं थी। मेजर ह्वीलर सन्धिके लिए चिल्लाये। जानपर खेलकर मास्टर गिल नाना साहबसे सन्धिकी बात-चीत करनेके लिए, सफेद झण्डा सम्भालकर किलेबन्दीसे बाहर निकले। रातके अन्धेरेमे मज़बूत घोड़ेको तीव्र गतिसे एँड लगाते हुए वह तीरकी तरह सावडा कोठीपर जा पहुँचे। जब छावनीके पहरेदारोंमें से एकने उनकी ओर राइफल तानी, तो उन्होंने सफेद झण्डा ऊपर उठा दिया।

रातके समय मास्टर गिलको प्रतीक्षा करनी पडी। सुबहको जब पहली तोप छूटी, तो उन्हें उस कमरेमें उपस्थित किया गया, जहाँ नाना साहब दीवारपर लगे, कानपुरके एक वृहत् मानचित्रका निरीक्षण बारीक़ीसे कर रहे थे। उनके हाथमें निर्देशक छडी थी।

नोकदार लम्बी छड़ीको जमीनपर टिकाकर नाना साहब घूमे और चौंककर बोले, "ओह, मिस्टर गिल! हम समझ नहीं पा रहे हैं कि किस प्रकार आपका स्वागत करें क्योंकि आप देख रहे हैं कि कुछ महत्त्वपूर्ण योजनाओंमें हम बुरी तरहसे घिरे हुए हैं। फिर भी क्योंकि आप कष्ट करके यहाँ तक आये हैं, इसलिए आपको थोडा-सा राष्ट्रीय समय भेंट किया जा सकता है।"

मास्टर गिल असीम दुःखका भाव मुँहपर लाकर बोले, "नाना साहब, कानपुरके समस्त अंगरेज़ोंकी ओरसे मैं उस भरोसेका उत्तर लेनेके लिए

आया हूँ, जो हमने आपके ऊपर कर रखा था। क्या विश्वासका यही मूल्य दिया जाता है, जो आपने हमें दिया है?"

"बहुत खूब! मास्टर गिल, आप तो स्कूलके बच्चों-जैसी बातें करने लगे! इससे पहले कि हम आपको उत्तर दें, हमारे कुछ प्रश्नोंका उत्तर आपको देना है। बताइये कि अब पूनाके महाराज और हमारे स्वर्गीय पिता श्रीमन्त बाजीराव पेशवाने आपलोगोंके शिकञ्जोंसे मिंचकर पूनाकी गद्दी आठ लाख रुपये वार्षिक पेंशनके भरोसेपर छोड़ी थी, तो क्या उनका मतलब यही था कि यह पेंशन आपलोग उनकी मृत्युके बाद जब्त कर लें? अगर वह पूनाके पेशवा बने रहते और आपके दबावमें न आते, तो क्या उनके देहान्तके बाद वह राजगद्दी हमें न मिलती? जिस समय शहंशाह जहाँगीरने आप लोगोंको भारतमें व्यापार करनेकी अनुमति दी थी, तो क्या उन्होंने यही आशा आपसे की थी कि आप पादरियों और तोपोंकी सेनाएँ लिये बढ़ते-चढ़ते चले आयेंगे और भारतकी भूमिपर अपने क़िले बना लेंगे? जिस समय बंगालमें नवाब अलीवर्दीखाँने आप लोगोंको अपनी भूमिपर फोर्टविलियमका क़िला बना लेनेकी अनुमति दी थी, तो क्या उस समय आपने उसे बता दिया था कि आप सारे हिन्दुस्तानपर लाल पट्टीका झण्डा फहराना चाहते हैं? मास्टर गिल, आप हमारे सामने सैर और शिकारकी बातें कीजिये, मगर भरोसेकी बात अपनी पाठ्य-पुस्तकोंके लिए उठाकर रख दीजिए।"

मास्टर गिल हक्के-बक्के खड़े सब कुछ सुनते रहे। उनके गलेमें जैसे कुछ अटक गया था। कठिनाईसे वह बोले, "नाना साहब, जिस समय जहाँगीर शहशाह और अलीवर्दीखाँ नवाबने ये सुविधाएँ हमारे पूर्वजोंको दी थीं, तब न आप थे, न हम थे। युग ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है त्यों-त्यों उन्नति करता है। इस उन्नतिसे जिन लोगोंको हानि पहुँचती है वे उसका जवाब पीछेके युगसे नहीं माँग सकते।"

नाना साहब अपने सामनेकी ओर, कमरेके अन्धेरे कोनेकी ओर देखकर

मुसकराये और बोले : "प्रिय मास्टर गिल, निश्चय रखिये, आपके पूर्वज जो बीज आपके लिए बो गये थे, आज आप उन्हें ही काट रहे है। विश्वास कीजिए, आज जो जवाब आपसे माँगा जा रहा है वह आजके ही लोग माँग रहे है, उनके पूर्वज नहीं। भारत आपकी भूमि नहीं। यहाँपर आपका अस्तित्व शोभा नहीं देता, आश्चर्य है कि इतनी सीधी-सी बात भी आपकी समझमे नहीं आती!"

मास्टर गिलने कहा, "व्यक्तिगत रूपसे मैं आपकी इस देशभक्तिकी कद्र करता हूँ.."

नाना साहबने बीचमे ही बात काटकर कहा, "हम आपको विश्वास दिलाना चाहते है, मास्टर गिल, कि व्यक्तिगत रूपसे हम आपके सबसे बड़े हितैषी हैं। यदि आप चाहे, तो उस समय तक हमारी व्यक्तिगत छायामे रह सकते है, तबतक कि हम आपके समूहको समुद्रमें नहीं धकेल देते.."

मास्टर गिल अत्यन्त दुखित भावसे बोले, "नही, मै अभी इतना नीचे नहीं गिरा हूँ कि अपने बन्धुओंको छोडकर अपने समाजसे द्रोह करूँगा। नाना साहब, मैं तो उन लोगोकी ओरसे आपसे यह अपील करने आया हूँ कि कृपा करके इस असहनीय अत्याचारको बन्द कीजिए, जिसे देख-देखकर शैतान भी काँप रहा है। जिस एकमात्र कुएँमें पीनेका पानी है उसे आपने गोलियोंके आवरणसे ढाँक रखा है। घेरेमें सैकडो स्त्री-पुरुष और बच्चे प्याससे तडप-तडपकर जान दिये दे रहे है। माँ और बाप अपने नन्हें-नन्हें बच्चोंको प्याससे तडपता देखकर कुएँकी जगतपर पहुँचते है और गोलियोसे बिंधकर उसीमें गिर पडते हैं। नाना साहब, यह युद्ध नहीं है, नृशंसता है। इन मानवीय वेदनाओंको देखकर क्या आपकी भावनाओंमे तनिक भी कम्पन नहीं होता?"

उसी समय मास्टर गिल सहसा अपने सामने एक अन्य विचित्र-सी आकृति देखकर मुँह बाये खड़े रह गये। कासेकी प्रतिमाकी तरह अंधकार

से निकलते हुए अजीमुल्लाखाका मानो तेलसे पुता चमकदार चेहरा प्रकाशमें आया। नुकीली दाढी, नुकीली नाक, नुकीली आँखो वाला वह व्यक्ति मास्टर गिलकी ओर अन्तर्भेदी दृष्टिसे देखकर बोले, "सामूहिक राजनीतिक प्रणालीमे व्यक्तिगत भावनाओका मूल्य उतना ही होता है, जितना उस मूल्यके अङ्कको समूहकी सख्याके अङ्कोसे भाग देनेपर भागफल आता है।"

"नही, नहीं!" मास्टर गिल चिल्लाये, "राजनीतिक उद्देश्यको प्राप्त करनेके लिए कृपा करके इस प्रकारकी हृदयहीनता न अपनाइए। मै आपसे अपील करता हूँ..!"

खानने आँखोंसे तीव्र घृणाकी चिनगारियाँ छोडते हुए कहा, "व्यक्तिगत रूपसे हमे उस कार्यवाहीके लिए दुःख है, मास्टर गिल, जो उच्छृङ्खलताका निदर्शन करती है। किन्तु यह उच्छृङ्खलता स्वय आपकी ही देन है। जिन लोगोंपर आपने शासन करना आरम्भ किया था, उनके बारेमें आप यह तथ्य भूल गये थे कि वे कठपुतलीमात्र नहीं है, उनमे जीते-जागते इन्सानोंकी चेतना है, वे सुख और दुःखको अनुभव करते है, चपत लगनेपर विवशतासे रोते है और एक मुट्ठी भात मिल जानेपर खुशीसे किलकारियाँ भरते है। आपने कभी उन कुओंकी ओर नजर उठाकर नहीं देखा, जिनमे महीनोंसे भूखे माता-पिता बच्चोंके मुँहमें दाना न डाल सकनेके कारण अपने सारे परिवारसहित कूदकर जान दे चुके है। मैने उन लाशोंको देखा है, उन कुओको देखा है, और आपका यह कुआँ उन कुओका एक छोटा-सा प्रतिरूप है। साम्राज्य-पिपासासे जिन लोगोका हृदय इतना पत्थर हो जाता है कि वे चारो ओर फैली हुई अकथनीय दीनताको ईश्वरकी देन समझने लगते है, आश्चर्य है कि थोड़ेसे व्यक्तियोंके दुःख देखकर वे रो पडते है। जिन्हे दूसरोके दुःखोपर व्यग्य करना आता है, जो दूसरोकी विवशताका मजाक उडा सकते है, स्वय उनके ऊपर कष्ट

आनेपर जब वे लोग रोते हैं, तो उस रुदन-जैसी हास्यास्पद वस्तु पृथ्वीतलपर दूसरी नहीं मिलती।"

मास्टर गिल मुँह फाड़े इन प्रत्युत्तरोंको सुनते रहे, जो बरछियोंकी तरह उनके कलेजेमें गुभे जा रहे थे। अन्तिम प्रयत्न करके उन्होंने कहा, "इतिहास किसी एकका होकर नहीं रहता, कृपा करके थोड़ी-सी दूरदर्शितासे काम लीजिये......"

बीचमें ही बात काटकर खानने कहा, "मास्टर गिल, मुझे खेद है कि मुझे एक और उपहार आपके सामने खोलकर रखना पड रहा है। आपके मालिकोंमें से एक सज्जनने कहा था: 'बिना यह देखे कि किसने किस स्वार्थसे लिखा है, इतिहासका पढ़ना घास काटनेके बराबर है। इतिहास उन्हींका है, जो उसे लिखते हैं। जहाँ तक दूरदर्शिताका प्रश्न है, आइये, हम आपको दिखायें कि हम कितने दूरदर्शी हो गये हैं।"

खान यह कहकर दरवाजेकी ओर बढ़ा। मास्टर गिल और कोई राह न पाकर उसके पीछे चले। पीछे-पीछे नाना साहब उस कोठीकी छतपर पहुँचे, जहाँ छतके एक किनारेपर वही दूरबीन लगी हुई थी, जिसका प्रदर्शन खानने उस दिन किया था, जब साहब लोग शराबकी खुमारीमें मस्त थे। उसके निकट जाकर खानने पहले स्वय दूरबीनमें देखा, फिर मास्टर गिलको निमन्त्रण देते हुए कहा, "आइये, देखिये।"

मास्टर गिलने दूरबीनसे आँख लगाकर देखा। जनरल व्हीलरकी किलेबन्दीका भीतरी भाग स्पष्ट रूपसे दूरबीनके शीशेपर चित्रकी भाँति चमक रहा था। तोपें छूट रहीं थीं और गोलेके बिखरे हुए टुकडोंसे जहाँ-तहाँ छिपे हुए लोग सहसा ही गिर पडते थे। उसी समय धुएँका एक गुब्बार-सा उठा और मास्टर गिलने काँपकर देखा कि उस विशाल छप्परमें आग लगी हुई है, जो बड़ी बैरकसे ऊपर छाया हुआ था।

काँपते हुए अङ्गोंसे मास्टर गिल दूरबीन छोडकर अलग खड़े हो गये।

खानने उनकी ओर देखकर एक तीव्र अन्तर्भेदी मुसकराहटका निदर्शन करते हुए कहा, "बस,हमारी दूरदर्शितासे आप इतनी जल्दी उकता गये। हमें देखिये, हमने इन्हीं आँखोंसे उस घुडसवार यूरोपियन पलटनको तोपसे उडते हुए देखा है, जो इलाहाबादसे आपकी सहायता करनेके लिए आ रही थी। हमने इन्हीं आँखोंसे मेजर पार्कर जैसे सहृदय मित्रको प्याससे तडप-तडपकर प्राण छोड़ते देखा है। यह देखकर भी हमारा दिल नहीं पसीजा कि मिसेज रीड-जैसी प्यार करने योग्य रमणी तथा मिसेज ओब्रा-यन जैसी बुद्धिमती महिला, इस नाशके नृत्यका आनन्द खुले हृदयसे न लेनेके कारण दौरा पडकर मर गईं। बेचारा मिस्टर जी एक राउण्ड शॉटसे कटे पेड़की भाँति ढह गया। मिस्टर हिलर्सडन-जैसा बहादुर और हास्य-प्रिय तथा पैसा बटोरनेवाला कलक्टर तोपके गोलेसे चीथड़े बनकर हवामें उड गया। मास्टर गिल, अपनी दूरदर्शिताका परिणाम देख-देखकर हम अपना कलेजा केवल इसी सिद्धान्तके बलपर थामे बैठे रहे कि अब हमारी मानवीय भावनाओंका मूल्य एक बटा तैंतीस करोड रह गया है।"

मास्टर गिलके हाथ-पैर कॉंप रहे थे। उसे मालूम हुआ कि सामनेकी ओरसे कोई योद्धा हाथमें तलवार लिये उनकी ओर झपट रहा है। धुँधली-सी दृष्टिमें वह योद्धा बालक आगे बढ़कर अपनी तलवार ऊपर उठाता हुआ बोला, "मास्टर गिल, हमसे लडोगे?"

मास्टर गिलने अपनी आँखें दोनो हथेलियोंसे बन्द कर लीं।

नानाके निजी अङ्गरक्षकोंकी रक्षामें मास्टर गिलको सकुशल ह्वीलरकी क़िलेबन्दीमें पहुँचा दिया गया—केवल इसलिए कि उसी दिन वह गोलियोंसे अपनेको बचाते एक दीवारसे जा सटें और किसी राइफलकी गोली उनके उस भेजेको उडा दे, जो सिद्धान्तोंकी व्याख्या किया करता था।

इस भारतीय विद्रोहका क्या परिणाम हुआ यह केवल इतिहासकी वस्तु है या उस पीड़ाकी कहानी है, जो उसके बाद भी भारतको नब्बे वर्ष तक भुगतनी पडी। सर कोलिन कैम्पबेलने इलाहाबादसे आकर

कानपुर ले लिया। उनके लखनऊ जाते ही विद्रोही सिपाहियोंने फिर कानपुरको कब्जेमे किया, मगर गोला-बारूदकी अधिकता, विद्रोहियोंकी अपेक्षा अधिक दृढ़ सैनिक-सगठन तथा संख्याके बलपर फिरसे कानपुर ही नहीं, बल्कि सारे भारतमें उस स्मरणीय विद्रोहको दबा दिया गया। उसके बाद जो नृशसताएँ हुईं उनको देखनेपर विद्रोहकी सारी घटनाएँ नक़ल मालूम होती है।

बहुत दिनो बाद एक फर्स्टक्लास अँगरेजी मैजिस्ट्रेटकी अदालतमें काँसेके उस आदमीको जंजीरोंसे बाँधकर कठघरेमें खड़ा किया गया। सरकारी वकीलने उसके अपराधोंकी सूचीमे एक लम्बी-चौड़ी नामावली उसके द्वारा की गई हत्याओंके सम्बन्धमे पढते हुए अन्तमें कहा, ".. कोई भी ईसाई इस राक्षस, देशद्रोही, नरभक्षक ब्यक्तिके नुकीले दाँतोंसे नहीं बच सका.. !"

खानने विनोदपूर्वक कहा, "सँभलिये, वकील साहब, इससे तो यह सिद्ध होता है कि आप ईसाई नहीं है.. !"

कुछ लोगोने मुँहमें रूमाल दबाकर हँसी रोकी।

सरकारी वकीलने उसकी ओर तीव्र दृष्टिसे घूरते हुए कहा, ".. इसने वृद्धोंको मौतके घाट उतारा, स्त्रियोंको जीवित जला दिया, बच्चो तकको नहीं छोडा.. !"

"मगर एक बच्चा हमारा भी कहीं खो गया है, साहब बहादुर," खानने फिर सिर उठाकर कहा। "अगर आप हमारे लिटिल नाइटके टुकड़े ही कहींसे ला दे, तो हम आपके उस दण्डका पाप क्षमा कर सकते हैं, जो आप हमें देने जा रहे है।"

मैजिस्ट्रेटने हथोडी बजाकर अभियुक्तको बोलनेसे रोका।

वकीलने कहा, "मी लार्ड, मैं माँग करता हूँ कि इस नरपिशाचको सर्वोच्च दण्ड दिया जाय, जिससे न्यायकी रक्षा हो।"

मैजिस्ट्रेटने कहा, "अभियुक्त अपने बचावमे कुछ कहना चाहता है?"

खानने सिर उठाकर सारी अदालतको देखा। फिर बोला, "अच्छा, मेरे भी कुछ कहनेकी आवश्यकता है! तो सुनिये, सिद्धान्तोंके कोष में एक सिद्धान्त यह और जमा करवा दीजिए कि विद्रोह तभी होता है, जब उसके अतिरिक्त शोषित समूहके लिए कोई राह नहीं रह जाती, और समूहकी भावनाओंको दबाया जा सकता है, मगर वह अन्तिम रूपसे कभी नहीं हारता।"

मेजिस्ट्रेटने फैसला लिखा: "... उस समय तक गलेमें रस्सी फँसाकर लटका दिया जाये, जब तक प्राण न निकल जाये।"

खान जोरसे हँसकर बोला, "कञ्जूसीकी हद है! अरे, कुछ तो बदला दिया होता। हम लोगोंने भारतसे आपका अस्तित्व मिटानेके लिए इतनी गोलियाँ खर्च कीं और आप हमें मिटानेके लिए एक गोली भी खर्च नहीं कर सकते!"

• कौवेका घोंसला

सन् १८५७ ई० के तूफानी दिन थे। मेरठसे जो आग सुलगी थी वह अपनी लपलपाती जीभोंसे लखनऊको ढाँक चुकी थी। रेजीडेंसी चारो ओरसे घेर ली गई थी। अतीतकी समस्त पीड़ाएँ, दबे हुए अरमान, बदलेकी भावनाएँ सब तोपोंके गोलों और राइफलोंके रूपमे साकार होकर निकल रही थीं।

यह बात नहीं कि रेजीडेंसी बिलकुल निःसहाय थी। अपने शीतप्रधान देशसे येन-केन-प्रकारेण शासन-सत्ता हथियानेकी भावनासे जो लोग समुद्र लाँघकर भारतके गरम मुल्कमें आये थे, उन्हें इस आगकी गरमीका आभास पहलेसे ही हो गया था। रेजीडेंसीमे अतुल परिमाणमे गोलाबारूद और आवश्यकतानुसार रसदका प्रबन्ध कर लिया गया था। अफसरोंके एक दस्तेने नई एनफील्ड राइफलोंपर अचूक निशानेका अभ्यास किया था। नवाब सआदतअलीखाँ अपने गौराग महाप्रभुओके लिए रेजीडेंसीके रूपमे जो अभेद्य दुर्ग बना गये थे, उसकी दीवारें मामूली तोपोंके गोलोंको पी जाती थीं। इसीमे एक चौकी बुर्जा थी, जिसपर खड़े होकर देखनेपर सारा लखनऊ नक्शेकी भाँति नज़रोंके सामने आ जाता था। अपनी इस अद्भुत विशेषताके कारण इस चौकी बुर्जाका नाम पडा था 'कौवेका घोंसला।'

इस कौवेके घोंसलेमे संकेतों द्वारा सूचना लेने-देनेका एक यन्त्र, सीमाफोर, लगा हुआ था। इस यन्त्रके ऊँचे मस्तूलके ऊपरी सिरेपर दोनों ओर दो विशाल हाथ सिगनलके रूपमे निकले हुए थे, जिनका सम्बन्ध मस्तूलके निचले भागमे दो लीवरोंसे था। इच्छानुसार इन लीवरोंको घुमानेसे यन्त्रके दोनों हाथ वाछित स्थितिमें आ जाते थे और

ातके अक्षर-अक्षर जोडकर शब्द बनते चले जाते थे। रातके समय काम नेके लिए इन हाथोंकी दोनो हथेलियोंपर लाल और हरे शीशे लगी छो ी-छोटी लालटेनें इस प्रकार लगा देनेका प्रबन्ध था कि हाथ अपने नेकी गोल परिधिमे किसी भी अवस्थामे हो, लालटेने सीधी जलती ी थीं।

बलवन्त सिंह नामक एक खूबसूरत जाट नौजवान अफसर सीमाफोर नियत था। एक हाथमे तिपाईपर चढी बडी दूरबीनके एक सिरेको थामे (दूसरे हाथसे लीवरोंको घुमाते हुए वह लखनऊकी तात्कालिक स्थितिके मे मुँहसे बोलता रहता था और उसके पीछे खडी एक अगरेज लडकी शब्दोको पेसिलसे कागजपर उतारती जाती थी।

नवम्बरकी एक शीतोष्ण रातको, जब कि सारा लखनऊ बुरी तरह का हुआ था, दोनो ओरसे ताक-ताककर गोलियाँ चलाई जा रही थीं, ाफोर अपना कार्य अबाधगतिसे कर रहा था। लालटेनकी हल्की नीमे अगरेज लडकी कागजपर फुरतीके साथ पेंसिल चला रही थी और वन्त सिंह बोलता जा रहा था :

"आलमबागका दक्खिनी सिरा.. सर हैवलॉक सूचना देते है... ान जाग रहे है.. अँधेरी रातमें हाथ सुझाई नहीं देता.. मगर हम ोंमें जोश है.. आलमबागका कोना-कोना हमारी नजरोंमे बसा हुआ है.. उधर ऊपर उठती हुई चौडी सीढियोंका सिलसिला है.. और उसके र वह सफेद और स्वच्छ इमारत, अँधेरी रातमें अपने प्रेमीसे मिलनेके र जानेवाली प्रेमिकाके फहराते हुए आँचलकी तरह दिखाई पड रही यह वही इमारत है, जहाँ नवाब वाजिदअली शाह अपनी नवीनतम ामके नाज बटोरनेके लिए आया करता था...हमें अनुभव होता है कि ज यही इमारत उत्सुक नेत्रोंसे हमारी ओर ताकती हुई हमारी प्रतीक्षामे श्चल खडी है—मानो किसी विस्तृत और छायादार बँगलेमे सफेद

फ्राक स्कर्ट पहने खड़ी कोई अँगरेजी बाला अपने प्रेमीको संकेतोंसे बुला रही हो..."

लडकीने पेंसिल हाथसे रख दी और घूमकर तने हुए स्वरमें बोली, "क्या तुम्हें निश्चय है कि यह सब सर हैवलॉक कह रहे हैं ?"

बलवन्त सिंहने धाराप्रवाह स्वरमें कहा, "क्यों, क्या इसमें उन्होंने कोई खराब बात कह दी है ?.. लिखो जी, नहीं तो मैं सब भूल जाऊँगा.. !"

उसी समय एक सनसनाती हुई गोली बेली गार्डकी ओरसे आई और बलवन्त सिंहके सिरके ऊपरसे निकल गई। उसका सिर थोड़ा नीचेकी ओर झुका और वह बोला, "श्‌श्‌.. लिखो...सिपाहीकी कल्पना दो ही चीजोंमें दौड़ती है : युद्ध या कामिनी...समझी ? अब लिखो.. सर हैवलॉक कहते है...हाँ.. कहते हैं कि हम अपनी राइफलोंसे इस तरह चिपटे हुए खाइयोंमें लेटे है, जैसे अमावस्याकी रातमें थेम्स नदीके किनारे कोई मन-चला सिपाही, अपनी ग्रामीण प्रेयसीके काले व चमकीले केशोंकी कल्पना करता हुआ, यूनाइमसकी झाड़ीको छातीसे चिपटाये ज़मीन सूँघ रहा हो.. "

डाक्टर फ्रेयरकी बेटी, मिस एलिसने फिर पेंसिल रख दी और बोली, "मिस्टर सिंह, मुझे इसमें बहुत अधिक सन्देह है कि यह वाक्य भी सर हैवलॉकका बोला हुआ है, जो आपने अभी-अभी कहा है।"

"उँह, !" बलवन्त सिंहने जमीनपर पैर पटकते हुए कहा, "सर लॉरेंसने ठीक कहा था कि लड़कियोंके बसकी कोई भी सैनिक-सेवा नहीं है। आपको जो बोला जा रहा है उसका अर्थ समझनेकी क्या जरूरत है ? समझमें नहीं आता कि आपको सर हैवलॉकके इन उद्गारोंसे क्या आपत्ति है !"

मिस एलिस क्रोधसे नथुने फुलाते हुए बोली, "ऐसा मालूम होता है कि आप मोर्चेकी रिपोर्ट नहीं दे रहे हैं, बल्कि कोई प्रेम-कथा पढ़ रहे हैं।"

बलवन्त सिंह लीवरसे हाथ हटाता हुआ बोला, "इससे मालूम होता है कि आपको प्रेम-कथाओंसे भी कोई आपत्ति है ?"

मिस एलिसने प्रश्नको टालते हुए कहा, "ड्यूटीपर आपको अपने उस मित्रकी तरह मुस्तैद रहना चाहिए, जो दिनके समय यहाँपर काम करता है, क्या नाम है उसका...टीकाराम।"

बलवन्त सिंह तुरन्त तत्पर होकर बोला, "मैं अभी आपका यह सन्देश जनरल हैवलॉकको पहुँचाता हूँ. " और मिस एलिसने घबराकर देखा कि वह नियमानुसार लीवरोको दबाने लगा और यन्त्रके हाथ एक-एक क्षणके लिए भिन्न-भिन्न स्थितिमें ठहरकर कुछ सूचना देने लगे।

मिस एलिसने झपटकर उस हाथको पकड़ लिया, जो लीवर दबा रहा था और बोली, "हाँ, हाँ, यह क्या करते हो! सर हैवलॉक मेरे बारेमें क्या सोचेंगे!"

"क्यो, वही सोचेंगे, जो मैं सोचता हूँ, जो नियम एक सिपाहीके लिए है, वही दूसरेके लिए है..."

सहसा उसी समय ज़मीन थर्रा गई। एक भारी धमाका हुआ और बलवन्त सिंहने देखा कि बागकी ओर वाली दीवारका मलबा हवामें उछलकर उड़ा। उसके बीच-बीचमें धुएँका गुब्बार तेज़ हवाके साथ इधर-उधर छितराने लगा...और फिर दूसरा धमाका...तीसरा...

मिस एलिस जीनेकी तरफ दौडी। पीछे-पीछे बलवन्त सिंह लपका लेकिन जीनेके पास पहुँचकर वह रुक गया। उसे अपनी ड्यूटीपर ही जमे रहना चाहिए, चाहे कौवेका घोसला ही तोपके गोलेसे क्यो न उड़ जाये।

रेजीडेंसीके भीतर उसने झाँककर देखा। धुँआँ भीतर तक फैल गया था। पुरुषोकी काली-काली छायाएँ तेज़ीसे इधर-उधर दौड़ती हुई दिखाई दे रही थीं। बंगाली तोपखानेके सिपाही उस दरारकी ओर दौड़ते दिखाई दे रहे थे, जो गोलोंके प्रहारसे टूटकर गिर पड़ी थी और जिसकी राह धुँआँ भीतरकी ओर उबल-उबलकर आ रहा था। रेजीडेंसीमें जहाँ-तहाँ

छोटे-छोटे लेप-पोस्ट लगे हुए थे और उनमेसे अधिकाश इस धमाकेके कारण बुझ गये थे ।

बलवन्त सिहने दूरबीनमे ऑख गड़ाकर देखा । क्रातिकारियोंके कुछ सैनिक बेली गार्डके दरवाजेमेसे भागते हुए दिखाई पड़ रहे थे । अरे, तो क्या रेजीडेंसीमे भी विद्रोह हो गया है ! कौन है ये लोग ? क्यों भागे जा रहे हैं ? वह फिर भागकर जीनेके ऊपर पहुँचा । उसी समय उसे ऐसा लगा मानो कोई तेजीके साथ जीनेपर चढता चला आ रहा है ।

जब आगन्तुक बुर्जीके फर्शपर हाथ टेककर, उछलकर ऊपर आ गया, तो बलवन्त सिहने उसकी ओर आश्चर्यसे देखकर कहा, "कौन, टीकाराम ?"

"हॉ," टीकारामने कहा । उसका मुँह धूल और गुब्बारसे भरा हुआ था । पलकोंके बाल भी धूलमे अट गये थे । बदनके कपड़े जहॉ-तहॉसे फटे हुए थे । बायें कन्धेपर एक रस्सा था, जो बीसियों घेरोंमे मुड़ा हुआ था । हाथोंमे राइफल दिखाई दे रही थी । आखें भावनाकी तीव्रताके कारण चमक रही थीं । लालटेनके मद्धिम प्रकाशमे वह भूत-सा दिखाई दे रहा था ।

"क्या बात है ?" बलवन्त सिंहने पूछा ।

टीकारामने ऑखोंको और भी चमकाकर कहा, "बस, अब मामला तन्तपर आ गया है । फिरगियोंका सफ़ाया समझो । अब यह सफेद प्लेग हमारी धरतीपर से उठ जायेगा । हमें इनके साथ नहीं मरना है । मरेंगे, तो अपने उन साथियोंके साथ मरेंगे, जिन्होने आजादीका झंडा उठा रखा है । चलो, देर न करो. ....!"

क्षण भरमे बलवन्त सिंह सारा मामला समझ गया । हतबुद्धि-सा वह बोला, "क्या अपने मालिकोंको दगा दे रहे हो !"

टीकारामने तेज स्वरमे कहा, "क्या दकियानूसी बाते करते हो ! अरे, ये कभी अपने हुए हैं, जो आज होंगे ? जो तनख्वाह तुम्हे मिलती है वह क्या इनके देशसे आती है ? ये हम लोगोंको ही लूटते है,

और जब हम भूखों मरने लगते हैं, तो हमारे बच्चोंको फौजमें भरती करके हमारे मालिक बन जाते हैं। वाह! बहुत बढिया मिल्कियत है! हमारा धर्म, ईमान, सब इन लोगोंने नष्ट कर रखा है। यह नई राइफल देखी है.... .एनफील्ड है इसका नाम। इसके कारतूसोंमें गाय और सुअरकी चरबी.. "

"झूठ है!" बलवन्त सिंहने चिल्लाकर कहा, "यह देशद्रोहियोंकी मनगढन्त है..."

"तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है।" टीकारामने आगे बढते हुए कहा, "देशभगतोंको देशद्रोही बताते हो! फिरगियोंका रग चढ गया है। ठीक है, वह मिसिया रात भर पढाती होगी...शास्त्रोंमें ठीक कहा है: कामके वशीभूत होकर मनुष्य सीधेको उल्टा और उल्टेको सीधा समझने लगता है. .अरे, वह तो चकमक है चकमक! किसके फेरमें पड़े हो! वह तो किसी फिरगीको अपना भरतार बनायेगी, और तुम खड़े टापा करोगे। 'दुविधामें दोनों गये, माया मिली न राम। धिक्कार है तुम पर. अरे, सारा देश उबल रहा है और तुम यहाँ ठढा पानी पी रहे हो!"

"यह बकवास बन्द करो।" बलवन्त सिंहने तीव्र स्वरमें कहा। "दोस्तीके नाते इतना सह गया। अब कुछ कहा, तो अच्छा नहीं होगा।"

टीकाराम मस्तूलकी ओर बढा। उसने कहा, "क्या मालूम था कि तुम्हारे दिलमें देशका जरा भी दर्द नहीं है। रेजीडेंसीसे सैकडों बहादुर निकलकर चले गये है। पच्चीसवीं पलटनके कप्तान एडरसन अपनी टुकडी लेकर दरारपर पहुँच गये, नहीं तो सब निकल जाते। मै यहाँसे उतरकर जा रहा हूँ। सोचा था कि. ."

"मै तुम्हें नहीं जाने दूँगा," बलवन्त सिहने उसका रास्ता रोकते हुए कहा। "सिपाहीके लिए दगा देना सबसे बडा पाप है।"

पलभरमें टीकारामने अपनी राइफल सीधी कर ली और उसकी नाल बलवन्त सिंहकी छातीसे अडा दी। तमककर व्यग्यपूर्ण स्वरमें वह बोला,

"ओह, गुलामी इतनी गहरी पैठ गई है! उस मिसियाकी बाते याद आती होगी! हमारी क़वायदमे देशद्रोहियोकी सजा मौत होती है। चुपचाप अलग हट जाओ, नहीं तो मुझे आज एक मित्रके लहूसे हाथ रगने पड़ेगे।"

"बहुत पुण्यका काम करोगे!" बलवन्त सिहने तड़पकर कहा, "जब धरती थर्राती है, तभी तुम्हारे जैसे लोगोके कदम डगमगाने लगते है। तुम्हे क्या मालूम भूचाल क्या होता है। विद्रोहका नाम क्रान्ति नही है। बलपूर्वक पुरानी व्यवस्थाको नई व्यवस्थामे बदल देनेका नाम क्रान्ति है। पुरानी व्यवस्थाके स्थानपर उससे भी पुरानी व्यवस्था लानेका स्वप्न देखना असफलताका पाट पैरोमें बाँधकर खाईको कूदनेके समान है। तुम लोगोमे से किसीको भी नहीं मालूम कि इस उखड़-पुखडके बाद क्या आना है? कहाँ है वह देश, जिसकी भक्तिके गीत गाते हो? क्या ये नवाब देशभक्त है जो ग़रीबोंकी बहू-बेटियोको सरे-आम हरण करके अपने अभेद्य महलोमे ले आते है? क्या ये महाजन देशभक्त है, जो रात-दिन किसी-न-किसी भेड़को मूँड़नेकी टोहमे रहते है? क्या ये किसान और मजदूर देशभक्त हो सकते है, जिन्हें अपनी मेहनतके फलका आधा-पौना भाग सदा अपने देशभक्त मालिकोंकी भेट चढ़ाना पड़ता रहा है, और आगे भी पडता रहेगा? यह विचित्र क्रान्ति है, जिसके बाद भेड़ियोंको शिकार भी मिलेगे और मेमनोंके प्राण भी बचे रहेंगे!"

"क्यो नही बचे रहेंगे?" टीकारामने धमाकोंकी ओर कान न देकर ऊँचे स्वरमे कहा, "सम्राट् बहादुर शाहने कह दिया है कि अब कोई जोर-जुल्म नही होगा...किसी पर अत्याचार नही किया जायेगा..." इसपर बलवन्त सिंह मुँह बिचकाकर हँस दिया। चिढ़कर टीकारामने कहा, "मन मे वासना है और देशभक्तोपर लाञ्छन लगाते हो!"

उसने कन्धेपर से रस्सा उतारा और उसका एक सिरा मस्तूलकी जडमें बाँध दिया। उसका साथी देखता रहा। उसने एक हाथमे राइफल थामी

और नाल सीधी करके बलवन्त सिहको घूरकर कुछ पल देखता रहा, फिर दूसरेसे रस्सेको बुर्जाके बाहरकी ओर खोल दिया। अपने मित्रकी ओर मुँह करके वह बोला, "तुम उन लोगोंमेंसे हो, जो बालोकी एक जूँ मारनेसे पहले सत्तर जूँओको मारना चाहते है। अगर तुम मेरे मित्र न होते, गोली मार देता..." उसने आगे बढकर मस्तूलके बराबरमे रखी बलवन्त सिहकी राइफल उठा ली और उसमेसे कारतूस निकाल लिये, और उसे उसके देखते-ही-देखते बुर्जाके बाहर फेक दी। फिर वह रस्सेकी ओर चला।

बलवन्त सिंह उसे रोकनेके लिए आगे बढा। टीकाराम घूमकर खडा हो गया। आँखोसे चिनगारियाँ छोडते हुए वह बोला, "अभी मै निश्चय नहीं कर पाया हूँ कि मित्रता बडी होती है या देशभक्ति। इसलिए . ." उसने अपनी राइफलको नलीकी ओरसे पकडकर एक ज़ोरका आघात बलवन्त सिहके मस्तक पर किया। उसकी आँखोके आगे अन्धेरा-सा छाया और वह एक अस्पष्ट-सी चीखके बाद फर्श पर गिर पडा।

टीकाराम एक क्षण तक स्तम्भित-सा खडा रहा। फिर आगे बढकर उसने अपने मित्रके सिरके ज़खमको देखा, और तब एक ही छलाङ्गमे वह रस्सेकी उस गाँठके पास आ गया, जो मस्तूलसे बँधी हुई थी। ज़ीनेकी ओरसे किसीके तेजीके साथ ऊपर आनेकी आहट आ रही थी। पलक मारते ही वह रस्सेके सहारे लटककर नीचेके अन्धकारमे लोप हो गया।

जीनेसे मिस एलिस ऊपर आई। "मिस्टर सिह...हमने स्थितिपर अधिकार कर लिया है...मिस्टर सिह, आप कहाँ है?"

ऊपर आकर मिस एलिसने चारो ओर देखा, मगर मिस्टर सिंहका कहीं पता न था। फिर उसकी निगाह फर्श पर गई और अनजाने ही उसका हाथ लालटेनपर पहुँचा। उसे उठाकर उसने बलवन्त सिंहके अचेत शरीरको देखा, जो इस समय कुलमुलाकर अपनी चेतना प्रकट कर रहा था। एक चीख मिस एलिसके मुँहसे निकली और वह घुटनोके बल फर्शपर बैठकर उसका मुँह देखने लगी। फिर उसकी नाकको हाथ लगाया,

नब्ज देखी। सब ठीक था। किन्तु बलवन्त सिंहके चेहरेपर मुरदनी छा रही थी। एलिसके बायें हाथमें कोई चीज थी, जिसे उसने फ़र्शपर रख दिया। एक फीतेके सहारे पानीकी जो बोतल उसकी बगलमें लटकी हुई थी उससे उसने थोडा-सा पानी चुल्लूमें लेकर बलवन्त सिंहके मुँह पर छिड़का...।

जब बलवन्त सिंहकी आँखें खुलीं, तो उसने अनुभव किया कि उसका सिर मिस एलिसकी गोदमें रखा था और वह रूमालसे हवा कर रही थी। तोपोंकी गड़गड़ाहट और गोलियोंकी दनदनाहट अब रुक गई थी। कुछ देरके अन्तरसे जब-तब कोई आवाज़ आ जाती थी।

बलवन्त सिंहको आँखें खोलते देखकर मिस एलिसने पूछा, "क्या मामला है? आपको यह क्या हो गया है? अब क्या हाल है?"

बलवन्त सिंह सहसा सिर उठाकर इधर-उधर देखा। फिर कुछ समझकर उसने अपना सिर दोबारा मिस एलिसकी गोदीमें रख लिया। क्षीण स्वरमें उसके मुँहसे निकला, "कुछ नहीं, मिस एलिस। मालूम होता है किसी पत्थरका छिटका हुआ टुकडा मेरे सिरपर आ लगा था। अब मैं ठीक हूँ" और उसने उठनेकी चेष्टा की।

"नहीं, नहीं, आप लेटे रहिये," मिस एलिसने अनुरोध करते हुए कहा। "देखिये तो आपके चेहरेपर कितना पीलापन छा गया है! क्या मैं पापाको बुलाकर लाऊँ?"

"नहीं, कोई आवश्यकता नहीं," वह बोला। "मरहमपट्टीकी जरूरत नहीं पड़ेगी। पानीका भींगा कपडा बाँधनेसे काम चल जायेगा।" और उसने अपनी जेबसे रूमाल निकालकर दिया।

मिस एलिसने अपना रूमाल भी निकाल रखा था, लेकिन वह रूमाल उसने ले लिया। इसके बाद उसने पानीमें भिगोकर रूमालको उसके सिरपरा बाँध दिया। फिर कहा, "आप नाश्ता कर लीजिए। कुछ पेटमें पड़ेग तो जान आयेगी।"

"धन्यवाद !" बलवन्त सिंहने कहा। मिस एलिसने वह टिफन उसके सामने रख दिया, जो वह साथ लेकर आई थी।

एक बिस्कुट खाते हुए बलवन्त सिंहने पानीका एक घूँट भरा और बोला, "मिस एलिस, आप अपनी ड्यूटी छोड़कर फालतू काम न किया कीजिये।"

"मैने फालतू काम क्या किया है ?" मिस एलिसने आश्चर्यसे चौंक-कर पूछा।

"यही कि मेरे लिए नाश्ता ले आना, मेरा सिर प्यारसे गोदीमें रख लेना.. मेरे सिरपर. " उसने रूमालका बचा हुआ भाग आगेको करके देखते हुए कहा..."अरे, यह तो रूमाल भी आपका ही है ! ठीक, ये सब फालतू काम हैं। आप अपनी ड्यूटीपर अपने पापाकी तरह मुस्तैद रहा कीजिये।"

मिस एलिसने अपना निचला होठ भींचा। फिर बोली, "कर्त्तव्यके अर्थ तो बहुत विस्तृत हैं, मिस्टर सिंह ! यह आपको किसने बता दिया कि ये सब काम मेरी ड्यूटीमें नहीं हैं ?"

बलवन्त सिंहने दूसरा बिस्कुट कुतरते हुए कहा, "तब तो ठीक है। मालूम होता है कि प्रेम करना भी मनुष्यकी ड्यूटी है। बिना यह कर्त्तव्य पालन किये वह भगवान्‌की राजसभामें उत्तरदायी होता है—क्यों मिस एलिस ?"

"आप बहुत हँसोड हैं," मिस एलिसने पहली बार लज्जित होते हुए कहा, "मिस्टर सिंह, मै अब आपसे बाते नही करूँगी।"

"यह ठीक है," बलवन्त सिंह होंठो-ही-होंठोमें मुसकराकर बोला। मेरा भी यही ख्याल था कि आपको अपनी ड्यूटीके सिवा फालतू काम कोई नहीं करना चाहिए। चाहे वह काम बाते करना ही क्यो न हो।"

"जब आप जैसे बातूनी मित्र हो जाते है, तो बाते भी करनी ही पडती हैं," मिस एलिसने कहा।

बलवन्त सिंहने एक बिस्कुट और खाया। फिर टिफ़न-बॉक्सको बन्द करता हुआ बोला, "मिस एलिस, क्या आप बता सकती हैं मित्रता क्या होती है?"

मिस एलिस पहले तो इस अप्रत्याशित प्रश्नसे चौंकी, फिर हँस पड़ी। बोलीं, "मिस्टर सिंह, आप बहुत चतुर हैं। यह प्रश्न पूछकर आप मुझे दृढतासे बाँधना चाहते हैं। आप चाहते हैं कि मैं मित्रताकी कोई आदर्श परिभाषा दूँ और स्वयं ही उससे बँध जाऊँ, बहुत अच्छी बात है—मित्रता उस पारस्परिक सम्बन्धका नाम है, जो दृढ़से दृढ़ प्रहार होने पर भी इस्पातकी भाँति अखण्ड रहता है, और जरा-सी ठेस लगनेपर शीशेकी तरह टूट जाता है—क्या यह पर्याप्त है?"

बलवन्त सिंहने दूरबीनके शीशेमेंसे झाँककर अंधकारके पार कुछ देखनेकी चेष्टा की और उसमें असफल होकर मिस एलिसकी ओर स्थिर दृष्टिसे देखता हुआ बोला, "आप अपने प्रति बहुत चेतन हैं, मिस एलिस, और आपकी परिभाषा बहुत नपी-तुली है। उसके भीतर एक चेतावनी छिपी हुई है। 'जरा-सी ठेस लगनेपर शीशेकी तरह टूट जाता है' किन्तु टूट जानेपर उस दरारके किनारोंकी ओर आपका ध्यान नहीं गया, जो एक दूसरेकी ओर हसरतभरी निगाहोंसे देखते हुए कहते रहते हैं: 'हमारे कटे-फटे अवयव एक दूसरेकी कमियोंको कितनी निकटतासे पूरा करते थे!"

भावोंकी उत्तेजनासे त्रस्त मिस एलिस खड़ी हो गई। सीमाफोरके अफसरके निकट आकर उसने लालटेनके मद्धिम प्रकाशमें उसकी चमकती हुई आँखोंको देखा—फिर सहसा ही दोनोंके हृदय एक दूसरेसे मिल गये। गोलोंकी दहाड़ोंमें उन्होंने एक दूसरेकी धड़कनोंको कितनी ही देर तक अनुभव किया।

भावावेशमें बलवन्त सिंहने कहा, "कल हमारे देशका सबसे बड़ा त्योहार है। कल हमारे देशके घर-घरमें दीपक जलेंगे। जिस दिनसे इन दीपकोंने जलना आरम्भ किया उस दिनसे नित्य उनमें एक नवीन ज्योतिका

उदय होता है—मिस एलिस, इस पर्वके स्वागतमे हमारे हृदयोंने भी दो दीपक जलाये है। कहो कि इन दीपकोका प्रकाश भी कभी धूमिल नहीं होगा।"

धीमे और हर्षित स्वरमे मिस एलिसने कहा, "नहीं, यह ज्योति कभी नही बुझेगी।"

रात भर धड़ाके होते रहे, गोलियाँ चलती रहीं, दीपक जलते और बुझते रहे, मगर कौवेका घोसला अपने हृदयमे दो दीपकोको लिये सुरक्षित बना रहा, और सुबहके समय बालरविने प्रसन्नतासे उसके मस्तकको चूमा। इस बीच सीमाफोरका काम नहीं के बराबर चला। जनरल हैवलॉक मौक़ेकी इन्तजारमें थे कि आलमबागमे छिपे हुए क्रान्तिकारियोको सहसा ही आक्रमण करके चकित कर दिया जाये। मगर वह अवसर उस दिन हाथ नहीं लगा। अगले दिन तीसरे पहर उन्होने सीमाफोरपर सन्देश भेजा :

"नदीके पार बादशाह बागमें विद्रोही बडी संख्यामे जमा हो रहे है..."

वाक्य एक-एक शब्द करके बलवन्त सिहके मुँहसे निकला, और मिस एलिसने शीघ्रतासे पैडपर पेंसिल चलाई। सन्देश आगे चला :

"रैडन बैटरीकी तोपोका मुँह लोहेके पुल की ओर रहे...विद्रोहियोको लोहेके पुलपर अधिकार करनेसे रोको. ....विराम।"

"सन्देह मिल गया...विराम।" इधरसे बलवन्त सिहने उत्तर दिया।

"मेजर मारटिन गब्बिन्सके निवास-स्थानकी ओर मेजर ऐशटनको, उनके दस्तेके साथ भेजो.. समाचार मिला है कि विद्रोही उस ओरसे भी भीषण हमला करनेके प्रयत्न कर रहे है ..विराम।"

"सन्देश मिल गया...विराम।"

"कोई समाचार ?.. विराम।"

"हाँ, इधरसे उत्तर गया। "सातवी बंगाल सेनाके कर्नल रेडक्लिफ युद्धमें काम आये.. विराम।"

दूसरी ओरके सीमाफोरपर शोकका चिह्न बना और बलवन्त सिंहने मुँहसे कहा, "लिखो : सर हैवलॉक शोक प्रकट करते हैं कि जिस बहादुरको कभी किसी नारीका स्नेह प्राप्त नहीं हुआ वह स्नेहके अभावमें ही आखिर मर गया...।"

मिस एलिसने हँसकर पेंसिलसे केवल इतना लिखा : 'शोक प्रकट करते हैं। लेकिन बलवन्त सिंहका उत्साह अब बढ़ने लगा था : "हाँ, लिखा?. अब आगे लिखो, पूछते हैं कि डाक्टर फ्रेयरकी वह प्यारी-प्यारी बच्ची तो सकुशल है या नहीं ?...क्या जवाब दूँ ?"

मिस एलिसने पेंसिल पेटीमें लगाकर उठते हुए कहा, "कह दो मर गई है।"

बलवन्त सिंहने सीमाफोरपर सन्देश भेजा : रेजीडेंसीके वीरगति प्राप्त वीरोंकी संख्या पिछले चौबीस घन्टोंमें छियासी।"

शोकका चिह्न दोबारा बना और बलवन्त सिंहने मुँहसे कहा, "लिखो : कहते हैं, मिस एलिसकी इस असमयमें ही मृत्यु हो जानेसे सर हैवलॉकको बहुत रंज पहुँचा। कहते हैं कितनी प्यारी लड़की थी ! 'मुझे भूलना मत'के फूलकी तरह उसका चेहरा हमारी आँखोंके सामने घूम रहा है···"

"कहाँ घूम रहा है ?" मिस एलिसने बलवन्त सिंहकी पीठके पीछेसे देखते हुए कहा। "वहाँ तो क्रॉसका चिह्न बना हुआ है।"

उसकी आँखोंके आगे एक हाथकी दूरबीन लगी हुई थी।

बलवन्त सिंह उसकी बातका उत्तर देनेको ही था कि उसने देखा कि दूसरी ओरके यन्त्रने क्रॉसका चिह्न समाप्त किया। लीवर दबाते हुए उसने अगला समाचार दिया : "एक सौ सत्तावन सैनिक रेजीडेंसी छोड़कर शत्रुओंमें जा मिले.. विराम।"

एक क्षण तक दूसरी ओरका यन्त्र निश्चल रहा। इसके बाद उसपर सङ्केत बनने लगे और बलवन्त सिंह बोलने लगा : "लिखो : शेष... हिन्दुस्तानी.. सिपाहियों...को.. कानपुरी तोपखानेके आगे वाले मोर्चे

पर रखा जाये. अगर दग़ा.. करें.. तो बिना हिचक. .उन्हें...तोपसे.. उडा दिया जाये...विराम।"

मिस एलिसने वहीं खड़े-खड़े यह आर्डर लिखा। उधरके यन्त्रने पूर्ण विरामका सङ्केत दिया और बातें समाप्त हो गईं। लेकिन जब बलवन्त सिंहका मुँह मिस एलिसकी ओर हुआ, तो वह उसे देखकर चौंक गई। उसके मुँह पर हवाइयाँ उड रही थीं।

चकित होकर मिस एलिसने पूछा, "क्यों, कुछ दुःखद समाचार है क्या ?"

बलवन्त सिंहने फटी आँखोंसे मिस एलिसके चेहरेकी तरफ इस तरह देखा, जैसे उसे उसका चेहरा दिखाई न दे रहा हो। फिर उसके मुँहसे निकला: "मिस एलिस, कानपुरी तोपखानेसे दो सौ फीटकी दूरीपर विद्रोहियोंकी तोपें लगी हुई है! इन दोनों तोपखानोके बीचमें आगका समुद्र बहता है। क्या सर हैवलॉक थोड़ेसे हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके दगा दे जानेपर बाक़ी सब देशी सिपाहियोंको उस आगके समुद्रमे धक्का देकर मार डालना चाहते हैं!"

यह सुनकर मिस एलिस कुछ विचलित होते हुए बोली, "सिपाहीका काम योजनाओंपर विचार करना नहीं होता। हो सकता है सर हैवलॉकने इसमें कोई अच्छाई समझी हो...खैर, अब हमें शीघ्र ही ये सब आर्डर करनल औट्रमके पास पहुँचा देने चाहिए। यह निश्चय है कि वह तुम्हें उन लोगोंके साथ तोपखानोंके बीचमें नहीं रख सकेंगे। उन्होंने ऐसा किया.. तो ." मिस एलिसने सीधी दृष्टिसे बलवन्त सिंहकी ओर देखकर स्वरको धीमा करते हुए कहा, "मैं अपनी जान खो दूँगी।"

बलवन्त सिंह धीरे-धीरे पलकें झपकाता हुआ मिस एलिसको वे सन्देश लिये जीनेसे उतरते देखता रहा। गोलाबारी फिर आरम्भ हो गई थी और एक दो भूली-भटकी गोली कौवेके घोंसले तक पहुँचकर उसका एकाध तिनका ले उडती थी। एक खम्भेसे पीठ लगाकर वह बैठ गया।

गोलोंके धड़ाकोंके स्वर उसके कानोंमें आ-आकर एक चोट-सी दे जाते जो सीधी उसके हृदयमें उतरती चली जा रही थी। उन गोलोंमेंसे आगकी भीषण चिनगारियाँ निकलकर मानो एक दरियामें बदलती जा रही थीं और उस दरियामें सैकड़ों हजारों भारतीय सैनिक डूबते-उतराते विलीन होते जा रहे थे।

प्रयत्न करके बलवन्त सिंहने सिरको एक झटका दिया और उन कल्पनाओंको दूर हटानेकी चेष्टा की, जो किसी सैनिकको निर्बल बनाती है। किन्तु बदलते हुए विचारोंने टीकारामकी सूरत सामने लाकर खड़ी कर दी। वह क्रोधमें भरकर चिल्ला रहा था : "अगर तुम मेरे मित्र न होते, तो मैं तुम्हें गोली मार देता...अभी मैं निश्चय नहीं कर पाया हूँ कि मित्रता बड़ी होती है या देशभक्ति...इसलिए...उसने अपनी राइफलकी नली उठाकर एक ज़ोरका आघात बलवन्त सिंहके मस्तकपर किया।

बलवन्त सिंहका हाथ अनजाने ही अपने घावपर फिर रहा था। जहाँ अब एक गुम्मड़ निकल आया था। टीकारामकी मूर्ति लोप हो गई थी। आँखें मुँद गई थी और मिस एलिसकी भव्य प्रतिमा अंधकारके पटपर प्रकाशके पुञ्जकी भाँति उभर आई थी। मुसकराकर वह कह रही थी : "...मित्रता उस सम्बन्धका नाम है, जो दृढ-से-दृढ़ प्रहार होने पर भी इस्पातकी भाँति अखड रहता है, और जरा-सी ठेस लगनेपर शीशेकी तरह टूट जाता है..."

सहसा पीछेसे विकट प्रभंजन चलना आरम्भ होता है और टीकाराम सहसा ही दौड़ता हुआ आता है...एक झटकेके साथ रुककर वह मिस एलिसको देखता है...फिर बलवन्त सिंहको घूरकर कहता है : ".. इस मिसियाकी बातें याद आती होंगी?...हमारी क़वायदमें देशद्रोहियोंकी सजा मौत होती है...मनमें वासना छिपी है और देशभक्तोंपर लाञ्छन लगाते हो!...चुपचाप अलग हट जाओ, नहीं तो मुझे एक मित्रके लहूसे हाथ रंगने पड़ेंगे...',

किन्तु मिस एलिस पुकारकर कह रही है : "मिस्टर सिंह.. !"

टीकाराम रोषसे उसकी ओर उँगलीका सकेत करके कहता है : "ठीक है । यह मिसिया रातभर पढ़ाती होगी . अरे, यह तो चकमक है चकमक ! यह तो किसी फिरंगीको अपना भरतार बनायेगी धिक्कार है तुमपर !... सारा देश उबल रहा है और तुम यहाँ ठढा पानी पी रहे हो । जो तनख्वाह तुम्हें मिलती है वह क्या इनके देशसे आती है ?. ये हम लोगोंको ही लूटते है और जब हम भूखो मरने लगते हैं, तो हमारे बच्चोंको फौजमें भरती करके हमारे मालिक बन जाते हैं.. वाह ! क्या बढ़िया मिल्कियत है.. ।"

मिस एलिसने फिर विनम्र-वाणीमें पुकारा : मिस्टर सिह !"

बलवन्त सिंहके मुँहपर पसीना आ रहा था । उसने आँखे खोलीं और देखा सामने मिस एलिस खडी थी, वह कह रही थी : "मिस्टर सिंह, क्या सपना देख रहे हो ? देखते नहीं संध्या हो गई है । सूरज छिप गया है । टिफन ले आई हूँ करनल औट्रमने कुछ सन्देश दिये हैं । इन्हें तुरन्त सर हैवलॉकको पहुँचाना है...पहले इन्हें पहुँचा दो, फिर खाना खायेंगे.. "

तत्पर सैनिककी भाँति सावधान होकर बलवन्त सिह उठकर खड़ा हो गया । अभी तक उसका माथा स्मृतियोंसे भन्ना रहा था । यन्त्रकी भाँति उसके हाथने आगे बढ़कर करनल जेम्स औट्रमके उस सन्देशको देखा । स्याही और कलमके अभावमे वह पेंसिलसे लिखा गया था :

"आज्ञानुसार मोर्चे बना दिये गये हैं । रास्ता साफ होते ही सूचना दीजिये. .स्त्रियों तथा बच्चोंको यहाँसे निकालकर इलाहाबाद पहुँचाना जरूरी है ..आजकी अन्धेरी रातका उपयोग किया जाये, तो कैसा ? आज इन लोगोंका कोई बडा त्योहार है...उनका ध्यान हमारी ओर नहीं रहेगा । बच निकलनेका अच्छा अवसर है । शीघ्र सूचित कीजिये । हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके बारेमें जो आर्डर आपने दिया था वह पूरा करना बड़ा खतरेका

काम है...इस अवस्थामे वे लोग सीधी बातको भी उल्टी सोच सकते है... यदि आवश्यकता समझे, तो आर्डरको फिरसे दोहराइये.. आजकी मृत्यु संख्या तिरेपन...औट्रम।"

एक दीर्घ निःश्वास बलवन्त सिंहके मुँहसे निकली। मिस एलिसने उसे लक्ष्य करके पूछा, "क्यों, क्या बात है?"

बलवन्त सिंहकी आँखें अलक्ष्य भावसे चमकीं। उसने कहा,, कुछ नहीं, मिस एलिस, सोचता हूँ कभी-कभी बड़े बड़े युद्ध व्यक्तियोंके बीचकी खाइयोंको किस विचित्रतासे पाट देते है, जिस तरह कोई भारी तूफान धरतीकी कुछ दरारोंको भर देता है, और कुछको खोल देता है!"

मिस एलिसने कहा, "मुझे रेजीडेंसीका वह फ्रासीसी कमाण्डर डूप्रे याद आता है। वह मर गया, मगर अपनी याद छोड़ गया! उसकी जाति-से हमारी जातिकी जन्मजात शत्रुता है। वह चाहता तो इस कष्टके समय आसानीसे हमारा साथ छोड़कर दुश्मनोंमे जा मिलता। मगर मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि फ्रासीसियोंका नैतिक आचरण इतना ऊँचा होता है।"

मस्तूलकी ओर बढ़ते हुए बलवन्त सिंहने कहा, "हमारी दृष्टिमें उन्हीं लोगोंका आचरण ऊँचा होता है, जो हमारे स्वार्थके लिए अपनी बलि दे देते है, किन्तु जब दूसरोंके स्वार्थके लिए अपनी बलि देनेका सवाल हमारे सामने आता है, तो हमारी देशभक्ति और जातिप्रेम कितनी दयनीयतासे आड़े आ जाते है.. !"

मिस एलिस हँसते हुए बोली, "तुम सचमुच दार्शनिकोंकी तरह बाते करते हो, मिस्टर सिह। मगर संसारमें जितने दर्शन है उनमें मानवताका दर्शन सबसे ऊँचा है..."

बलवन्त सिंहने लीवरको हाथ लगाया और बोला, "हाँ, यदि उसका उपयोग केवल अपने ही स्वार्थके लिए न किया जाये...मिस एलिस,

इस्पात कितना मजबूत होता है, शीशा कितना कोमल ! इन दोनोंके मेलसे मानवताका निर्माण होता है ।"

दूरबीनमें आँख लगाकर बलवन्त सिंहने एक बार उसे सारे लखनऊपर घुमाई और सहसा ही वह चौंक गया। मुँह फेर उसने मिस एलिससे कहा, "देखो, आज हमारा दीपकोंका त्योहार है। उसका सम्मान करनेके लिए हमारे पास दीपक नही है। जरा लालटेनकी बत्ती तेज कर दो।"

मिस एलिसने मुसकराकर अपने पास रखी लालटेनकी बत्ती बढा दी। बलवन्त सिहने सीमाफोरके दोनों हाथोपर लगी लालटेनोंको तेज किया और फिर एक बार हसरतसे लखनऊके उन वासियोंको देखा, जो नगरके अन्धकारपूर्ण वातावरणमें मानों अपने दीपकोंकी लौपर थिरक-थिरककर नाच रहे थे। कौन जाने इस दीपावलीमे कौन-सी ज्योति किस समय अपना तेल समाप्त हो जानेपर बुझ जाये !

बलवन्त सिंहने फिर दूरबीनमें झाँका। उन दीपकोंकी ज्योति उस प्रकार पक्तिबद्ध नहीं थी, जिस तरह शाति कालमें हुआ करती थी। दीपक जहाँ-तहाँ जुगनुओंकी भाँति चमक रहे थे लेकिन यह क्या ! उसने ध्यानसे देखा। कदम रसूलकी एक ऊँची मीनारपर लाल और हरी दो बत्तियाँ दिखाई पड़ रही थीं—ठीक सीमाफोरके यन्त्रकी तरह। यह क्या है ?

सहसा वे बत्तियाँ कुछ हिलीं। बलवन्त सिंहकी अभ्यस्त आँखोंने बनते हुए सकेतोंको पढ़ा :

"मै टीकाराम...मै टीकाराम.. विराम।"

कौवेके घोसलेके लीवर हिले। "मै बलवन्त सिह . विराम।"

"ज्यादा चोट तो नहीं आई ? ..विराम।"

"नही . विराम।"

"मारना नहीं चाहता था.. विराम।"

"जानता हूँ ..विराम।"

"काश, तुम हमारे होते...विराम।"

"तुम्हारा ही हूँ...विराम ।"

"सच... !" उधरसे संकेत आया। "विराम ।"

"हाँ...विराम..."

"सहायता दोगे ?...विराम ।"

"सुनो : इस त्योहारका लाभ उठाकर अगरेज लोग रेजीडेंसीको इस अंधेरी रातमें छोड़कर भागना चाहते हैं...हाँ, लोहेके पुलपरसे जायेंगे। भीतरके हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको तोपोंके गोलेसे उड़ा देना चाहते हैं... विराम ।"

"सच ! हे भगवान् !...विराम ।"

"सुनो : आलमबागपर कड़े दाँत हैं...रैडन तोपखानेका मुँह लोहेके पुलकी ओर है...सावधान !"

"हम करारा जवाब देंगे...विराम ।" टीकारामने संकेत दिया।

"सुबह होनेसे पहले-पहले कानपुरी तोपखानेको उडा दो...इसीके आगे हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको रखा जायेगा ..विराम ।"

"निश्चिन्त रहो...विराम ।"

"मारटिन गब्बिन्सके निवास-स्थानकी ओर यहाँ मेजर एशटनकी सत्ताइसवीं पैदल पलटनका मोर्चा लगाया गया है...सावधान !"

"तुम्हारी यह सेवा इस क्रान्तिके इतिहासमें गौरवसे सदा याद की जायेगी.. विराम ।" टीकाराम अपनेको उद्गार प्रकट करनेसे न रोक सका।

"व्यर्थकी बातोंकी तरफ ध्यान मत दो ..सुनो, अब रेजीडेंसीमें कुल यूरोपियनोंकी सख्या सात सौके लगभग रह गई है। हिन्दुस्तानी सिपाही दो सौ रह गये है...महीनेके तीसरे सप्ताह तक कानपुरकी ओरसे सर कोलिन कैम्पबेलके आनेकी सम्भावना.. "

मगर यह सन्देह कभी पूरा नहीं हुआ, बलवन्त सिंहके पीछेसे नारी-कंठका तीव्र स्वर सुनाई दिया : "मिस्टर सिंह...!"

अफसर एकदम घूम गया। लालटेनके तीव्र प्रकाशमें उसने देखा मिस एलिसकी भौहें चढी हुई हैं। उसके एक हाथमें छोटी दूरबीन है दूसरेमें राइफल है, जिसकी नली सन्देशग्राहक अफसरकी छातीकी ओर तनी हुई है।

"यह सीमाफोर विद्रोहियोंका था ?" मिस एलिसने कड़े स्वरमें प्रश्न पूछा।

मस्तूलके सहारे पीठ लगाकर बलवन्त सिंह मुसकराया। उसने कहा, "तो तुम सब जान गई! अच्छा हुआ, आज सारी दार्शनिकताका अन्त हो जायेगा. केवल वही तथ्य शेष रह जायेगा, जो व्यवहारमें चल सकता है। मिस एलिस, आपने ठीक समझा, यह विद्रोहियोंका सीमाफोर था। मैं टीकारामसे बातें कर रहा था।"

मिस एलिसने उसके हाथमें पकड़े हुए सन्देशके परचेको घूरकर देखा, "तुमने विश्वासघात किया है।"

"हाँ," बलवन्त सिंहने शान्तिसे उत्तर दिया, "उन लोगोंके प्रति, जो मानवताको दो जातियोंमें बाँटकर एकको तोपके मुँहसे उड़ा देना चाहते हैं. और उन लोगोंके विश्वासमें योग दिया है, जो नष्ट न होनेके लिए मुझसे अपने देशके प्रति विश्वासका मूल्य माँग रहे थे।"

"यही थी तुम्हारी मित्रता!" मिस एलिसने घृणासे होंठ सिकोड़कर और तीव्र स्वरमें पूछा।

बलवन्त सिंहने बडी दूरबीनके मुँहपर हाथ रखते हुए कहा, "मिस एलिस, मालूम होता है शीशेमें ठसक लग गई है...कितनी दयनीयताकी बात है कि कभी-कभी मानवताके दो श्रेष्ठ गुण साथ-साथ नहीं रह पाते! तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम मुझे गोली मार दो।"

भावोंकी तीव्रताको सहन न कर पानेके कारण मिस एलिस थरथर काँपने लगी। उसकी आँखोंमें घृणा, प्रेम, मर्मान्तक पीड़ा और कर्त्तव्यकी

कठोरताके चिह्न मिश्रित होकर दृष्टिकी परिधिको छोटा करने लगे। उसका दायाँ हाथ राइफलके ऊपर कसता चला गया। अंग-प्रत्यग धीरे-धीरे काँपना छोड़कर स्थिर होने लगे। छोटी दूरबीन हाथसे छूटकर फर्शपर आ रही...

"तुम्हे अभी साहस एकत्र करनेकी आवश्यकता है," बलवन्त सिंहने बड़ी दूरबीनकी ओर घूमते हुए कहा। "तब तक मै अपने मित्रसे बिदाई ले लूँ।" उसने दूरबीनके शीशेमे झाँका और उधर सावधानीका सन्देश भेजा।"

टीकारामने पूछा : "क्या बात हुई ? देर क्यो लगी ?...विराम।"

"कुछ नहीं, मित्र, तुमने कहा था न कि मेरी सेवाएँ इस क्रान्तिके इतिहासमें सदा याद रहेंगी..."

"हाँ, और आज रातको हम तुम्हारे कौवेके घोसलेको निश्चित रूपसे उड़ाने वाले थे। अब यह युद्धके अन्त तक अविचल खडा रहेगा, वचन देता हूँ...विराम।"

"धन्यवाद, मेरे मित्र, जहाँ तक हो कौवेके घोंसलेको बचाना क्योंकि इसमे मेरा दिल बसा रहेगा। अब मै यहाँसे हटाया जा रहा हूँ.. "

"ओह ! इतनी जल्दी. !"

राइफ़लका घोड़ा दबा और एक धाँयकी आवाज आकाशको भेदती हुई फैल गई। बलवन्त सिंहके हाथसे दूरबीन छूट गई और उसका शरीर तडपकर भूमिपर लोट गया। उसने एक-दो करवटें लीं, और बोला, "मिस..,एलिस...ओह ! इतना भी...नहीं सोचा...कि गोली सिपाही की. .छातीमें मारते है ! ओह !"

मिस एलिसके हाथसे राइफल छूट गई। वह तेजीसे आगे बढी और लालटेनको एक कडी ठोकर लगी। उसकी बढाई हुई ज्योति भभकने लगी और फर्शपर उसका तेल बिखरने लगा। मिस एलिस उस सन्देशवाहक सैनिक अफसरकी छातीपर औंधे मुँह गिरकर, फूट-फूटकर रो पडी।

बलवन्त सिंह कह रहा था : "कोई बात नहीं...अब यह ज्योति कभी नहीं बुझेगी. देखो, इस दरारके किनारे कितनी.. कितनी सफाईसे जुड गये है...! दरार ही मालूम नहीं होती.. ! मिस.. एलिस. अब . अब... विदा . !" और लालटेनकी भभकती हुई ज्योति सदाके लिए बुझ गई ।

टीकारामने अपना वचन पूरा किया । वह कौवेका घोंसला आज भी लखनऊकी ध्वस्त रेजीडेंसीके ऊपर सुरक्षित है । अंगरेज दीपावलीकी रातको रेजीडेंसी छोड़कर नहीं जा सके और कौवेके उस घोंसलेमे कई दिन और कई रातों तक मिस एलिसके आँसुओंकी ओस पडती रही ।

• लखनऊका ख़ज़ाना

सन् १८५५ ई० के आखिरी दिनोंका लखनऊ—

अंधेरी रात थी। कैसर बाग़के हरमकी पीली इमारतोंकी लम्बी कतारें एक ऐसे वीरान कब्रिस्तानकी कब्रोंकी तरह दिखाई पड रही थीं, जिनमे सोई हुई तितलियोंके नरम दिल असफल अरमानोंके पैने छुरोंसे छिदे पड़े हो। चारों तरफ बाग़ था, शान्त और निस्पन्द। नन्हीं-नन्हीं पत्तियाँ आपसमे कुछ चर्चा करनेके लिए जन्न-तत्र कुछ खडखडानेकी चेष्टा करतीं और उन खोजाओंको देखकर भयसे चुप हो जाती थीं, जो कन्धोंपर नंगी तलवारे रखे, इमारतोंमें जहाँ-तहाँ बेतरतीब घूमते हुए दिखाई दे रहे थे। बाग़की चारदीवारीके पार आकाशके वे झाँकते हुए तारे मात्र उस दृश्यके प्रत्यक्ष दर्शक थे, जो चारदीवारीके भीतर एक दूर अधेरे कोनेमें उपस्थित था।

एक मूर्ति काले लबादेसे अपने सारे बदनको छिपाये, अधेरेमें भूतकी तरह सीधी खड़ी थी। उससे कुछ हटकर, उसकी ओर मुँह किये एक पुरुष खड़ा था, जो किसी कारण हाँफ रहा था। इन दोनोंसे दूर, लेकिन इनकी ओरसे मुँह फेरे एक हब्शी खोजा, सफेद चमकदार तलवार कंधे पर रखे, पेडके तनेकी भाँति खडा था।

वह काली मूर्ति कुछ काँपी और धीमे, किन्तु तीव्र स्वरमें बोली, "तुमने आज फिर मुझे यहाँ बुलानेकी हरकत की! क्या तुम इतना नहीं जानते कि अगर बादशाह सलामतको मालूम हो गया, तो तुम्हारा और मेरा दोनोंका सिर धडसे अलग हो जायेगा?"

पुरुषने कुछ निकट आकर, स्वरको संयत करनेकी चेष्टा करते हुए कहा, "तुम्हारे तो नाज ही निराले है! बारह बरसमे तो सीनेपर भी मैल

आ जाता है, मगर तुमपर निखार आता जाता है। कसम खुदा की, अगर तुम्हारे सिरका फिकर न होता, तो सौ बार तुमपर यह जान कुरबान कर चुका होता। जालिम, मैंने तीन साल तक फिर सबर किया, मगर तूने तो एक दिन भी न बुलवाया। तुझसे जुदा हुए बारह साल हो गये, पर एक दिन भी तुझे मेरी याद न आई। इस महलकी रंगत ऐसी भाई कि सारा दिल और ईमान ही लुटा बैठी! खुदा तुझसे समझे!"

"क्यों, क्या बादशाहने मेरे साथ ब्याह नहीं किया? अगर उन्हें यह मालूम हो गया कि मैं एक मामूली राजगीरसे भेंट करनेके लिए महलसे बाहर निकली थी, तो क्या उनके नामको बट्टा नहीं लगेगा?" काले लबादेमें से तिरस्कारपूर्ण प्रश्न निकला।

"या खुदा, तू तो बेवफाओंकी तरह बात करती है! इन पिछले तीन बरसोंमे तो तेरा लहजा ही बदल गया है! बादशाहने तुझे जबरदस्ती पकड़वा मँगाया, तेरे साथ मुताह रीतिसे ब्याह किया, और तू सचमुच बेगम ही बन गई! अगर निकाह कर लिया होता, तो तू खासमहल हो जाती!"

नवाब वाजिदअली शाहकी धर्मपत्नियोंकी संख्या सैकड़ेसे ऊपर थी। उप-पत्नियोंकी भी एक पूरी पलटन अलग थी। उनके धर्ममें केवल चार ही विवाह निकाह-पद्धतिसे वैध थे। बादशाहोंके लिए चूंकि धर्मने सदा ही विशेष रियायत बरती है, इसलिए चारसे अधिक विवाह करनेकी आवश्यकता आ पड़े, तो उसके लिए मुताह पद्धतिका आविष्कार काम आता था। वह स्त्री, जो काले लबादेमे अपने शरीरको छिपाये हुए थी, हजरतमहलके नामसे विख्यात थी। उसके साथ बादशाहने इस दूसरी रीतिसे ब्याह किया था और उसे हजरतमहलका खिताब बख्शा था। विवाहके दो बरस बाद हजरतमहलने एक पुत्रको जन्म दिया था, जिसका नाम बिरजिसकदर रखा गया। वह लडका भी अब दस बरसका हो चुका था।

किन्तु जिस रहस्यका उद्घाटन आज बागके इस अंधेरे कोनेमें हो रहा

था, उसे अब तक हजरतमहल और उस पुरुषके अतिरिक्त केवल एक व्यक्ति जानता था। वह था वह ख़ोजा, जो कुछ दूरीपर पीठ फेरे खड़ा था, और जिसके बदनका एक भी पुट्ठा किसी बातसे अब तक नहीं हिला था। जो पुरुष हज़रतमहलसे बातें कर रहा था, वह पिछले बारह वर्षोंमें सात बार चारदीवारी टपकर भीतर आ चुका था। आठवीं बार उसने यह साहस किया था, और शायद यही उसकी अन्तिम बारी थी।

उसकी बात सुनकर हजरतमहलका स्वर कुछ नरम हो गया। आँखें उस पुरुषकी ओर करके उसने कहा, "भावनाओंमें बसनेसे काम नहीं चलेगा। अब हम बड़े हो गये हैं। बिरजिसकदर अब बच्चा नहीं रहा है। वक्त आयेगा और वह बादशाह बनेगा। दुनिया उसके सामने जमीन चूमती आयेगी, और उसी दुनियाको जब यह मालूम होगा कि उसकी मा एक ईंट-पत्थर जोडनेवालेके दिलकी धड़कनें सुनती है, तो लोग अपने बादशाहपर शक करेंगे, उस पर हँसेंगे—नहीं, नहीं! तुम ऐसा न होने दो, तुम ऐसा नहीं होने दोगे..!"

वह पुरुष मानो कुछ सहमकर पीछे हटा, "ओह, ओह! इन पीली-पीली ईंटोंने तो तुझपर जादू कर दिया है! तू तो सपने देखने लगी है! बादशाह सब बेगमोंको तलाक देकर तेरे बेटेको युवराज बनायेगा! वाह, वाह! चाँद जमीन चूमने उतरा और जमीन इतराकर सूरजपर चढ़ दौड़ी! अरी पगली, लखनऊके पानीमें अब वह मिठास कहाँ, जो सपनोंमें याद आये। इसमें गन्दगी पैदा हो गई है और उससे बुलबुले उठने लगे हैं। हम कभी ऐसे बुलबुलोंको मोती नहीं समझते। महलसे बाहर नज़र उठाकर देख। बादशाह जिस फलको अपने पिलपिले मुँहसे मज़े-मजे चुभला रहा है, फिरंगी उसपर दाँत गड़ाये बैठे हैं। जिस दिन वे अपने जबड़ोंको कसेंगे समूचा फल उनके मुँहमें होगा और बादशाह मुँह ताकता रह जायेगा। तेरा बेटा कभी बादशाह नहीं बनेगा।"

"चुप रहो," गर्वीले स्वरमें हजरतमहल दाँत किचकिचाकर बोली।

"तुम्हें क्या मालूम बादशाहत किसे कहते हैं और वह कैसे प्राप्त की जाती है। खुदाकी क़ुदरतको न झुठलाओ। वह जब चाहता है तिनकेको पहाड़ पर चढ़ा देता है, और जब क्रुद्ध होता है, तो ऊँचा खजूरका वृक्ष रेतमें लोटने लगता है। खुदा अगर मेहरबान न होता, तो वह क्यों मुझे बेगम बनाता, क्यों मुझे बेटा देता? दर्पणकी तरह वह दिन मेरे सामने साफ़-तौरसे दिखाई दे रहा है, जिस दिन मेरे बेटेके सिरपर ताज झूल रहा होगा और मुल्ला आमीनके काँपते हुए हाथ उसे मेरे बेटेके सिरपर कस रहे होंगे।" उसने आकाशकी ओर आँखें उठाकर अपने दोनों हाथ प्रसन्नताके मारे कलेजेसे लगाकर मुट्ठियाँ भींचीं। "चारों ओर सैनिकोंकी नङ्गी तलवारें बादशाहके सम्मानके लिए हवामें उठ रही होंगी। एक ऐसा शोर-शराबा बरपा होगा, जो आज तक कभी न देखा गया, न सुना गया।"

"ऐसा कभी नहीं होगा," पुरुषने तनिक तीव्र स्वरमें कहा। "फूल सिरपर चढ़ा, तो बाग किस कामका रहा? तेरा बेटा बादशाह बनेगा, तो हम लोगोंको क्या मिलेगा? मैं तो आज भी राज हूँ, कल भी राज रहूँगा। तू मेरी दुनिया उजाड़कर अपनी दुनियाको जन्नत बनाना चाहती है। तू प्रेमकी उन महान् घड़ियोंको भूल गई है, जिसमें अनेकों बार हमने स्वर्ग देखा है। तू मेरी है, उस आदमीकी नहीं, जो रोज़ अपनी दिल-बस्तगीके लिए एक फूल तोड़ता है, और सुबह होते-होते मसल देता है। अभी तूने वह सुबह नहीं देखी है। तेरे दिमागपर शराबकी खुमारी है। अपनी आँखें खोल, और उस दुनियामें लौट चल, जिसे तू पीछे छोड़ आई है। मैं तुझे अब भी बाँहोंमें उठाकर अवधसे बाहर ले जा सकता हूँ। मेरी हालतको देख, मुझे देख—मैंने बारह साल तक तेरी जुदाई सही है और किसी गैर औरतकी तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखा।"

"नहीं, नहीं," सहमकर पीछे हटते हुए हजरतमहलने कहा। "तुम मुझे बहकाने आये हो, मेरा स्वर्ग उजाड़ने आये हो, मेरे बेटे पर मुसी-

मतोंका पहाड ढाने आये हो ! तुम यहाँसे चले जाओ और किसीसे. .''

वह पुरुष और आगे बढा। हजरतमहलकी बातको बीचमें ही काटकर उसने कहा, "ओह ! मेरी आँखे खुल रही हैं। मै भूल गया था कि तू एक मामूली औरत है। लेकिन याद रख, आज जो कहानी ये पेड़-पौधे जानते है, कलको उसकी गन्ध बाहरकी हवामें भी फैल सकती है। उस वक्त तेरी वह खुमारी कहाँ जायेगी, जिसमे तू जागते हुए भी स्वप्न देखती है ?''

हजरतमहलने काँप कर कहा, "तुम...तुम मुझे बदनाम करोगे !''

"बेवफा !'' उस पुरुषने संकीर्ण स्वरमें कहा, "दूसरेकी बेवफाईकी बात सुनकर तुझे आश्चर्य क्यों होता है ? क्या खुदाने तेरा ही दिल पत्थरका बनाया था ? और पत्थर उसके पास नहीं रहे थे ?''

"बशीर !'' हजरतमहल चिल्लाई। किन्तु खोजा इससे भी पहले स्थलपर आ उपस्थित हुआ था। पलक मारते उसकी तलवार उस पुरुषकी गरदन छूने लगी।

"हाँ, हाँ, मारना नही !''हजरतमहलने कहा। "इसके लिए दूसरा इन्तजाम करना होगा।''

इतना कहकर वह काली मूर्ति वहाँसे गायब हो गई। खोजाने उस व्यक्तिकी पीठकी ओरसे एक धक्का दिया और वह मुँहके बल जमीनपर गिर पडा। दूसरे ही क्षण तलवारकी भारी मूठ उसके सिरपर पड़ी और वह कराहकर सीधा हुआ। आकाशके हँसते हुए तारे शीघ्र ही उसकी दृष्टिसे ओझल हो गये।

अगले दिन सुबहके समय दिलकुशाके पास एक पेडके नीचे एक आदमी लोगोंको पडा मिला। उसका सिर उसके हाथोंमें छिपा हुआ था और वह मुँहके बल धरतीपर पसरा हुआ था। किसी दयावानने उसे सीधा किया, तो चौंककर दो कदम पीछे हट गया। उसके होंठोंपर दोनों ओर खूनके दो डोरे दिखाई पड रहे थे। दयालु व्यक्तिने पूछा, "दोस्त,

तुम्हे ख़ूनकी कै हो रही है। कहाँ है तुम्हारा घर ? कौन हो तुम?"

आहत राजगीरने बोलनेकी चेष्टा की, जिससे उसका मुँह खुल गया, किन्तु बोल नहीं निकल सका। राहगीरने उसके मुँहमें झाँका और एक चीख़ उसके होंठोंसे निकल पडी। आहत व्यक्तिके मुँहमें जबानके स्थानपर खूनके लोथड़े दिखाई पड रहे थे। वह गूँगा था। उसकी जीभ कटी हुई थी।

× × ×

फरवरी ४ सन् १८५६ ईसवीको जनरल औट्रमकी तोपोंके सायेमें अगरेजोने अवधके मीठे फलपर अपने जबड़े कस लिये और एक ही कौरमे, बिना किसी विरोधके, अवध उनके गलेके नीचे उतर गया। नवाब वाजिदअलीशाहकी माँ, जनाब औलिया बेगम साहबाको ईस्ट इडिया कम्पनीका परवाना नहाते समय मिला और उसे सुनकर वह नगे पैरों, बिना दुपट्टा ओढ़े, चिल्लाते हुए महलके भीतर उस स्थान तक भागी चली गई, जहाँ नवाब साहब अपने जन्मको सफल कर रहे थे। एक सदी पुराना वह राज्य उन लोगोंके हाथोंसे छिन गया था। इस तथ्यको करुणाजनक चीत्कारोंमें व्यक्त करती हुई वह दौलतख़ानेकी तरफ भागी जा रही थी और दास-दासियाँ उनके पहनने-ओढनेकी पोशाक लिये पीछे-पीछे झपट रहे थे। बहरुन्निसाने दुपट्टा पेश किया और वह घूमते हुए बोली, "नहीं, नहीं! जब मैं बुढापेमे ताजके बिना गुजारा कर सकती हूँ, तो दास-दासियोंके बिना भी जी सकती हूँ।"

लौंडियोने यह बात सुनकर छातियाँ पीटनी आरम्भ कर दीं। औलिया बेगम फिर दौलतख़ानेकी तरफ दौडी। ख़ोजाओं, लौंडियों और गुलामोकी एक भीड़ इकट्ठी हो गई। औलिया बेगमको राह देनेके लिए सबकी काई-सी फटती चली गई। जब औलिया बेगमने बिना किसी घोषणाके दौलत-ख़ानेमें प्रवेश किया, तो वाजिदअलीशाहने उन्हें देखते ही अपना मुँह हाथोमे छिपा लिया और रो पडा। औलिया बेगम चिल्लाई: "अब तो तुम्हारे दिलको तसल्ली हुई ? अब तो इन नाचने, गाने और गाल बजानेका

मजा मिल गया ? क्या मैंने नहीं कहा था कि किसी दिन इसकी नौबत आयेगी ? क्या तुम्हारे बाप-दादोंमेसे किसीने औरतोंके कपड़े पहनकर कमर मटकाई थी ? लानत हैं तुमपर और तुम्हारे इन नाजबरदारोंपर, जो इन रोशनदानो और किवाडोकी आडसे मुझ बुढ़ियाको इस तरह झाँककर देख रहे है कि देखें बादशाहत छिन जानेपर यह क्या तमाशा करती है !"

एक भगदड़-सी मचती सुनाई दी। वाजिदअलीशाहके होश फाख्ता हो गये। बहरुन्निसाने तसल्ली दी, मगर वहाँ तसल्लीका क्या काम था। औलिया बेगम लौटी और उसने अपनी अन्तरंग दासियोंको इकट्ठा किया। सामान मँगवाया जाने लगा।

दीवान खासमें अवधके बड़े-बड़े सरदार इकट्ठे हुए। उन्होंने वाजिद-अलीशाहको छोड़कर, औलिया बेगमको बुलाया और अपने-अपने शस्त्र प्रस्तुत किये—बादशाहत छीननेवालोंको मिटाने या मिट जानेके लिए। पर औलिया बेगमने कहा, "नहीं, नहीं, कोई फायदा नहीं। यही एक दिन होना था। होनीसे लडना बेकार है। मै फिरंगियोंकी मल्काके पास जाऊँगी। वह भी एक बेटेकी माँ है। मैं उससे कहूँगी कि मेरे बेटेका ताज न छीने। क्या उसके पास बादशाहतों और ताजोंकी कमी है ? क्या सारी दुनिया उसीके बाँटेमे आई है...?"

वाजिदअलीशाहके लिए बारह लाख रुपये सालानाकी पेंशन नियत हुई। लखनऊ शाही खानदानसे खाली होने लगा। औलिया बेगमने एक सदीसे सुरक्षित हीरे, जवाहरात, पन्ने, पुखराज, नीलम और फीरोजे, माणिक-मोती सब एक स्थानपर इकट्ठे किये और वह सारा जड़ाऊ फरनीचर, जिससे कभी शाही खानदानकी शान आँकी जाती थी एक कमरेमें भर दिया गया। फिर वह बहरुन्निसासे अकेलेमें बोली, "अब ये सब चीजे एक मजाक-सी मालूम होती है। इन्हें कोई हमारे पास नहीं रहने देगा। रात-रातमे एक गुप्त तहखाना इनके लिए तैयार होना चाहिए।"

शाम होते-होते सारा इन्तज़ाम किया गया। महलके भीतर नहानेका एक बड़ा हौज था। उसका पानी निकाल डाला गया और उसके किनारेसे मिलती हुई, ऊँची-ऊँची कनातें लगा दी गईं, जिससे उस स्थानके चारों ओरकी स्थितिका पता न लग सके। सैकड़ोंकी संख्यामें राजगीरोंको आँखों-पर पट्टियाँ बाँधकर लाया गया और कनातोंके भीतर उनके औजारोंके साथ छोड़ दिया गया। तहखाने बननेका रिवाज आम था। किसीको कानोंकान भी यह खबर नहीं हुई कि तहखाना किस लिए बनाया जा रहा है। सुबह तक वह बनकर तैयार हो गया। सब राजगीरोंको बिदा करके, केवल एकको रोक रखा गया।

लौंडियोंने मिलकर उस तहख़ानेके भीतर वे रत्नाभूषण और जड़ाऊँ वस्तुएँ उतार दीं। तहख़ाना ठसाठस भर गया। इस्पातका दरवाजा लगाकर जोड़पर पुलटिस भर दी गई और पत्थर लगाकर चिनाई कर दी गई। ऊपरसे हौजमें पानी भर दिया गया और सब पहले जैसा हो गया। जब सारा काम निबट गया, तो औलिया बेगमने बहरुन्निसासे कहा, "लगता है कि कोई भूल हो गई। यह राजगीर कौन है?"

"फिक्र न कीजिए," बहरुन्निसाने कहा। "इसे यह कैसे मालूम हो सकता है कि तहखानेके भीतर क्या रखा गया है? इसके अलावा यह अनपढ़ और गूँगा है। किस तरह यह किसीको बता सकता है कि उसके भीतर किसी मूल्यवान वस्तुके होनेका अनुमान है? आप निश्चिन्त रहिये। जिन लौंडियोंने इसके भीतर सामान रखा है, वे सब आपके साथ-साथ जायेंगीं। खजाना बिलकुल सुरक्षित है।"

किन्तु राजगीरकी आँखोंने दरवाजा लगाते समय तहख़ानेके घुप अन्धकारमें जो जुगनू-से चमकते देखे थे, उनका अर्थ लगानेके लिए उसका दिमाग तेजीसे काम कर रहा था। बहरुन्निसाने उसे पुरस्कारमें सोनेके कुछ सिक्के दिये। वह उन सिक्कोंको उँगलियोंसे मसलता हुआ महलके बाहर

हो गया। किन्तु लाख मग़ज मारनेपर भी उन जुगुनुओंका अर्थ उसकी समझ में नहीं आया।

दो-तीन दिन बाद ही शाही खानदान अंगरेजी फौजोंकी सुरक्षामें कलकत्ताके लिए रवाना हो गया। लखनऊपर अंगरेजी सेनाका अधिकार निर्बाध रूपसे स्थापित हो गया। लेकिन अंगरेज किसी-न-किसीको तो बादशाह बनायेंगे ही, और वह होगा भी शाही खानदानमेंसे ही, जैसा कि हमेशा होता आया है—इस आशामें बिरजिसकदरको छातीसे लगाये हजरतमहल न जाने हरमके किस कोनेमें छिपी बैठी रही। लौंड़ियाँ और दास-दासियाँ अधिकाश सख्यामें बरखास्त कर दिये गये। बहुत-सी बेगमें उजड़े हुए नवाबके साथ कलकत्ता चली गईं, बहुत-सी पेंशन लेकर वहीं रह गईं, और बहुत-सी बादमें जानेकी तैयारी करने लगीं। मगर हजरत-महलके लिए लखनऊको छोड़ना मछलीके लिए जलको छोडनेके समान था।

× × ×

लार्ड डलहौजीने लखनऊमें प्रवेश किया और शीघ्र ही लखनऊमें महारानी विक्टोरियाके नाम बादशाहतकी घोषणा कर दी गई। हजरत-महलको मालूम हुआ और उसने सिर पीट लिया। एक एकात कक्षमें वह कितनी ही देर तक बेटेको छातीसे चिपकाकर रोती रही। बिरजिसकदरने कहा, "अम्मीजान, आज तक भी कोई ताजपोशीके लिए बुलाने नहीं आया!"

"कोई नहीं आयेगा, बेटा, कोई नहीं आयेगा!" हजरतमहल भीतर ही भीतर अपने रुदनको घोंटती हुई बोली, "अब खुदा हमारा नहीं रहा, फिरगियोंका हो गया है।"

लेकिन खुदाके कान बहुत बड़े है! वह दबी हुई चिनगारी, जो मेरठसे सुलगी, दिल्ली और बरेली होती हुई लखनऊ तक अपनी लपट छोड़ने लगी। कानपुरमें नाना साहब, बुन्देलखण्डमें झाँसीकी रानी और इनकी

कडीको मिलाता हुआ मराठा नेता तात्या टोपे बीस हजार जवानोंके साथ उठा। लखनऊकी रेजीडेंसी घेर ली गई और असंतुष्ट सैनिकोंने उन महलोंको घेर लिया, जिनमें कभी छूम-छननन् तथा वाद-वाद्योंकी झंकारें उठती रहती थीं। स्त्री-पुरुष किसीका विचार नहीं किया गया। जिसके पास जो मिला वह उन लोगोंके कमरबन्दोंमे पहुँच गया, जिन्होंने सेनाओंके साथ मिलकर अपने लुटे-पिटे जीवनके अरमानोंको निकालनेका अच्छा अवसर पा लिया था।

आतंक और भयसे विजडित हजरतमहल अपनी पीठ-पीछे बिरजिस-कदरको छिपाये अपने कक्षमें दीवारसे लगी खडी थी। भीतरसे दरवाजेकी कुंडी लगी थी और बाहरसे भारी शोर-शराबा और चीख-चिल्लाहट सुनाई पड रही थी। रेजीडेंसीकी ओरसे तोपोंकी गडगडाहट सुनाई देती थी और खिडकीमेंसे झाँकनेपर आकाशमे धुएँके बादल भी नजर आ जाते। उसी समय दरवाजेपर थपथपाहट हुई।

"दरवाजा खोलो।"

"नहीं, नहीं।" हजरतमहल चिल्लाई। "तुम लोग भाग जाओ। अवधके बादशाहकी बेगम हूँ। तुम लोग मुझे हाथ लगाओगे, तो. "

लेकिन बाहर इतना सुननेकी फुरसत किसे थी। दरवाजेपर लातों और घूंसोंके प्रहार होने आरम्भ हो गये। हजरतमहलने दीवारमें समा जानेकी चेष्टा की। उसके देखते-देखते दरवाजा चरमराया और भीतरकी ओर खुल गया। उसकी कितनी ही खरपच्चियाँ अलग हो गईं।

हजरतमहलने अपने बेटेको और भी छिपानेकी चेष्टा करते हुए कहा, "तुम लोग आदमी नहीं जानवर हो, क्या तुम लोगोंमें सभ्यता बिलकुल भी नहीं है?"

अब तक भीतर अनेक उजड्ड देहाती हाथोंमें नङ्गी तलवारें लिये घुस आये थे और उन तलवारोंके फलकोंपर ताज़े खूनकी लाली भी दिखाई

पड़ रही थी। उनमेंसे एकने चिल्लाकर कहा, "क्या बकती है! सभ्यता किस चिडियाका नाम है?"

दूसरेने कहा, "अरे, यह अघाये पेटकी हरकतको तो कहीं सभ्यता नहीं कहती!"

अपनी तलवारसे हजरतमहलकी छातीकी ओर सङ्केत करते हुए तीसरा आदमी बोला, "ये लोग खाते कम हैं बिखराते ज्यादा है। फिर भी जो बच रहता है उसे पीली धातुमें बदलकर गलेसे पेट तक लटका लेते है—पकड लो!"

साथ ही 'छीन लो', 'मार डालो' आदिकी अनेक आवाजें आईं और भीडपर पीछेकी ओरसे एक धक्का लगा।

हज़रतमहल घुटनोंके बल बैठकर बोली, "हमपर रहम करो। मैं लखनऊके बादशाहकी बेगम हूँ। मैंने आज तक कभी किसीको तकलीफ नहीं पहुँचाई। हमारी बादशाहत लुट गई, तकदीर लुट गई। अब हमारे पास लुटनेके लिए और कुछ नहीं रहा।"

एक आदमीने आगे बढकर उसके गलेसे लटका हुआ हीरेका तोड़ा झटक लिया। उसकी पीठ जो दुहरी हुई, तो पीछेसे बिरजिसकदरका शरीर स्पष्ट हो गया। उसकी आँखें ऊपरको चढ़ी हुई थीं और हथेलियाँ दीवारसे चिपकी थीं। पतला और साँवला-सा मुँह था, जिसके होठ अघट-घटनाको आश्चर्यके साथ अनुभव करके फैल गये थे।

लोगोंने कमरेको लूटना आरम्भ कर दिया था। एकने, जो उनमें कुछ बली मालूम होता था, कहा, "यह कौन है?"

"नही, नही, इसे न छूना! इसके पास कुछ नहीं है। यह मेरा बेटा है। अवधका शहजादा है। अंगरेज न आते, तो यही बादशाह बनता। रहम करो, मेरे हालपर तरस खाओ।"

"अच्छा, बादशाह बनता ? अरे रे, दिल्लीमे भी तो उन लोगोंने हजरत बहादुरशाहको बादशाह बना डाला है। चलो, लखनऊका बादशाह मिल गया। भाइयो, सब लोग सीधे हो जाओ और बादशाह सलामतको सिजदा करो।"

कमखाबके परदोंको झटकते और सन्दूकोंपर ईंटे तथा तलवारोंके कब्जे पटकते हुए लोग कुछ देरके लिए सीधे हुए और घूम-घूमकर लडकेकी तरफ देखने लगे। किसीने ठहाका लगाकर कहा, "आदाब बजा लाता हूँ, हुजूर!" फिर लोगोंको सम्बोधन करके बोला, "अरे यारो, अगरेज लोग अगर लडते-लडते यहाँ तक आ गये, तो यह बेचारा क्या करेगा ? कोई फिरंगी अगर पिल पडा, तो एक ही वारमे इसका सिर भुट्टेकी तरह उडा देगा। गरदन तो देखो कितनी पतली है!"

हजरतमहलने बेटेको दोनों हाथोंमें भर लिया और विकल होकर बोली, "नहीं, मैं अपने बेटेको बादशाह बनाना नहीं चाहती। अब बादशाहत ही कहाँ है, जो यह बादशाह बनेगा ? हमलोगोको हमारे हालपर छोड दो।"

इसपर भारी-भरकम आदमी उसकी ओर बढते हुए बोला, "बेगम साहबा, बादशाहत तो लोगोंके माननेकी होती है, कोई गाय-भैंस नहीं होती कि एकसे रस्सा छूटा और दूसरेने पकड लिया। अगर हमलोग अपने बादशाहको उसके हालपर छोड देंगे, तो हम किसके हालपर रहेंगे ? पतली गरदन हो या मोटी, पर इसे बादशाह बनना ही पडेगा।"

बेगमकी आँखोंसे टपटप आँसू चूने लगे। वह और भी जोरसे सहमे हुए बच्चेको अपने बदनसे चिपटाती हुई बोली, "खुदाके लिए माफ करो, तुम्हारे सम्मानित बादशाह हुजूर वाजिदअलीशाहकी बेगम तुमसे आँचल पसारकर भीख माँगती है : मेरे बेटेको बादशाह न बनाओ। इसे फिरंगियोके फटे हुए जबडोंमें निवाला बनाकर न फेको।"

"पकडकर ले भी तो चलो, यारो!" किसीने पीछेसे चिल्लाकर कहा,

क्यों खड़े-खड़े औरतजातकी बक-झक सुन रहे हो! छीन लो, दरबारमें ले चलो, और बना दो बादशाह। अवधका बादशाह बिरजिसकदर जिन्दाबाद!"

हजरतमहल गिडगिडाई, रोई, मिन्नतें कीं, मगर सब बेकार। वह भीमकाय व्यक्ति आगे बढा और उसने बिरजिसकदरके गलेमे पडी मोतियों की माला झटक ली। फिर उसकी माँको उससे नोचकर अलग फेंका और रोते हुए बिरजिसकदरको कधेपर उठा लिया। पीछे मुडकर उठती हुई हजरतमहलसे वह बोला, "अगर फिरगी यहाँ घुस भी आये, तो पहले हम मरेंगे, फिर तेरा बेटा शहीदोका बादशाह होगा। हा, हा, हा, जिस महलमे अब तक कलवार ही कलवार नजर आते थे, वहाँ तलवार देखकर हमारे रक्षक लोग सहमे जा रहे हैं!"

रोती-पीटती, आहे भरती हज़रतमहल विद्रोहियोंके साथ-साथ दरबारकी ओर चली। चारों ओर बिरजिसकदरका नाम ले-लेकर कोई-कोई इक्का-दुक्का जिन्दाबादके नारे लगा देता था और फिर 'मारो-काटो, पकड़ो, छीनो, उड़ा दो'की आवाजें तथा चीख़-चिल्लाहट सुनाई पडने लगती थी। इन सबके ऊपर जब रेजीडेंसीकी ओरसे तोपोंकी गडगडाहटका शोर आता, तो हजरतमहलका कलेजा धक्-से हो जाता। उसका बेटा मारती-काटती भीड़के भारी समुद्रमे उस भीमकाय व्यक्तिके कधेपर बैठा ऐसा लग रहा था, मानो डूबते हुए उसने किसी बहते पेडके ऊँचे ठूंठको पकड रखा हो।

हजरतमहलको पहले जो चीज दर्पणमें दिखाई देती थी वह अब सामने दिखाई देने लगी। सैनिकोंकी नंगी तलवारें बादशाहके सम्मानमें उठ रही थीं। एक ऐसा शोर बरपा हो रहा था, जो कभी न देखा गया, न सुना गया! दरबारमें हजरतमहलके बेटेके सिरपर ताज झूल रहा था, और लोग मुल्ला आमीनको भी पकड लाये थे। मुल्लाजीकी समझमे कुछ नहीं आ रहा था कि यह कैसी ताजपोशी थी। वह सिरसे लेकर पैर तक

थर-थर कॉप रहे थे। पीछेसे किसीने तलवार चुभोई और मुल्लाजीके कॉपते हुए हाथोंने ब्रिरजिसकदरके सिरपर ताज रख दिया।

यह अद्भुत ताजपोशी समाप्त होते ही दरबार इस तरह खाली हो गया, जैसे लोगोंने अपने कर्त्तव्यसे छुट्टी पा ली हो। दरबारसे निकलती हुई भीड़में रुलती-पिलती हजरतमहल तभी दरबारके भीतर प्रवेश कर पाई, जब वह बिलकुल खाली हो गया। दूर, सामनेकी ओर सिंहासनपर बैठा ब्रिरजिसकदर रो रहा था। उसने वहीं से पुकारा, "माँ!"

हजरतमहल करुणाके आवेशमें जार-जार रो पडी। उसके मुँहसे निकला, "मेरे बेटे!" और जब वह उसके पास पहुँची, तो तुरन्त उस ताजको, जिसे वास्तविक ताजके अभावमें लोगोंने जल्दी-जल्दी नौशाके मोडकी तरह बनवा डाला था, उतारकर दूर कोनेमें फेंक दिया।

× × ×

सर हेनरी लारेंसने रेजीडेंसीकी रक्षामें प्राणोंकी बाजी लगा दी। जनरल औट्रमके साथ हैवलॉक सैनिक सहायता लेकर आया, मगर विद्रोहियोंने उसे भी यमपुर भेजा। उनके बाद सर कोलिन कैम्पबेल एक विशाल अंगरेजी सेनाके साथ आये और उन्होंने ध्वस्त रेजीडेंसी और लखनऊको एक भारी मारकाटके बाद अपने अधिकारमें कर लिया।

हर आदमी भाग रहा था, हर आदमी छिपनेकी कोशिश कर रहा था। कोई दोषी था या निर्दोष इसका कोई प्रश्न नहीं था। अंगरेजी सेना प्रत्येक उस आदमीको, जो चेहरे-मोहरेसे सैनिक मालूम होता था, मौतके घाट उतार रही थी। महलोंके भीतर भी भगदड मची हुई थी। जिसके जहाँ सींग समाते थे भागता नजर आता था।

हजरतमहल ब्रिरजिसकदरको लिये एक कमरेसे दूसरे कमरेमें भागी फिर रही थी। जब उसे मुल्ला आमीनका शान्त मुख दिखाई पडा, तो वह खुशीके मारे चिल्लाकर उनकी ओर दौडी, "हमें किसी तरह लखनऊसे बाहर निकालिये। आपके हाथोंने जिस नाबालिगके सिरपर ताज रखा था,

और फिरगियोंकी संगीनें उसकी छातीकी तरफ तनी हुई है।"

मुल्ला आमीनने शान्तिसे दो बार पलकें झपकाई और बोले, "खुदाका नाम लो, बेगम। आजका आदमी आदमी कम है, जानवर ज्यादा है। पहुँचनेको तो तुम मक्का पहुँच सकती हो, मगर उसके लिए मामूली वक्तोंमें जितने धनकी आवश्यकता होती है, आज उससे हज़ारगुना धन चाहिए। तुम्हारे पास हो, तो निकालो। मैं इन्तजाम करता हूँ।"

"कहाँसे निकालूँ? कहाँसे लाऊँ?" निराशामें गरदन लटकाकर हजरतमहलने कहा। "मुझे क्या मालूम था कि यह दिन देखना पड़ेगा। मेरा तो अपना स्वर्ग था, अपनी जन्नत थी..." और उसकी आखोंके आगे वे दिन फिर गये, जब वह किसीके मजबूत हाथोंमें बलका गौरव निरखती थी।

मुल्लाजीका दूर होता स्वर सुनाई पड़ा, "तो फिर तसबीह लेकर बैठ जाओ। खुदा उन लोगोंसे बड़ा खुश होता है, जो उसका नाम लेते हुए फना होते है।"

यह मुल्लाजीका व्यंग्य था या सलाह थी, हजरतमहल कुछ नहीं समझी। खुदापर अब उसका विश्वास नहीं रह गया था। उसने बिर-जिसकदरका हाथ पकड़ा और आगे बढ़ी। उसी समय महलके एक सिरेसे हल्ला उठा। "फिरङ्गी आ रहे है, भागो! फिरङ्गी शहरके बीचमें आ गये हैं...।"

हज़रतमहलका रङ्ग पीला पड़ गया। मालूम होता था कि शहर-का-शहर महलके भीतर घुस आया है। ऊपरसे रात्रिका अन्धकार उन लोगोंको सान्त्वना देनेके लिए आ रहा था, जिनके लिए दिन मौतका साक्षात् सन्देश था। भीड़में बड़ी-बड़ी विचित्र बातें सुननेको मिलती थी: "फिरङ्गी औरत-मर्द, बूढ़ा-बच्चा कुछ नहीं देख रहे है...अरे, भागते ही जाओगे? दरवाजे बन्द कर लो...क्या फिरंगियोंको दरवाजे खोलने नहीं आते?... या खुदा!"

मगर खुदाने कानोंमें तेल डाल रखा था। गूँजती हुई डरावनी

आवाजें जहाँ उठती थीं वहीं उपस्थित लोगोंको सुनाई पड जाती थी। इस भागा-दौडीकी सीमाएँ थीं महलके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक। एक ओर की खिडकीसे बाहरका दृश्य देखकर लोग झट मुँह अन्दरको कर लेते थे, तो दूसरे सिरेपर भी यही हाल होता था। मगर इस निरुद्देश्य भागा-दौडीके रेलेमें हज़रतमहल किसी भाँति बिरजिसकदरका हाथ पकड़े हुए खिंची चली जा रही थी।

सहसा महलके बायें सिरेपर आगकी एक लपट ऊँचे उठी और गोलियोंकी आवाजें सुनाई पडीं। हजरतमहलने कलेजा थाम लिया। भयसे विस्फारित नेत्रोंसे उसने उस आगको देखा। लोग चिल्लाये : "फिरंगी महलमें घुस गये हैं, फिरगी. ."

उसी समय सशस्त्र देशी सैनिकोंका एक रेला एक ओरसे महलमें घुसा और उन लोगोंने खिडकियोंपर अधिकार करके ताक-ताककर गोलियाँ चलाना आरम्भ कर दिया। पाँच मिनटतक मोर्चा जमा रहा, और फिर रेला बह निकला। हजरतमहल एक अन्धेरे कोनेकी ओर भागी। उसी समय उसे अनुभव हुआ कि किसीने उसकी कलाई मजबूतीसे पकड ली है। उसने चिल्लाकर पूछा, "कौन है ?"

किसीने उसकी बातका उत्तर नहीं दिया। किसीकी मजबूत कलाईमें बँधी वह अपने बेटेके साथ-साथ खिन्ची चली गई। बिरजिसकदर केवल रोये जा रहा था। उसके कपड़े जगह-जगहसे फट गये थे। हजरतमहलकी हालत भी कुछ ज्यादा अच्छी नहीं थी। अन्तमें उसने अपने-आपको होनीके अधीन सौंप दिया।

रेलेसे दूर हटाकर एक व्यक्तिकी छाया उसे महलके एक बचे हुए कोनेकी ओर ले गई। यह औलिया बेगमका स्नानागार था। सामने एक हौज दिखाई दे रहा था, जिसका पानी बहुत दिनोंसे प्रयोगमें न आनेके कारण सूख रहा था। उस कमरेमें आकर पहले-पहल हजरतमहलने उस आदमी का मुँह देखा और भयके मारे चिल्ला पडी : "तुम...तुम. !"

गूँगे राजगीरने होठोंपर उँगली रखकर उसे चिल्लानेसे वर्जित किया। उसने फिर उसका हाथ पकडा और हौजके किनारेपर ले गया। वहाँ खड़े होकर उसने ध्यानसे हौजके एक कोनेकी ओर देखा। हजरतमहलने लक्ष्य किया कि उसके हाथमे एक कुल्हाडी थी। उसके देखते-ही-देखते वह हौजमे कूद पडा। फिर कुल्हाडियोंकी आवाज सुनाई देने लगी।

कुछ देर बाद गूँगेने कुल्हाड़ी चलानी बन्द कर दी और जल्दीसे किनारेपर आकर उसने बिरजिसकदरको गोदीमे उठा लिया। हजरतमहल उसका आशय समझकर हौजमे कूद पडी। हौजके कोनेमे एक छोटा-सा दरवाजा निकल आया था, जिसमें हौज़का बचाखुचा पानी बहकर भीतर जा रहा था। कुछ देर गन्दी हवाके निकल जानेकी प्रतीक्षा करके राजने लडकेको उसके भीतर उतार दिया। इसके बाद हजरतमहल भीतर घुसी और फिर वह स्वयं भीतर पहुँच गया। कुल्हाडीको भीतर करके उसने दरवाजेपर इस्पातकी एक ओरसे टूटी हुई प्लेटको ढाँचेपर बैठाकर दरवाजा बन्द कर दिया। टूटी हुई चादरके स्थानपर जो खुला हुआ छोटा-सा स्थान रह गया उसकी राह भीतर तहखानेमें रोशनी पडती रही।

हजरतमहलने आँखें फाड़कर देखा। चारों ओर महलका कीमती सामान था, जिनमे जवाहरात जड़े हुए थे। अधिकाश सामान मोमजामेसे ढका हुआ था, किन्तु दो-तीन छपरखट नहीं ढके जा सके थे। उनमे जड़े हुए जवाहर दरवाजेकी रोशनीका सहारा पाकर जुगनूकी तरह चमक रहे थे। उसने बडी मुश्किलसे अपने मुँहसे निकलती हुई आश्चर्यकी उस चीखको रोका, जो अकस्मात् इतना बडा खजाना सामने देखकर उसके होंठोंपर आना ही चाहती थी। यह बात नहीं कि उसने कभी वह वैभव न देखा हो, किन्तु कहाँ वे दिन और कहाँ वह कारूनका कोष!

गूँगेने एक मोमजामा फाड डाला। यह वाजिदअलीशाहके सिंहासन की कुरसी थी, जिसमें जडे हुए लाल और पन्ने लाल-हरी आभासे दमक उठे। कितने ही मोमजामेके थैले रखे थे। उसने उन्हें भी खोला। हीरे,

पन्ने, पुखराज और जमुर्द उसमेंसे निकल-निकलकर फ़रशपर बिखरने लगे, एक थैलेमेंसे बादशाहका पुराना ताज निकला। गूँगा उस ताजको बहुत देर तक अपलक दृष्टिसे देखता रहा।

सहसा उसकी आँखे चमकीं और उसने विस्मय-विमुग्ध हजरतमहलकी आँखोंसे आँख मिलाईं। हजरतमहलकी आँखोंकी पलकें काँपकर झुक गईं। गूँगेने माँसे चिपटे हुए बेटेको अपनी गोदमे उठाया, उसे प्यार किया और फिर आगे बढकर उस सिंहासनपर बैठा दिया, जिसपर कभी लखनऊका वास्तविक शासक बैठा करता था। फिर उसने ताज लिया और उसे लडकेके सिरपर रख दिया। यह सब करके वह पीछे हटा और हजरतमहलकी ओर देखकर मुसकराया। उसकी आँखें एक विचित्र तेजसे उस अन्धकारपूर्ण वातावरणमें भी चमक रही थीं।

हजरतमहलने यह सब काण्ड फटी आँखोसे देखा, और जब अधिक न देख सकी, तो अपने चेहरेको अपने हाथोकी दोनो हथेलियोमे छिपा लिया। उसका सिर गूँगेकी छातीसे जा लगा और वह फूट-फूटकर रो पडी। जितनी देर वह रोती रही गूँगा निश्चल खडा उसके मनके वास्तविक परितापको आसुओकी राह बाहर निकलनेमें सहायता देता रहा। समय बहुत था, कोई जल्दी नहीं थी।

चौबीस घन्टे तक वे तीनों भूखे-प्यासे खजानेके तहखानेमें छिपे पड़े रहे। इस बीच ऊपरकी ओरसे गोलियोंकी मद्धिम आवाजें मात्र सुनाई पडती रहीं। फिर वे आवाजें भी बन्द हो गईं। उन तीनोंने इस बीच तहखानेके सारे जवाहरात एक स्थानपर इकट्ठे किये, जिन्हें दूसरी वस्तुओंसे अलग किया जा सकता था उन्हें उन वस्तुओको तोडफोडकर भी निकाला और जब एक अच्छा सग्रह एक स्थानपर इकट्ठा हो गया, तो उसकी एक गठरी बनाई। फिर उस गठरीको मोमजामेके एक बड़े थैलेमे बन्द किया और अवसरकी राह देखने लगे।

चौबीस घन्टे बाद थोड़े-से छोटे-छोटे जवाहरात लेकर, गूँगा हजरत-

सईदके कन्धेको थपथपाकर आश्वासन देता हुआ उस छोटेसे दरवाज़ेसे बाहर निकला, जो उस तहख़ानेको बाहरकी दुनियासे मिलाता था। आशङ्कित हृदय लिये, हजरतमहलने सोते हुए बिरजिसकदरको गोदीमे लिये-लिये छः घन्टे बिता दिये। सील और बदबूसे उसका दिमाग फटा जा रहा था और ऊपरसे रातका अन्धकार घिर आया था। जरा-जरासे खटकेसे वह चौंक पड़ती थी।

आख़िर दरवाजेपर आहट हुई, इस्पातकी चादर हटी और गूॅगे राजगीरकी आकृति दिखाई दी। आशङ्काओंको निर्मूल देखकर हज़रतमहल उससे चिपट गई। सुबहका झुटपुटा होते-होते उसने वह सब सामान देखा, जो गूॅगा अपने साथ लेकर आया था। उसमे थोड़ा-सा खानेका सामान था। कुछ फटे हुए चीथड़े थे और राख थी। उन लोगोंने खाना खाया, पानी पिया, और उसके बाद उन चीथड़ोंको पहना, जिनमेसे हजरतमहलका बदन जहाॅ-तहाॅसे पेबन्दोंसे ढक गया। बदनपर राख मल-मलकर पानीकी सहायतासे बदनको काला किया। फिर गूॅगे राजगीरने थैलेको उठाकर उन्हें चलनेका इशारा किया।

बाहर हौजमें तीन टोकरे रखे दिखाई दे रहे थे। एक खाली था, एकमे राख थी और एक में. .हजरतमहलने उसे देखकर अपनी नाक बन्द कर ली। गूॅगा उसकी ओर देखकर फिर मुसकराया। उसने खाली टोकरे मे थैलेको रखा, ऊपरसे राख भरी और उसके ऊपर वह तीसरा टोकरा उलट दिया। अब हजरतमहलने तीनोंकी पोशाकोंपर ध्यान दिया। वे लोग इस समय महलके भंगी थे और गूॅगेके सिरपर टोकरा था। राख और कूड़ेका टोकरा हजरतमहलने अपने सिरपर रखा, और खाली टोकरा बिरजिसकदरने उठाया।

जगह-जगह सन्तरियोंने इन्हें टोका, मगर दूर-दूरसे ही निरीक्षण करके छुट्टी दी। लखनऊमें फैले हुए फिरगी सैनिकोकी हर व्यक्तिके प्रति दिल-चस्पी थी, मगर भंगियोंके प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी!

लखनऊ पीछे छूट गया और गोमतीके किनारे इन भगियोने उन टोकरोंसे विदा ली। एक गठरी बनाई और नहा-धोकर वे ही कपड़े पहने, गठरी सभाले गूँगा राजगीर, हजरतमहल और अवधके बादशाहने उत्तर-पूर्वकी ओर पग बढा दिये।

मगर शीघ्र ही उन्हें मालूम हो गया कि इन वस्त्रोंमे रहते हुए उन्हें कभी सवारी नहीं मिल सकती। अतः एक गाँवमें जब उन्होंने नये कपडे खरीदे और व्यापारीको रुपयोंके बदलेमे एक चमकता हुआ पत्थर दिया, तो उसने कुछ देर पलकें झपकाकर उनकी ओर देखा, फिर हीरा रख लिया।

मगर गूँगा जितना देखता था उतना ही सोचता था। व्यापारीकी निगाह उससे छिपी नहीं रही। गूँगेने अपने कमरबन्दसे एक दूसरा हीरा निकालकर उसके सामने फेंका और व्यापारीकी निगाह चौडी हो गई। और जब तीसरा उसके सामने पडा, तो वह अपने थलेसे उठा और उसने जमीनपर लम्बे लेटकर गूँगेके पैर पकड लिये। "हुजूर, परवरदिगार, आप बड़े है। मेरे दिलकी उस हरकतको माफ कीजिए, जिसे आप-जैसे अक्लमन्द आदमीने पहचान लिया है। मै हुजूरकी हर खिदमत बजा लाऊँगा!"

गूँगेने उसी समय अपनी छडीसे जमीनपर दो घोडोंकी आकृति बनाई। व्यापारीने समझ लिया कि जिस महान् हस्तीसे उसका सम्बन्ध बना है वह बोल नहीं सकता। उसने फिर खड़े होकर आदाब झुकाया और घन्टे भरके भीतर-भीतर दो कुम्मैत अरबी घोड़े उन लोगोंके लिए ला हाजिर किये।

उनके जानेके बहुत देर बाद व्यापारी अपने उस असीम भाग्यकी कहानीको केवल अपने तक ही सीमित नहीं रख सका। उस अव्यवस्थित युगमे, जब हरेक आदमी मिटने और बन जानेके बीचकी राहको भूल चुका था, यह बात उन लोगोंके कानों तक पहुँचते देर नहीं लगी, जो खेती-बाडी छोडकर अस्त्र-शस्त्रोंके प्रयोगका व्यापार करने लगे थे, और जब व्यापारीके

गलेपर नेजा रखा गया, तो उसने उस कथाको हू-ब-हू ज्यों-की-त्यों सुना दिया।

गूँगा राजगीर व्यापारीकी ओरसे लगभग निश्चिन्त हो चुका था। अतः नेपालकी राहपर उनके घोड़े आरामसे चल रहे थे। मगर जब उन्होंने पीछेसे घोडोंकी टपाटप सुनी, तो कान खड़े हुए। एक क्षण ठहरकर उसने हजरतमहलकी ओर देखा। बेगमके चेहरेपर फिर हवाइयाँ उड़ने लगीं। वह घबराकर बोली, "इस खजानेका बोझ हमारे सभाले नहीं सभलेगा। अब इसका मोह त्यागना ही पडेगा। मेरे बेटेकी जान बचाओ। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मैं इन हीरोंकी चमक बहुत देख चुकी हूँ।"

गूंगे राजगीरने थैला खोला और उसमेंसे चुन-चुनकर कुछ जवाहरात निकाले और अपने कमरबन्दमे खोस लिये। इसके बाद जब पीछेसे घोडो-की आवाज़ और निकट आ गई, तो उन्होंने अपने घोडोको एँड़ दी। किन्तु दौडते-न-दौडते उन्होंने देखा कि वे तीन तरफसे घिर गये हैं। केवल आगेका रास्ता साफ था। दौड लम्बी चलती रही, घेरा कसता रहा और जब तीनों ओरके अश्वारोहियोंका संगम अत्यन्त निकट हो गया, तो गूंगेने थैलेका मुँह खोला, उसे ऊपरकी ओर उठाया और नीचेका सिरा पकडकर चारो ओर घुमा दिया।

सूरजकी तेज रोशनीमें लाल, हरी, नीली और सफेद किरणे चारों ओर दर्पणकी चमककी भाँति फूट निकलीं और जहाँ-तहाँ बिखर गईं। लखनऊका खजाना कच्ची राहपर धूलमें लोट रहा था और उन लोगोंकी आँखोंको चकाचौंध कर रहा था, जिनके पसीनेकी राह निकल-निकलकर, वह गाढ़ा होता-होता पत्थरोंकी शकलमें बदल गया था। वे लोग अपने-अपने वाहन छोडकर राहमें कूद पड़े और छीना-झपटीका बाज़ार गरम हो गया।

नेपालकी निकट होती सीमाके लगभग, क्षितिजपर दो सबल घोड़ोंकी आकृतिमात्र कुछ देरके लिए दिखाई देती रही और जब तक लखनऊका ख़जाना धूलमेंसे उठा, तब तक वे आकृतियाँ भी लोप हो गईं।